

वाजिद अली शाह

उन भारतीय नरेशों को सत्सम्मान समर्पित और स्वातन्त्र्य
 संग्राम के बहिर्ले दूतवार से और जिम्होंने स्वतन्त्रता
 प्राप्ति के पश्चात् महान त्याग के बहादुरता से
 इतिहास से अपना नाम अमर किया ।

—लेखक

वाजिद अली शाह

[शा मे अ व प]

भ्रामन्दसागर श्रेष्ठ

नेशनल पब्लिशिंग हाउस

नई सड़क, दिल्ली

② नैशनल पब्लिशिंग हाउस,
नई दिल्ली दिल्ली

प्रथम संस्करण
मार्च १९६१

मूल्य
१००

मुद्रक-
राजकमल इलेक्ट्रिक प्रेस
राज्यी नगरी, दिल्ली

अपनी बात

रुखे इतिहास की घटनाओं को कल्पना के दाहद में भिगोने पर ऐतिहासिक उपन्यास की सृष्टि होती है। पाठक चाहते हैं, इतिहास इतिहास रहे और उपन्यास उपन्यास। यह काम कठिन है किन्तु लोग दुस्ताहस करते हैं और घबराते हैं। उन्हीं में एक मैं हूँ। कृति में दोष होना आवश्यक है। अतः अपने विना पाठकों से अग्रिम क्षमा याचना करने के पदचात् भागे कतम उठाना मेरा कर्तव्य है।

रहा पुस्तक के विषय के सम्बन्ध में। वाजिद असी दाह' मैंने क्यों खन किया अथवा मुझे क्यों प्रिय हुआ, इसका एक कारण है। अभागे मराठों के प्रति इतियट जैसे प्रसिद्ध इतिहासकों द्वारा विदेशी कूटनीति के आधीन फसाए गए सिम्पारों का संकट बड़ा आवश्यक ज्ञान पड़ा मुझे। सम्पट व्यसनी, अयोग्य अनुसृत अदूरदर्शी विभासी आदि न जाने क्या-क्या लिखा गया है उस मेघारे के बारे में। यहाँ तक, घटिया मनोवृत्ति के लोगों के लिए उसकी उपमा दी जाती है 'अबो आप तो वाजिद असी दाह हैं।' कैसा अन्याय है यह! प्रश्न यह है क्या यह सारे सच हैं? अगर नहीं तो लोगों का धर्म समाप्त होना चाहिए। अब हम स्वतन्त्र हैं विदेशी कूट

नीति का भार हमारे कंधों से हट गया । हमें दूध का दूध घीर पानी का पानी करने का पूरा अधिकार है । यही इस पुस्तक का लक्ष्य है ।

कम्पनी सरकार की भाँसों में अवध की हुकूमत बहुत दिनों से खटक रही थी । सन् १८०१ के सुलहनामे के आधीन अवध का प्राधा राज्य निगल लेने के बाद खेप आधे को अपनी हुकूम नीति का दास बना भने पर कब से वह तैयार बैठी थी । वक्त सुलहनामे की एक कुत्तकी धारा के अनुसार राज्य का पदाधिकारी अब भी दुर्गुणी होता तो कम्पनी को इच्छापूर्ति का अवसर निकल आता । बाजिद अली सिंहासनासीन हुए तो सब का व्यासा टूट गया । बस तभी मिर्जपट शाह के विरुद्ध पद्मनाभ का सूत्रपात करने के लिये कर्मस स्तीमन जैसे घूर्त रेजीडेंट बहाल में गये । स्तीमन ने क्या किया क्या नहीं यह स्वयं उपम्यास का विषय है । यहाँ इतना कह देना मर यथेष्ट होगा कि अनागे बाजिदअली शाह के सिंघारे दूवे नहीं बुझाये गये । घूट-ससोट, अपमान, कुपस की तिहेरी मार का लक्ष्य बना उसका खरीर बेध डाला गया । संसार के सम्मुख अपनी न्यायप्रियता की साख बनाये रखने के लिए कम्पनी सरकार ने शाह पर ऐसा बोरा अभ्यास किया जिसका उदाहरण अन्यत्र मिलना असम्भव है ।

बाजिद अली शाह एक बाबशाह या और बादशाहों का-सा जीवन व्यतीत करता था । उसमें अलगूण रहे हों असम्भव नहीं । विसासप्रियता बादशाहों का भोजन है । अनेक राजाओं,

महाराजाओं और मराठों के रनिवासों और हरमों की कहानियाँ हम सभी जानते हैं। पर उनमें कोई इतना बदनाम नहीं जितना याजिद भसी। बाहिर क्यों? केवल इसलिए कि उस पर बदनामी जानबूझ कर मढ़ी गई।

बाद की बात मैंने प्रारम्भ में ही लिख दी है। उपन्यास के अभिन्नतर पात्र ऐतिहासिक और प्रामाणिक हैं इसी प्रकार घटनाएँ भी। मीर मुन्शी के परिवार में एक लड़की और उसके प्रेमी की कल्पना मेरी अपनी है। इससे कई घटनाओं का विस्फेपण करने में सहायता मिली है। वे न होते तो सखनऊ के युवा समाज के उन १२००० व्यक्तियों के मनोमाओं का ज्ञान न हो पाता जो बादशाह के लिए खरिद की मदियाँ बहाने पर आकुल थे। इसी प्रकार रेजिडेंसी में खोरो की घटना का महत्व भी ठोढ़-ठीक समझ में न आता।

पुस्तक की भाषा के सम्बन्ध में एक निवेदन है। विषय के प्रतिबुद्ध ठेठ हिन्दी का प्रयोग मैं चाह कर भी कर नहीं पाया। कषोपकषन और कहीं-कहीं बरणों में भी मैंने उर्दू शब्दों का गुसा प्रयोग किया है। यह उर्दू वह भाषा है जो मैंने पढ़ी नहीं। ज्ञान जितना है केवल उर्दू भाषा भापी क्षेत्र में सम्वे निवास एवं यहाँ के लोगों के सम्पर्क के कारण। यत्त उसके प्रयोग के सम्बन्ध में भ्रम हो जाना साधारण बात है। किन्तु क्षमा याचना मैं पहले ही कर चुका हूँ।

उपन्यास की प्रेरणा का आधार आदरणीय परिपूर्णानन्द

श्री वर्मा लिखित 'बाजिद भसी साह और अवध राज्य का पठन' है। दोष सहायता में मेरे राजा साहबेरी रामपुर से प्राप्त मसीमन की दुसम डायरी इमियट के इतिहास व मेजर बर्ड की पुस्तकों से सी है।

दोष आपके सम्मुख है। उपग्यास से आपका किचित् मनो रजन हो सका एव बाजिद भसी साह के प्रति आपके हृदय में तनिक भी सहानुभूति जागृत हुई तो मैं समझूंगा मेरा प्रयत्न निष्फल नहीं गया।

महलकराय भं० ३

फ़िला पबपुर

दिनांक, बैठी दसहरा

२३ १ ११

मानन्धसागर श्रेष्ठ

घात की बराबरी घावा अभी धक्का के भीने बाहर से पीछे मुड़कर रही थी। सूर्य का रक्तमय प्रकाश सबकुछ की बरती को प्राणित-बद्ध करने की लैवायी कर रहा था। धीरे एक-एक कर लोगों की विद्याल संस्था ध्वस्तमंजित से अफससमंजित धाने वाली बैलीगारह रोड पर उपस्थित हो रही थी।

घात बजते-बजते सड़क के दोनों ओर बतारों की बतारें जमा हो गईं। एक के पीछे एक ठुंसे हुए, बने हुए धीरे कहीं कहीं एक के ऊपर एक बड़े हुए लोग उत्पुष्टता से ध्वस्तमंजित की ओर देखने लगे।

सर्द हवा के तेज झोंके कपकपा देने की प्रपुष समता से उपस्थित व्यक्तियों की सहनशक्ति का बल मापने धाने धीरे बने जाते। घरीब जिनके धीरे पर फटी पुरानी कई की बंधियां थीं, कांपते कुड़मुड़ाते धीरे फिर सामने सड़क की ओर देखने लगते। धीरे वह सम्पन्न रहस्य जिनके साथ एक-एक दो-दो गीकर ये या जिनकी सबायी के सामनाय बढाईदारों सहित सड़क से कुछ फासले पर छोड़ दिये गये थे सुनहरी कामदार धर्म बत्तों में हवा के साथ-साथ अपने किसी साथी से बातें करते करते सहसा खिलजिता देते। इस प्रकार एक मयमान के ऊपर विद्याल के सम्मुख नतमस्तक अपनी बीन-हीन बग़ा से पटावित धीरे उदास या जबकि दूसरा अपनी सम्पन्नता के बल उसी विद्याल के घस फल प्रयत्न से उत्साहित खिलजिताता जैसे मयमान का उपहास कर रहा था। पर दोनों की हृष्ट सामन सड़क से मिली हुई थी धीरे बतमें उत्पुष्टता की चमक थी।

पोयती के किनारे जहाँ सड़क का मोड़ था प्रतीक्षाओं की पहली कतार में पैतालिस-बिपत्तीस वर्ष का एक घबेड़ देर से छतरमंजिम की धोर दृष्टि जमाये खड़ा था। उसके सर पर शोपस्सी टोपी, पैरों में धामूली चूपा घीर सारे शरीर पर बई भरा साधारण छीट का नीला लबादा था उसके कपड़ों में मुवास का प्रभाव था जंगलियों में धंभूटी और हाथों में ऐयमी समान न था जिससे उसकी मध्यम स्थिति का मान स्पष्ट था। उसकी आँखों में उत्सुकता प्रकाश की किन्तु देर तक प्रतीक्षा करने के बाद अब वह धावद ऊब चुका था और बार बार अपने चारों ओर किसी जाने-अज्ञाने आदमी की तालाश में बेच मेठा था।

एक बार उसने जैसे ही चारों ओर दृष्टि बीढ़ाने के बाद सामने सड़क की ओर मुँह किया सहसा उसकी पीठ पर किसी का हाथ पड़ा और वह चौंक कर पीछे बैठने लगा। दूसरे क्षण इसकी मुस्कुराहट चेहरे पर उभर आती थी और अपने बराबर स्थान निकालने के निवे बोझा बरता हुआ वह पीछे बढ़ व्यक्ति से कहने लगा—आधो बीजे आधो बपह है।—और छतर में पिछला व्यक्ति जिसके बोड़े माने पर बदन की लम्बी रेखा सुसोमिष्ठ थी एवं जिसने अपने कीमती ऊनी प्रसवाहन से निकले हुए चौबीसे पैट को छापने की व्यवस्था की हुई थी, आधे शोपस्सी टोपी वाले मुसलमान सज्जन के बराबर था खड़ा हुआ।

“समय तो हो चुका मियाँ जान किन्तु सचाटी अब तक नहीं आयी बात क्या है ?” आते ही उसने पहले वाले घबेड़ सज्जन से सवाल किया।

“मबरारें क्यों हो” मुसलमान सज्जन किंचित मुस्कुरा कर कहने लगे, “आहे अबब की सचाटी कोई मामूली बात नहीं है। बेचारे की सहायता की दुआ करो। कहीं जलते जलते भी धीक आ गई तो”

“कंसी बातें करते हो मियाँ जान ?— बीजे बी मियाँ शान के दम्पती में दिना ब्याम ताड़ पड़े और समझते हुए से कहने लगे “आह आह

के लिये बुनेछाम ऐसी बातें नहीं करते। किसी ने सुन लिया तो—
सावित्र वह हमारे बापघाह हैं।”

‘बादघाह हैं इसीलिए बीब बी’ मियाँ खान का बिभोभ इस बार स्पष्ट हो उठा “इसीलिए वह धब्बे घोर घुरे की परख नहीं कर सकते। इसीलिए चापसूतों घोर नादानों की बातों पर बकरत से प्यारा जान देते हैं। तुम जानते हो घान घुरे को महीने बाद वह प्रकृतमजित लपरीक से जा रहे हैं?”

जानता हूँ। ‘बीबे बी यईन मुका भीमे हैं बीबे—‘घोर तुम्हारे बिचार भी जानता हूँ मियाँ खान। लेकिन मलिका किरवर उनकी माँ है तुम यह बात घामघ भूल रहे हो।”

“सियासत घोर बंध में माँ की घामघा छोड़नी पड़ती है घबीबे मन।” मियाँ खान का कससा उत्तर थाया “घाहे बंध घब्बे नहीं हैं। बरत की नडाकत उन्हें हवाकत नहीं देती कि जानते घूमते घाम को पनाह दें।”

“तुम्हारा कहना है वह बीमार नहीं से घोर उन्हें -”

‘बीमार से। लेकिन इस कदर नहीं जितना उनके चापसूत हकीमों ने साबित करने का बीड़ा उठा रक्खा था। किरवर बेमन एक माँ है। उनके हृषन पर लगातार दो महीनों तक दरबार से जुदा रहना एक बैठे के लिए मुनासिब रह सकता है लेकिन एक बादघाह के लिए नहीं। इस बंधे में सियासत के इंतजाम में बड़ी से बड़ी सराबियाँ देवा हो सकती हैं। कई से बड़े मुकस निकस सकते हैं। क्या हमारे घाह नहीं जानते कि यह सराबियाँ यह मुकस उनके घोर उनकी हकूमत के लिए कितने बीरुनाक साबित हो सकते हैं? क्या किरदियों के मापी कदमों का बरान कम करने में इस तरह कोई मदद मिल सकती है?’

“बस बस मियाँ घान”—बीबे बी ने सहजो हुई घाबाज में घनूँ रोहने की कोशिश की—“बपघान के लिए तुम बपना बीब इस समय

घान्त रखो। आठे आठे छिपाहिनोने पुन लिया तो पञ्च हो चायेदा।”

“मैं बज्ज का बहुत दिनों से इंतजार कर रहा हूँ बीबे बी। कास, वह दिन आए। अब सँहसाहें प्रबन्ध मेरे एक-एक घमण्ड पर घोर करें और मत्तनब के परिस्तार तन बिरादरने ब्रूषण की तरफ से भावें खोल दें जो सामने मोहब्बत और पीछे बुधनी का दम भरते हैं। जो बस्त घाने पर हमारे योने सँहसाह की पीठ में सुरा भीड़ने की तैयारियाँ कर रहे हैं। बीबे भाई फिरमियों ने साखियों के बेरे में उत्तमकर बाहे प्रबन्ध को बेकार और बेकार बनाने का फैसला कर रक्खा है।—उनकी घामूनी तकलीफ को सिर्फ इसलिए तुल बना दिया जाता है, कि वह कम से कम बस्त रियासती मुघायलों पर उठ कर सकें। यह मुजस्सिम बेन्ना है, फरेब है, साखिब है। और हमारे सँहसाह बेजबर हैं; प्रनवान और नावान हैं। नहीं जानते आपसुस मोहबेदारों की कुबान पर अब फिरमियों की आबाब होती है। उनके मरबरे फिरमियों के मरबरे होते हैं। उनके प्रहसास फिरमियों के इशारे पर उठते और बैठते हैं। कुदा जाने क्या होने वाला है प्रबन्ध का, क्या होने वाला है प्रबन्ध के बाह और प्रबन्ध की रियाया का।

मिलां बाल कुस और कहते। लेकिन बीबे बी ने दूर इशारा किया। उड़क के एक छोर पर मुबार का बावन सा उठता नजर आने लगा था। और वह बावन इसी तरफ बढ़ा था रहा था। सचारी छतर बजिल से रवाना हो चुकी थी। ओमों की धारणा पुष्ट हो गयी।

धूल का काफिला बीरे-बीरे सरकने लगा। सोम व्यवस्थित होने का प्रयत्न करने लगे। इसी बीच कारों धोर से उत्साहित घावाहें घानी धारण हई— सँहसाह की सचारी धा रही है—वह छतरमजिल से चल दिने हैं— सँहसाह प्रबन्ध जिम्बाबाद—कईदरे जया जिम्बाबाद—

मुलताने घबरा भिन्नाबाद—बाबिरधली साहू भिन्नाबाद । 'मारों का स्वरूप जोर पकड़ता गया । सवारी पल रस मजदूरीक घाती मई । फिर होन धीर साधो की सम्मिलित आकाश में ताल बैठा बोझों की टांगों का स्वर भी मुनाई देने लगा । बोझे भी धीर मिमां खान उत्सुकता से देखने लगे । हाजिरा धीर निकट आ गया ।

सब से घाये धली रजा सां वातवास का बोझा था । उस पर सवार रोधाबजार धनी रजा सां की पैनी मजदूर हजर उबर झँपती आ रही थी । उन मजदूरों में ललकारने जसा भाव था । साहू घबरा की मजूदरी के लिए जैसे धकेली बड़ी बड़ी से बड़ी धाकन का मुकाबला करने को बैचन हो । उनके पीछे पाठ साधे वाले एक साथ साधों पर हाथ मारते आ रहे थे । फिर होन वाले थे । उनके बाद सामान्य बर साधों की बारी थी । बहु हल्के हाथों मजदूर पर मुनाब धीर खस से मजदूरता पानी छिड़क रहे थे । फिर दो मुबरी थोड़ी पर दो धीर दो महान इस्तिमां लगी आ रही थीं । इनमें एक साही पोशाक में बयस्क बड़ीर धमीनुहोला धीर बुनरे कीजी बैच मे जनरल उस्मान सां थे । धीर तब आ रहे थे साही सामान्य का लम्बा धावरा उठाये घाठ उठाईशार जो एक पति से महीन की तरह एक हाथ ध ये एक पीछे इस सावधानी से ले आ रहे थे जिसने सामान्य का स्तर स्थिर धीर एकमां रहे । इसी सामान्य पर धनुस मुजरठर नासिरउद्दीन निबन्दर बाहू बावसाहू धारित कँचरे जमा मुस्ताने धालम, बाबिर धली साहू बहादुर बादसाहू घबरा रीनक घञ्जरोब थे ।

इस समय बहु मुस्करा रहे थे धीर बार बार अपना बायां हाथ छठाकर भीड़ में उठने वाले सेहत धीर गुच्छगुरी के सम्मिलित स्वरों की हरीकृति लेते आ रहे थे । २६ १० साल के साहू को मरन उठी हुई बैहरा मुलं धीर रोधाबजार, धालें मामूम धीर खरीर इट पुट धीर बना-बना था । उनकी छटी हुई काली स्याह छाड़ी, मुनीसी

पठनी मूर्ख और बुंवराले बात उन्हें और भी अधिकतम सुन्दरता और आकर्षण प्रदान कर रहे थे। उन्होंने मकमली कामदार समरखा, गान भिल्लीदार पपड़ी हरा कमीठी घास और कीमती कूता पहन रखा था। देखते पर वह बहुत भीम भेक और बरीबपरवर, किम्बु सुन्दर और आकर्षक व्यक्तित्व वाले जान पड़ते थे।

सामान्य का पिछवा घासरा फिर पहले की तरह घाठ उड़ाई बाँधों के कन्धों पर या और उनके हाथ बंधी हुई गति से घासे पीछे आ जा रहे थे। तब कुछ विशेष दरबारी अपने अपने बोंकों पर सवार थे। इनमें राजा बालकृष्ण न्याय मन्त्री, राजा बिहारी लाल हाकिम माल बासेह धाली सधान विभाय के सुपरिन्टेण्डेंट, धाली नकी का हाकिम इन्तजाम कास मन्त्रि रबीन्द्रोना और सरठराजन्द्रोना आस थे। इनके पीछे चार बीस विवाहिनों के बीच विशेष प्रकार की एक पाड़ी में चला आ रहा या चलता के लिये जुता धिकारियों का बन्ध। नाम या मस्तकसे बीछेरबानी। सवारी का अधिष्ठ धर्म। बनता की छूट भी इस प्रकार चलती सवारी के पीछे धामे वाले इस मस्तकसे बीछेरबानी में वह हुकूमत के हर धस्त, चाहे वह कुछ धाई धनव क्यों न हों की धिकारत पैस कर सकता है। धममे दिन वह कुछ बारधाई के हाथों जुता कछा या और हर धिकारत की धरपुर बाँध की बाँधी।

तत्पश्चात् ही पत्र का यह जुनुम आहिस्ता आहिस्ता धव से हो माह पूर्व तक इसी प्रकार धतरमजित जाया करता था। शाह का नियम था वह कुछ धीव की कवावद करवाने के बाद धतरमजित जाया करते थे और वहाँ से सवारी जुनुम की धवत में मकजुलमजित घाटी बड़ी हर पुहकमे के घासा धकतराज धपनी धपनी रिपोट और

कागजात लिए साहे भवष के हुषम के पाबन्द रहते । पिछले दिनों उन्हें बिल बङ्कने की मयी बीमारी हुई थीर तब से अब तक पूरे दो माह भोग इस सबारी के लिए बैबैत थीर परेशान रहे । आज बहु सब मया तार बाजिब घसी साहू की सेहत के लिए नारे बुलन्द कर रहे थे जिससे उनके वस्त्राह का ज्ञान होता थीर साहू की खोकप्रियता स्पष्ट हो जाती ।

सबारी क्यों ही मियां ज्ञान थीर बीबे बी के कटीब आई एक तेज स्वर हुआ थीर जमता हुआ जुलूस वहाँ का वहाँ रुक गया ।

किसी स्त्री कण्ठ ने साहे भवष के इंसफ को मटी पूरी जमता में जलकार कर उत्साहित भीड़ को हटान थीर परेशान कर दिया । सब नऊ के इतिहास में पहली बार किसी ने जसते जुलूस को रोकने का दुईमनीय साहस किया था । चारों तरफ हलचल थीर फुसफुसाहट धारम्भ हो जाना बिल्कुल मामूली बात थी ।

सबारी स्त्री थीर बजीर घसीनुहीला की त्यौरियों पर बल पड़ गये । उन्होंने थोड़े की रास फेरी थीर चारों ओर प्रसन्न मुस्कृत हट्टि के पूछ । फिर बहु एक मयाते साहे भवष के तामझम के बिस्कुल निकट आ गये ।

फरियारी अब तक जज्ञात था । कण्ठ किसी स्त्री का था थीर भोग धपने-धपने मस्तिष्क से बिभिन्न कल्पनायें कर रहे थे । बजीर की मर्बे पल प्रतिपल बढ़ती जा रही थी । साहे भवष ने तामझम के दोनों बाजू अपनी मुद्दियों से जकड़ लिये थे थीर आश्चर्य से धपने चारों ओर बुर रहे थे ।

तभी एक निस्तान स्त्री बजीर के थोड़े के निकट आ पड़ी हुई । उसने बिदेगी कपड़े का नीचा साया थीर पैरों में जप्पल पहन रखी थी । उसकी घाँवें जराब गम्भीर थीर परेशान नजर आईं । बहु बजीर

को प्रमाण करने के बाद आमीसी से जड़ी-बूड़ी चाहु की देखने लगी ।

“बातून—बया सबापी आपने रोकी है ?” उसकी आमीसी देख बजीर ने सवाल किया “बया आप कोई सिकामत पैदा करना चाहती हैं ?”

“नहीं जाना हजरत नहीं । सिकामत नहीं मैं चाहूँगा हे यवज के रोकक अपनी परियाय पैदा करना चाहती हूँ । हमारी मने रोकी है, मैं इकरार करती हूँ ।—” लबी ने निहरता से बजीर को उत्तर दिया ।

“यमर करियाह के लिए आप निश्चय आपनी दरखास्त यमराने मोहिरवानी में जाम सवती थीं बातून । वह सबापी के पीछे धा रहा है ।”

“बया जाना हजरत बया । लेकिन मुझे यकीन नहीं मेरी सिकामत इस वक़्त के करिये चाहु तक पहुँच भी सकेगी या नहीं । मैं खुद इनसे कुछ पर्स करवा चाहती हूँ । इसलिये वह कुरंत करने का हीसता किया है ।”

“तब यावज आप वह भी जानती होंगी कि सरे आप धाही सबापी को रोकना चाहे यावज की जगरस्त लीज़िन है, जिसकी जमा मिला करती है, जो अक्सर सक्त होती है ।—”

“नहीं” बीरत इस बार जैसे बीज पड़ी “मैं खुश की तलबवार हूँ मेरे माँजा मेरी मुसीबत ने मुझे नाकारा कर दिया है । मैं कुछ सोचने-समझने के काबिल नहीं हूँ । मैं चाहु की लीज़िन नहीं कर रही । मुझे ईसाफ़ चाहिए इसाफ़ ।”

“बातून” अमीमुद्दीना का बापी स्वर इस बार तेज़ हो गया । वह मिस्तान बीरत की ओर झुक से देखते हुए बोले “मोया तुम रहना चाहती हो हमारी हुकूमत में कैदशापी होती है ? तुम्हें यकीन नहीं चाहे यवज तुम्हें ईसाफ़ से महकम नहीं रखेंगे ? नहीं नहीं बातून हमारी मज़र में वह सात बेघरबी और पुस्तापी है । इससे पहले कि तुम्हारी सिकामत या करियाह पर बीर किया जाए हम तुम्हें धाही

हिंस्रता में लिए जाने का हुक्म देते हैं। हमें सोचना होगा घाम्मा सोयों को इकट्ठा हानि हो और वह सजारी का एहतयाय मुमाने की एतली न कर बैठे ऐसी कौन सी सजा तुम्हारे लिए तजवीज की जाये ?”

“नहीं नहीं मुस्तागे घामी।” औरत सजा का नाम घाटे ही बिरुद यह और घाही तामम्मा के बिस्तुन निकट घा पिक्किदने लगी। “जुदा के लिए मुक्त पर रहम कीजिए। मुझे कंड में लिए जाने का हुक्म बागस कीजिये ताहे मुस्ताग मुक्त पर तरम काइए।”

“नहीं।” बजीर नाहेज में घारी घाबाज में रहने के बाद सिणहिमों की ओर इगारा कर दिया। सिपाही घाही तामम्मा के पास लड़ी किस्तान औरत की तरफ बढ़े। सभी बाजिर घनी तार में उन्हें रोहने के लिए घपना सीमा हाब उठकर इगारा किया और बजीर साहेब से बोले— ‘इमदाद हुनैन’ ”

घमीनुहीमा औरत घाह के तामम्मा के बिस्तुन करीब आए। घाह ने उन्हें घपना पूरा घारेण दिया आतून को इनारे रोकर पेण किया जाए।”

“अहुत मूर !” बजीर ने कहा और औरत की सामने आने का इगारा किया। वह अपनी बत्ती दोनों हाथ से धीनु पोंछती घाह के सामने आ लड़ी हुई।

“तुम कंसी करियाद पेण करना चाहती हो आतून ? हम जानना चाहते हैं। क्या तुम्हें हमारी हुजूमन के किसी घाएमी से धिकामत है ?”

“नहीं घाममपनाह नहीं।” उस औरत ने सिर हिला दिया।

“क्या तुम्हारे घीहर बरोसमार है ?”

“हुदूर वा सएवा—” औरत ने कहा “ससपळ की मिट्टी पर रोहियों की बरसात होती है। मुझे यह सिनायत भी नहीं है मेरे घाहा।”

“तब—हमें जस्य अपनी शिकायत सुना दो जातूँ—”

“मैं मुसीबतवा हूँ आत्मपनाह—” धीरेत सिर्फ इतना कह सकी ।
इसके बाद कुछ बेर उसकी धाँसों से धाँसु टपकते रहे ।

“बयान करो । क्या चाहती हो ।” साह ने उसे सान्त्वना दी ।
तब वह पीछे झुकी धीरे धीरे एक सड़की की ओर इशारा करते हुए
कहने लगी— “वह मेरी सड़की है आत्मपनाह ।—मरियम—

“मरियम” साह ने सघर देखा । एक सड़की अपनी दोनों हड्डियों
से अपना मुँह ढपि आगनी कठार में सड़ी-सड़ी चुबक रही थी । वह
फिर मरियम की माँ की तरफ देखते हुए पूछने लगे “हाँ तो उसे क्या
तकलीफ है ? हम बकर उसका इलाफ करेंगे जातूँ ।”

“बुस्ताही मुयाफ आत्मपनाह । इस वक्त वह सिर्फ रो रही है ।
सैफिन धीरे रोज सब सवारी निकलना बन्द हो गई थी वह सूनी राह
पर टकटकी बाँधे सूखी प्यासी सारा-सारा दिन यहाँ भुर्राट दिया करती
थी । आत्मपनाह धमर मेरा इलाफ न हुआ तो मैं बरबाद हो जाऊँगी ।
मेरी एक ही बटी है ।—

“हम तुम्हारा मतलब नहीं समझ सके जातूँ । साह ने इस बार
मुस्तुराकर कहा— “धन्या हो धमर तुम हमें सचचीन से सब कुछ
बता दो ।”

“तो सुनिये दाहे आमा । आप की सवारी मेरी धीरे मेरी सड़की
की मोत है—

“जातूँ ! अमीनुद्दीना बजीर ने तेजी से धीरेत की रोकने की
बैठा थी । सैफिन दाह ने इशारा किया “इन्हे कहने दो—” तब
अमीनुद्दीना रात सीधे थोड़ा दूधरी तरफ ले गये । धीरेत ने आगे
बयान किया— “पूरा एक सप्ताह मुझरा जहाँसाहे आसी एक सप्ताह । आप
के दरबारियों, मुलाजमीनों में से किसी के साथ मरियम की धारनाई
हुई । वह बबछा निकला । मरियम से मोहब्बत के बारे करने के बाद

छायब बह मरियम की सुन चुका है। लेकिन मेरी बटी रोनाना उसका इन्तजार करती है। साहे आता यह बेबबूफ़ सड़की धाज भी उससे उठनी ही मोहम्मत करती है बिजनी एक साल पहले। रोनाना यह सवारी निकल जाने के बाद निवासा मुंह से भीजे उतारती है। और पिछले दो महीने" साह "सुठाने आता न हुजूर की सवारी धाई और न हमने खाना खाया। हरे कि यह बीमार पड़ गई। मरते मरते बची। बमुदिकत समाय इसे शिन्वा बन्नामा गया। अब पूछने पर यह उस बबफ़ का नाम नहीं बताती। कहती है उसने मना किया है। मैं आप से परिचाय करती हूँ घालम पनाह। मेरी सड़की की बिन्दगी मैं उसने कटि बिखेर दिये हैं। मैं इस सड़की को उसके मांसे छोड़ अपनी बबरकस्त जुम्मेदारी से मुबकदोष हो जाना चाहती हूँ। आता हजरत ईसाफ कीजिए इस बाबफ़ा सड़की का जिससे किसी नामासूम धरम की मोहम्मत में कुरबान तक हो जाने का फँसला कर लिया है और कीजिये सवा उस बबफ़ा को जो इसकी बिन्दगी को रास्ते का पत्थर समझ कर बठा फेंकने की कसम खा चुका है।"

औरत ने लम्बी लकड़ीर समाप्त करने के बाद लम्बा सांस लिया तो साहे धबध की लजर बोबाध सड़की पर पड़ी। अब उसने रोना बन्द कर दिया का धीर बह सहमी-सहमी हसी तरफ देन रखी थी। साहे धबध ने बन्द लैकिशों में बुजमी पतली मरियम की बड़ी आँखों से भावते बिस्तीरी ओरों को उसके बेहरे के सुन्दर बीनी जैसे रंग से मिनाया और प्रसंसापुक्त स्वर में सुदबगुब 'मरहबा' बुबबुदा दिये। फिर वह बिरतान स्त्री की धीर भूमे और पूछने लगे 'हम खातून की शिका यत सुन चुके। अब क्या खातून का नाम भी जान सकते हैं?'

"मिसैज् बामबज 'घालमपनाह मैं डाक्टर बालबैज की बीबी हूँ।"

"और यह सड़की डाक्टर बालबैज की बेटी है?"

व्यापारी जो भारतीय नौसेना के बजाए बन हमारी धरती पर भीख-खी मांगते थे हमारे साहू और बाइसाहू की उपाधि से विभूषित हो पाते ।

बाबिर घसी धारम में उस सन्धि से सम्मिलित हुए किन्तु मलिका निरुद्ध और बहीर समीपहीना ने उन्हें समझा दिया । और तब वह निश्चय कर चुके कि किसी भी अवस्था में उस कहानी को दुहरा देने नहीं जो पण्य की व्यापारों हरम की विनाशिता और चापसूत दरबारियों की सहायता से आज तक व्यवस्था के भीते साहू ने रोड़ाई है । वह जानते थे और समझते थे कि हुकुमत के सिधे विनाशिता का समर मृत्यु का आवाहन कर देगा । हरम की परममुख्यी बीबनामों के वेसु किरमी धर्मोक्ति की मधुर वीन के धागे मस्त साँप बनकर व्यवस्था के हाकिम और व्यवस्था की हुकुमत की एक साथ इस बाँधने । वह नहीं चाहते थे सुगो से जली धान वाली उनकी बाइसाहू, पत्नों में उनके हाथों से निकल जाने और वह धर्मों की तरह सिद्ध बनाया देखते हुए वाली यह बाँध ।

सैनिक इंपैरेंट के कुटिल राजनीतिक इस समासे के लिये न केवल तैयार थे बल्कि बहुत दिनों पूर्व हमकी नींव रख चुके थे । उनकी दृष्टि में भारत का हरा बरा प्रवेश बर्षों से टूट रहा था वही उनके व्यापारी भीख माँगते पहुँचे और राजा बन कर वापिस धरे । वह चाहते थे इस देश में न केवल वस्तुओं का व्यापार करना और अपनी जेबें भरना, बल्कि मराठ ईसाई धर्म की व्यापार के अनुचित उपयोग से यहाँ के लोगों का धर्म खरीद लेना । बाइसाहू में उनका मध्य व्यापार तक सीमित नहीं था उन्हें करनी भी तिजारत अपने धर्म की और यहाँ के राजाओं महा राजाओं की हुकुमत की ।

मुगलों के कच्चे कमजोर थे और ईस्ट इंडिया कंपनी के घटसरात अपने राज्य के निकट जाने लगे । कसकटों में दीवानी घराबों के

अधिकार प्राप्त होते ही सफलता की चढ़ाई आरम्भ हुई और छोटे-मोटे राज्यों के बिलीनीकरण के साथ धागे बुनने लगी। धापसी फूट की कतह से पीड़ित नवाब और राजे-महाराजे कहीं हारे, कहीं भाग गये और कहीं घुटने टेक नीति से पिछड़ गए। कम्पनी के बढ़ते हुए कदम निजी के रोके न रुक सके। हजारों मील दूर बैठे राजनीतिज्ञ भारत के शरीर पर यहां-वहां जड़े-मढ़े रियासती हीरों की कहानी न बेबल जानते थे बल्कि समझते भी थे। उनकी फूट और उनकी कमजारी के बल हीरों से बरत समझते भी थे। उनकी फूट और उनकी कमजारी के बल हीरों को धामाहीन कर देने के बाद कम्पनी का एकछत्र राज्य कायम हो सकता था। इस नीति का भारत के प्रत्येक गवर्नर जनरल ने चुनकर समर्थन दिया। साम साम दण्ड भेव चारों उपायों से सफलतापूर्वक प्राप्त की जाने लगी। कहीं राजाघों-महाराजाघों की अयोध्या सिद्ध की कहीं जनता का समर्थन मांगा कहीं उत्तराधिकारी के प्रश्न पर बैदमानी पर उठते और कहीं बितासिता के हुए न नवाबों और जमजमों को कम्पनी सरकार का मोहताज बना दिया। रोय रह गई कुछ बड़ी-बड़ी रियासतें अवध झांसी, प्लासियर और पंजाब के कुछ उपजाऊ प्रदेश। १८०१ की सन्धि में अवध का आधा भाग कम्पनी में बिलीन किया जा चुका था। रोय आधा भाग या साहे अवध का आधा निवास अभी बाकी था। साह अभी प्रकार समझते थे इस निवास की ओर विशेषियों की नबी भूखी नजरें डेर से घूर रही हैं। एक न एक दिन इसका भी समाया बनने वाला है जो बनकर रहेगा और जूकर रहेगा। यह सबसाईं धाज से बहुत पहले अपने निता के साधन कास में एक मामूली बसेड़े पर बाजिद धनी साह पर स्पष्ट हो चुकी थी। किरसी हुकामों की मर्जी के खिलाफ अवध की हठमत्त करना नितना कठिन है, उस समय उन्हें मसी प्रकार अनुभव हो गया। साह महमद धनी साह के पदेष्ठ लड़के मुस्तका अभी एक वर्ष स्वभाव और अयोध्या के साथी व्यक्ति थे। अमजद अभी साह अपनी मृत्यु के बाद उन्हें राज

परी सीप बखनख के बाजारों में बाबिरउद्दीन हैदर के काम के बेहूरा क्रिस्तों की पुनरावृत्ति नहीं करना चाहते थे। बाबिर धनी बनवा के प्रिय योग्य और समझदार व्यक्ति थे। उन्होंने ऐलान करवा दिया, नहीं बनी यहूद करार दिये जाते हैं। तत्कालीन रबीउल्लेह को इस ऐलान से शोक था। मुस्तफा धनी साह की राजनसी के बाद वह अपनी निरसंचित धनिबाबा की पूर्ति के स्वप्न देख रहे थे। बाबिर धनी उनकी इच्छा के प्रतिकूल स्वभाव का ठोठ व्यक्ति था। उसने इस ऐलान के बिना पूरी शक्ति से हाथ पैर पटकने धारण कर दिये। साह की स्थिति घोरनीय हो गयी। सारा परिवार समझ गया जब धन के दो बाग्याह हो गये हैं। एक जिसका नाम है और जिसके पादरे हुक्म-मत में मुहूर्त बनती है पर जो कमजोर है और दूसरा वह जो परों के पीछे से हुक्म मत करता है। ताकतवर है। लिखापकी में धनर धनी ने गवर्नर जनरल को बार-बार चोल शब्दों में अपनी इच्छा साह की और उनके समर्पण प्राप्त करने का प्रयत्न किया। लेकिन मिटना ऐलीउल्लेह समझता था उससे कहीं ज्यादा गवर्नर जनरल समझता था। धन को हस्तगत करने में पहले काफी देर हो चुकी थी। जब उन्हें बाहिये का कोई ऐसा नवाब जो १२१ की सन्धि की शर्तों के विपरीत अपने आपको प्रयोग्य और बिलासी सिद्ध कर सके। उनके लिए बाबिर धनी के रंग हल बेहूने थे। मुस्तफा धनी उनकी मर्तों में कामयाब हो सकते थे। धनर धनी साह ने उसी को नहीं यहूदी से अलग कर दिया था। गवर्नर जनरल ने साह की सभी बलीकों की काट कर ली। साह की मृत्यु ही इच्छा का इतना घोर अपमान था कि पहले कभी नहीं हुआ था। उस समय बाबिर धनी केवल बाइस वर्ष के थे। लेकिन फिरंगी और फिरंगी हुक्मत के प्रति हम घटना से उनके मन में भय व्याप्त हो गया। धनर धनी साह जैसे दूरन्धर व्यक्ति जब इन बालियों के पक्ष में खड़े हुए थे, वह अपनी स्थिति पर क्या शोक सकते

ये। वह समझ गये कि हमारी हुकूमत के दुर्दिन निकट था गये हैं।
इतना निकट कि हम टाटना चाहें तो भी ज्यादा दिन नहीं टाट सकते।

कठिनाई से सभी आहूत की समस्या सुलभ करी। सोच-विचार के बाद अन्तर्गत सभी आहूत की ओर से सरकारी एमान हुआ जिसमें अपने-अपने-अपने कारण व्यक्त किया गया। उन्होंने जाहिर किया मुस्तफा अली उनके रक्त से बालक नहीं हैं। जिस समय उसकी माँ की रनिवास में लाया गया वह अठारह महीने का उनकी गोद में था। रेजीडेंट मुहरेकता रह गया। इस अकादमिक बनील का गवर्नर जनरल भी कोई उत्तर न दे सका। लेकिन अब मन ही मन वह उस समय की बेचैनी से प्रतीक्षा करने लगा जब अन्तर्गत सभी आहूत के बनाव बिरीदे को तात मार कर गिराने के साथ-साथ वह अपने इस अपमान का बदला ले सकता।

इस तत्कालीन के युग दिन को अपसकुन हुआ उससे शक्तिश्रमिणी गाथा का उद्गार-महा होसमा जाठा रहा। वह प्रारम्भ से बहमी और ब्रूट प्रेष्ठ को माना करते थे। पुरानी बनील माने वाली शकुन की बातों पर उनका हृदय विस्वास था। और उस दिन उनका दिल दो टूक हो गया जब आस तत्कालीनी के मोके पर तत्काल ताज तब पहुँचाने वाली सीढ़ी बनने समय उनके बोझ से टूट कर दो टूक हो गई। क्या यह अपसकुन नहीं? हम दुर्बलता के पीछे आहूत की शक्ति के बहुत बदरंग बिर्षों का दुरम दिखाई दिया। अन्तर्गत के आहूत की तत्कालीनी के समय ऐसा अप्रिय लक्षण? उन्हें बिर्बाम-सा होने लगा जैसे अन्तर्गत के अन्तर्गत मूल का अस्त करीब था पहुँचा है। आपदा यह तत्कालीनी का जलन उसके इतिहास का आखिरी जलन और बनील अहर्षों के इतिहास में उनका नाम आखिरी हो। सीढ़ी के रूप में टूटा है अन्तर्गत का भाग्य जो किराती हुकूमतों की आँखों में जाने जब से अन्तर्गत रहा है। मोले बावपाह के मनोबल को हम अन्तर्गत अन्तर्गत ने सचमुच अस्तिर कर दिया और फिर पर जाहू के हाथों ताज पहनने समय वह यही सोचते रहे

कि प्रथम के पतन के लिए बुद्ध ने उन्हीं के कर्मों बदमासी का बोझ क्यों डालना निश्चय किया क्योंकि उनके पूर्वजों में एक से एक अधिक ऐरात बुद्ध डि और अयोध्या शासकों का समय बीत चुका है। क्या है उनका अपराध जो उन्हें इतना भारी बन्ध दिया जाना निश्चित हुआ है। यही कि वह सही मामलों में अपने बेश की सेवा का बख्साह लिए पल्ल पर बैठने को धातुर हैं, या फिर छिंदी हुक्मनों की कूट नीति को छिन्न-विन्न कर देने का उन्होंने फैसला किया है? बुद्ध जाने क्यों क्रिश्चियन उनके साथ एक बड़ा बहुत बड़ा बिलबाइ होने वाला है।

बोपहर तक घाह प्रथम अठारस बरिस में सरकारी काम करते रहे। विभिन्न महकमों के अफसरान उनके सामने पैर दृष्ट, अपनी-अपनी कैड्रियतें पुनारिष की और घाह द्वारा दिये गये पचा-कहा धारेयों को हृदयवश करते रहे। अन्त में वहाँ का काम समाप्त हुआ। तब सहा घाह की हस्ति मठीने बदन के बासीस-बयासीस वर्ष के नकी ली अफ-ठरे बास पर पड़ी जो बजीरेमाला अमीनूहीना के साथ सर मुकामे घाह के हुबम का पावन्द बाधा का और उन्होंने पुकारा "नकी ली!"

नकी ली ने अपनी बहुत बमकदार धार्मिक ऊपर उठाई उनमें मर्यादा का नाम उत्पन्न किया और आत्मा मुनने के लिये धावे धाया—'हुबम घाह घाली।'

"क्या वह नहीं मझी है नकी ली?"—

नकी ली ने मुरत स्वीकृति नूनक सर हिलाया। घाह धावे कुछ कहने वाले थे। बजीरे घाला ने तत्परता से तस्मिये का धारेय दिया। कमरा अकेला हो गया। वह स्वर्ण भी घाह की ओर उत्सुकता से देखने लगे। आज जो कुछ हुआ प्रथम के इतिहास की एक नयी बात का

परन्तु नहीं काँ और साह अब में उसके सम्बन्ध में पहले कोई बात
बीत हो चुकी थी इसके प्रति उनकी बूझी धार्षि बिना सतर्क हुए न
रही ।

साह ने धाये कहा—“हम समझते हैं तुम्हारी इतिहास कहम नहीं
एक हकीकत होगी नहीं काँ ।”

“बदरनाम हकीकत धालमपनाह ।—” नहीं काँ ने तनिक मुस्क-
राने के बाद उत्तर दिया ।

“पाक मुहम्मद का बजबाव मरा दिल जुलाई और नाफरमावर
दायी का सवमा कतई बदस्त नहीं कर सकता हुदरे धाला । धाज सब
धातमपनाह खुब इसका धम्बाजा करमार्येने ।”

बजीर साहेब का मन उडसित हुआ । उस बिस्तान लड़की के बारे
में नहीं काँ की सिफारिस कुछ मायने रखती थी । धाज धाम साही
धादेस से ससे साह क हुदुर में पेश किया जाना का ताकि उसकी माँ
की धरियाद वर ईसाफ के लिये मरियम से उसके प्रेमी का नाम मात
किया जाये और उस बगदा प्रेमी को बण्ड दिया जाये । बजीर की
बुद्धि ने तत्काल किसी रहस्य की गन्ध प्रतीत की । नहीं काँ जिसे
बयाख की यही का धसीम मोह का साह को किसी नये उत्तमपने
में तो नहीं जान रहा उन्हें ऐसा बिरबान होमे लगा । बड़ा नाबुल बीर
हुदमत की अपनी बुद्धि के बारे में मुरलित बनाए रखने के लिये बजीर
हर पड़ी हर पम उत्पुल रहते थ । वह धाये धाये और साह के कुछ
बोलने से पहले स्वयं कहने लगे—“गुस्ताखी मुसाफ हुदुरे धाली । काँ
साहेब की मुपगू से मानूम हुआ इस लड़की का मतला पुराना है ।
बमदवी न हो ती गुपाम भी जानने का स्वादिमान्द है हुदुर ने काँ
साहेब के दिन बरम को हकीकत बयाम किया है ?”

साह ने साधारण से उत्तर दिया—“हाँ हाँ इसबाद हुमेन । नहीं

साँ का कहना था, हमारे कुकूच के रास्ते में एक लड़की पिछले सात से बराबर हमारी राह में साँकों बिछाने लगी रहा करती है और हमसे मुहम्मद करती है। धाव मुहम्मद जिस आलून ने हमारे सबक परिवार की बही सब लड़की की माँ है।—”

शान्तिवती साहू क्या वह मुहम्मद की परिभाषा है ?—

‘हमने पहले इसे नकी साँ का बहन माना था बगीर साहेब। मगर धाव देखने पर मुहम्मद हुआ जैसे इनका कहना और मुनासिब नहीं। हम मजबूर हैं अपनी रिवाजा की ऐसी हस्तिबों की कद करने को जो साँकों अपने मुहम्मद का बड़े दिन में छिपाये सामीची से बर्बाद करती रहे। इसीलिए हमने उसे अपने हुकूम में हाजिर होने की बावत दी है।—”

बगीर साहेब इसके बाद कामोच हो गये। नकी साँ और साहू में फिर बातचीत शुरू हो गई। बगीर सुनते रहे। तात्पर्य एक ही था। नकी साँ साहू की निश्वास दिमाने को घरसक प्रबलशील थे कि मरि शय उनसे छुट्टा प्यार करती है और उनके बियोल में बूट-बूट कर अपनी जाग संका बेपी। साहू इसारों-इसारों में नकी साँ से इसका उपाय पूछने लगते। तब नकी साँ जैसे ही इसारों में साहू की मरियम के साथ मुता (विवाहिता पति के अतिरिक्त अन्य स्त्रियों की हरम में अविद्युत रूप से शाखित करने की रस्म) कर लेने की बावत देते मगर धावें।

कुछ देर पश्चात् साहू धावें साहू साहू बंदिन रवाना हो गये। नकी साँ बगीर से विद्युत्ते समय धावों में विजय की विभिन्न मुस्कान लिये वातेकुन कर गया। तब इसराय साँ विचारवस्तु सीधे मल्ला बिस्वर के महल जा पहुँचे। मयामीस बेगमों के पश्चात् एक नकी स्त्री के हरम में परापण की घटना साधारण नहीं। बूझी बेगम न केवल बगीर साहेब की सलाहगीर थी बल्कि कमजोर साहू की मदीर भी।

उनके पास हुकूमते अथवा की मलिका घामिया धीर बाजिर घनी बेटे की मां दोनों का दिस था। अथवा पर आने वाली हर बुर्बटना के लिये तब वह बुहरे बेम से क्यों न सुरला-समझ रही थी। वो ही तो व्यक्ति थे जिनको अपने बादशाह की बचकानी आशयों से सर्वाधिक परेशानी होती। एक मलिका किरार धीर हमरे नबीर इमदाद था। बम्बहाभिनी धरती मां की स्वतन्त्रता पर विपत्तियों के मंडराते बादलों का इन्हीं दोनों को पूर्वानुमान था धीर जब कभी कोई अचानक उपस्थित होता यही दोनों उठका हल हूँ निकालने में व्यस्त होते।

मलिका किरार ने पूरी कहानी सुन लेने के पश्चात् नबीर से प्रश्न किया - "क्या मामूली लड़कियों की तरह वह बाजिर घनी से मां को फायदा उठाने के लिये भ्रूक्षका का माटक कर रही है नबीर साहेब?"

"सायद नहीं मलिका हुकूर।" इमदाद हुसेन ने उत्तर दिया "मुझे डर है कहीं कोई साजिश न हो।"

"कैसी साजिश?"

"घंघेड़ों की कोई नयी आन। आता मलिका नकी का बजाए की ललक में अन्ध बुरा सब कुछ भूल चुके हैं धीर बुदा आने किस् दिन अपनी चाहत के लिए घंघेड़ों से कोई सीबा कर बैठें। आज मैंने उनकी धीर घाह की लुब इस लड़की के मुतास्मिक बातें सुनी। रपदा बटोरने वाली मामूली धीरत के लिए नकी का की विफारिस नामुमकिन बात है। क्या पता इस धीर कीम लड़की ने मुता के ऊपर कोई नया डिमांड उठ खड़ा हो धीर फिरंगी कोई नया बनेला धड़ा करे।"

"यकीनन। मगर आप नकी का जो समझाते क्यों नहीं नबीर साहेब कि वह ऐसी हरकतों से बाज्र धाय?"

"मैं सिर्फ समझाने तक महसूस नहीं मलिका घामिया। मैं उनके लिये बजाए भी छोड़ने को तैयार था। अफसोस घाह अथवा इसके लिये तैयार नहीं। लेकिन इसके मुतास्मिक अलम समझना नकी का को

महीं कुछ धाढ़े समय की है । आज तक बिना एक लफ्फ कहने का मौका मिले हमने घानवार कुकृत की है और किसी को ज़बसी नहीं उठाने दी । उन्हें चाहिए वह वस्तु को पहचानें और कोई ऐसा वस्तु काम न करे जिससे जानना उन्हें बुकसान पहुँचाने का मनहूस इरादा कर सके । मलिका घालिमा बहुत लाजुक है और दुश्मन मक्कार । क्या वह मुझ किम नहीं कि वो हुजूर कुछ साहू को इस मुठ से बाध रखें ?”

“नहीं नहीं बजीर साहू । हम जवानी और बुझाने की नाकामबाब जब मे अपनी इज्जत भीलाम होने के हक में नहीं । लकनऊ की तबाहीत में हरम की जलिकारों की बेसादार गिनती बड़ते चले जाना कोई बात नहीं । हम जैसे और क्या पत्र कर बाबिर घाली की रोफ मकते हैं । मतीने मे इस मयेपी जहूरी परेसापी बेइज्जती और हुनमदगूमी । मकी खां का जाल मामूली नहीं । उसके लिये कुछ आपकी कोई ठीका निजामना होगा ।

बजीर सोच में डूब गये । मलिका की बनीज कुछबुद्धार हुक्का सामने रख गई । मलिका ने मसी मुँह में लपवाई और मुकमुकाने लगी । तब तहूसा बजीर चौक उठे और उनके बेहरे पर मुस्तुपहट दिखाई दी ।

वह कुछ देर और मलिका घालिमा से बातें करते रहे और तब उठ कर कोनिय बजाते वही से चले गये ।

दोपहर इस चुली थी । बजीर अपने दीवानखाने में पहुँचे सम्मारे से बायोद घाल मिथौनी बैलते सोच में बैठे हुए थे । मलिका फिरर से बातचीत के बाद घाने बाधी गई मलिका के जम की नवी तैयारी का तयाम भार अपने कर्णों उठा जाने के बाद अब तक न बत । नैन से बैठ सके थे और न कोई छीक उपाय सोच सकें थे । दस्तगखान पर जदरा नम बहुरा बहुका रहा । बनीबी ने अपने हजमर्द मालिक की

मायाज और बरीदान पाया । तीन जानता या घबरा का सीपना बड़ीरघर की बिपड़ने वाली किस्मत खोलने के लिये भी जान है कोई रास्ता सोचने में कुरी तरह मस्तकफ है । रास्ता में मिला तो वह जानता या बहर कोई मुसीबत चाहेगी और नयी जाने वाली मतिरा मरियम वह ईसाई नफ़ी अपने साथ लायेगी शाह बरब की कोई बहर मुसीबत कोई बरबजनी कोई बेहरजती या कोई धियासी रातरंज की न बरब सुकने वाली बहरनाह शाह ।

मायाज यह भी कि शाहे बरब अपनी बमबोरी से बहरूर थे । नकी ता की बमबीसी घालों में उन्हें कभी अपने सिमाक बालाकी और मस्तारी का धामास नहीं होता था । बुधाम और भी हुबूरी की घात में वह बहाल की बहाल चाह के बरबे बरब की हुबूमत तक का बीरा कर सकता है बाबिब वाली कभी स्वप्न में भी सोचने की मूकता नहीं कर सकते थे । यह नकी ता चाहता क्या था ? उनके बरब का बबीर होना । और इमने अपनी इच्छापूर्ति के लिये क्या बना नहीं किया । रेजीडेंट के हथारे पर वह उनका बरबरीद गुलाब बन जाने पर तयार हो गया । शाहे बरब के बरिबिब मारा बहार जानता था रेजीडेंट के बरबेक मुमायने से बरबे बरबी और बिब-सम मम्बग्ग ब । क्यों ? बरिब की बानी तस्वीर में अपनी बहाल का मम्ब बिम्बु मुर्छित बनाये गकने के लिये वह बुरबियता के बरबे बिबों का हमदर्द बना रहना ठीक समझना था । बुक यह है घात इमे नहीं समझते । नहीं जानते यह बुरबियता बिबने मयाक बिबग्ग की मूक है । क्या नकी ता अपने मोह में पूरे बरब का मोह बेब जाने को धानुर नहीं ? ॥ और बरब है । बिम्बु कीन शाह को समझाद ? तीन उन्हें इन्ही मूकना है ? बह है बिबे बिबे मारा बरबज मोमा और बिबरद है । जो इमेका इमरों को बरब और मया नमकने का मुग्गतापूर्ण बिगुंय करते हैं । नकी ता तो नकी बिबकी हटि में स्वयं रेजीडेंट की

एक सज्जन मित्र सज्जन हजमर्द भीर मना सहयोगी सिद्ध होया है ।

भाज भाज की बटना से बजीर साहिब के सम्मुख धमर धकेली नकी लां की एकमात्र इच्छा का प्रश्न उपस्थित होना तो सम्भवतः वह न मलिका कदमर के मही बाटे धीर न शक्ति परीक्षा होते । धन नहीं धान से बहुत पहले वह नकी लां के हक में अपना घोड़ा छोड़ देने के लिये तैयार थे । बरे दरबार में उन्होंने इस प्रकार की बोधदा कर दी थी कि धन के किसी भी सन्ने मित्र के पक्ष में वह अपनी नही सदैव छोड़ने को समुक्त हैं । परन्तु नकी लां शायद बान से अधिक सीमने का प्राप्त करने के लक्ष्य में था । उधर साह ने कुछ असमर्थता प्रकट की थीर इतर स्वयं नकी ला ने धमीगुहीता से भाव्य कर जाना कि वह ऐसी समुक्त लक्षणाओं से धन के कमेने में धीर न भाग करें ।

नकी लां छोटा बूज पीठा बंधा नहीं था । बाता सतटा वह रहा था तो उसने स्वयं इसबाव हुसैन साहेब के शीव को अपना शीव बना डालने का निश्चय किया धीर उसमें वह सफल हुआ । सारे धन के उसके कैसने को बाद की धीर उसे धन धीर धन के हुक्काओं का सज्जन हजमर्द माना । बीजा कुटिल नीतिव सिद्ध हुआ नकी लां । फिर सज्जन सारे धन में प्रथम कठ खड़ा हुआ नकी लां की पुत्री प्रत्यक्ष-स्नुस्तान धीम साह धन की बेबन बन जाने वाली है । वह बात निरापार नहीं थी । सीमने धीर प्राप्त करने के लिये नकी लां ने नया शीव खेला था जिसके अनुमान पर बजीर मन ही मन बहुत होते । लड़की बलिका बने बामाद बाधदाह हो तो बीज शक्ति नकी लां की बजीर बनने से रोक सकेगी ? दीक-टीक इसबाव हुसैन आमोद रहे । धन उन्हें सखीय था । बजीर हो जाने के बाद धन की हुसैन इस निवाह के बाद उनकी अपनी हुसैन ही बाधेगी । उनकी अपनी लड़की की हुसैन । धीर मनीगी धीर पर तब नकी लां धन का सीरा प्राप्तगी से करने पर तयार न हो सके । साह धन के साप साप

बाबिब वाली जाह

उनकी बेटी की किस्मत का फैसला भी कुछ उनके हाथों या बायेमा और वह कोई छलत करम न उठाने पर मजबूर होये। इसलिये वह कामोच रहे। अगर किस्मत को नकी का का यह बांब भी पसन्द न आया। मुस्ताना उनकी बेटी ने निकाह से साफ इन्कार कर दिया। वह आजाद क्या नकदी की बिते नकी कां न मां के बाद बड़े ताड़ प्यार से पाला था। उसने साफ कह दिया वह एक ऐसे बालाहा की बीबी बनने के स्थान पर बिसकी पहले ही समगित पलिया हों किसी फकीर की औरत बनना ज्यादा पसन्द करेगी जो अपनी एकमात्र पत्नी के कुछ और सम्मोच के लिए अपनी छलित घर प्रयत्न करेगा। नकी का उते मजबूर न कर सके और फिर एक बार बजारत की कुर्बी के लिये नकी का को बस्त का इस्तजार करना पड़ा।

घाब को हुषा, कम जो होने वाला था ईसाई नकदी के साथ निकाह के बाद नकी का कौन नाबिब पनपन की राह देल रहे मे घस्तिमत क्या थी इन सब बिचारों से अधिक इसबाब का को भव वा बच के दुर्माय्य का। नकी का बजारत के लिये ऐसा करते साधारण त्त भी बजारत उन्हें मिल जाती। यह और अधिक साधारण बात थी। लेकिन बजीर जानते थे इस बात के पीछे महज बजारत की कुर्बी ही लक्ष्य नहीं। बिसली बार एक नये मुता के घरसर पर साह के बिज्ज रेजीडेंट ने नबनर जमरत को सम्बा बीड़ा बिराध पत्र भेजा था जिसके उत्तर में साह के पास बने राजों में दिखायत भेजी गई कि वह सन् १८०१ की सन्धि के अनुसार एक प्रच्छा घामक मित्र होने के लिये नाबिबिक बल पर कोई ध्यान नहीं दे रहे। ईमे घरमानबक राज्य प। साह समनऊ के पूर्व-शासकों ने नबउ करम पर बबन के लिये एय्यासी और मस्ती के दौर में अपने फरायज भुसा देन के लिये बमर बन रहे हैं। यह मुता नहीं बिना जा रहा बाबत दी जा रही है प्रबब की बरबादी को। एक पल के ऊपर साह प्रबब का तापों रुपये सान

काम करने होते हैं जो रिघाया के बिना किसी धन्य काम में लगे बिना जा सकते हैं। साहू इस मामूली बात पर कभी ध्यान नहीं दे पाते। धीरे न जाने क्या बना। लेकिन साहू भी थक गये। उन्होंने गवर्नर जनरल को कस कर बचाव भेजा। यह जनका बिजो मुमामला है। निकाल के पहले निकाल के बाहर होने वाले किन्तुम जर्ज का एतल बच-साभा समापना साहू रेजीडेंट को बच नहीं देता। धन्य की रिघाया कुछ है या नाकुच यह गवर्नर जनरल कुछ नहीं धाकर देख सकते हैं। गवर्नर जनरल का बचाव न मिला। धारी हो गई। नयी नतिका के महलो में कदम रक्खा। पाइ पहले के समान काम काम करते रहे। समस्त हुकुमत के कहीं कमजोरी पैदा न हुई। बात इस गई

पर इस बार ऐसा नहीं हो सका। सड़को पर करिवाही बनी टेवू बहाने वाली कोई और नज्द्वर धीरे जनकाजी सड़की साही हरम में कदम जोली करे तो न ठिफं मुक्ता नीलबिपी के बिनाह भी धनि प्रगतिगत होमी वरम स्वयं रेजीडेंट को बहुत कुछ कहने का अवसर मिला जायेगा। यह है धन्य का धानवार बाधसाह जो इतिहा की धाय में सड़कियों का जुलाव करते वक्त न नज्द्वर देलता है न कामदान न नाम देलता है धीरे न इज्जत धीरे जिसके दरबार में हर ऐसी बेरी नलू खेरी सड़की की हू करिवाह के बचाव में खुद बाधसाह का इबाध हरम का दरवाजा। कोलने की नचलता रहता है। बदनामी धीरे बदनामी। धायर नकी ला धपनी हार के बक कर रेजीडेंट के बिल भये हों धीरे इसी कमीशन से साहू धन्य की बेइज्जत करना चाहते हों। इमदाद को नही लीक था। यही राज नजर धाया को धाय मुबह ध बार बार उनकी भाँपों के धाय भ्रमता रहा। वक्त बरम भ्रम है। पहले के कलूत का गवर्नर जनरल को सही धीरे मुनासिब बचाव देकर उतका मुह बन्द कर दिया गया था मगर इस बार क्या बचाव दिया जायेगा, जब सबाव पैदा होगा कि क्या बाकई साहू ने किसी

बाबिब घसी घाह

मेरी लड़की से निवाह किया है जो न मुसलमान है और न हिन्दू, जो न किसी धर्म के आनंदान की है न किसी बड़े बाप की बेटी। बरिबिब जिसकी मकसी मोहब्बत का हम नुब उसकी माँ ने बाबघाह के बसते हुए काफले को रोक कर दिया था। मसा क्या बबाब होगा इसका ? नहीं कि कुछ नहीं। घाहे प्रबध मूर्ख है या फिर है ऐय्यास बबबलन और हुकूमत करने के बिस्फुल नापहल। ठीक जैसे जिसके तिलाफ सन् एक की खनि में उस समय के ब्रिटिश नीतिज्ञों ने स्पेटोकिड की थी कि ऐसे साधकों के तत्कालगीन होत ही कम्पनी सरकार सम्मुख मजबूर हो कर प्रबध की हुकूमत अपने बन्ने में लेगी। घाह ! क्या बबीर हमदाब हुवेम के बिम्बा रहत ऐसा दिन कभी आयेगा ? कभी प्रबध की हुकूमत प्रबध के कण्ठ हाकिमों से निकल कर भूटे और फोबी व्यापारियों की टट में छिप जायेगी ? हा। मकी का यही बाहूत है और मलिका दिवबर ने इसी की रोकथाम का उत्तरदायित्व बबीर को सौंपा है। देखना यह है जीत होगी तो बिमबी।

मकी ला की बेटी प्रबधकानुस्नुस्वान जितना अपने पिता को समझती थी उतना ही बबीर हमदाब ना और प्रबध के बाबघाह बाबिब घसी घाह को भी।

उधे बिबी ने बताया नहीं बिम्बु अपने और घाह क मुता का प्रसंग उल्टे ही वह गुरलत माप गई इसक पीछे उसके पिता की मौन ही मनोवृत्ति काम कर रही है।

प्रबध की त्रुमि पर उसका जगम हुआ था लसनऊ क बरें-बरें से उसे गहरा लगाव था घरा अपने मोभी पिता के हाथों प्रबध की बजा-रत के बादुक से हुकूमत को मर्याहत होने से बचान के सिधे उसने बिबाह से साफ इन्कार कर दिया। कारण यही था। वह हमदाब म

बैसे योग्य व्यक्ति के हाथों हुजूमत की बाण्डोर खीन कर नकी का बैसे स्मार्थी घोर घमोघ व्यक्ति के हाथों सँभलने में तनिक सहायक नहीं होना चाहती थी। उसने बहाना लिया वह बहुपत्नीक पति की विवाहिता नहीं होना चाहती हालांकि यह एकदम निर्बल था चूंकि मुठल मानी तहजीब के अनुसार उच्च-मुस्लिम परिवारों में कोई एक घर ऐसा न होया वहा पति एक घोर पलियाँ घनेक व हों। उन दिनों यह सत्तनक की छास थी कि साधारण जन-समाज में छाह की देखा देकी अनेक पलियों घोर उप पलियों का स्वाग बधा रहे।

मुस्ताफा हमबार का को बहुत मानती थी। बेउम्रेम की घसाधारण अनुमति से उस बूढ़े बजीर के प्रति घनायास भर में घाघर का घाघ उदम हो चुका था जो नकी का की घनर्बल घिकायतों के बावजूद मुस्ताफा के हृदय में रिल प्रति दिन वनपना रहा। यूँ बजीर नकी का के सब से बड़े प्रतिस्पर्धी व बजारत पर उन्होंने नाब । घमान घपना घम बमाया हुआ था किन्तु नकी का घोर उनके परिवार में घाना जाना घौर घेल मिल्सत थी। नकी का कपटी घाघ से कघाघित यह अकट नहीं होने देना चाहता था कि उसमें हमबार का के प्रति कोई कुबाधना है। मुस्ताफा से बजीर घक्कर घिला करते घौर घजनीति की बहुत सी बातें हुआ करतीं। नकी का उठ समय उपस्थित रहते या अनुपस्थित होम पर मुस्ताफा घपनी तीकण विचार घल्लि से बूँ बजीर का दिल जीत लेती। बिल लमघ उसके विवाह का प्रघंघ उठा, नकी का के घनेक घयतों के बावजूद मुस्ताफा तत्पर न हुई, लव इन बाद ला नकी का की तिघारिय वर उसे ममान घये। उन समय मुस्ताफा का घल्लर्मुल लपनी हुई घाघ के ममान घयघ के प्रेम में लव बने लवा घौर ललने जो बुध बहा बजीर लससे विनुग्न रहे। बास्तव में साधारण लकड़ियों के ममान घाही हरक का बीह मुस्ताफा में भी कम नहीं था किन्तु उसके पीछे लिठ भावना के घल्लर्घव मुस्ताफा

के लिये एक बार घसने घसीड़ति देकर सधा के लिये प्रसंग समायत्त कर दिया था। एक बार फिर बजीर के मुख से बड़ी बात सुनी तो मुस्ताना सहसा अपने सौन्दर्यधाली मुख से अपनी बिम्बा व्यक्त किये बिना न रह सकी।

बजीर बोले 'तुम अच्छी तरह जानती हो बेटी घाह के घाव निकाह में तुम्हारे इन्कार की वजह क्या थी। तुम धबध से मोहम्बत करती हो। इस सरजमीन के लिये तुम्हारे दिल में बड़ी से बड़ी कुरबानी करने के जरबात मौजूद है। उन्हीं जरबात का वास्ता लेकर मैं तुमसे तुम्हाय कौन मांगने आया हूँ। बाधा करो तुम घाह से मुठा करने पर अब इन्कार नहीं करोगी। अगर यह कुरबानी है, तो बसुखी इस पर तैयार हो आओगी।'

'नहीं' मुस्ताना ने हड़ता से उत्तर दिया "मुस्ताबी मुझाक बचा जान में कतमन ऐसी कुरबानी के हक में नहीं जिससे कुर अपना बर उबाह हो। मेरी तरह आप भी जानते हैं, इस मुठा से अम्मानान का मुझा क्या था। क्या आप की स्वाहिष है उसे पूरा होने दिया जाये ? धबध की हुकूमत एक काबिल अफसर से महकम कर ॥ जाये। फिरबी अफसरान के एक नुमायन्ने के हावा यहां की मैकी बदी की किस्मत खीप दी जाये ? नहीं मैं ऐसा कभी न कर सकूमी।"

तुम हातात से नाफिल हो मुस्ताना बेटी। नहीं जानती यहां क्या कुछ होने वाला है। नजारत के लिये नहीं अब कुर घाही कानरान की मुघहामी धीर हुकूमत की बेहतरी के लिये तुम्हें यह कुर बानी देनी होगी।"

'क्यों आला बुजुर्गवार ? मैं समझी नहीं।'

'गुहा जाने यह क्या लाजिब है धीर कील इसे समझ सका है। फिलहाल हमारे सामने एक ऐसी किस्मत लड़की का बसला बरपरा है जो तुम्हारे बाबिर साहेब के बकील गाहे धबध की मोहम्बत में

बाजिद घसी दाह

मिथने एक घात से शाही पुष्प के रास्ते में धाखें बिछाये उनका मजरे इनायत की स्वादिष्टगार थी। घाज उसका सबब पूरा हुआ और जन्म शाही हरम का दरवाजा फिर एक नयी मलिका के लिये खुल जायेगा। तुम समझी हमका मतलब क्या है ?

“नहीं बचावान।”

“शायद नकी लो इस बार बचाव की लत से कही घाये बड़ कर फिरंगी रेजिडेंट के दरबारों से नाचने का फैसला कर चुके हैं। यह लड़की हरम में पहुँचने पर क्या कुछ करेगी खुदा जाने मगर बाहिर है, नकी लो दाहें अबब को किसी नयी मुसीबत में उसझाने की तैयारी कर रहे हैं।”

“यह मझा हुजूर का पुन्म है।

एक बेटी के नाते तुम्हें ऐसा कहन बा कोई हज नहीं मुस्ताना। नकी लो तुम्हारे बाजिद हैं और हमेशा तुम्हारी और अपनी मनाई के बारे में साचे होते।”

“हम दोनों की मनाई के बार कुछ और भी है बचावान जिसके लिये जम्हानि कमी सोचना संभारा नहीं किया। पूरे अबब की बेहतरी क्या मझा हुजूर के कम्बों पर उसका कोई बाझ नहीं ?”

“शायद यही बीम है जो वह न निकं धपन बलि शाही बम्बों से भी उगारना चाहते हैं। बहुरजाल बेटी अबब को तुम्हारी कुरबानी मतमूब है। मरियम हरम में जा रही है। उसकी मोहब्बत से दाहें अबब पहुँचे ही मुतास्मिर हैं। खुदा न करे, मरियम के दिल में मुनाह हुआ तो वह बाजिद घसी दाह को खुदकियों में गुमराह कर डालगी। बड़े बड़े ममले बरपेण हैं। दाह को सही मन्बरा देने वाली एक भी मलिका शाही हरम में मौजूद नहीं। वहीं यह मरियम उन सब में ऊपर उठ गई तो गुम्ब हो जायेगा। उनके मुबमूरत और हसीन बेहरे की घाग में दाहें अबब के कैमले बान और ममहूम बाजिद हा लपेटे हैं। उनके

तीन

साहू के इस मुता की चर्चा सारे मजदूरों में खीर खीर से छठ बढ़ी हुई। सत्य हीराज खीर परेशान थे। एक यामूनी मढ़की मचा नक घामे खीर साहू को इतना प्रभावित कर ले कि वह चार दिन तक बरबस उसके महल में पड़े रहें, खीर सरकारी काम की तरफ से मुह मोड़े रहें उनके विचार का विषय था। बाबाओं उठीं किन्तु खीर न पकड़ सकी। धाम्नीसम का रूप लेने से पहले-पहले मस्का किम्बर का ऐसा निकसा जिसमें उन्होंने मुता पर अपनी रजामन्दी बाहिर कर दी। खबर बखीर की सखी खीर इम्तजाम में उत्पन्ना वृत्त काण्ड की जिससे सोगों का निष्पन्न साकार होने से रह गया।

मैकिन कुछ समझदार व्यक्ति ऐसे थे जिन्होंने साहू का यह बाबलु विनासिता की खीर नया करम मान लिया खीर मन पर भार प्रतीत किया। वे बेचारे नहीं जानते थे अस्तित्व क्या है। बादसाह की अकेली जान जिसमें अजाना का गर्म भून खीर जिसकी बुद्धि से अल कपट कोसों दूर रहे, बासानी से किसी के चमूज में उलझ सकता है वह नहीं समझ सके। उनमें मुख्य मियां जान भी थे। नहीं मियां जान जिन्होंने सखी के समय खीर की के समुच्च साहू के विरोध में स्पष्ट रूप से अपना दृष्टिकोण प्रकट कर दिया था।

मियां जान का मकाम सराय मोहल्ले के आखिरी हिस्से में था। वह साधारण स्थिति के आदमी थे। उनके बुजुर्ग पक्ष के नबाओं की निरमल करते-करते परभोड़ सिपारे थे। कुछ महीने पहले भुर मियां जान दाही बाबर्जीजाने में भुम्बाजिम के धौहरे पर काम करत थे। फिर अचानक एक दिन बादसाह बाहिर घसी के हुन स वह

रेजीडेंसी में तैनात किये गये । रेजीडेंट ने अपने हिन्दोस्तानी मेहमानों की तबाबेह के सिमसिमे में यह एक भारी मुसीबत बताई थी कि उनके पास कोई काम का साधनी नहीं जो बाहरबीछाने की देख-भाल कर सके । मियां जान को छाही घाता पर इस नयी निमुक्ति का स्वागत करना पड़ा । किन्तु कुछ ही दिन बीतने पर उनका मन रेजीडेंट से ऊब गया । वह बहुत बहमिबाज साबित हुआ । सब के बाधिम्यों के लिये उसके दिल में न कोई मोहभल थी और न इरज्ज । यहां तक कि छाह के लिये छप्तर ऐसे छच्छों का प्रयोग कर बैठता जो मियां जान को बुरे मयठे । वह सभी सोच रहा था कैसे बापिस महल पहुँचें कि एक दिन मोज्ज के समय किसी मामूली बात पर रेजीडेंट से झगड़ा हो गया । वास्तविकता छाही सामान्यमान की थी । मियां जान से सन्न न हुआ और उसने रेजीडेंट को खुसे मुँह जबाब दे दिये । परिणाम स्वल्प छाह तक उसकी तिकायत पहुँची और उसे नीकरी में निकाल दिया गया । तब से वह बेकार बर बैठा है । पत्नी का बहुत दिन पूर्व स्वर्गवास हो चुका था एक जबान मड़का था जिसे उसने मर-मर कर तानीम बी बी और सब जमी के साथ अपनी जमा पुत्री के सहारे बुजर-बसर कर रहा था ।

लेकिन मियां जान की नीकरी से निवासे जाने पर ज्यादा निमोम नहीं था । यह कहना एकदम सलत होया कि वह इस घटना से छाह का छद्म बन बैठा हो । नहीं बल्कि अपने छाह से वह अब भी मोहभल करता था और उस प्यार में दुगनी और बीपुनी बड़ोतरी उन समय से हो गई जब रेजीडेंसी-जाल में उसने फिरंगी इटिकौण का कुछ-कुछ अनुमान कर लिया । वहाँ उसे प्रतीत होता रहा था जैसे यह लोग छाहे सबब के सब से बड़े दुश्मन हों और उनके खिलाफ कोई भारी पद्धत्य करने की तैयारी कर रहे हों । अपने बादछाह की बर बारी के बारे में तो सोचना तक उनके लिये मुनाह था । लेकिन अब

बहू देखता कि जनकी तरह उसका बाबसाहू इस बहमाघ पोकेबाड़ी के बाबबर नहीं है तो बहू झूठ हो जाता । हर उस घाही ऐलान का बाब घाबरण पर जमे जीव घाहा जिसमें बरत-सी घताबबानी के घाह के बहुरा मुकसाम पार्श्वमे की सम्भावना रहती ; उस दिन सबापी के समय में इसी प्रेरणा के बहू जीव की को भवबर ईने पर कडाक हो गया का धीर मरियम के निकट के सदाचार पर भी बहू इसी तरह घाब बहूना हो उठा जिस तरह मट्टी में प्रवेश करते ही बमकदार सौन मयावक तरल के रूप में हाव वर मुससामे की तैयारी करता है ।

चोरे की मियां खान के पड़ीसी थे । ठिठकिनों के उन्हें बिसेपतप इसलिए बुझा की क्योंकि उनके घाबरण हमारे सनातन से बने घाने बाने घाबरण से सर्वेका विपरीत थे । धीर घाह से प्रेम होना उनके लिये भी घाबरमक का भूँकि बहू धीर उनके माता-पिता सब घाबर की बरती पर बगम लेने का बीरव मानते थे । ठिठ की अवमीठ इसी रहा करते कि कुपेसाम किसी परा का समर्पन या विरोध करना उनकी सामर्थ्य से बाहर का ।

मरियम के बारे में मियां खान धीर चोरे की में बहुत से तर्क बितर्क हुए थे । एक का मत था बाबसाहू बाबल होते का रहे हैं तो बूझरा बदी जमान से इसका समर्पन करता किन्तु कहता कि जनता की घाही जीवन पर ठीका टिप्पणी करने का कोई अधिकार नहीं । मियां खान की दृष्टि में रिती ईसाई महिला को मुसलमान बना विवाह का सेना न केवल राजनीतिक घाबरण का बरतु सामाजिक भी क्योंकि इस संमति से उत्पन्न होने वाली धीमाहका रक्त-कर्म संस्क्रुतियों के बिमल से एनबम धुपित धीर बुझात्पह हो जायगा । चोरेजी का बहूना का ईसाई हो जाने पर भी भारतीय रिचियों के रक्त में भारतीयता की अधिकता देख रहेरी धीर रक्त धुपित मानना बेजार है । कहने का तात्पर्य यह कि मियां खान के पूरी रात्रि से इस मुता का विरोध किया धीर चोरे की

ने अपनी धारत के अनुसार इस विरोध की अपने गतिविधि के बल से समर्थन करने के बावजूद ऐसा कोई सम्म स्वीकार नहीं किया जो उन्हें छाह वा नयी महिला सुस्तान मरियम की दृष्टि में अभिमुखित प्रोत्ति करा सके ।

एक धीर व्यक्ति ने जिन्होंने इस मुता का विरोध किया । वह है ब्रैग्डन । छाही मुभाजमत में किसी छोहरे पर है । लेकिन इसके साथ वह अपना व्यापार प्रत्य कर रहे है । क्यों से लखनऊ में रह रहे है । बाब्रिद घसी छाह के सामने में उन्होंने 'सैन्टुल स्टार' नामी एक प्रसार निकाल लिया था । इसके प्रतिष्ठित वह छाह के सच्चे हमदर्द धीर मित्र के मरियम के निराह पर उन्होंने छाह को समझाने का प्रयत्न किया । धमीनुहीना को जिस दिन छाह ने अपना आदेश दिया था जिसमें मरियम का सिताब धीर उसके हथकण आदि की तकवील थी उसी दिन धमीनुहीना ब्रैग्डन के पास बीड़ आए । बजीर ब्रैग्डन की मेकनीयसी धीर इन्सानियत जानते है । सोच विचार के बाद बादछाह को रोकने का एक यही रास्ता उन्हें दृष्टिगोचर हुआ । ब्रैग्डन बजीर की रांका पर सह्यत हो गए धीर अगल दिन छाह से मिलने आए । छाह के साथ रातरंज की बाबी खेलने बैठे धीर उसी वक्त इसका जिह्न किया । बादछाह ब्रैग्डन के प्रतिवाद को आरम्भ में मजाक समझते रहे, परन्तु जब ब्रैग्डन ने मग्मीय्या के साथ छाह से निवेदन लिया कि वह इस मुता के द्वारा धंधाओं को कुछ कहने का मौका न दें तो छाहे प्रवच कद हो गए । ब्रैग्डन की मरियम बानी बात पीछे डकेन वह ब्रैग्डन के ऊपर आरोप लगाने लगे कि उन्होंने क्यों बादछाह प्रवच को छोड़िन यह कह कर की कि रेडीहें उनके निजी मुभाजमत में दखल देने की पुरंत कर सकता है । ब्रैग्डन के पास इसका कोई उत्तर न था । फिर भी उन्होंने समझना चाहा 'एक बादछाह के लिए क्या मुघ मते निजी होते हैं क्या नहीं इसकी तकवील और मजेस्टी को समझाना मानुषिकन

है। धातु न लड़ी लेकिन कम यह मुमकिन है रेजीडेंट मन्त्रीर जनरल को जिस वक्त धापके बिधाक कुछ रिपोर्ट मिले तो उसमें एक यह बाक्या भी धामिल कर से कि बाबसाह ने एक ऐसी ईसाई लड़की से मुला कर लिया जो न तो धाला खानदान से तास्तुक रखती है और न ठीकी ताथीय से मुबंक है।”

बाबसाह बोले—“मिस्टर ब्रैगन किसी लड़की की मोहब्बत की परछ उसके ऊँचे खानदान से तास्तुक रखने पर ही की जाती तो हम धापकी बात पर लवजबोह करते। लेकिन हमारा क्याम है जहाँ पर बफा और मोहब्बत का लवाल बैरा हो वहाँ किसी का खानदान नहीं उसकी धपनी घैरछ और उसकी धपनी खलिखत काज होती है। मरि यम की मोहब्बत ने हमें बाकई मुतासिर किया है, हम तस्तीम करते हैं और धन हमारा यह कैसमा किसी सुरत बदल नहीं सकता।”

इतने ठोस उत्तर के बाद ब्रैगन के लिए धावे का पस्ता बन्द बा। वह पठ कर बैठे धाए। लेकिन उन्होंने मुला होने से पहले ही बार धपने धलबार में इन मुला के सम्बन्ध की धपनी दिप्लिखी सम्पादकीय के रूप में लिख लाली। बाबसाह का लखरनबीस रोज नियम से बाबसाह की लखरें मुलाया करना बा। कहीं लखरों में ब्रैगन के धलबार की लखी की। धाह मुनते ही धावकबूसा हो गए और उन्होंने सुरत ब्रैगन की धपने हज़ूर में पेथ किए जाने का हुबन दिया। ब्रैगन इसकी धाया कर रहा बा। वह धामि से धाह की बातें मुनने की प्रतीता करने लमा। धाह ने जबाब माँगा तो लड़ी धाहस्तबी से जबाब दे दिया—“मेरी लखर में जो बीज पड़ी है मैं धपने धलबार में उसे बीती ही धाया करना हूँ। और मैजिस्टी उससे लफा हुए इसका मुझे लख धलबीस है।”

बाबसाह ने लवाल किया “और धपनी लखी से इन धापका धलबार बन्द करना यकते हैं मिस्टर ब्रैगन धाप यह भी बाजते होंगे।”

“बाजता हूँ। ब्रैगन ने कहा “लेकिन इसका यह ललल लड़ी कि

मैं सच्चाई से मुँह मोड़ भुंगा। आप मेरे बाबसाह नहीं मेरे दोस्त भी हैं। मैं अपनी जानकारी में आपको ऐसा कोई काम नहीं करने दूँगा जो आपकी छान के खिलाफ हो।”

बाजिब धली दाह इस उत्तर के बाद कुछ समय धाम्ति से सोचते रहे और तब अपने स्वाग में उठ कर ब्रैडन के करीब आ गये। उन्होंने इस बिदेसी मित्र को अपने रॉक में भर लिया और मुस्कुराते हुए कहने लगे “हो सकता है हम प्रसती पर हों और मरियम बगम के बारे में हमारा फैसला चलत हो। लेकिन दोस्त तुम जैसे छद्मीयों पर हमें ठाढ़ा पड़ रहेगा। तुम हमारे सच्चे हमबद हो। कुछ देर के लिये हमारे तिर घैठान खार हो गया था और हम तुम पर खड़ा हो गये थे। मिस्टर ब्रैडन हमें उस मुस्ताफी के लिए मुआफ करना।”

ब्रैडन की घाँसों में धाम्ति घुलकने लगे। वह दाह के हाथों को अपने हाथों में ले और-और से हिलाने लगे। इस प्रकार दाह का श्मेक समाप्त हो गया मगर मरियम की समस्या क्यों की त्यों रही। बादसाह ने ब्रैडन को बठा दिया जब वह अपनी कैमला नहीं बबल सफ़े चूँकि इसका बाकायदा ऐलान हो चुका है। ब्रैडन नेक और घरीफ बादसाह की इस बनील पर मतमस्तक हो गये और कोई उत्तर न बन पड़ा। जबमर निमने पर उन्होंने प्रमीनुहीमा से भी कह दिया “अबय के घाँसाह ने खिलाफ घायद अन्साहतामा भी साजिब करने का फैसला कर चुका है बजारे धामा। उनकी सबसे बड़ी बदकिस्मती यही है कि वह बाबसा नेक और मोने हैं। दुनिया उनकी लबाह करने के लिए चाहे कंठा घोपा क्यों न वे और वह लाभोयी से सब कुछ सिर्फ इसलिए बेकने पर मजबूर रहेंगे कि उन्हें किसी पर नाश्तीनामी नहीं है।

बजारे लुब इस तथ्य ने भलीभांति पचिबिच गे। अब उन्होंने अपनी तिर मुजा लिया और ब्रैडन क कपन की स्वीकृति दी।

मुजा के बाद भी बाबत में रेजीडेंट और बादसाह के सभी दात

उपस्थित हुए, लेकिन वीर्यम के कसमें जाने से इन्कार कर दिया। और इसके बाद आगे चल कर बार-बार ॥ दिन बीतने पर जब बाह के परिवार का प्रभाव अपने आप पर बलुची स्वीकार कर लिया और बिना काँटु बाड़ी काम-काज से छुट्टी लेकर बैठ रहे तो वीर्यम को बहुत बुरा हुआ। उन्होंने 'सिम्रन स्टार' का आवा सञ्चालित करवाया की कनचोरी पर निकल आया। इसकी सूचना बाह के घर तक पहुँची। लेकिन इस बार उन्हें नींद आने के स्थान बड़े खोर की हँसी आई। और अपने ही दिव बह बाकाबहा सफ़लतमन्त्रित बाकर अपना काम-काज देखने लगे।

मिर्जा जाल के बाहिरबाह का नाम इबरात था। पिता की जमानत की के सहारे धारण और ऐस की जिनगी बुझारना उसका मन था। बीमारी के चक्कर में बहुत दिनों कुपनेपाक के कलाव रटने के बाद जमानत का जमानत बंदोबी लाबीम और बंदोबी सम्बन्ध की ओर हुआ और अपने एक बंदोबी से बटमट दो-बार मुस्तके पड़ गयी। लेकिन हमर की ब्यावा बिनी तक साक्षरता नहीं दिया। वह वह दिन के जब बाह के घर के करतब बलगत में दोरी धारणी और संवीत व नृत्य का बोलबाला था। बनी-बनी और बर-बर धावर मौजूब के और हर बीछे हर बेसेवर नाटक बंढलियों के इतर व औ मुलावे वर दूर-दूर अपने मन की बार पाम जाती रहती थी। बाहों, लबाबों और नर्तकियों की भी भरपूर बढ़ावा मिल रहा था। इसलिये बाह के निज बंढली की भी इसी का शोक खाया। वहने दोरी धारणी का और रहा और अन्त में नाच जाने की प्रवृत्ति पैदा हुई। धारण हुआ लामपट्टों के बनि से। फिर एक नाटक बंढली की नींव डाली गई। नाम पड़ा धारणा नाटक कम्पनी। बड़ा लिखा भी थी था इस बंढली के चक्कर में धीरे धीरे

मूना जाने लगा । प्रतिदिन इसका प्रभाव इस मित्र मंडली पर पड़ने लगा । बीरे बीरे व्यवस्था यहाँ तक पहुँची कि चर से दो-दो बार-बार दिन गायब रहने के बाद रियाज निमा जाने लगा । इमरत में उसके सरगना । धीरे मानमा पड़ेगा कुछ दिनों बाद बाहाना माटक मंडली का नाम मजमूद में प्रसिद्ध हो गया । इमरत साहेब कुछ कोई काम नहीं करते थे । किन्तु उन्हें निर्दोश रहना था सकता है । मियाँ जान उनके वायलपन से तय था चुके थे । कई बार वाय धाम करने के लिये कहा, लेकिन उनका बीक न कम होना था धीरे न हुआ । जब हात्त मइ हो गई थी कि सरेशाम वह बाहाना माटक मंडली के इतर तयरीफ से बाते थे धीरे रात के तीन-तीन बार बार बजे तक वहीं रहा करते । फिर चर धाकर दोपहर एक बजे तक सोया करते । मियाँ जान उनके इस प्रोगाम से एकदम परेशान था चुके थे ।

उस दिन मियाँ जान बीरे बी से तर्क-वितर्क के बाद बहुत ज़न्ताये हुए घर धाम । धाम हो चुकी थी । इमरत इस वक्त तक चर से चमा जाया करता था । आज बबलिसमती से चर मोड़ल था । उसके साथ बाहर के बैठकजाने में एक सांजला नीमजान धीरे बैठा हुआ था । उनके हाथ में जंटेबी का धखबार था । दोनों कुछ विचार विमर्श कर रहे थे जब मियाँ जान ने बैठकजाने में प्रवेश दिया ।

दूसरा नीमजान जिसने बिलकैक रईसजाओं की पोशाक पहन रखी थी धीरे ठेक इस मया रक्ता था मियाँ जान को देखते ही अपने स्थान से उठ सड़ा हुआ । लेकिन मियाँ जान उसकी दायन से चिढ़ गये । उन्होंने एक बार उसे कुछ धीरे सब इमरत की धीरे ध्येपपूर्ण हट्टि दातते हुए पूछा 'जवा धाज जगाब नाथ गाने का रियाज मजान पर ही करने का इरादा कर रहे हैं जो इन नचकदया सिहाब को मुनवा दिया है ?'

सिहाब नाम था उस नीमजान का जो इमरत के साथ बैठा हुआ था । मियाँ जान की बात सुनते ही उसके चेहरे पर सकेरी था गई थी

जब भर बिगड़ पड़े रहने के बाद इधरत के उत्तर देने से पहले पहले वह बस्ती से कहने लगा 'नहीं नहीं क्या जान हन तो बैसे ही बातें कर रहे थे ।'

इधरत ने भी बतका समर्थन किया "हम खोम तो एक बकरी मत्तले पर घीर कर रहे थे सम्भा हुनूर । घीर जब तो मिहान ने खुद माचना माना छोड़ दिया है ।

"बड़ी मजली की । मियां खान ने ब्याप्य किया । "मला यह नाम कोई छोड़ने का है । वा वा । घरे वही बंधपाहे घाला खुद हीमों की तरह रहत और नाटक में मुर्खकई हासिम कण्ठे हों वही सनकी रिवाया पीछे क्यों रहे ? मिहान बेटा खुश के सिने तुम माच माना मत छोड़ देना । हां येरी एक इन्तजा बुरकर है । मुझ पर इतना करम करो कि इधरत को इस बहूपा जोक में मत फाँसो । मैं नहीं चाहता काम-आम करने की जगह यह भांडीं घीर नचनहपों की तरह माचता फिरे ।"

इधरत ने गहमपूर्वक इष्टि से अपने मित्र की घीर घाँसों ही घाँसों घास्वाहन दिया घीर कुछ मुस्कुरा कर पिता से बोला "घाव भी क्यात करते हैं सम्भा हुनूर । माच-माना कोई बुरी बला नहीं है । यह तो एक फन है । ऐसा फन जिसकी कह बड़े-बड़े मन्नात करते हैं । घाव देखि येगा एक दिन हमारी मंडली हिन्दोस्तान के गहके नम्बर पर काबज होगी और हम इससे लागों एए का आगवा ठठयेवे ।"

"बम-बस बर्गुरदार, बस ।" मियां खान कोय प्रकट करने लगे "लुहा के लिए ज्यादा कोने मत हाँको । मैं बहुत बखर तुम्हारा इन्तजाम किए देता हूँ । जब मैंने फैसला कर लिया है । या तो मैं रहूँगा या तुम्हारी नाटक मंडली घीर तुम्हारे दोस्त ।"

मियां खान इसका कहने के बाद भीतर जानने में चले गए । बीबी के बाद उनके रिश्ते की एक बूझी महन भी क्या घीर बँसहाय की उनके

बास धाकर उनकी देखभाल करने लगी थी। भीतर उस आदम में वह
हर एक इच्छा थीर सिद्दाह के बारे में झुनझुनाउ रहे। इसल मूम्नु
उठा हुआ सब कुछ सुनता रहा।

इसी बीच बैठकघाने में बार पाँच नौजवान भीर धा मये। इसल
ने उनका इन्तज्जाल करते हुए उन्हें समझा दिया कि किन तरह पात्र
जमाव बाज़िर साहेब बीजे जी के नाम अपनी बैठक इसी वस्ती खान
कर अखानक ही धा टपके हैं और अपनी अपनी सिद्दाह की बर-बबर सने
के बाह भीतर गए हैं। यज्जल यह कि वह सब कामोए रहे और
अपना दुम बसाहा न करें। आदम्नुह मिशों ने इसे स्वीकार दिया और
उस जनमें से एक न इसल से कहा "हम यहाँ बटन नहीं पाए हैं।
इस बलवार के बारे में तुम्हारी राय जानना चाहते हैं। तुम कहा ती
किरगियों की तरह किसी तरीक बापघाह की हूहमज समझ कर इस
बबर को हज्म कर जायें और कहो तो उस बबरपुह अंग्रेज से जाकर
सवाल करें कि वह हिम्बोम्पानी सहजोब का अलिक ब प नी नहीं
जानता तो उनके नामों पर अपनी केबी जैसी ज्ञान क्यों जमाता है।"

"बखान नहीं प्यारे कमल।" एक दूमेरे मापी न संघोबन दिया।
इस वर बहुत रोक्ते रोक्ते नी जब ने निम एक टहाका म्ग दिया।
इसल ने बार २ उस दरवाज की तरफ देखा शिबर जमक बाज़िर हूहुर
तयरीक स गए थे। और कुछ पम बीतन न बीतने मियां जान नहीं
तयरीक से पाए। मगर इन वस्ति सिद्दाह के जमावा एक हूहम और
जमा था। वह बीजे पाए बीजे बजे गए। इंगल बटिफ हो गया। उमन
अपने साधियों की और मम्बोमब कर कहा "राय जो दीम्नों की है
वही अपनी है बहरहाल इस्मै स्टार' वा 'सैम्पुल स्टार' का मा अम्बवार
है बहुत कहा है और शाहना नामक अपनी का नाम बुझाने।
तैयारियों कर रहा है।"

"यही ती बात है।" सिद्दाह बोला "हमने ठा मर-मर कर

घीर कोई प्रतिबाध न पाया तो धिम्बी से कहने लगा "जनाब हम घसवार के तिससिसे में ही बीम्बन साहेब से मिलना चाहते थे।"

"तब फरमाइये, मैं आपकी क्या सिधमत कर सकती हूँ?"

"धजी बात यह है कि " लिहाज घटक घटक कर कहने लगा "कि 'हम लोगों ने अभी कुछ दिन हुए कम्पनी बाघ के सामने बाबू मैदान में एक भाटक सेना का किरघन बीना। बड़ी मेहनत की थी हमने उसमें। घीर आपने अपने घसवार में उसके बारे में मेरा मतलब है कि

सिहाब कहते कहते कभी कल्ला घीर धिम्बी को देखने लगता घीर कभी अपने सानियों की तरफ धालें डठा सेता। उसकी बजान से बंते बाते नहीं निकल रही थीं। धिम्बी बड़ी दिक्कतपी से उसकी तरफ धालें नड़ाए हुए थी। हमसे सिहाब का हीज घीर भी जाता रहा ना। हफरत ने जब यह कैफियत देखी तो सिहाब को डाटता हुआ धिम्बी को अपनी घीर धार्कित करने के लिए कहने लगा 'जनाब सिहाब साहेब लुहा के लिये आप अपनी बजान को लबाब ही हैं तो बेहतर हीरा। हाँ बिस साहबा इजाजत हाँ तो मैं धर्ज कर कि हम लोग कहीं कहीं लघरीफ लगे हैं। हम आपके बालिव साहेब से इम्पाफ्ट करना है कि उन्होंने किरघन बी के बारे में कभी कुछ पढ़ा भी है ना नहीं।"

सड़पी लुन कर मुस्कराई घीर बोली—“जनाबमान! मुस्ताली मुमाठ ही तो मैं बाबू बिभाऊँ कि घसवार का सब काम मैं करती हूँ। रहा किरघन बी के बारे में कुछ पढ़ने का तो आपकी इजाजत से धर्ज करना होना कि लबाब पुराने से नहने आप लुह कृष्ण के बाबू का लही बोलना सीख धालें तो ज्यादा मुतालिह होता। आप को बायद यही दिवापत है कि हमारे घसवार के उनकी बुराई कहीं धाया की गई है?"

बाजिर घसी छाहू

ऐ समने इसका इस्तफाल किया है जिस तरह हमारा बावसाह करता है। दिन बहुमाने के करामे जिनसे बाजरी खुस धीर ताजा हो सकता है। जब इन सब की कमजोरी बनते जा रहे हैं। यही बी मेरी परेशानी मेरी दिक्कतें जो मेरे भक्तवार की हम कसर से बाहिर हुई। बरसुर बार—बुजुगों का कहना है इसी-मुझी नाच रंग गाना-बजाना उसी बस्त धरणा सवला है जब कोई खुसी हो। धीर बाजकन प्रबल पर चारों तरफ से मुसीबत छाई हुई है। इसके दुस्मन मुंह फाड़े इसकी तरफ देख रहे हैं। हम ऐसे मौके पर मस्ती से नाचते नूमते नाटकों में जसने रहें तो क्या हथ होवा। सिर्फ हमारी धीर हमारे मुक्त की बरबारी—”

इसरत” सहसा इसरत की पुबान से निकल गया ‘घाप कहना गया चाहते हैं, हम कुछ समझ नहीं सके।

“कुछ नहीं कहना चाहता गम्भीर बंश्वर ने जवाबी से उत्तर दिया ‘सिर्फ धर्म करना चाहता हूँ। घाप सब प्रबल धीर प्रबल का हुकूमत की बाग हैं। छाहू ने रहस्य धीर नाटक को अपनी जिन्दगी की एक बकरियात में गुमार किया हुआ है। पुरान न करे किसी दिन दूरी किहलपात में डूबे डूबे वह अपनी आलिसी सारों विन बामनै। लेकिन घाप को जिन्दा रहना है। बहुत दिन जिन्दा रहना है। अगर घाप चाहते हैं घाप घानवार जिन्दागी बसर करें धावाह मुक्त के धावाह बासिन्दे बन घान से जिन्दा रहें तो वह रहम धीर नाटक छोड़ बीजिए छोड़ बीजिए उस गलत तरीके को जिसे दिन बहुमाने का नाम हैकर घापने अपनी कमजोरी का बामन बना रखता है। बीजिए तैयारी एक जय की। उस जय की जो किसी भी बस्त उठ सगनी है। उस जय की जो घाप धीर घापनी जमीन के लिए, घापके बावसाह धीर बावसाह की इज्जत के लिए एक दिन मधीनन उठेगी। धीर घाप से—घाप के इस दोस्त से हम दोस्त से कुछ दरपाफ्त करेगी कुछ माँवेंगी।—घापका

रियान् नाच या गाने का नहीं बल्कि मुस्क की छाविर मर मिटने की समझा वीदा करने का हो। मेरे बचपों में नहीं देख सकता कि ललनक के बाजारों में जवान सड़के गावते गाते फिरें। नाटक और खूब करें। मैं देख सकता हूँ उन्हें छोटी पोछाओं में परेड के माच में ललनारों और लमलीरों के मुकाबले में बम्बूक और गोसियों के निपामों में।

बैंगन के यहाँ से मित्र मंडली उदास और परेडाम सीनी। विद्येय कर दो व्यंग्य बहुत दुखी के। एक इमारत जिसने बैंगन का एक एक पक्ष ध्यान से सुना था और दूसरा पिहाब जिसने बैंगन की लकरी के दीपन खिली की समपन करती दो नीली पुनलियां बेचनी से परती थी। यहाँ तक अपने दिन नाटक मंडली के कायक्रम में यह लोन बाकी मित्रों से जनप-जनप देर तक कुछ सोचते और बिचार करते रहे। दोप मित्रों का उत्साह कुछ मिर गया था। किन्तु धरकी ईद पर उन्हें एक नया नाटक मिलना था। वह भाषी लैपारी के बार उसकी तरफ से मुंह नहीं फेरना चाहते थे।

इमारत के लिए सब से बड़ी समस्या बैंगन के मनोमात्रों को ठीक ठीक समझन की थी। वह पिहाब के साथ किन्तुन सहमत था कि बैंगन के पक्षों में बड़ा पाकचल और ईद मारा प्रभाव था। इमारत यह बिचार करता था कि प्रभाव करने वाली हर बात और हर बटना अपने अन्तर्गत में कोई न कोई सम्पाई उकर धिराये हुए होती है। बैंगन ने उनके सामने प्रभाव की निमी मुसीबत का निष्क किया था। पिहाब ने बाते करते हुए उसने स्वीकार किया वह भी प्रभाव का बाधिका है। जब मशाल उस मुसीबत का बा निमता बैंगन ने होने पुरवाई पक्षों में बिबरल लिया था और वो प्रभाव के बाधित होने पर भी इमारत और इमारत के दोस्तों को मात न थी। पिहाब

का कहना था जब शैखन हम जैसे नीचवानों से तबस्वी रखता है तो हमारा भी फर्क हो जाता है कि जिस बर्मीन पर हम पड़े हैं बने हुए हैं उसके बारे में कुछ सोचें और कुछ करें। वह बात दूधरी थी कि करने वाली समस्या पर सिद्दाब या इशरत दोनों कोई मुझसे बात लिए न है उनके चूँकि इस बारे में उन्हें कुछ बात न था।

शाबिर सिद्दाब ने एक तरीका बताया। उसने कहा, इसका उत्तर शैखन की लड़की सिस्वी से माँगा जाये। उसकी चतुरता और बुद्धि मता पर तो इशरत की तुलिका समझ न था। लेकिन सिद्दाब के प्रस्ताव पर वह बिना हिंसे नहीं रह सका। मन ही मन उसने अपने पिता मिर्चा खान से बात करने का फैसला कर लिया।

सिद्दाब एक दिन मौका देखकर सिस्वी के वहाँ था पहुँचा। इससे पहले वह बहुत देर तक मकान के सामने जाड़ में खड़ा देखता रहा था कि जब शैखन का कोचवान बागी लेकर जाता है और जब वह कहीं जाता है। शाबिर देर तक इन्तजार करने के बाद सम्बर धावा। क्यों ही शैखन यहाँ वह सिस्वी के सामने पहुँच गया। वह सम्मन्वार लड़की उसे देखते ही पहचान गई। स्वागत करते हुए उसने बिना तन्म्युक सिद्दाब से मजाक किया—“कहिये आप का हुमा कब हो रहा है?” सिद्दाब ने बना कर उत्तर दे दिया “जब से आप लोगों की बातें सुनी हैं हुमे से दिन उभट गया।” सिस्वी चुनकर हँस थी।

उसने मौफर को भीतर भेज कर पान सब्बामे और सिद्दाब के धबना धवाल करने लगी “कहिये मैं आपकी क्या सिबबत कर सकती हूँ?” सिद्दाब हिचकिचाया। वह सीधे कर कुछ और धावा था। सिस्वी से कुछ देर बातें करने को उसका मन बहुत बेचैन था। सिस्वी ने बड़ी आसानी से लहय की और कबल बढ़ा दिये। मन-मूछ समझ तो सिद्दाब को मोचने बीत गया और वह कोई उत्तर न दे सका। तब तक सिस्वी ने अपनी बात समाप्त करवा ली थी।

तब पिहाब को कहना पड़ा "उस दिन आपके बाबिर बुजुर्गवार के लम्बी तकरीर में बार-बार घबराह की किसी मुसीबत का इजारा किया था। हम आसकर में उसके बारे में खुलासा जानने को बहुत बेचैन हैं। आपको इसीलिए तकसीफ देने जमा धाया।"

"आप बहुत अच्छे हैं।" बिस्वी ने प्रसंसायुक्त भाव से उत्तर दिया "हर वह भावमी धक्का होता है जो बस्त को पहचानने की कुशल रखा हो। बहरहाल आपके सवाल का जबाब मेरे पापा नहीं दे सकते। वे सकते हैं एक और बुजुर्ग। मैं पापा से आप के बारे में धर्म कर दूँगी। आप फिर कभी धा जाइये तो धायव वह उनसे आपको मिलवा दें।"

पिहाब को और क्या चाहिए था। वह स्वीकार करने के बाद दोबारा धान की बमम खाता जमा धाया। सिल्वी की ओर जमते जमते जो इसरत खरी नजर खानी तो उस बचारी को भी धर्म धा गई। पिहाब के कुछ कहा नहीं लेकिन मन में बहुत घुनी। पिहाब बिना दके जाम धाया।

इपरत में मिर्चा खान से सवाल किया—"अवध में कौन बहर जाजित होने वाला है खम्बा? धान हमसे किमी न कहा है कि हब नाटक और एख छोड़कर तोप और बमूकों का रिवाज करें।"

अपन बेटे के मुख से यह अनिश्चित बात सुनकर पहले तो मिर्चा काँ की यकीन नहीं धाया लेकिन दूसरे क्षण उसका कहना उलगाह से समझने लगा।

"बिस्वी ने ठीक कहा है बरबुरवार। पैट के लिए मीकरी-बाकरी नहीं करते तो न सही, मुझे पता होया अपर धर्मन मुस्क और बारपाह की धिक्मत करते-करते गुन अपनी जिम्मी सफ़ कर दो।" अचोह मिर्चा धान में जबाब दिया।

बाबिब छली साहू

इशारत फिर भी न समझा । उसने अपना सबान फिर दोहराया ।
 तब मिर्जा खान समझीरता से समझाने लगे— तुम जानते हो इशरत
 मीने बाबसाह का नमक खाया है । मेरे घीर मेरे बीयर बुबुनों के बिस्म
 में भी यही नमक रिसा रहा । उसके बाव मीने कुछ दिनों रेजीडेन्ट
 साहेब के वहाँ काम रिया । वहाँ घन्टाजा हुआ जैसे वह लफने हमारे
 घीर हमारी कमीन के बुस्मन हैं । बरबुरदार हमारा अबब पचास साल
 पहले घाज से बहुत बड़ा था । इन मुट्टों ने सघावत नबाब के बमने में
 इसके बिस्म के टुकड़े कर दिए । अब यहसूख होवा है जैसे वह तोप
 बाकी घाबे टुकड़े पर भी नजर कर रहे हैं । जिसने भी गुम्हें अबब की
 घामन्ना मुसीबत का स्वाद दिलाया है उसकी बुरखेपी काबिले टारीफ
 है । वह घन्टी तरह जानता घीर समझा है, जैसे कि मैं खुब समझता
 हूँ कि हमारे घाहे अबब इन मुट्टों से पार पाने के काबिल बा तो हैं
 नहीं घीर या बफार कर दिदे जायेंगे । तब अपनी घाजापी के लिए
 अबब के बाबिबों को अपने हीसनों से काम लेता हुआ । उसी वक्त
 वहाँ के मौजवानों की बकरत पड़ेगी । वह नाटक घीर रख में चलके
 तो हम क्या होवा तुम समझ सकते हो । उन्हें बाबई तोप घीर बगूक
 का रियाज करना चाहिये । एक पुरानी कहावत यहदूर है बेटा अब
 बाबसाह के हाथों रियाया की लुपहाली यहदूर न रख सके तो रियाया
 न बिर्क अपनी जिम्मेदार पार हो जाती है बल्कि अपने बाबसाह की
 लुपहाली भी अपने हाथों यहदूर कर लेती है । कई मुस्कों में यह
 बाबसाह हो चुका है । लुग न करे अबब पर ऐसी बुरी पड़ी घाई तो
 सबसुख गुम्हारी बकरत पड़ेगी । तुमने मेरा मकसद अबब की यहदूर
 से है । घीर अबब की मकसद अपने बिमपसन्द साह की बरबार होने
 से पहले-पहले बचा लेगी ।

न जाने क्यों इसके बाह नाटक घोर ख़ुश से इशारत की दिग्दर्शनी दिन-दिन कम होती जाती। उसका दिग्दर्शन संप्रदाय उसे मकान से पकड़ कर नाटक के बपनर से घाटा बिम्बु वह उल्टाह न बिखा पाता। उधर सिद्दाह में बही जाना एक प्रकार से बन्द कर दिया था। बही इशारत का महत्त्व मित्र था। दो बार उसके घर गया किन्तु वह मित्र नहीं। नाटक मंडली के दफ्तर में तब वह अकेला एक घोर बीठा-बीठा कुछ सोचा करता। जाने का रिप्राइज होने पर वहमें वह झूम झूम कर तान दिया करता था। अब उसे ऐसा मयता जैसे वह पीत न होकर अथवा की अरबादी का भुत्तु संगीत है।

उसके सोचने का विषय विरोधकर इसी सम्बन्ध में हुआ करता था। एक परेशानी की समस्या बार-बार उसके दिमाग में घाती घोर कोई हम न निकलने के कारण पीड़ित करने लगती। ब्रम्हम ने उनके पीछे को लनकाय था और अथवा के पाह की हथकड़ी में कुछ करने की उल्टाह दी थी। मित्रों तान भी कुछ ऐसा ही कह चुके थे। लेकिन उनकी बुद्धि में यह बात नहीं बैठ जाती कि उन योगों में बम्बूक और घोंगों के चलाने का रिप्राइज नहीं करने के लिये कहा है। क्या उनका मतलब पीछ में अर्थात् हो जाने से है या कुछ दिने दिने इसका प्रयोग करने के लिए कहा है या कोई और इशारा दिया है जिसके पीछे पाह अथवा की बेहतरी के लिये कोई नया रास्ता निकलता हो ?

अब मित्रों तान से वह राजनीति पर बातें करने लगा था। जंगी विरामिने में उसे शायद हुआ था कि उसका पीछ में हागिरा हो जाना भी बिम्बुल ब्यर्थ होया। मित्रों तान का कहना था संप्रदाय घनों की के बाबिनद के उमाल में लपकन की पीछ करीब घस्ती हुआर थी। जाने तो फिरंगी हुशारों की बर्दशाही का हमला करता अथवा है तबसे से कि वह क्यों तब अथवा की घोर घांग लगने की बुरत न करते। दिन पर पीछ बेकार साबित हुई और संप्रदाय अभी है कुली

इसरात फिर भी न समझता । उसने अपना सवाल फिर दोहराया ।
 उस मित्रों का न समझीरता से समझने लगे— 'तुम जानते हो इसरात
 मैंने बादशाह का नमक खाया है । मेरे घोर मेरे बीयर बुझुओं के जिस्म
 में भी यही नमक रिसा रहा । उसके बाद मैंने कुछ दिनों रेबीडेन्ट
 छाहों के वहाँ काम रिया । वहाँ धन्दाज हुआ जैसे यह सबके हमारे
 घोर हमारी जमीन के दुस्मन हैं । बरबुरशर, हमारा धक्का पचास साल
 पहले धाव से बहुत बड़ा था । इन मुठेरों के सघावत नवाब के जमाने में
 इसके जिस्म के टुकड़े कर दिए । धक्का महजूस होता है जैसे यह सोच
 बाकी धावे टुकड़े पर भी नजर कर रहे हैं । जिसने भी मुझे धक्का की
 धावन्दा मुठीवत का स्वाद दियाया है उसकी कुरखेधी काबिले लाठीक
 है । वह धक्का सख्त जानता और समझता है जैसे कि मैं कुछ समझता
 हूँ कि हमारे धावे धक्का इन मुठेरों से पार पाने के काबिल या तो है
 नहीं और या बेकार कर दिये जायेंगे । वह धक्का धावन्दा के लिए
 धक्का के बाधियों को अपने हीसलो से काट लेता हीया । उन्ही बकत
 महां के बीजवानों की अकुरत पड़ेगी । वह नाटक और रूख में जलने
 तो हथक्का होगा तुम समझ सकते हो । उन्हें नाचई सोच और धक्का
 का रिवाज करना चाहिये । एक पुरानी कहावत यहहूर है बेटा जब
 बादशाह के हाथों रिवाजा की धुण्हाली नहपूज न रहे तब तो रिवाजा
 न सिर्फ धक्का जिम्मेदार धाव ही जाती है बल्कि अपने बादशाह की
 सख्ताली भी अपने हाथों यहपूज कर लेती है । कई मुठकों में यह
 बादशाह ही चुका है । कुरा न करे धक्का पर ऐसी कुरी धड़ी धाई तो
 सचमुच मुठारी अकुरत पड़ेगी । तुमसे मेरा यहसह धक्का की नलसूक
 से है । और धक्का की मलसूक अपने दिलपसन्द धाह को बरबाद होने
 से बहमे-बहमे बचा लेगी ।"

न जाने क्यों इसके बाद गाटक घीर छुस से इशरत को दिनभरसी
रिन-रिन कम होने लगी। उसका मित्र समुदाय उसे मकान से पकड़
कर गाटक के बफ़र से छाटा किन्तु वह उसकाह न बिछा पाता। तब
सिद्दाह ने वहाँ जाना एक प्रकार से बन्द कर दिया था। वही इशरत
का पहला मित्र था। दो बार उसक घर गया किन्तु वह मित्र नहीं।
गाटक महली के बफ़र में सब वह धकेला एक घोर बैठ-बैठा कुछ
सोचा करता। गाने का रियाज होने पर पहले वह झूम झूम कर ताल
दिया करता था। धर उसे ऐसा लगता जैसे यह पीत न होकर बरब
की बरबाही का मृग्यु भयीत है।

उसके सोचने का विषय बियोरकर इसी सम्बन्ध में हुआ करता
था। एक परेशानी की समस्या बार-बार उसके दिमाग में घाती घीर
बोई हू न निकलने के कारण पीड़ित करन लगी। बंगल ने उसक
पौरव को लज्जारा का घोर प्रभाव के बाह की इन्तर्ही में कुछ करन
की सलाह दी थी। मिथी ताल भी कुछ ऐसा ही वह बुके दे। मस्ति
उसकी बुद्धि में यह बात नहीं बैठ सरी कि उन मोर्कों न बन्दूक घीर
घोर्कों के बताने का रिघाज वही करन के लिये कहा है। बरा दरदर
मत्तब कीज में मर्ती हो जाने से है या कुछ दिन दिन इसका प्रभाव
करने के लिय कहा है या कोई घीर इपारा दिया है जिदर पदों यह
प्रभाव की बरतपी के लिये कोई नया उपाय निरूपण हा ?

धर मिथी घाम से वह छत्रनीति पर बने रहन ल द।
जहाँ विषमिमे में उसे इन सदा का कि लहर घीर के लिये हो
जाना भी विष्मृत पदों है। निरुक्त न रहन ल, मरन
घमी घा के बागिचर के लिये न बरतपी की लीर लिये लिये लिये
थी। बागन का निर्दोष लिये लीर लिये लिये लिये लिये लिये
है मरने द कि लिये लिये लिये लिये लिये लिये लिये लिये
करने। निरुक्त लिये लिये लिये लिये लिये लिये लिये लिये

कुसी १५०१ की लम्बि में फीज बटा कर तीस हजार कर दी। वहीं नहीं एक घण्टे के भुताबिक अपनी कीज के साथ-साथ सम्पूर्ण कम्पनी की फीज के एक रिशाले को अपने कर्च पर रखना स्वीकार कर लिया। इस तरह जानते-बूझते अपने हाथ-पैर कटा लिए। बाबसा धाज भी वहीं थी। बाबिब धली के पास चाहे कितनी कीज होती किन्तु मुकाबले का साहस हुए बिना वह सब बेकार थी। कीज नहीं फीजों का बाइसाह ऐसा होना जरूरी था जो हिम्मतवर और दिलेर होता। उसी फीज का नाम हो सकता था।

मेकिन एक दिन प्रचालक उसकी बुद्धि में एक विचार उदय हुआ और वह उम्मुक न लौप बनाने के रिघाज के बीछे दिये हमारे को जैसे समझने के योग्य हो गया। अपने मित्रों के उम्मुक उसने प्रस्ताव रक्खा क्यों न नाटक मंडली के स्थान पर ऐसी एक संस्था को जन्म दिया जाए जो समय माने पर साह के लिए किरियों की मारम-भरने पर उठाकर रहे। मित्रों ने इस प्रस्ताव का अनादर किया। बल्कि इधरत को पामस और बेबकूज साबित किया। इससे इधरत उन मित्रों के बिस्कुत विपरीत अपने विचार पर स्थिर हो गया। उसने नाटक मंडली में जाना प्राम समाप्त कर दिया और पिहाब के साथ मिलकर जस है जस इस गई गूम पर विचार करने का इरादा करने लगा।

पिहाब मकान पर नहीं मिला करता था। उसके घर बातों से बता बना वह धाजकन किसी संज्ञेज लड़की के साथ यही-वही अन्तर चुनता नामा गया है। वह समझ गया ईगहन की बुस्तरे मैक को पिहाब ने अपने दिले-महफिल में लत्रा लिया है। कई बार सोचा ईगहन के मकान पर उससे मिलने जाए। लेकिन जस इस विचार को भी पामा करता। पिहाब का दिल बड़ा बहमी था। वहीं छत्र नेकबल के बारे में उसने इधरत को लेकर कुछ उस्त-मुस्त लौप लिया तो कर्च दो पट्टे मित्रों में गाई पड़ जायगी।

गाटक मंडली के पक्कात जब उसकी धाम गोमती के किनारे इयामबाड़ वाली सड़क पर बीठा करती थी। सोचता बिचारता दिन बिपन से बहुत पहले वह सड़क पर टहलता हुआ घाये निरुस बाठा और जब कारों और अंधरा हो जाता तो वापस लौगता। कभी मन न लयता तो हजरतपंज जमा जाता। और कभी व्यर्थ उस मोहरे के पुत पर सड़ा गोमती का पानी निहारा करता जो बाजिब धली के पिता ने इंपेरेड से लाकर वहां लगवाया था।

इस पुन के दोनों छोर मरुछें थीं। बाईं छोर नदी के बराबर वाली सड़क घाये इयामबाड़े तक जमी गई थी। दाईं छोर के राले पर घाये विपहा का जिससे सपरमकिन रबीहेंसी घाबि तक बाया जाता था। उस दिन बिहाब के मकान पर हाजिरी देने के बाद इमरत जब गोमती के किनारे नैर थी इण्डा से विपहे के पास से गुजर रहा था तो सहसा किनी व्यक्ति के पुकारे जाने पर उसे रुक जाना पड़ा। वह मुझा थी योंही उसकी दृष्टि पुकारने वाले पर पड़ी वह बिभूड और अचरज बस्त सड़ा रह गया। पुकारने वाला लम्बे-बीड़े शील और का बहुत ही बिलालकाय व्यक्ति था। इनके अतिरिक्त उसका लवे जैता काना रंग और बड़े हुए सर के बाल बहुत धनीज थे। और सबसे अधिक ध्यान जित बलु पर गया वह उसका पहनावा था। उनसे अने सर पर मु दास बँदी पपड़ी लपेट रखी थी जो हिन्दुषा का धाम रिवाज था हिन्दु नीचे मोठी के स्थान पर एक तहमस बँया हुआ था। हिन्दु लोग तहमस का प्रयोग नहीं के बराबर करते थे। और उन तहमस पर घाट उबल बोड़ी कसी हुई जमई नी पेटी बंधी थी। इमी पेटी में इपाण बी ध्यान भी दिखाई दे रही थी। सब मिनाकर वह कोई बुद्धवनीय बाहू जमा प्रवीठ हुआ और भयालक जान पड़ा।

शापुमों का उन दिनों और भी बहुत था। इमरत पुकार मुन सेने के बाद उसकी छोर बड़ा खरर हिन्दु उसने बार-बार उस लवहार जंगली

की देना जो उसके पास एकमात्र ऐसी वस्तु थी जिसे वह छीन सकता। फिर उसे यह विचार आया कि धायर वह डाकू न हो धीर डाकू होने पर भी धायर उसे छेड़ने का साहस न करे। अभी दिन छिपने में करीब एक बंटा बाकी था। लोगों का आभा जागा बन्द होने में बतना ही समय धीर रोव रहता था। एक न एक व्यक्ति दस-पाँच मिण्ट में उबार से मुबार ही आता। धायर डाकू महोदय का विचार इस सच्चाई की तरफ बना बाएँ धीर वह इशरत की सुरत देखने के बाद घने बापित लौटने की यात्रा प्रारम्भ कर दे।

जो भी हो। वह क्यों-क्यों धाके बका रबों-स्यों उसका विश्वास बढ़ता बना पका कि पुकारने वाला सम्भव तो डाकू नहीं धीर धायर है भी तो इसे मूढ़ने को विधेय पत्मुक नहीं है। इशरत के कदमों के साथ उसके कदम भी आहिस्ता-आहिस्ता इधर ही आ रहे थे जिससे उसे बकीर हुआ उसे धायर कुछ पूछना या जानना है। बत वह निश्चितता प्रतीत करता उसके निष्कट था गया।

नयानक व्यक्ति ने इशरत की हिम्मुयानी बंध से नमस्कार किया धीर कुछ पूछा। इशरत का देना लगा जैसे पास कही बिस्फोट हुआ हो। किन्तु उसकी भारी धीर कटी हुई आवाज के बावजूद वह बतका प्रश्न समझने का प्रयत्न करने लगा।

नयानक व्यक्ति ने फिर अपना सवाल समझाया—“तुझे पम्ब साहब के यहाँ जाना है। तुम बता सकते हो उसका पता क्या है?”

इशरत ने जवाब दिया—“जस्ट साहब से तुम्हारा मतलब रेजीडेंट से है?”

“हाँ” उस व्यक्ति ने उत्तर दिया “किरियकी का एक धायरी यहाँ जाता है न नहीं।

“पता तो यही है।” इशरत ने बताया—“लेकिन यहाँ तक मेरा स्थान है एक बगुन यह मिलेगी नहीं।”

उस व्यक्ति ने इधरत के उत्तर पर ध्यान नहीं दिया और इधरत के बगल के रास्ते पर जाने लगा । इधरत ने भी धामे ब्रह्म में पड़ना अनुचित समझा और पुनः की तरफ चले गये । तब फिर उस अपरिचित ने उसे बोधारा धामाज की ओर रोकर पुछा—“मिनेगा क्यों नहीं बना वह नहीं बाहर गया हुआ है ?”

“नहीं”—इधरत ने उत्तर दिया और ध्यान में अपरिचित की ओर घुसा । वास्तव में इस बार पूछे गये उसके सवाल में इधरत को रेजीडेंट के प्रति अपमान और भर्त्सना की दुःख भरी । कहने वाले के भयानक चेहरे पर पसों में जाने जाने वाले झुरझुरे के चिन्हों से रेजीडेंट के प्रति विरोध और क्रोध झलकाया ही प्रकट हो गया । उन चिन्हों में साहस कुछ साधने रहता था । जुबान तो क्या जीव रेजीडेंट के सम्मुख में सतत सोचना भी अपराध मानते थे । इधर उनके व्यक्तिगत में रेजीडेंट विरोधी कोई बात उठाने का और दूसरे वक्त प्रतिस्पर्धा स्वरूप रेजीडेंटों के कर्मचारियों ने उनके पास-पास चक्कर लगाता आरम्भ कर दिया । अतः अपरिचित ने अपने प्रश्न के पूछने ही इधरत को बीजा बीजा दिया, इसमें कोई आश्चर्य नहीं ।

इधरत के सामान्य उत्तर से अपरिचित को संतोष न हुआ तो उन्होंने फिर वही सवाल दूसरे शब्दों में दोहराया । तब इधरत बोलने लगा—“साहेब बहादुर इन वक्त गारद के काम बढ़ाने की व्यवस्था कर रहे होते । मुलाकात का वक्त मुकरर है । इसके बाद अपने नाम दोस्तों के बतावा उनके पास और कोई नहीं पत्र चलाता ।

लेकिन रोकने वाला कौन है ? क्या उसने बंबई के बाहर सिवाही रैलाउ रखे हैं ? —अपरिचित ने अपना सवाल किया ।

“हाँ । इधरत ने बताया— “उसे अपनी बात का बहुत गहरा पता है । इसलिए पूरी एक गारद बंगले के बाहर सीढ़ी रखी है ।”

अपरिचित इसके बाद और कुछ न पूछ कर अनिश्चित मनोबल

गधी को मोली का निघाता बना कोई कूर व्यक्ति घब उसे भूटने
 डभोटने का कुप्रयत्न कर रहा है । हमारे साथ उस भयानक व्यक्ति का
 बिग घाँवों के सामने खड़ी हो गया । घोर तब बिना एक क्षण गवाये
 वह तेजी से गधी की घोर दीड़ा जिसके मोड़े गोली की घागाज से
 बेहक कर भागने को घालुर होकर किसी गजबूरी से घड़े लड़े से ।

मिफ्ट पहुँचने पर बास्तबिकता कुछ घोर गामूम हुई । गधी का
 कोषबाग बास्तब में जमीन पर भूत पड़ा बा । मोड़ो की रात जब
 रस्ती खींची हुई थी मगर रात खींचने वाला वह हिन्दोस्तानी डाकू
 मर्पिचित नहीं बा जिसकी इसरात को कल्पना थी । वरन् उसके स्थान
 पर कोई फौजी बा जो गधो के भीतर बीटी सतये सितारे की चुनरी
 मोड़े किसी लड़की को दूटी कुटी हिन्दोस्तानी में कोई घाघेय से रहा
 बा । वह लड़की जो बेगामूया से मुस्लिम सभात बराने की मामूम हुई,
 मयभीत दृष्टि से मोरे को बूरती मुबक रही थी ।

इसरात के सतकारने पर मोरे ने राख छोड़ थी घीर घपने हाथें
 तरफ की जेब से रिवास्वर निगम उसे लू खार दृष्टि से बूरने मया ।
 लड़की सहसा चौंक गई तथा इसरात को सहायता के लिए लुदा का
 बास्ता देने मगी । तब इसरात मावघामी से घायं बहा ।

लेकिन घंदेज फौजी घराब के लगे में बिस्नुम बूर नहीं बा ।
 उमने लठरा मिफ्ट घाने से पहुँने इसरात को कोषबाग की तरफ उंमनी
 उदरकर सावधान बिघा घाम मोलता उदर कटना मांयता नहीं लो
 इस का मापक लोमारा लून कर देया ।

इसरात हक कर कोषबाग थी भूत बेह जेहन मगा । बन्कि बिपयी
 के हाथ का रिवास्वर देपन क बाद उमम कुछ फँसमा कर मिया बा
 घीर दो कदम पीछे थी ह्म घाया । गधी में बीटी लड़की वह देलते ही
 बिस्ता थी 'नहीं—धुदा के लिए इस दरिन्दे से मुक्त बचा सीबिए ।
 मुक्त पर करम कीजिए मेहरबान में घाय के हाथ मोहडी हूँ ।' इसरात

बाजिर बासी छाह

मे मुना धीर सघोर्पन में डूब गया ।

धम दम तक मम्बरिन करेगा । उसका बाद इतर शोकमा मांगता
तो बोसी छोर हैया । हम इसको बीबी बनाना मांगता । तुम्हारा परबरी
नहीं मांगता । समझा बन——दू——श्री—

अब वहाँ रहना कतरे से ताली नहीं था । इधरत एकदम नापित
सीटने मया । लड़की की सिसकियाँ जोरों से बड़ गई । मोटा सन्तुष्ट
नजर आया । धीर जब इधरत काफ़ी दूर निकल गया तो गिनती बंध
करने के बाद उसने अपना रिवास्वर बैब में डाल दिया । उसी समय
ऐसा लगा जैसे कहीं से कोई बोरी बोरे पर धा मिरी हो । इधरत इस
पूरी से जाने से बाद नापित लौटा था कि मोटा अपना रिवास्वर तक
न निजाम सका । धीर अब उसका धारा हाथ इधरत की बसिष्ट उंब
सियों में दबा हुआ था । दोनों पुन कर एक दूसरे को पचस्त करने
की बिल्ता मे बे । लड़की बागी से उतर आई थी धीर कुछ फसले
पर पड़ी समाया बैब रही थी ।

पहले मोरे ने समयाल इधरत की पकड़ से अपना हाथ छुड़ाने की
बेष्टा की ताकि रिवास्वर निकल सके । लेकिन सफलता न मिली तो
उसने अपने बायें हाथ से इधरत के पेट पर बाजिसय धारण कर ली ।
अब स्थिति यह थी कि पूछेबाजी से बचने के लिये इधरत अपना
सीमा हाथ प्रयोग में लाता तो रिवास्वर निकलने का भय था धीर
बायें से उस प्रत्यस्त पूछेबाज के पूछों का बाद रीजता तो दुर्बला हो
जाती । कुछ देर इनी अवस्था में एक पीटता धीर दूसरा पीटता रहा ।
फिर सकायक एक नूना इस धीर का पड़ा कि इधरत का बिबाध चकरा
गया । उसे मोरे की नमाई छोड़ कर अपना पेट पकड़ लेता पड़ा । ठेक्
सितकारी त उसका बड़ हाट हो गया । धीर इतने समय में मोटा ठेजी
त अपनी बैब में हाथ डालने लगा ।

मोटा बिल्कुल सामने थी । इधरत ने अपनी धीर का ध्यान छोड़ा

की बात होती तो मुझपर मन दो मन बज्जुन रखता होता। उस दिन घापने मेरे लिये क्या कुछ नहीं किया। मामूली बातों पर उच्च मनहूस विचार के लिये घर घर घाप इसी तरह मनहूस करते रहे तो बड़ी बचमबगी होगी। बाप की बात थी और घापने बेकार पार दिला दिया। घाप और मैं एक दूसरे के कर्जदार हैं। क्यों ?

“क्यों बानो बेचम कर्जदार घाप नहीं मैं हूँ। और मैंने यह पुरत कभी नहीं की कि घाप को घापने घापघान की बात पार दिलाता। बहर हास घापदा ऐसी घलती कभी नहीं कहेंगे।”

“एक बात और। इसी घलती घाप यह करते हैं कि घापने से उम्र में घाप और कब मैं कब नारा बड़की को घाप और कब कब सिताव देते हैं। खुदा के लिए मेरा सीमा सीमा नाम मेकर पुकाघ कीजिये।”

“यह कैसे हो सकता है ? घाप ठहरी और मुम्मी की दुस्तरे नैक। जता उनके बातहत एक घलता मुम्मी में इतनी हिम्मत कहाँ ?”

“जनावेसन। घाप ने और मुम्मी की दुस्तरे नैक को मोरे के पजे से नहीं छुड़ाया था। वो बानो थी। बानो घाप जी बानो रहेनी। घाप को मतलबहमी कैसे हुई ?”

“घाप से बातों में नहीं जीता था सकता। घलती बात है। घर पर ही नहीं है तो मैं घाप को तुम कह लिया कहेंगे।”

“पुष्पा।” बानो हँसती हुई बीनी “घब नारता कर सीजिये।”

इसतर में मना करने न बरा। बह रकाधिली का लकीर घात जाने नवा। बानी हिमनसी से उमे देलती रही। जब नारता गरम हो पजा और इधर हाथ रोक कर बैठ गया तो घलता बानी पे एक सवाल किया। घर घर न मानें तो मैं एक नवात कहें। पय दिन घापने बज्जुन देगा वर बता बलना था। घाप घापने मुम्मी और मुम्मी के रहने बानों के लाने बागिचर बंदगी को घापना दुर न बाने है। फिर घाप

क्यों उम्मी खुशमनो की नीकरी करने चाहये ?”

इधरत ने छोटा जबाब दिया “पेट तब कुछ कष्ट होता है ।” लेकिन बागो चम्पुष्ट नहीं हुई । उसने धाये कहा “ये एक बड़ादुर भावमी को औरत बेचने पर मजबूर नहीं कर सकता । उस रात के बाक्ये पर मैंने धाप के भुवानीक बार-बार साधा तो मुझे बड़ा घबरील सा लगा कि क्यों धाप रेजीडेसी में नीकरी करना चाहते हैं । मगर कोई जबाब न सूझ सका । धाप धाप कहते हैं

इधरत ने बात पीरने काट ली । वह मुस्कुरा दिया और बोला—
“क्या धाप की मजूर में रेजीडेसी की नीकरी बुरी है ?

“बुरी न हो मगर गैर जकरी है । धाप की धराफत फिरविमों की मुलासी करे मुलासिब नहीं लगता ।

इधरत ने हँस कर स्वीकृति किया— “धाप ने अपने धापने वासिष्ठ साहेब को मझी समझाया बागो बेगम । वह रेजीडेसी के पीर मुन्नी है मातूम होना ।”

“भादमी कातल ने तब कुछ घुल जाता है इधरत साहेब । धाप तक धापको इसका तपुर्जा नहीं है इसलिये धाप मेरी बातें सुनने की राब भी रखते हैं । कुछ दिन बीतते न बीतते धाप भी धम्मा हुबूर की तरह मेरी बातों पर मजक जाबा करेये । रेजीडेसी की नीकरी ऐसी होती है ।”

“पीर धाप ने इसे गैर जकरी कह दिया ।” इधरत ईसता रहा—
“बागो बेगम भादमी को जहाँ ईमानदारी की नीकरी मिले वहीं धम्मा है । रहा औरत बिकने का मसला और धराफत को बुलाय करने का सवाल । तो उसके लिये मजूम इतना धर्ज कफना जो भादमी मुलासी कुबूल कर लेता है उसकी धराफत नमकहलाली के मुर्ज रबों में और क्यादा बचकने लगती है । जो मुलाज बिलमा बरप्रचार लाबित होता है बतना ही सहीक कहा जाता है । पीर इस तरह उसकी औरत को भी

रह सकती है ?”

इधरत को फिर सामोरा हो जाना पड़ा। वह जानो से इत प्रसंग पर कोई बात नहीं करना चाहता था। जब मुनासिब वही तमा कि वह इधरत बना जाये। जानो से कहा तो वह तैयार हो गई। उसे साथ लिए इधरत इधरत के दरवाजे तक था गया। वहां से जानो बापिस लौट गई।

मीर साहेब अपनी जबह बिराजमान थे। गांवतकिए पर टैक दिए वह धारम से हुक्के की गियाची का धामन खुद रहे थे। इधर से इधर पहुँचा मीर उधर से तीन व्यक्तियों ने मुन्ही की के कमरे में प्रवेश किया। मीर साहेब ने जबह कर हुक्के की नमी दूर फेंकी मीर बड़े हो कर धरम से सजाम बजाते हुए प्राबन्तुकी का स्वागत किया।

हममें से एक लम्बे बीड़े बीम-बीम का धरेज था। उसकी धातु रही होनी लगभग ६० साल काम पके हुए मगर अभी प्रकार समारे बने थे। बदन फुल्ल धीरे फुल्लना लखर था रहा था। कैदर दमाटर की तरह फुल्ल था। जमते समय वह सीना तान कर खस रहा था। उसने फोनी पीयाक पहन रखी थी किन्तु वह पर सरकारी बिल्लों का प्रभाव था।

दूसरा प्यारा-बुबला व्यक्ति भी बंझ ही था। उसके काम बड़े-बड़े धीरे काम थे। बाक-बकसा पहने व्यक्ति से अधिक प्रभावकारी मीर व्यक्तिव में मोतापन। वह साधा कीट मीर पतलून पहने था। उसके हाथ में एक बेंत था।

तीसरा आदमी उनके पीछे-पीछे आये जाता कोई हिन्दुस्तानी लोकर था।

मीर साहेब इधरत को कमरे में धाते देख फुल्ले थे किन्तु उनका ध्यान उसकी मीर न जाकर इन धरेजों की ओर गया। उन लोगों ने सजाम का बखर भी न दिया मीर मीर साहेब की कटकारना शुरू किया

"तुम को घबना लौका बरमना होया भीर मुग्गी । रिचमीग्न साहेब के बनाने में रिखाले को अक्के की बरमरोटी मिलती हो या बने की । हमारे बनाने में यह बर्दमानी नहीं बसेयी ।" सम्ब चौक संघेज ने स्पीरिबो बढ़ा कर कहा । भीर साहेब ने कीर्ई उतर देना चाहा लेकिन दूसरे पलमें संघेज का स्वर धाया— 'सर, हिन्दोस्तान में बिना रिखत कोई काम नहीं होता । ठेकेदार अब भीर साहेब को मोटी रकमें देकर ठेका हासिल करेया तो अग्ली बरमरोटिया कैसे मम्माई करेया । क्यों भीर साहेब ?"

'हम मुग्गी को नबक सिखा देने ।' बही संघेज फिर बोला— 'एक बार हिन्दोस्तानी फौज को मग्गी कुचक मिने तो हम बर्बास्त कर सकता है, लेकिन संघेजी रिखाले के साथ कोई बरबद हुई तो हम एक-एक को बजा देंगे ।"

'हुदूर' 'माई बाप' मुग्गी जी हकताये— "घायब्या एहतिवात रबनु गा ।"

"नहीं भीर मुग्गी ।" बुकने संघेज ने कहा— "एहतिवात सिर्फ इसनी रबिए कि रिखत में बनी हो जाए । घाय तो दिनों दिन ठरवती करते जा रहे हैं । ऐम किस तरह नाम बल सकता है ।"

"बसम सीजिये साहेब" 'घाय बहू तो टेनेदार को सामने ला चढ़ा करे । मैंने उन कममस्त से एग पाई बगुन नहीं की । हुदूर को पकर मतलपहवी हुई है ।"

"नहीं मुग्गी ।" दूसरे बिदेयी ने बोला "हम यह सप नहीं पुर्नेब हमारे जान में बोबारा यह ठिकायत माई ता हम तुमकी मोकरी से बिकाम देगा ।"

मुग्गी जी कुछ न बोले । दोनों अपनी बात बहने के साथ बागिर जाने लगे अभी बही धागु बाने संघेज की हट्टि शगरत बर पड़ी भीर उनने बबाम दिया— 'यह बीन है ?' मुग्गी जी ने हसाय देना तो बरदी ने कहा— 'सरदार यह बही बाइयी है जिसका मैंने तम्कत

रह सकती है ?”

इधर को फिर आमोद हो जाना पड़ा। वह बानो से इस प्रसंग पर कोई बात नहीं करना चाहता था। जब मुनाविब यही मना कि वह हफ्तर बना लाये। बानो से कहा तो वह तैयार हो गई। उसे साथ लिए इधर उधर के दरवाजे तक ला गया। वहाँ से बानो बाबिव बाँट गई।

मीर साहेब अपनी जगह बिराजमान थे। पाचतकिए पर बैठ दिए वह आराम से हुक्के की निहाली का ध्यानन्द सुट रहे थे। इधर से इधर पहुँचा मीर उधर से तीन व्यक्तियों ने मुग़्गी जी के कमरे में प्रवेश किया। मीर साहेब ने बकरा कर हुक्के की नली दूर जैकी ओर लपेटे हाँकर दरवा से सामाज बजाते हुए आवायुकों का स्वागत किया।

उनमें से एक लम्बे चौड़े डीठ-डीठ का संघेब था। उसकी भासु रही होगी सन्ध्या १० घाब बाल पके हुए मयर बसती प्रकार संचारे सब थे। बदन फुल्ल और फुर्तीला मन्दर था रहा था। कैह्य टमाटर की तरह सुर्ब था। जबसे समय वह सीना टाग कर बज रहा था। उसने फौजी पोशाक पहन रखी थी किन्तु उस वर सरकाटी बिल्लों का अभाव था।

दूसरा पतला-बुबला व्यक्ति भी संघेब ही था। उसके बाध बड़े-बड़े और काने थे। बाक-मनसा पहले व्यक्ति से अधिक अमानसानी और व्यक्तित्व में भोकापन। वह साधा कोट और पतलून पहने था। उसके हाथ में एक बैत था।

तीसरा बाधमी उनके पीछे-पीछे आने वाला कोई हिन्दुस्तानी नीकर था।

मीर साहेब इधर को कमरे में आते देख चुके थे किन्तु उनका ध्यान उसकी ओर न आकर इन संघेबों की ओर गया। उन दोनों ने अनाम का बत्तर भी न दिया और मीर साहेब को चटखरना शुरू किया

“तुम को अपना लौका बदलना होना भीर मुन्गी । रिशमीन साहेब के जमाने में रिशमीन को अपने की इज्जतरोटी भिजती हो या जाने की । हमारे जमाने में यह बेईमानी नहीं चलेगी ।” अपने पीढ़े संघर्ष ने लौरीया बड़ा कर कहा । और साहेब ने कोई उत्तर देना चाहा लेकिन दूसरे पल में संघर्ष का स्वर आया—“अर, हिन्दोस्तान में बिना रिशमीन कोई काम नहीं होता । ठेकेदार जब भीर साहेब को मीठी रकमें देकर ठेका हासिल करेगा तो अपनी इज्जतरुटियाँ कैसे सफाई करेगा । क्यों भीर साहेब ?”

“हम मुन्गी को सबक सिखा देंगे ।” वही संघर्ष फिर बोला—“एक बार हिन्दोस्तानी पीढ़ को अपनी खुदक मिले तो हम बर्बाद कर सज्जा है लेकिन संघर्षी रिशमीन के साथ कोई नकदम हुई तो हम एक-एक को सजा देंगे ।”

“दूर भाई बाप मुन्गी जी हकसाये—“आपका एहतिवात रखूँगा ।”

“नहीं भीर मुन्गी । दुकान संघर्ष ने कहा—“एहतिवात तिके इतनी दिसए कि रिशमीन में कमी हो जाए । आप लो दिनों दिन तरकी कर ले जा रहे हैं । ऐसी किस तरह काम चल सज्जा है ।”

“कसम जीजिये साहेब ‘आर वहे लो टेरेदार को सामने ला लड़ा करूँ । मैंने सब कमबख्त से एक पाई जमून नहीं की । दूर को लेकर गलतबहरी हुई है ।”

“नहीं मुन्गी ।” दूसरे बिदेधी ने डाँटा, “हब वह सब नहीं मुनें हमारे बान में बोलाय यह धिकायत भाई लो हम तुमको मोकरी में बिकान देगा ।”

मुन्गी जी कुछ न बोले । दोनों अपनी बात कहने के बाद बापिल आने लगे सभी बड़ी धानु बाने संघर्ष की हट्टि इमारत पर गड़ी और उसने लज्जा दिया—“यह कौन है ? मुन्गी जी ने इयाय देना तो बस्ती स कहा— ‘अरदार यह वही मादमी है जिसका मैंने लकड़

किया था ।”

‘ओह ! हमारा क्या बाबिर ? अंग्रेज बचाव देने के साथ-साथ इसरत की और बूम गया । उसने इसारे से इसरत को नज़दीक बुलाना और बचाव किया—“तुम नीकरी करने आए हो ?”

‘जी माई बाप ! इसरत ने पीरन अपना सर झुका लिया ।

“तुम्हारा नाम ?”

‘बुसाम को इसरत कहते हैं ।

‘पीर मुन्ही को कब से जानते हो ?”

“साहब मह मेरा बुर के रिस्ते का भाग्या है ।” मुन्ही जी ने बट से बचाव दिया ।

“ठीक है । अंग्रेज ने पूछा—“मगर हज जानता चाहते हैं यह क्या काम कर सकता है ?

इसरत ने बचाव दिया—‘गुलाम की जी भी हुकम मिलेगा उसको सोलही घाने पाव रली बना लायेगा । हुकम होना तो हुक्का भरेपा पाव बचाएगा और जी माई बाप चाहेंगे बिना उष्य करता रहेगा ।

‘पहले कहीं काम किया है ?”

‘महीं मालिक । बाप की इलात ने नीकरी पर मजबूर कर दिया है । पहले वह बाही मुलाजमत में थे । वहाँ से बेमुनाह बचाव मिल गया । अब आपकी खिरमत में आया हूँ ।”

‘सुन । अंग्रेज ने कहा—‘हम तुमको मुलाजिमत बरूर देंगे । कब से तुम हमारे पास मुन्ही होये ।”

‘परवरिस हुई भाजा । आम की बाजी लया कर भी धाप का हुकम बना लायेगा ।

‘मगर यह बात हमेशा याद रहे कि तुम हमारे नीकर होये और हमारा ममक बाओगे । कोई नज़द नहीं चाहते ।

‘ऐसा ही होया मालिक ।’ इसरत ने बचाव दिया तो अंग्रेज कमरे

से जान लये । लेकिन बलते-बलते वह फिर एक बार उसकी तरफ धूम
घोर पुष्पा सुम धपेजी बोलना जानते हो ? "नहीं ?" इसरत न बचाव
दिया । सब वह बल मय । घोर मुन्दी इसरत की घोर धूम घोर कहने
मय "यही बड़े साहेब स्वीमन है । जवान का कटुभा उकर हे मगर
भादमी बड़ा धपड़ा है । इनकी दिन लवा कर बिरमल करना ।"

इसरत वह इसरत धपेज कौन था ?" इसरत न बचाव किया ।
घोर साहेब न बेहरे पर बूछा व्यक्त की । उत्तर दिया छोटा साहेब बड़
है । सामे को हर बल रिक्तों के बचाव धातु है । उली ने बड़े स हेब
को बड़ा दिया होया । लेकिन मय धी नाय घोर नहीं ला मही जो
इसका बरसा न मू । सामा यहसाह वा बफादार बनता है । वहना
रेजीडेंट तो बरा क्यास करता था इसका घोर इसके बन्धों का । मगर
इस बार जहाँ बाब लया वही बड़ साहेब स इसकी मित्राज पुरसी करवा
झंगा । जब देखो सब नेरी धिकामत करता है । जैसे मैं इसके बाप ना
कुल लाया होऊँ ।"

इसरत मुस्कृत दिया । घोर साहेब देर तक धपनी कारसी बुजान
से बुलने-बलने संवक धपनर मेजर बड़े तहायक रेजीडेंट, को बाव करते
छे ।

धनमे दिन से वह बाकायदा नीकरी पर जाने लगा । घोर जैसा
घोर साहेब ने समझाया था परिस्थितियों को बीमाही पाकर उनकी हिदा
मतों के अनुसार बाब करने लगा । अपने प्रबट किया धेमे स्वीमन के
धमाका उसका बुनिया में कोई घोर ही ही नहीं । उसकी मुर्ती के लिये
जैसा कहा जाता वह इनकी पुर्ती में उसे पूरा करता कि हमने बाता
हैरान रह जाया । बुला उठाना हो धपन वा ध्याना देना ही बिनी
की बुराई करनी हो बुलायक करनी हो गरज यह कि स्वीमन की
धाल वा इगारा मिला घोर इसरत ने मधीन के पुर्जे की तरह बसा
ही करना शुरू कर दिया । इसका धनर धपड़ा पड़ा । स्वीमन —

कुछ रहने लगा। महीना-पन्द्रह दिन बीतते न बीतते उसकी टनछाह में बड़ीठरी हो गई। फिर कुछ दिनों बाद उसे हृदय मिमा वह रेबीर्सेरी के क्वार्टरों में आकर रहे। धीरे इसके बाद स्लीमन उसे हर बस्त अपनी निरमल में रखने लगा। कहीं जाना है तो इसरत को बुलवा भेजा किसी से बातें करनी हों तो इसरत से बस्त मुक़र्रर करवाया। टहलने वये तो इसरत साथ है। किसी बकरी काण्ड की पुरखत पड़ी तो इसरत कोठी से लेकर धावा। मेम साहेब ने सामान रंगवावा तो इसरत की पुकार पड़ी मतलब यह कि बहुत बस्त इसरत रेबीर्सेरी में स्लीमन का बाब आबमी कहलाये गया।

धीरेकरीब बीस दिन बाद ही एक ऐसी बटना हुई कि स्लीमन धीरे इसरत एक दूसरे के बहुत करीब आये। मासिक धीरे नीकर का रिस्ता काम्यम रहा लेकिन सब वह एक दूसरे के राखवार भी बन गए।

स्लीमन नियमित जीवन का धारी था। वह प्रातः पाँच बजे उठने के बाद रोब टहलने जाता करता था। इसरत को साथ रहने की हिवा बत थी। धाये-धाये साहेब धीरे पीछे-पीछे इसरत कभी बीमती तक बककर भपाते धीरे कभी बकरी सीट धाते। मन होता तो पैदल जाने के स्थान पर घोड़ा से लिया जाता। स्लीमन का सफ़ेद धरबी पोंडा हवा में बाँटें करता था। इसरत को साथ बीड़ना पड़ता। लेकिन वह इस कष्ट की परवा किये बिना अपने साहेब की धावा पालन पुरर करता। उन दिनों ठेक सहीं बड़ने लगी थी। इसरत का क्वार्टर धीरे साहेब के बराबर था। मुबह बार बजे उठने में उसे कठिनाई होती। बागो से एक बार बर्बा की तो वह धुब तीन साढ़े तीन बजे इसरत के दरबार पर बस्तक दे दिया करती। इस तरह इसरत सहीं में कुबमुबाठा हुमा अपने साहेब के आगने से बहुत पहले उनके बयसे पर हाज़िर हो जाता करता था।

उस दिन वह दोनों घोड़ों पर दूधने गए। स्लीमन को न जाने क्या

सूझा कि उसने इधरत को दूसरे बोझों पर पीछे धालने की हिदायत दे दी। इधरत को मन यांभी मुराब निसी। वह बुझास से एक कामा बाड़ा ले आया। दोनों उसी रास्ते आये बड़े जो सीढ़ों के पुन की तरफ जाता था। अभी दिन निकलने में कुछ देर थी। बाहिस्ता-बाहिस्ता दोनों के बोझों आये पीछे बढ़ रहे थे कि अचानक एक जगह किसी के "टहरो" की बुझर सुनते ही स्लीमन को रुक जाना पड़ा। इधरत बायीं ओर आबाज देने वाले की तमाश करन लगा। तब सापने से एक ऊँचा लम्बा घादनी हाथ में लुप जैसा भिष्ट स्लीमन की ओर बढ़ना नजर आया। धँधरे के कारण उसे पहचानना कठिन था किन्तु क्यों ही वह नजर आया क्यों ही इधरत में देखा उस व्यक्ति के चेहरे पर घृणा के चिह्न थे और वह बड़ी कुंवार दृष्टि से स्लीमन को घूर रहा था।

अमरहाना नौकर के समान इधरत कीरन बाड़ा आये बढ़ाता स्लीमन के सामने और उस व्यक्ति के मध्य धा गया। स्लीमन को इस प्रकार धाड़ में लंने के बाद उसने लक्ष्य लम्ब चीहे व्यक्ति से सवाल किया "क्या चाहते हो? साइक को क्यों रोका है?"

उस अनिश्चित ने उत्तर में जमीन पर घुटने बैठता मान दिया था और बड़ी कर्तनी आबाज में कहा "मुझे इस से बुराता हिनाब बुझता करता है। इधरत आबाज सुनते ही सीप में पड़ गया। उसे घाद आया जैसे घनने वह आबाज नहीं सुनी हो। अगर नहीं? सदास न सका। तभी उस व्यक्ति ने आये कहा "तू अपनी जान की खर बाहुना है तो मानने से हट जा। मैं नहीं चाहता कि किसी के गुनाह की सजा में तू हमाक हो।" लेकिन इधरत नहीं हटा। स्लीमन के चेहरे पर हमाइया उड़ रही थी। आतः अचानक से दिवाकर या कोई ओर लँबियार मेकर आत तक निकलने का बिचार भी उसे नहीं आया था। इधरत की धाड़ में मुराबत लम्बने रहने पर भी वह सामने लड़े अदंकर व्यक्ति से जकड़ोत था। धाड़ भीरा दिगने ही उस घादनी को इधरत से धाली

उलझा देखा वह माय निकला । बोझा थोड़ कर उसने एक समझाई और
 बोझा सरपट थोड़ बसा । हमलावर ने देखा और तेजी से इधर के
 बरबर घाया । उसने अपने बलिष्ठ बाजुओं से इधर को ओर का बमका
 दिया । इधर दूर आ दिया । सब तेजी से बोझ की पीठ पर सवार वह
 स्लीमन के पीछे भागा । इधर देखा रहा गया । सब पलों में हो गया ।

दोनों बोझों का अन्तर पचास बालीस गज का था । हमलावर कुछल
 बुझसार साबित हुआ । स्लीमन का बोझ तेज दीड़ रहा था लेकिन
 उसका बोझ उससे भी तेज था । इधर को गिरने के कारण हस्की
 बमक लगी थी । लेकिन इसकी चिन्ता किए बिना वह उठ सका हुआ पूरी
 क्षिति से उन दोनों के पीछे बोझा । जब तक सूर्य की पहली किरण
 आकाश में प्रकाशित होने लगी थी । बोझें नजर आ रहे थे । और पीछा
 करने वाला हमलावर भी । उस पर इष्टि पड़ी थी ही इधर को उस
 दिन । एक अपरिचित का विचार आ गया जिस दिन उसने बाली को
 किसी झुर बोरे से बचाया था । हमलावर नितम्बों बड़ी भयंकर व्यक्ति
 होगा जिसके बाहु होने की कल्पना उस समय इधर को भनाया हो
 गई थी । उसके पैर बहुत तेजी से आगे बढ़ने लगे ।

भयंकर हमलावर ने अपने हाथ से रस्सी इस अन्धकार से फैली कि
 स्लीमन की गर्म उलझी और दूसरे पल वह बोझ की पीठ से बाईं तरफ
 टॉप के बल उलट पड़ा । 'आवा' की बोला में आन्त शक्ति उसके धार्त
 नाद से बूझ उठी । टॉप पकड़े वह बुड़ी तरफ कराहन गया । पीछा करने
 वाला उसे परास्त करने और धाराम से बोझा रोकने के बाद आहिस्ता
 आहिस्ता उसकी ओर बढ़ रहा था । इन बीच उसने अपने हाथ में अपनी
 पेटी में सटका घुसा भी ले लिया था ।

'बचाओ बचाओ' पुकारता इधर स्लीमन । गिरने से कुछ बार
 वहां पहुंच गया । उसने बाबा हाथ उठाते अपरिचित को रोकने का प्रयत्न
 करते हुए कबल आगे बढ़ाया । और तब वह अपरिचित से बिना अपनी

जान की परवाह किये कुछ मया । दायें हाथ स उल्टे उल्टे अपरिचित
का घुर बाता हाथ बन्ध कर दबा लिया ।

अपरिचित इधरत स नहीं अनिष्ट धीर कुम्भ नजर आया । उसने
बड़ी आसानी से अपना घुरे बाता हाथ छुड़ा लिया किन्तु स्मीमन की
अपविष्टता है इस बदल में उसका घुरा हाथ स छिन्न कर कुछ दूर
जा गया । धीर इधरत ने पीछे का नाम उठाते हुए अपरिचित को अपने
बाहुओं में बंदोब्त लिया । स्मीमन बुदबुदाता हुआ ठमांगा देव रहा था ।
उसके पैर की दांपी हठी दुः खुकी थी इसलिये सतप उल्लेख या इधरत
की सहायता करने का साहस न था । फिर भी वह और और से पीछे
कर किसी मजबूत की सपना में लगा रहा ।

अपरिचित ने चन्द ही लोगों में इधरत का पीछे पटक दिया । अपने
हाथ से उसने पेट पर और ने दो-तीन शाय मारे । इन्होंने इधरत एकदम
सफल हो उठा । धीर उसकी घोर ने निरिचल होने के बाद अपरिचित
फिर उठा तथा घुर उठाता हुआ स्मीमन की घोर बढ़ा । वह बुदबुदाता
भी जा रहा था—“यमा बका निह बाबू का बचहानि का मया दिलाए
बिना मैं नहीं आऊंगा लाहौर के बन्ध । मरहम ।”

स्मीमन हाथ हिलाकर जमा बाँधने लगा । इधरत ने फिर साहस
किया धीर बढ़कर दोनों के बीच मया गया । यंदा निह ने मनकाय “कहीं
अपनी जान संभाला चाहता है के कूने । मैं तेरे बारे में बहाना लिए
बिना नहीं मालूम ।” लेकिन इधरत हटने के स्थान शाय जोड़ते हुए बोला
‘बिना से बहाना लेना चाहने हो याई, यह तो मेबारे कुछ ही दिन हुए
मया था है ।”

“बचकाय बन्द कर ।” यंदा निह ने कहा “मैं रिचबीन्द के बन्ध का
कुछ बहाना मया हूँ । इन्होंने सोचा होया मया निह को जेल की हवा बिलाने
न बार यह ज़िन्दा बच जाएगा । यपर मैं इसकी धीर सन धमीनुरोना
बकीर को जान से मारे बिना नहीं छोड़ूंगा । जेल की दोबारे मेरा

नहीं रोक सकती थीं।”

“तुम भूलते हो यह रिचमोन्ड साहेब नहीं है।” इसरत इस बार जल्ताह से कहने लगा “उनका उवाचना हो गया है। यह नए रेजीडेंट स्लीमन साहेब है। नाइक इनके जून से अपने हाथ क्यों रंगते हो माई। करे कोई धीर सजा किसी को भिसे यह जहाँ का ईसाफ है?”

बंया सिंह इसका जूनतेही रुक गया। सुरे वाला हाथ नीचे गिरा वह भावे बड़ा धीर ध्यान ॥ स्लीमन की धाकड़ि देखने लगा। फिर उसकी गजर इसरत पर गई। कुछ देर बाद जैसे उसे इसरत के कहने का मकीन हो गया धीर सुरा अपनी पेट्टी में लपेटते हुए वह बापिस लौटने लगा। स्लीमन का बेहूष मुसु का भव समान्त होते ही निश्चिन्त गजर धारा। किन्तु टांग के दर्द से वह भी वह कराह रहा था। धीर उसी कराहट से उसने जाने जाने को रोका ‘सुनी’ सुनी मिस्टर बंया सिंह।”

बंया सिंह रुक गया। इसरत अपने साहेब को हाथ का सहारा देते हुए उठाने लगा। जब बाकू निकट आया तो बरती से बाप सा ऊपर घठ स्लीमन ने उसकी धाँकों में धाँके डाल उवाच किया “नया तुमको धमीनुहीसा बजीर से बबला मेना है?”

‘हां’ बंयासिंह बोला ‘रिचमोन्ड धीर धमीनुहीसा दोनों ॥ बबला भिये बिना मुझे जैन नहीं।”

“उन लोगों ने तुम्हें गिरफ्तार करवाया था?” स्लीमन ने प्रयत्न उवाच किया। बंया सिंह ने स्वीकार किया तब रेजीडेंट ने अपने कण्ट की चिन्ता भिये बिना मुस्कुराते हुए अपना बाया हाथ धाये बड़ा दिया धीर कहा “तुम मेरे दोस्त हो। क्या तुम मेरे साथ बंगले चल सकते हो।”

बंया सिंह हँस पड़ा धीर बोला “बैबफुल समझते हो मुझे। रौर की माई में जान झूठ कर जमा बाऊँ ठाकि तुम अपनी इस चोट का बबला”

“मैं तुम से बबला नहीं लूँगा मेरे दोस्त। स्लीमन ने कहा ‘इन

यंत्रण जिसे एक बार अपना दोस्त कह देते हैं, उसके लिए जान की बाजी लगा देते हैं।”

‘मयर नहीं जाने की कोई बख्श तो ही। गंगा सिंह बिचारपस्त हुआ और पूछने लगा ‘आप लोग भवानक इतने मेहरबान क्यों हो रहे हैं?’

‘हम क्राइस्ट की कसम साकर बाधा करते हैं दोस्त। तुम्हें कोई मुकसान न होमा। तुमने हमारी जान बख्श थी है हम इसका पहचान नहीं भूलेंगे। हमारे साथ बसो हम तुम्हें बजीर से बबला सेने का तरीका बतावेंगे। बोलो, बसोने हमारे साथ।

गंगा सिंह कोई उत्तर न दे सका। स्मीमन इसरात का सहाय ले उठ कर लड़ा हो गया। संगडाते हुए अपने बोड़े के पास तक आया। गंगा सिंह अब तक किसी निश्चय पर न पहुँच सका था। स्मीमन ने अपने आदिम को विशेष इंसारा किया। तब इसरात गंगा सिंह की पीठ पर हाथ रखता हुआ कहने लगा ‘शुबा न करो भाई। हमारे साथे बबान से कह कर मुकरने वाले नहीं है। तुम इनके दोस्त बन चुके हो। बसो हमारे साथ। तब गंगा सिंह जैसे निश्चय पर पहुँच गया और उछल कर कामे बोड़े पर सवार हो गया। इसरात ने स्मीमन को सहाय बेकर छुड़ बोड़े पर बड़ाया। इसके बाद खुद भी स्मीमन के पीछे सवार हो गया। इस तरह दो भ्रमणार्थी एक नये दोस्त को साथ ले रेज़ीडेंसी बापिस आये।

स्मीमन घूम कर सीम्ने के बाह्र घूँघ पीता था। आज उसके पैर की हड्डी टूटने के कारण बहुत बट्ट था। इसरात का बिचार था घूँघ से पहले वह तुरन्त अपनी महम्म पट्टी बरादमा। बिम्बु उनसे इसके बिप रीत स्मीमन को मारने की उत्तम तरीकियों का आदेश देने पाया। वह अपने मेहमान को समुह करने का प्रयत्न करना चाहता था। उनकी पत्नी हानाकि टांग टूटने से बहुत बिचलित हो उठी थी बिम्बु स्मीमन बहुत उस्माहित मजूर था रहा था। रेज़ीडेंसी का डाक्टर बुलवा

नहीं रोक सकती थीं।”

“तुम मूलते हो यह रिचमोण्ड साहेब नहीं है।” इसरत इस बार बसाह दे कहने लगी “उनका उबारना हो गया है। यह नए रेजीडेंट स्लीमन साहेब हैं। नाहक इनके झूठ से अपने हाथ क्यों रंगते हो भाई। करे कोई धीर सब्जा किसी को मिले यह जहाँ का इलाक़ है।”

बंभा सिंह इसका मुमते ही रुक गया। धुरे बाला हाथ नीचे मिरा वह घाने बड़ा धीर ध्यान में स्लीमन की धाक़ति देखने लगा। फिर उसकी नज़र इसरत पर गई। कुछ देर बाद जैसे उसे इसरत के कहने का यकीन हो गया धीर कुछ अपनी पेंटी में सपेटते हुए वह बापिस सीटने लगा। स्लीमन का चेहरा मृत्यु का घम समाप्त होते ही निश्चिन्त नज़र आया। किन्तु टॉम के बंद से घब भी वह कर रहा था। धीरे उसी करहट से उसने जाने बाल को रोका ‘मुनो- मुनो डिस्टर बंभा सिंह।’

बंभा सिंह रुक गया। इसरत अपने साहेब को हाथ का सहारा देते हुए उठने लगी। जब बाकू निकट आया तो चरती से चर घा झर चठ स्लीमन ने उसकी छाँवों में छाँवें डाल सवाल किया “क्या तुमको घनीपुहीला बज़ीर से बरता मेना है।”

‘हाँ’ बंभासिंह बोला ‘रिचमोण्ड धीर घनीपुहीला दोनों हैं बरता भिये बिना मुझे चैन नहीं।’

‘उन लोगों ने तुम्हें निरपत्तार करवाया था?’ स्लीमन ने घबसा सवाल किया। बंभा सिंह ने स्वीकार किया तब रेजीडेंट ने अपने कपट की चिन्ता भिये बिना मुस्कराते हुए अपना बाँया हाथ घाने बड़ा दिया धीर कहा “तुम मेरे दोस्त हो। क्या तुम मेरे साथ खंवरने चल सकते हो।”

बंभा सिंह हँस पड़ा धीर बोला ‘बेबूफ़ समझते हो मुझे। धीर की माँ में जान बूझ कर चला जाऊँ ताकि तुम अपनी इस चोट का बरता

“मैं तुम से बरता नहीं जूना मेरे दोस्त।” स्लीमन ने कहा “इन

घरमें जिसे एक बार अपना दोस्त कह देते हैं, जबकि सिए जान की बाजी लगा देते हैं।”

‘मगर यही जाने की कोई बजह तो हो। बंका सिंह बिचारप्रस्त हुआ और बुझने लगा ‘साथ लोप अन्धानक इतन मेहरबान क्यों हो रहे हैं?’

‘हम अइस्त की कसम खाकर बाधा करते हैं दोस्त। तुम्हें कोई नुकसान न होना। तुमने हमारी जान बख्श दी है हम इसका प्रहमान नहीं भुलेंगे। हमारे साथ बसो हम तुम्हें बजीर से बहाना लेने का तरीका बतायेंगे। बोलो, बसोले हमारे साथ।’

बंका सिंह कोई उत्तर न दे सका। स्लीमन इशारे का प्रहार से उठ कर नड़ा हो गया। समझाते हुए अपने बोले के पास तक आया। बंका सिंह अब तक किसी निरक्षय पर न पहुँच सका था। स्लीमन ने अपने आदिम की विषय इंगारा दिया। तब इशारे लगा सिंह की पीठ पर हाथ रखता हुआ बड़ने लगा ‘शुबा न करो भाई। हमारे बाहेब नवान से कह कर नुसरत नाम नहीं है। तुम इनके दोस्त बन चुके हो। बसो हमारे साथ।’ तब बंका सिंह जैसे निरक्षय पर पहुँच गया और प्रत्यक्ष कर जाने पीछे पर सवार हो गया। इशारे ने स्लीमन की सहाय्य देकर सकेर पीछे पर बढ़ाया। इसके बाद बुर की स्लीमन के पीछे सवार हो गया। इस तरह का अमरुगारी एक नय दास्त की साथ से रेजीडेन्सी बाबिन घाम।

स्लीमन घूम कर पीछे के बाह दूध पीना था। घाम समय पर की हठी दूधने के कारण बहुत बटु था। इशारे का विचार का दूध ने पहल वह नुरत घामों मरहम पट्टी करादगा। हिम्नु उगने इनके बिद पीठ स्लीमन की मांसे की उलय सँवारियों का घरेलू दन बापा। वह घामे मेहमान की मज्जु करने का प्रयत्न करना चाहता था। अपनी बसो हाजीर टोप दूधने से बगन बिचलित हो उठी थी हिम्नु स्लीमन बहुत सत्ताहित मरद था रहा था। रेजीडेन्सी का दाखल बुल्हा

लिया गया था । कराहता हुआ पलंग पर भी जा बैठा था । किन्तु हास्ते की ओर से तैयारियाँ करने वाला आदेश ज्यों का त्यों रहा । इस्फ़ल को इस पर आश्चर्य हुआ । डाक्टर ध्याता तो उसने पलंग पर लेटे-लेटे ही अपनी मरहम पट्टी करवाई । लेकिन उस वक़्त गंगा सिंह सामने बैठा माइता कर रहा था ।

डाक्टर कह गया था बायीं टांग के छुटने की हड्डी कुछ बटख गई है और स्लीमन को भरपूर धाराम करना चाहिए । मगर वह इसकी परवाह किये बिना अपने नये मेहमान की खातिर ठाढ़ो में गया रहा । ठाढ़ इस्फ़ल ने उसे रोकने का प्रयत्न किया "साहेब आपकी उमिरत नाचाह है । बेहतर होया अगर आप इस वक़्त धाराम करें और गंगा सिंह से कुछ बेर बाह बाटें कर लें ।

लेकिन स्लीमन ने इस पर ध्यान नहीं दिया । हाँ इसके स्वाग पर उसने इस्फ़ल को आदेश दिया कि वह किसी से आब की घटना का जिक्र न करे और पुछने पर यही बताने कि टांग की हड्डी जोड़े से निरन के कारण टूटी है । और इसके बाद उसने कहा गंगा सिंह की बाहीं छोड़ इस्फ़ल वहाँ से चला जाने । स्पष्टतया अब स्लीमन गंगा सिंह से कोई बात करना चाहता था जिसके लिये उसे यहाँ लाया गया था । वह वक़्त बातचीत सुनने के लिये मन ही मन बेचैन तो बहुत हुआ किन्तु अबसर देखते हुए वहाँ से सिर झुकाता चला धामा ।

गंगा सिंह के साथ स्लीमन ने पूरे दो मधे गुजारे । इस बीच उसके कप की बर्बादारी तरफ़ फील चुकी थी । और बाहेब बीड़े हुए आए । रेजीडेंट की ओर नीकरी ने भी लुप्तमूकिये मित्राज में सलाम पैदा करने की आज्ञा पाही किन्तु स्लीमन ने भीतर से कहलवा दिया वह घाम तक किसी से नहीं मिसेंगे । वे लोग जीट गए और जेट के लिए तैयार गई

मकी मकी से कहा—“लेकिन हम क्या कर सकते हैं। यह पता नहीं मुझसे है।”

“बनाव का परमाणु क्या है।” मकी मकी बोले—“लेकिन मैंने इसका मतलब यह समझा है। बकीर की कॉन्सिलेशन विचारों की तरफ से किया है। क्या हमीनुद्दीन साहब साहब प्रत्यक्ष को रोक नहीं सकते थे। क्या उन्हें दिखाई नहीं दे रहा था कि बीछों को यहाँ पर बालना करने शुरू की बात है।”

मकी मकी के सामने होते ही स्त्रीमन के लुब्ध चेहरे पर मुस्कुराहट बड़ी गई और वह हँसता हुआ कहने लगा—“अच्छ, हम समझे मकी सा। आप का मतलब यह हम समझ गये।”

“नुमाव का कोई फायदा मतलब नहीं है बनाव। नुबारिया मही की कि साहब प्रत्यक्ष के जिस मुझसे को आप नहीं कह रहे हैं, वह बकीर के लिए खतरनाक साबित हो सकता है। नवंबर साहब तक सरिबन बेमन के साथ जाने की इतिहास आपके धीरे उन्हें दिखा जाए कि बकीर की कॉन्सिलेशन से यह पुरुष क्या सकता था।”

“तो वहाँ से साहब प्रत्यक्ष को मसूरा घायल वह अपना बकीर फौरन बदल दे। यही न? लेकिन मकी सा हम बोले लीकों से आपकी कामयाबी नहीं मिल सकती।”

मकी सा बचता गये। इसका स्त्रीमन का डंभ देखते हुए न चाहने पर भी मुस्कुरा दिया था। मकी मकी सा उसकी ओर से नजर बचाने बन्दी से कहने लगे—“मेरा यह मतलब नहीं है। मैं तो कह रहा था”

“आप हमें साहब कहते हैं। स्त्रीमन की मुस्कुराहट पलों के लिए बड़ी धीरे फिर बुझने वाले विराग की रोयनी के समान एकदम सामने हो गई। वह सहसा गम्भीर हो गया और मकी सा से बड़ी रहस्यमयी आवाज में बोला—“बोस्तों से आप खुशानी जाए अगर अस्थिरता मुझ नहीं करती। हमें अफसोस तो यही है आप अपनी बोस्ती का हाथ हथके

बहुत दूर रखे हुए हैं।”

क्या करमात है जगाब ? नबी का भी उत्तर में उसी प्रकार मन्गीर होता हुआ कहने लगा— मैं तो आपका बाबिब हूँ।

“सब यही कहते हैं नबी का साहब। हिन्दुस्तान की जमीन में कुछ ऐसी बात है। इधर मन्गीर निकला और उधर सनाम हुआ बन्द।

“मुनाम ऐसा नहीं है। कुत्ते-वाक की बसम खाकर कहा है जगाब कि मैं सोन्तो का सन्ना सोल और दुस्मनों का बरका दुस्मन हूँ। आइमी की जात का पता परखने पर लपटा है हजरत।

“अच्छी बात है।” स्लीमन ने कहा—“मोरी आमा तो यह भी देखेंगे।”

इसके बाद आगे कोई विशेष बर्णन नहीं हुई। नबी का बसे गये। समते जाते ही स्लीमन ने देखीहमी से बई जाहेब को बुलवाया। एक मुनाम हुसम का पानन करने बना गया। सब स्लीमन ने अपने कोट की भीतरी देब से कोई कागज निकाला और बार-बार उसे पढ़ा। इंगरत नजदीक गया रहा। कागज फिर वह करत के बाद स्लीमन ने नामने पलन पर हान दिया और इधरत से बोला—‘तुम मोरी बाई को जानते हो इधरत?’

‘कौन मोरी बाई?’ इधरत नहीं जानता था हमलिदे पूछने लगा।

स्लीमन ने बताया—“नाही सबायक जो बाइगाह की गाना मुनामा करती है?”

वह औरत समझ गया। मोरी बाई सगाह की प्रसिद्ध दादिराधी में थी। बीर से बडा-आ महान का जियमें पानी रजम से मोर मन्गीर रा री थी। उसकी मुनाजिमन पाहे घाय का उमरी बेमयात को पाना मुनाम की थी। स्लीमन ने उसी के बारे में पूछा था।

“जानता है हजरत।” उमन पेशाब द दिया।

“तुम बाइ रात उसके महान बाधोये और हमरा सनाम बीजोये।”

‘बहुत बुरा ! इधरत ने कहा । लेकिन स्लीमन का पारेल इसी सीमा तक सीमित रहा । मोती बाई को संध्याम बारने के बाद क्या कहना होया यह उसे नहीं बताया गया । इससे इधरत को बड़ा आश्चर्य हुआ । स्लीमन जूँकि इतना हुजूम देने के बाद भुप हो गया था इसलिये वह समझ गया इतना ही कुछ इधरत को बताने लायक स्लीमन के पास रहा होना । मगर एक सम्भावना उसकी बुद्धि में कुरमुरा गई । हुजरत पुराने पाप हैं । इतने कष्ट में भी तबियत की रंजीनी से मजबूर हो गये हैं । संध्या देने के बहाने लाकर यहाँ बुलवाने का इरादा उसकी मार पड़ गहुँवाला चाहते हैं ।

आधा बटा बीरते न बीरते बड़ साहेब लचरीफ ने माने । इधरत उस बन्द डाक्टर का दिया कोई तरक स्लीमन के बुटनीं पर मल रहा था । कुर्सी पर स्थान ग्रहण कर कुछ समय तक वह स्लीमन के हाव भाव पृथक् छू । अन्त में आर किये जाके का कारण जानना चाहा ।

स्लीमन ने बताया—‘मेरी तबियत ठीक नहीं है । गवर्मेन्ट-डॉक्टर का यह अल साहे यमक के नाम थाया है । मैं खुद नहीं जा सकता इसलिए आप को सुर्द करवा हूँ । आप आब रात क्तरमंजिल में द्विज हाइमस से मुलाकात करें और यह खत दे मायें ।’

बड़ ने स्लीमन के हावों अल लिया और उसे पढ़ने लगे । इधरत अल के बारे में जानने की बहुत बेचैन था । लेकिन बड़ की आमासी से बंथा बुरा होना सम्भव न था । वह मन ही मन ईश्वर से प्रार्थना करता रहा कि उसे भी रात का मस्बहा सुनने को मिल जाये । और जबकी हुमा स्वीकार कर ली गई । अल समाप्त होने से पहले-पहले बड़ की माहृति में अमीब लख का परिवर्तन आया और वह सिर झिंलते हुए स्लीमन से बोले—‘शर क्या आप यह काम किसी और के सुर्द नहीं कर सकते ?’

‘क्यों ?’ स्लीमन ने जवाबी में सवाल किया । जूँकि बड़ का यह

उत्तर पम्मीर का घीर घामे होने वाली किसी महत्वपूर्ण बातचीत का घोटक भी था। घत इधरत की उपस्थिति में घंपची का प्रयोग उसे मुनिबाजनक लगा। बई भी समझ गया। उसने उत्तर घंपची में ही दिया। सकिन इधरत घत था। वह मघची बातचीत बहुत कुछ समझ लेता था। घरने काम में दिन लगाये वह घरने काम इसी तरफ लगाए रहा।

बई ने स्तैनन के घूँसे जान पर भिन्न इनका उत्तर दिया— 'मुझसे ऐसा कोई काम नहीं हो सकता जिसकी मेरी घारमा स्वीकार न करे।'

इस पर स्तैनन एकरुम बिहड़ गया। उसने बई का सम्मुख घोटा मीन सँकहर दे खाता— 'हमें घरने मन से नहीं यवनर-जनरम की हिदायतों से काम करता है। भिस्तर बड़। घापकी इस तरह इनकार से घपनी बराबारी पर दाघ नहीं लगाया चाहिए। यही बात यवनर जनरम तक पहुँची तो वह नापसंद हो मरवे हैं।

"यह तो छिन्न है सर, लेकिन इस गत में भिन्न बादगाह की ज़कीत करने की बर्तों-स की गई है। इसकी जवान में घरप की बराबारी का लगाया गया है। यवनर जनरम के ईमानदारी के लिये कुछ सिगा है। मैं किस तरह हिज हाइमन के सामने घेरा कर सकता हूँ?"

मुम बहुत जवान जवानगी हो बड़। उस घीर झूठ का नहीं हमें बम्मी-जनरम के नमक का कर्ज घटा करता है। मुम घंपची तरह जानते हो घरप में दाघ बोरो घीर ठगों की भरमार है। मुम यह भी जानते हो यही की हजूमन बड़ा लियेई की तरफ मज्ज इसलिए तरहको नहीं दे रही बि रिघाया काम मज्जानर हो जायदी घीर हुकामों को दुनारोनी। दाघार में गबेयों नबेयों घीर हिजहों की गिनती मुमसे प्यीरी नहीं। ऐसी घाराम में दाहे घरप में राद को

"यही तो झूठ है सर मैं कैसे जनर जगह यवनर का पैनाम दे सकता हूँ बि उनसे घाघ बनकर हजूमन दीन भी जायदी बूटि बड़

ऐसाध धीर नाकारा है। सर, घाप न जानते हों यह दूसरी बात है लेकिन मैं इस सच्चाई से कैसे झूठ फेर सकता हूँ। मैंने हिव हाइनेस को बहुत दिनों से देखा है। वह ऐसाध नहीं है, नाकाध धीर भावाध नहीं है। धीर धीर बाह किस मुस्क में नहीं होती? कीज हुकुमत उम्मे पनाह देती है? धीर नबर्नर-जगरन धाह्व ने लिखा है यह हावाध हवाधे मुभायदे उम् १८०१ की छठी घर्त के बिनाफ है। यह घाधर वृत्त है। उम्मे जमीन धीर बेहन्वस करने की होप है।”

स्वीसन इस प्रसामयिक बाधों से बहुत बनीर हो गया। उसने इसल्ल के हावों से घपना बुटना बीच लिया धीर बीया लगे हुए कहने लगा — “इसका मतलब यही हुआ मिस्टर बर्ह कि तुम्हें अपनी सरकार धीर अपने हमबतनों से बवाध धाह धीर बाह की हुकुमत में बिल-बस्ती है।”

“नहीं मैं सच्चाई का तरफदार हूँ। जो बात है नहीं उसपर कैसे हमी भर सकता हूँ। घापने यहाँ घाठे ही धाहे घबध के बिनाफ नबर्नर जगरन को न जाने क्या-क्या लिख मारा है। घसी का गलीबा इस लठ में बाहिर है। लेकिन सर यह इंसफ नहीं कहा जा सकता। हमें जो भी करना हो इंसफ धीर ईमानवादी से करना बाहिए। क्या घापही बनीन है इन छोटी छोटी बाधों से घबध में कोई खरीली की बा लच्छी है?”

‘यह बाधें छोटी नहीं मिस्टर बर्ह। दरघसल गुम हूर बीज को बेर में समझने के घादी हो गये हो। धाहें घबध एक घन्टी घादनी है मैं घुब बी घनूर करता हूँ। लेकिन हमारे सामने कम्पनी की पालिती धीर उसकी हुकुमत की मुर्कई है। लन्बीलिपा होने वाली हों तो छोटी-छोटी बाधों से भी मुनकिन है। धीर इस लठ में तो लन लन्बीलियों का डिज भी नहीं। कम्पनी-सरकार हकीकतन अपने जामज् हक से काम ले रही है। जो बीज हमें मापसम्भ है बा जिसमें रिघावा का मऊध नहीं पसके बारे में धाहें घबध को बलनबलत याध बिवाते रद्दना हवाध कर्ब

है। रहा तुम्हारी माँकेत खत का नेजना। अगर तुम नहीं चाहते तो भीर मुझी से अभीगुहीला के पास भिजवा दूँगा। लेकिन अपने फेंकते से पहले तुम्हें सोच जरूर लेना चाहिए कि आगे इसका नतीजा क्या होगा। मुझिन है मैं तुम्हारे जजबात के बारे में भी सबनर अनरन को तिन मजू और वह समने तुम इतन डेंबे छोड़ने पर काम करते हुए भी कम्पनी-बरबार के बछाबार नहीं।”

बह की गर्दन झुक गई। वह कुछ देर मामोपी से सोचता रहा। बाहिर में स्त्रीमन की घोर बेगते हुए उसने कहा “यही तो मुमीबत है सर। मैं माइमापी के आगे अपना सर झुकाता मापसम्प करता हूँ तो अपने मुक्त के विभाज यहाँ भी नहीं कर सकता। दाह मेरे दोस्त और एक मोहभरत मेरे दिन के इंसान हैं जिन्हें किसी बीमन तकलीफ पहुँचाना मेरी ताकत से बाहर है तो दूसरी तरफ उन सरकार के अहकाम हैं जिनमे मेरा और मेरे बच्चों का पेन पणना है और जिनको टाकना मेरे पत्र के विभाज है। इसलिये हमेशा की तरह इस बार भी कम्पनी सरकार का ताजा नगर मैं अपने ही हाथों दाह के घीने में कुमोड़ना। लाइये घत मुझे दीजिये, और भून जाइये मैंने इम्मान होने के नाते दाह के हक में कुछ दर्ज किया था।”

“गुड।” स्त्रीमन ने घत देते हुए कहा “मैं तुम्हारे जजबात को यह जानता हूँ। तुम बहुत अच्छे घामर माबिन हो करते हो। बजने तुम्हारे दिन में बीरली अती कमजापी न रहे।”

बह बिना कुछ बहे-मुने बही से बना दना।

घरघ में उस समय राजनैतिक रसाफणी हो रही थी। जिसमें भाग लेने वाले एक घोर ये छिरणी हुकूमत के मुमायन्ने रेबीजेंट और चर्नर बनरन और दूसरी घोर के धमिका कियवर और बबीर मयौमुहोमा। दोनों पक्ष अपने बस से अपने घाप को बिबेठा बोपित करने का प्रबल कर रहे थे। रेबीजेंट और चर्नर-बनरन की नीति सुस्पष्ट और स्विट थी जिसका एकमात्र चरम लक्ष्य था घरघ को हुस्तान्तरित कर लेना। दूसरी घोर इसे बचाने वाले चाह के इयवर्ब बबीर और दूसरे बरकाटी-गण अपनी ही छूट के कारण न तो एक नीति पर बल सकते थे और न अपने लक्ष्य की पूर्ति का कोई सुगम उपाय उलास कर सकते थे। और यहाँ यह कि जिसके लिये यह सब कुछ किया जा रहा था वह कुछ निश्चिन्त और निर्द्वन्द्व बैठा हुआ बबीर का सब से बड़ा अपवाद था। उसे संसार में किसी पर अविश्वास नहीं था और अपनी हुकूमत के बारे में मन से चाहे कितना अन्दिग्न रहा हो किन्तु जिसकी ज़बान पर हर बार यही बारूदा प्रकट होती थी कि संदेह से उबड़ी मित्रता है और वह कभी धोखा नहीं दे सकते। इस तरह कहा जाए कि एक पक्ष बहुत सबल और दूसरा पक्ष बहुत निर्बल था तो अतिशयोक्ति नहीं है। कुछ और भी तो यही कि निर्बल पक्ष के साथ कागूज हसाफ और हक की दुहाई थी जब कि दूसरा पक्ष जोर-जबरदस्ती और बेईमानी से अपना काम निकालने का इशतुअ था। घरघ कम्पनी सरकार की धाँची में बटक रहा था और इसे कच्चे में लेने के लिये संदेह हर अचित-अनुचित उपाय पर कटिबद्ध थे।

कई बार यह बजकियाँ या चुप्पी थी कि चाह का शासन खराब होता

का रहा है और हकूमत ने उन सत्तों को पुरा नहीं किया जो १८०१ की बिलियन्स एक्ट के अनुसार बनक लिए गयी थीं। गवर्नर-जनरल के पास रेजीडेंट के सारीने आज जिनमें ऐसा बर्लम दिन सोम वर हुआ करना। हरबार क गायक और गायिकाओं को मकर कई बार छोड़ने उठने गए। फिजूलखर्चियों का व्योरा दिया जाता रहा। धरम के डाकुओं का रोमाचकारी बर्लम होता। और इन सब की सूचना छाह के पास उस समय घाली अब उनके कहने को कुछ हो न रह पाता। स्पष्ट है अगर रेजीडेंट के घालेवों के साथ छाह का उत्तर भी जाता तो स्थिति स्पष्ट होती बनी जाती किन्तु पहले कहा जा चुका है कुरब पक्ष तो घालने लक्ष्य की पूर्ति के लिए सभी सम्भव उपायों का काम न ला रहा था। घाल में घालिया घाली तक पहुँचो कि गवर्नर-जनरल के पक्ष में उनका घाली घालीवाहिर होने लगा। उन्होंने प्रकट किया कि जैसे वह निष्ठ करन मर्याद और मित्रता के बंध छाह जैसे नाकारा अधिकारी को कक्ष में रख कराने की आज्ञा दे रहे हैं।

साह हाकिम के ऐसे पक्षों का घाला दरसूर जारी था कि छाह की एक बार उनके बानपुर घालेवी सूचना मिली। ज्ञाति बानपुर पहुँचने की कोई सूचना छाह को नहीं मिली थी। लेकिन घाली बर्लम ल्याव उन्होंने बिना बुलाए साह से बानपीठ करने का फैसला किया। एक बड़ी रियासत के छाह के लिए इस बर बार और कपमान की बात नहीं थी कि वह रेजीडेंट के उष्टे-जीसे पक्षों में प्रभावित गवर्नर-जनरल के सम्मुख घाली मराई पैग करने जाए। किन्तु फिर भी वह लगे। गवर्नर जनरल ने ऊँच पाप की घेंट हुई। घेंट और निपटारों का आदान प्रदान हुआ। बहुत देर बानपीठ हुई। गवर्नर जनरल छाह के सट्टीकरल से सम्मुख और प्रभावित मरु घाल। कपत समय उठाने निराप रियासत घालका रेजीडेंट की जिवाधनों पर पक्ष उठान में प्रथम छाह को उत्तर देने का मौका दिया जाता करेता। और रेजीडेंट रिचमण्ड के निवास

नाराजगी बाहिर करते हुए यह भी कहा गया कि वह उसे तम्बोल कर
 लेगे। शाह बापित आ गए। उन्हें मबनर-जनरल पर विश्वास हो गया।
 किन्तु कुछ दिन बीतने पर मबनर जनरल का वृत्तान्त स्मृतिपत्र आया।
 कानपुर की सेंट का शुभाला बैठे हुए पिछले आरोपों की पुष्टि करते हुए
 मबनर-जनरल ने साफ लिख दिया कि वह शाह के उत्तरों से समुत्प
 नहीं हैं। शाह पर पत्थर पड़ा। यह कैसा हवाफ है। मुह पर कुछ बल्ल
 में कुछ। कानपुर की सेंट के बीरम कहीं तो मबनर जनरल ने शाह के
 प्रति अपनी निष्ठा और प्रेम व्यक्त किया था और कहीं अपनी ज्वात से
 इस तरह मुकर जाना। भवर हो गया सचता बा। शाह ने मबनर-जनरल
 की ओर से व्यादा सावधान रहने की कोशिश की। हुकूमत की बेबनाम
 में और व्यादा बल्ल लगाना शुरू किया। इसी बीच लार्ड हालिग के बाद
 दूसरे मबनर जनरल आए, जिन्होंने पाठे ही शाह व्यव को बोस्ती बल
 बल लिखा और जोसे बाबशाह ने फिर समझा मुसीबत टल गई।
 मबनर जनरल उनका दोस्त आ गया है।

कई बार ऐसे कृतकृत्य हुए। शाह को बलता बैठे बल्ल उनका हुकू-
 मत खरम करने की सीमाब बाए बैठे हैं। फिर अपने स्वभावबल्ल वह समुत्प
 हो सोचने सल्ल ऐसा मामुमकिन है। कोई वरकापूनी और बैरुह बात
 नहीं कर सचता। पासकर प्रवेख जो उन्हें अपनी बोस्त मानते हैं।

और इन बोस्तों का क्या हाल था इसकी कल्पना इसी बात से हो
 सकती है कि ऐजीडेंट डम्प एच स्लीमन जो उस समय लखनऊ की ऐजी
 डेंट एजवाइरों की मौत के नाम से प्रसिद्ध हो चुका था और मबनर-जनरल
 ने घाउदुम के स्थान मीती ब उसे लखनऊ भेजते समय लिखे यही लिखा
 था कि व्यव में कहीं निकट मविष्य में कुछ बड़े परिवर्तन होने वाले हैं
 वही बाप जैसे कादिल और सल्ल ऐजीडेंट की धावस्यवता है। बाजिब
 घाली नहीं समझते थे किन्तु स्लीमन यही प्रकार जानता और समझता
 था, सल्लबल्ल में ऐजीडेंट के छोड़े पर काम करने वाला कम्पनी-सरकार

का समय वही बाबिन मुनाबिम होगा जिसे साथ-साथ यह सीमाप्य भी प्राप्त होगा कि उसने एक हीनहार रेजीडेंट की तरह व्यव्र जैसी बड़ी रिवाजत का पनों में मटिगामेट कर जाला ।

स्पीमन का जन्म ब्रिटेन के कार्मबाल जिले में स्टार्टन नामक गांव में हुआ था । साम्यकाल उसी गांव में बिताने के बाद जगती पड़ता काखारों लिए वह प्रध्वजी पीत्र में घरी हो गया । भारत की बमाल सेना में वैदल सवार तैमात होने पर जब वह यही आया ता उसके प्रधिकारियों ने उससे सीमाप्य जटवाई कि वह हवेसा कम्पनी-सरकार और अपने हमवतनों का हमदव और बकावार रहेगा । स्पीमन ने अपने हृदय से सीमाप्य ही और भारत जाने पर उसे भरपूर मिमाया । आत्मोन्मत्ति की मट्ट भावना और साहस व सीमाप्य से दिनों-दिन उसे तरबकी मिलती गई । और धातिर पदल पीत्र का साधारण सिपाही एक दिन रेजीडेंट के पद तक आ पहुँचा । आली में अपनी धाय मीठ देन के बाद अब व्यव्र का मम्बर था । दबर्नर-जमरन को बिरबास था १८०१ के बाद धाय तक जिस नाम को कोई रेजीडेंट नहीं कर सका उसे स्पीमन बिना घर्त और धामानी के बुरा कर जेगा ।

व्यव्र के हस्तगत करने में वो बड़े धबरोब था । एक वहाँ का काबिन बगीर प्रमीमुहीना और दूसरे धाह की तत्परता व सीमाप्य जिस में वह हृदयत का नाम सम्राट रहे थे । रिबपीर ने हपीयो और स्वाजासध्यों की सहायता में धाह को बीमार धातिर करन के बाद उन्हें विमुन करने की नेट्टा की किन्तु सकनता न मिल पायी । स्पीमन इन तरकीबों को पीपी बहा करता था । वह टोय जगामों पर बकासा मधीन करता था । और अपने लगनरु माने के बुरा दिनों बाद उसने अनुभव किया उसके टोन ज्ञाय पड प्रतिजठ गारे उतर रहे हैं ।

मतिजा मुम्मान मरियम के म्हन में बा-धाह अपना धधिक में धधिक समय बिताने के धाही बन चुके थे । उन नवागता रदली के प्रेव

का मघा जोर-जोर से बड़ा धीर बड़ा । पहले कहा जा चुका है धारम्म में वह सुबह-सुबह उठ कर परेड देखने सुब जाया करते थे । मरियम के पहुँचने के कुछ दिनों बाद इस नियम में हील पड़ गई । मरियम न जाने किस तरह की से उन्हें रोक लेती । मनुष्य सुख-धारम्म का अनुभव करते ही बहुत जल्द उसका धावी हो जाता है । परेड में सुबह की उपस्थिति बीने-बीने घाह की धावरने लगी । उन्होंने यह काम अपने बाई मेजर सिकन्दर हम्मर के सुपुर्ब कर दिया ।

घाह सराब नहीं पीते थे । मरियम ईसाई परिवार में सम्भव रखती थी । उसके यहाँ धराब जायज थी । बारघाह की हवाजत से उसने मदिरा सेवन पहले सुब धारम्म किया । फिर घाह धराब को प्रष्टि करती रही । बाबिब घसी इस बीमारी से प्रत्यक्ष बुर थे । लेकिन मरियम का विनय पूर्ण अनुरोध न टाल सके । एक दिन धनायास रुसम दूट गई । उसके बाद अक्सर धराब के बीर जमते । घाह धराब एकान्त में धराब की लमारी लिए मरियम के धारिगम में जीवन का सुख लेते । मरियम ने सामधानी इतनी बर्ती कि धराब की बात बाहर न जासकी । सोम यही जानते थे बुर मरियम पिया करती है । घाह इस धुनिया से धीर स्वादा प्रसन्न हुए । लष्ठा सुखधामी मासूम देता था । माँ मलिका क्रिस्वर से उन्हें भय लमटा था किन्तु मरियम की कुटिबता से यह भय साकार होने से बचा रहा । धीरे-धीरे वह धराब को स्वादा धीर स्वादा प्रसन्न करने लगे ।

धाने जल कर मरियम राज्यकारों में धपना मत भी ध्यक्त करने लगा । गवर्नर जनरल के स्मृतिपत्र धाते तो घाह ज्वास धपनी धारम्म बाह में धाते तब मरियम फिरमियों को बुरा-भना कहने ॥ धाव-साध घाह को रास्ते सुझाती कि किस तरह हुक्मरत को धध्धा धीर निर्बोध बनाया जा सकता है । घाह के लिये यह नुस्खे राजबास सिद्ध होते । मरियम के मुख से धावबासनपूर्ण बातें भली मासूम देती । वो उत्कार

रणीन बाम मोहक लयता । तब बहु अपनी प्रतिष्ठा का अपमान भुसाने के लिये मरियम से हँस-हँस कर बातें करते प्यार की बातें करते घराबे पीते धीर अन्त में इतने महहोश हो जाते कि उन्हें मार न छाटा उस दिन दरबार में उनके प्रति रेजीडेंट की ओर से कितनी मत्तना की गई थी । यह प्रतिक्रिया धाने चल कर अपमान से बचने की साधारण तरकीब बन गई । स्लीमन जैसे कुर्त घबरा ने घबरा में पहुँचते ही बाह घाह को परेसान करना आरम्भ कर दिया था । वहाँ मौका लगता नहीं कोई न कोई ऐसी हरकत कर बैठता जो बाहघाह को परेसान करती । लेकिन मुसीबत थी उसका कोई उपाय न था । दरबारी जो घाह से अप्रतिष्ठा पाते स्लीमन द्वारा मान्यता प्राप्त कर रेजीडेंसी में मौक़र हो जाते । जिस सिपाही को बेमरबी या किसी धीर आरोप पर घाही मुसा बमत से हटाया गया वह तुरन्त घबरा बस्ते में शामिल हो गया । धीर तो धीर धाने चल कर स्लीमन में खूब अपना दरबारलवाना धीर लोपों से प्रार्थनापत्र लेना भी शुरू कर दिया था । बाबिब धली को बह-बह इन बातों की सूचना मिलती वह मन ही मन कुछ् बताते । लेकिन असमबता की चीकनी में सिबाय जुकने के बूझरा उपाय न था । तब मरियम की आरामगाह में घराब का बाम लेते धीर उसके बुंवराने बालों में अपनी डैमलिया फेरते कभी-कभी उन्हें ध्यान धा जाता जब मौत निश्चित है तो फिर डिनदपी के इन मुक़्त से बंचित क्यों रहें । घाब अपमानित करने वाला स्लीमन कल यहाँ कोई मया उत्पत्त करने क बाह हमें बेवसल कर दे तो भी हम कुछ् कर न सकेंगे । इसलिये क्यों न मरियम के हाथों से बीभर मदिरा का मेवम करें धीर बीबन का मुन लें । जो वस्तु घसार है उस आरकप देने से सिबाय अपना मन बुलित करने के धीर कोई साध नहीं । अत घाह मरमन अपने अपमान धीर अपनी प्रतिष्ठा को मरियम के साम्निष्य में बुबाने के प्रयत्न में लीन रहते । उबर मरियम का यही एक लक्ष्य था । वह जब भी घाह की किसी राजनीतिक

गी उसके पीछे यही एक भाव होता जिससे चाह अपने
 र, असहाय और अशक्तों की दया के अधिक समर्थ ।
 म बड़ी सफ़ाई से चाह के बा पबरदस्त सहकारियों में से
 कर रही थी । उसकी दृष्टि में वह दिन स्वाभा दूर नहीं
 नज़्म में प्राग भय जाने का समाचार पाकर भी चाह
 अठखेलियाँ करते रहते और घाम की ओर से अश्लीलता
 । ओर वह जानती थी जिस रोक ऐसी भीषत आई,
 पयों को यह बाधा करन स कोई नहीं रोक सकता कि वह
 नामदम है । नाकाय और ऐसाच है उसे सुरक्ष बाध
 देना चाहिये ।

र अथवा की बाधनाहत का दूधरा बड़ा समर्थक बनीर
 । मरियम उससे जैसे भी असमर्थ थी । गर्दन का पाव
 ना था । किन्तु उसकी पीड़ा में बनीर की कुटिल आदृति
 र सईब के लिये अंकित हो गई थी । वह कोई अपाय सोच
 र देवीहंसी की ओर से किसी आदेश की धरोहर भी कर
 थी उसे मोटी बाई नामक सरकारी तबायक ने आकर एक
 के रतवार की मुबह बर्ष में उसे किसी व्यक्ति-विशेष से
 ।

मती के महम में वहाँ रखा करता था । हरम में रम्माया
 रण किसी को जाने की आज्ञा न थी । बास दागियाँ बाही
 र बगमात्र की सेवा में रहती । मरियम ने तममें में धरने
 कुछ की इनाम दरवाजि ने दरमी ओर दिया रक्ता था ।
 न स्तोमन के मुन्बग्य से नाम हरम और मदन ने भीतरों
 ऐसे दास-दातियाँ मोहूर व जो अमर पाई अरब का

धीरे धसते घेंट करने बहू धनधर यहाँ धा बाया करती । बहू बूढ़ा मरि
 यम को बेड़ी कड़ कर पुकारता धीरे धनधरी-धुरी सीध बेता । मतिरा
 किस्वर को इस घेंट पर कोई ऐतराज न था । धन परिवर्तन के बाध मरि
 यम ने चर्च की प्रार्थनाओं में सम्मिलित होमा बन्ध कर दिया था । बाधरी
 से बहू धन धरने पुराने सम्पत्तियों के आचार पर मिल-बँटकर बाँटें कर ले
 इसमें कोई दोष न दिखाई दिया । लेकिन इसके पीछे वास्तविकता क्या थी
 मतिराकिस्वर को वह बात होती तो धाबब कमी जैसे बहू धाने की धाखा
 न देती । पालकी वाले चर्च के बाहर खड़े-बड़े मरियम की प्रतीक्षा करते ।
 पादरी भी धन धरने कबरे में सुप्त हो जाता । लोग समझते बूढ़ा धनधी
 मुँहबोली बेटी से बाँटें कर रहा है । धीरे मरियम रिखने घस्ते से बुझी
 काने बाहर निकल कर नजदीक के माहूले रोमहूले में एक मकान में
 पहुँच जाती । किसी घर वह बात प्रकट हो चुकी थी । पालकी वालों
 तक को पता न चलता मरियम किस से बाधरीत करने के बाद कहीं से
 बापिष्ठ सीटी है ।

उस दिन भी बहू रोमहूले के घसी मकान में एक कबरे का द्वार
 बाने बामने धने एक तीन-बतीत धान के बोरधलु व्यक्ति से बाँटें कर
 रही थी जो देखने में सुन्दर धीरे बलिष्ठ था । धनेधी पोसाक से स्पष्ट
 हाँता था कि वह ईसाई है । धीरेबाँटें बाहिर कर रहा था उसके धाटा
 पिता में से एक धनधर निवेधी है ।

इसका नाम जोसेफ धार्ट था धीरे मोती बाई ने इसी की घेंट का
 लबाधार मरियम को बहूबाधा था ।

मरियम ने बहुत धी धाने उसके साथ की किन्तु धन सब से तात्पर्य
 न रहा हूब उस धार्तानाथ का बिधरलु दे रहे हैं जो धाधरीत लबाध
 होने के बाद चलने से कुछ पूर्व धन धीनों में हुई । मरियम बाँटें-बाँटें
 एकधम बापिष्ठ सीट पड़ी थी धीरे जोसेफ के तापने धा कहने लगी थी
 "यह सब कब तक होगा जोसेफ मैं धन जिम्बनी से लय धा चुकी है ।

गुरा के लिए मुझे वहाँ से बुला लो मेरे दोस्त !”

“धमी से ?” जोसेफ ने हँस कर कहा— घायब वहाँ के ऐंछो घायम ने तुम्हें अपने मूषाफिक नही बनाया मेरी । लेकिन बचपने से काम नहीं चलेया । धमी तुम्हें बहुत बिनो बाजिब धसी के साथ मीज धारनी है ।”

“मुझे ऐसी मीजों से नकरन है जोसेफ । तुम्हारे कहने पर मेरी माँ ने मुझे मुसीबत में पेंना दिया है । जिन्हें तुम मीज समझने हो वह जहनी परेछानी है । तुम नहीं समझ सकते कि मैं किस तरह अपने दिन बूझा रही हूँ । ममी के सामन धीर तुम्हारे लोभ ने मुझे बरबाद करने का फैसला कर लिया है ।”

“पापपन की बातें क्यों करती हो मेरी । यह जामन नहीं अपने हमदर्दों की मद” है । घबराइए मजहब को मानने वाले हैं । तुम समझनी क्यों नहीं कि जन अब बाइबाह की हुदूमत आम हो जायमी तो तबारीय तुम्हारा नाम जिनने छदब से लेयी । तुम अपने मजहब के लिए कुरबानी कर रही हो । मैं

“धमारे जोमेक । भरियम जोसेफ के बिस्तुन नट कर धड़ी हो गई धीर बड़ी बड़ी धारों से झगते हुए कहने लगी— ‘मुझे नाम नहीं चाहिए, दरबत मा बतबा नहीं चाहिए’ । गुरा के लिए इजाजत दो कि मैं यह नाटक गाम कर दूँ । धमी के पास गाही गुरा के डेर मम बुके है । तुम्हें जिनता चाहिए तुम मुझ से मांग लो । धमर मुझे हरम मे निजाम लो । तुम जानने हो मैं तुमसे मोहब्बत करती हूँ । तुम्हारे बिना एक पन जिन्दा नहीं रह सकती । फिर क्यों तुमने जमबूम कर मुझे ”

‘मुझे रसया ओ बमाना है जानिय ?’ जोसेफ ने हँस कर कहा ।

“बागिर जिनता ?” भरियम बोली—“जिनता रसया तुम्हें चाहिए मैं तुम्हें बर्तुबा सकती हूँ । धमर ”

“लेकिन मेरी बीवत न बरे तब बग करोगी ? जोसेफ ने कहा ।

देखना पड़ी है वह तब कैसे धीर क्योंकर खरम होता है । धीर सोचना भी है ऐसे घात्रे समय बाइसाह इतना भयकर खतरा क्यों उठायेगे । धमीगुहीला बजीर को हटाने जाने का मतलब फिरंगी जालबाजियों की सफलता से था । धीर उन जालबाजियों की सफलता को दूसरे सभ्यों में प्रत्यक्ष की बरबादी कहा जा सकता है । क्या साहू धन्य इतने नादान बच जायेंगे कि वह कुछ अपने पैरों में फुल्लाही मार लें ? नहीं मन नहीं चाहता कि ऐसी दुश्चामी सत्यता पर विश्वास किया जाये । ऐसा मन हूँ प्रसन्न सोचा या समझ जाये ।

बजीर धमीगुहीला बहुत उत्प्रेरणा से अपना काम सम्पन्न हो रहे थे । उन्हें ज्ञात नहीं था जब उनकी परीक्षा आरम्भ होने वाली है । शाजिब धली साहू की बधावारी धीर हमेशा उनका लक्ष्य था । राजनीति के वह महान् पंडित थे । धीर अपनी स्थिति तो बालक भी समझ सकता है । एक घोर खो मकी का की पुत्री से शाजिब धली के नये विवाह की सम्भावना उत्पन्न करने के लिए वही वह महिला क्लिष्ट, मकी का धीर कुछ घात्रे धन्य को तैयार कर चुके थे वही फिरंगी हुकूमतों की आपसुकी से भी बाज नहीं पाते थे । उन्होंने प्रकट करने की कोशिश की थी बीसे रेजीडेंट स्लीमन जैसा काजिब धालमी उनके गुलाबों में घाकर उन्हें अपना हमराज समझने की मुर्खता करने लगेगा । अगर इसका पसंद बिम्बुल पसंद हुआ । स्लीमन तो उनका लक्ष्य पहले से जानता था । साहू की खबरत सोचने पर मजबूर किया गया कि बजीर ने यह नयी नीति क्यों अपनायी है । वह बजीर की मनस्थिति जली प्रकार नहीं समझ सके । इसलिए जिस दिन मरिमम ने बातों बातों में बजीर की फिरंगी धर्मार्थक नीति पर आलोचना की उन्हें लगा वह घात्र ठफ पोने में है । डूबते मुर्य की कीन पूछता है । बजीर जोका धीर बस्त देव कर

बात कर रहा है। ताकि हुकूमत चले जाने पर भी कम से कम उसे कोई न कोई मोकरी मिल जाए। यह जहर भरने में लकी खां ने भी पूरा योग दिया। यह तो पहले ही अमीनूद्दीना का पक्का बिरोधी था। अब बादशाह का जरा सा इत्ताफ पाया तो आसानी से इस छिछ करने के प्रयत्न में जुट गया।

अमीनूद्दीना पर बादशाह का रक्त बहुत जख्म प्रकट हो गया। लेकिन उन्होंने परवाह नहीं की। वह बारबार अपना कृतव्य ईमानदारी में निभा डटे रहे। इन्हें ऐहसीन का समान समझ होने में दुश्चारी हुई। स्लीमन के पास अमीनदारों ने पहले जसी प्रार्थनाएँ लिखित रूप में दे दी थीं। बजीर के पास कामजात आये तो दाह से बहस हुई। दाह ने कहा इस बार स्लीमन को लगाना बजाव दिया जाये कि उन्हें ऐसी प्रार्थनाएँ लेने का कोई हक नहीं। बजीर इसके पक्ष में नहीं थे। उन्होंने दाह को ऊँच नीच समझाई। बैदार राजुना मने में कोई माय नहीं। आप हुकूम में तो समान की बमूनी के लिये मैं कुछ आग्रहकार से मिल लूँ। बादशाह ने कहने को यह दिया बजीर को बाह्य करे। अगर धन में बाँट पड़ गई। उन्होंने सोचा बजीर स्लीमन को नाराज करने के पक्ष में नहीं। जहर भीतर जमा था। बाब आ गया। लेकिन मरियम ने उन्हें समझा बुझा कर बाँट कर दिया।

अमीनूद्दीना ने शूर समान की बमूनी में हिलचली भी घीर दो हफ्ते में पचान हजार रुपये जमा कर लिया। ऐहसीन ने रुपये आ जाकर उनका मकान भर जाता रहा। बजीर मादेब का बिचार था वह इकट्ठा सरकारी गजाने में जमा कर देंगे। उन्हें क्या मान्य धन कीमत थी नयी लाजिग मनी जाने वाली है। लकी खां ने बाजिर धर्मो दाह के कानों में डाल दिया बजीर मादेब मानगुजारी का पचास हजार रुपये बमूना कर लाये हैं अगर धरने लकड़ों में से लिया है। बन्तिस्वनी की बात बजीर मादेब किसी ज़रूरी काम में खटक कर बाह्य घर में दो

तीन दिन तक मिल भी न सके थे। गनी खाँ ने कहा—घब बह घामिलदार बयैरह से मिलकर ठरकीब कर रहे हैं कि सरकार में पसत रिपोर्ट कर दें ताकि खपया जरणे से बच सकें।

राठ को मरियम ने बड़ी खूबी से ऐसी बात कही। राह पहले से बने मुने बैठे थे। मरियम ने जब यह कहा कि उसने बजीर साहेब के बारे में कुछ ऐसा सुना है कि उन्होंने सरकारी रुपये से कोई मकान खरीद लिया है तो वह फूट पड़े। वैसे बाजिर धाली घाह की कोच नहीं धाया करता था। लेकिन जब घाठा तो घाँवों से बिगारियां बरसतीं। जरि बम उन बिगारियों पर मोस का काम करती। जब बहुत देर वह बजीर को सुना चुके तो सबसे समझया—“इससे काम नहीं बसेगा भाऊ। साफ बात यह है कि उन्हें ठमक फरमाकर खपया जमा करने का हुक्म दें घबर बह बमा कर दे तो ठीक है बरना खीरन बजाए से बरतरक कर दें।” बाजिर धाली ने इसका समर्थन किया। बजीर की खीरी ठलबी हुई। उस वक्त सुबह के पाँच बजे थे जब गमाज के बार घाह ने यह धारेण दिया। बजीर साहेब धारण्य करते हुए घर से निकलें। बात उनके कानों में गी घा चुकी थी कि सावब सवान की बसुलयाबी के रुपये की ठलबी हो इसलिए खपया उन्होंने साप से लिया।

जब उनकी बम्बी कानपुर जाने वाली सड़क से गुजर रही थी तो अचानक उनके ऊपर बार-बार धाकधियों ने हमला बोल दिया। वह इस धाक के लिये तैयार नहीं थे। बबरा गये। किन्तु बयैरवान मीकरों ने मालिक को बचाने के लिये कोई कसर छठा न रखी। एक बेचारे का हाव कट गया। दूसरे पर तलवार का बार पीठ पर पड़ा। ठब वह बीछटे धिस्ताठे भाग निकले। घब हमलावरों में से एक ने बजीर को बम्बी से नीचे उतारना चाहा। तैमबुद्धि बजीर उसे तुरन्त पहचान गये। यह गंगाबसु सिंह बाहू था। वही जिसे उन्होंने एक बार रेजीडेंट रिचमोन्ड की सहायता से रथे हापों नरथ करते थीर हाका मारते पकड़ा

वा । उस जयंकर व्यक्ति की छाँकों से घाग बरस रही थी । बजीर घरीर के अपने वृत्त घीर सक्तिगानी नहीं थे । बग्गी से नीचे भक्तिन गये । घोर मचाया । समासादीनों की बीड़ लग गई थी । किन्तु किसी ने घाये घाने का साहस न किया । रप्यों की बीसी बगा सिंह के हाथों पहुँच चुकी थी । निकट था कि उसकी करीली बजीर की घातें घीर देती कि सभी पास से रेजीडेंट हाथी पर सवार खपर से मुबरा । गगा सिंह के कागों में घोर घाया । उस समय रेजीडेंट के साथ सिपाही भी थे । वह माम निकला । उसने अपने साबियों का भी भापने का इरादा किया । किन्तु कम्पनी के सिपाही बोडे घीर गगा सिंह के अतिरिक्त उसके साबियों को पकड़ लिया । बजीर की जान जाते-जाते बची । रपया घस बसा बसा गया । वहाँ वहाँ बहुत नाब हो घाये थे । छल घीर बमने फिरने के सबका उपयोग हो गये ।

रेजीडेंट उन्हें हाथी पर डलवा कर रेजीडेंसी से घाया । कम्पनी का बाक्टर उनकी सेवा में लग गया । बाहर किसी को इन घटना का समाचार न दिया गया । हमलावर बारद में बन्द रहे । साठ दिन इस तरह बीन गये । बाग्गाह को हमले की सूचना मिली । उन्होंने रेजीडेंसी रावर नेत्री कि बजीर घीर उनके हमलावर हजाने दिये जायें । मैडिन रेजीडेंट तो कुछ घीर सोचे बैठ था । उसने बजीर तक राह का समाचार भी न पहुँचाया । बाग्गाह को इम्बार बिजबा दिया कि यह मुखरिम घाही हिरामठ में नहीं दिव आ सकते । गाघ बजीर की तरफ से भी बीगम बिजबा दिया कि उल्ल हमलावरों को उन्होंने मुपाक कर दिया है । राह के लन बरल में इन अवमान से घाग लग गई । वही तो वह बजीर की हजदरी में उनके हमलावरों को मजा दिमाना चाहते थे वहाँ बजीर की तरफ से पैगा उत्तर घाया । ऊपर से रेजीडेंट न घलप हय ताबरी को बिजबाने से इम्बार दिया घीर इन तरह उनका घीर अवमान दिया । उन्होंने सब अपने हाथ से रेजीडेंट को बच लिखा घीर

कहा वह हमारे हुक्म की तोहीन है। मुनाहगार की सरकारी कानून के तहत सब मिलनी चाहिये। मुजरिमों को हमारे हुक्म कीजिए। लेकिन रेजीडेंट ने इस पर भी कोई कार्यवाही नहीं की। बारखाह परे धाम हो गये। उनकी समझ में इसका कोई कारण नहीं पाया। क्या भीने जाने की बटना बबीर ने रेजीडेंट को जबर बटा दी थी किन्तु रेजीडेंट ने बाहू को इसकी सूचना नहीं भेजी। फिर भी उन्हें यह धक्का-बाहू जबर मिल गई कि हुक्मावर बबीर के हाथों क्या भी भीने ले गये हैं।

इसर मरियम म मीके से फायदा उठाया। रात को बाहू जब उसकी धारामगाह में जाने तो उसने बबीर के खिलाफ धाप उभारी। इस बटना से बाहू तो पहले ही अपने को अपमानित अनुभव कर रहे थे। बबीर पर उन्हें क्रोध था कि उसने क्यों हुक्मावरों को अपनी तरफ से मुद्राष्ट करने की बुरत दी थीर रेजीडेंट के धाप को जलील करवाया। इसर मरियम न इस बटना का जो गया क्या दिया उससे बाहू बिफर गये। उसने इस प्रकार इस बटना का बिस्लेषण किया 'बाक्या बरपस्त कुछ और है हुजुरे धनवर। धाप ने बबीर साहेब को तलब करवाया था स्वये की बाधिर। क्या उनके पास था नहीं। इसलिये अपने बास्त रेजीडेंट से मिल कर उन्होंने यह फर्जी हमला उभारी किया है। धन हुजुर के साथने पैरा होने पर बाधिर करेंगे कि उनका क्या सूट दिया गया और बात करम समझिये। ऐसी बीबादिमरी तो कभी देखने में नहीं आई। उनकी मदद पर रेजीडेंट साहेब साफ नजर पार रहे हैं। ओर के बाई बिरादकट। मुझे तो पहले ही थाक था कि बबीर साहेब रेजीडेंट से साठ-गाठ रखत हैं। धन साबित हो गया।"

बाहू ने यह बात गांठ बांध ली। पांच बार दिन बाध रेजीडेंसी के डाक्टर ने बबीर साहेब को तन्हुस्त करार दिया और वह बाहर निकले। इस बीच बारों हुक्मावर शाही हिरासत में दिने था जुके थे। उन्होंने

एक स्वर से कहा कि हमसे मे कोई खया नहीं सूटा गया । राह ठक
मह बात क्यों की क्यों पहुँच गई । भरियम की सम्मानना सब नजर
पाई । वह समझ गये हो न हो वह कोई बात थी । बजीर साहेब सामने
आये तो उन्होंने धारोप लगा दिया । बेचारे साधु बार भीम भीम कर
अपनी बेगुनाही का सबूत देते रहे । मगर साह ने एक न मुनी । उनका
बहना या वह खया सूटा नहीं गया तो गया कहा । बजीर ने पास
इनका कोई उत्तर न था । जाते तो वह देते कि गया सिंह भी हमसा
बयों में शामिल का धीर उमी ने रक्षम पर हाथ मारा है । मगर नकाड़े
की आवाजों में लूती की मुनबाई कहा । बावसाह तो पहले में भरे बैठे
थे । इरक्त इसी में थी कि वह वहाँ से चले जाते । घणन दिन उनकी
बरतरी का आदेश निकल गया । बजीर ने एक बार भी प्रतिवाद न
दिया । वह मनिषा बिस्वर के पास गया धीर अपना राजा रोने लगे ।
लेकिन मनिषा बिस्वर के मुत से भी अब उन्होंने निराशाजनक बातें
सुनीं तो उनकी आँखों से आँसू आ गये । उन्होंने कहा—“अबच की
बरबादी नजदीक आ गई है मनिषा हुजूर— धीर वहाँ से लौट आये ।

धीर इन तरह सबकुछ अबच की बरबादी का वास्तविक अभ्यास
आरम्भ हुआ । अमीनुद्दीन के बाद मुठनी साहेब बजीर बनवाये गए ।
मगर उन्होंने दो बार ही दिन में अपना पुराना मठन गया कर दिया एक
मन्दिर पिरवा कर मस्जिद तामीर करवा दी धीर पचासी तेरे व्यक्तियों
की हुक्मरा नीजरी पर मुमका लिया जो साह ने निराल दिद थे । फिर
उनकी बजारत को भी हाथ लग गया धीर उन्हें मुरम्त हटा कर नबी
ता की निपुक्ति हुई । नबी ता के घर में भी के दिद जमे । निमात्र
बरी साबने धीर मफकिने जुई । उनकी क्यों की अभिवादा पूर्ण हुई ।
वह गुप्त थे धीर बहुत गुप्त थे । उमी राज उनकी प्रमत्तता को बार
बार धीर लग गये । किसी बरबादी के साबन के बग्न प्रमंग देहा कि
साह को उनकी बेटी गुम्नाना बसम्त है । राज को गुम्नाना के यही बात

घाये घीर न उनके सामी दरबारी । इस तरह उत्सव में जमकट उन लोगों का बुझा जो स्वीमन के सच्चे सहायक या मित्र थे घीर जिनकी हमदर्दी बाइबाइल के साथ सिर्फ मुंहफेबी थी । दुर्भाग्यवश ईंग्लन उनके इन के विरोधी बड़ा रहे ।

मोजन के समय मकी जाँ की सफलता घीर यमीगुहोला की प्रसक्तता को लेकर घाली-घाली बुझकुले छोड़े गये । जैसा स्वाभाविक था मकी जाँ क हमदर्दी ने मित्राजपुर्नी में एक का उपनाम घीर दूसरे का सम्मान दिया । लेकिन उन लोगों की भाषा मजाक की भी घीर साहे प्रबल की बधा करवा बड़ी मनोरञ्जक रीति से स्वीमन की प्रशंसा करने का प्रयत्न कर रहे थे । शराब की घरेबी बोतलें धनविनस प्रयोग में बाई गई । ईंग्लन भी पीता था । किन्तु उसकी घाली बुझी थी घीर जान सचेत थे एक बार किसी ने कहा दिया 'अब साहे प्रबल हरम में मौज करे घीर उनका काबिल बजीर हुकुमत की बागडोर सम्हालेगा । बायो तरफ कुदहानी नजर आयेगी । रियाया अम्म की सांस लैगी । अब उनसे न सका गया घीर कहने वालों की उम्हने घाटे हाथों मिला । स्वीमन की मला यह कम सहन ही सकता था । मकी जाँ की बजान को जो लाला गया रहा किन्तु वह कुछ मैदान में उतर आया घीर बोला— "हमने तो तुम का मिस्टर ईंग्लन कि साथ साहे प्रबल से नापक है घीर उनकी नबी घाली पर अपने घलवार में साथ ने बहुत कुछ निभाया । फिर आज आज को क्या हो गया कि साथ इन हाजरीन की बरा की बात का बुरा मान बने ?"

"मिस्टर स्वीमन । ईंग्लन ने सोच विचार के बाद संक्षिप्त सा उत्तर दिया— "मैं अपने वेष्टे में ईमानदार रहने की कोशिश करता हूँ घीर अकसर पड़ने पर अपने दोस्तों की मुकताबीनी करने में भी बाज नहीं आ सकता ।"

'लेकिन लोगों का क्या है, हिज मैजिस्टी इस बात पर आप से अप्र

हो गये थे और उन्होंने आपका अलवार बन्ध करने की बमकी ही थी ।

बीटन इस प्रश्न पर बहुत गम्भीरता से अपने हमबतन की सभस देखने लगे और अन्त में लिखित मुझ्माये स्वर में बोले 'ताम्बुस है मिस्टर स्मीमन आप को यही धाये कुछ ही बिज बीते हैं और आप ज़रूरत से ज्यादा बातों की बामबारी कर चुके हैं । मरज उनका आपके कई से कोई ताम्बुस हो या न हो ।

आप नाराज हो गये मिस्टर बीटन । येरा यह बतलन नहीं बा । मैं तो समझता हूँ कि ये बीटन का बिबाज बम्बों के बिबाज की तरह कम्बा है । आप तो उन को बहुत दिनों से जानते हैं । मेरी राय है आपको उनके मुझ्मायों में टांग धड़ाना पेर जकरी बा ।

टांग धड़ाने का अपमानजनक लख मुनते ही बीटन के मुख बहरे पर ओपके बरातु प्रकट हुए । किम्बु कठिनाई से उन्होंने स्वयं पर समय दिया । हमारे लरा स्मीमन को उपयुक्त उत्तर देने के लिये उन्होंने कह दिया— 'आज तक मुझे यहूज शक बा लेकिन आज बकीन हो गया मरियम बेमम के लाल निगाह पर आप को बिम बजह लगी हुई है ।'

'बया मननब' स्मीमन बिट गया । बीटन न बूनी चोट की थी । इतनी धाया समझन थी । यहाँ की हर बात ताह के जानों तक पहुँचनी बकरी थी । तिस पर भी बीटन धुमे आम इतनी बान बहु बये स्मीमन नहीं मननता बा ।

"मननब बिहनुम माफ़ है ।" अब बीटन ने लगे लीर स्मीमन को मोब दिया 'आप बिम बम्बनी के मुझ्माय है उनके जहन में बेईबानी और नार्इतापी के निबा कुछ नहीं । उनकी हमारा यही माफ़ होयो कि हमारे बाजिदगलीगाह रोम् एक नयी बेमम से निगाह करने जायें और घनी बनिबायों की गिनती हजार बा हजार कर लें । हम तरह राउ दिन इन बेगमान में निबटारा करने में भी एक दो नान बा बरन गुडर जादेबा । और यह बरन आपकी बम्पनी को अपन घुरेतेज करने के लिये बारी होगा ।'

के बाद मौत को मने लगाने से पहले घाय को मिटा डालेंगे । बरबाद कर देंगे अपने ऊपर होने वाले एक-एक जुल्म का बदला लेंगे । मनु मेरी नहीं मरे मजहब की आबाज है । मेरे मुस्क मेरी मुस्कपण्टी की आबाज है । खुदा आपको नेक रास्ते है । खुदा आपकी बन्ध बांधों से जालम का पर्दा दूर करे । आमीन ।

ई रन ने इसके बाद उपस्थित सभा को देखा जो मौत की तरफ घात थी । वह अपने स्वाम से उठ गये और बसने की उछल हुए । तभी कप्तान बड़ भाके आ गया । उसने बन्दन को घात करने और रोकने का प्रयत्न करना चाहा । लेकिन स्लीमन ने चीख कर उसे मना किया और कहा 'जाने दो बड़े जो संघर्ष अपने बाह्यो की बर बादी के लिए खुदा से जुड़ा करे उनका यहां से बख्त हो जाना ही ठीक है । मिस्टर ईंग्लन आज की एक-एक बात बाब रहे । खुदा ने ताकत भी तो मैं तुमसे इसका अबाज मांगूया ।'

ईंग्लन ने कोई जवाब न दिया और वहां से चले गए । स्लीमन ने सामने रखे घाय का काम मने से नीचे उतार दिया । बड़े कुछ कहने उसके पास आया किन्तु उससे पहले पहले स्लीमन बोलेक को कुछ इशारा करता हुआ भीतर देबीडेसी के दरबार में जाता गया । उसके पीछे बोलेक और बाब में नकी दा ने भी उसका अनुसरण किया ।

'तुमने देखा नकी दा ईंग्लन किस कदर घुरत कर बगता है ?' भीतर पहुंच कर स्लीमन ने नकी दा ने कहा ।

'मीरु की गीत आने वाली होती है तो वह बाहर की तरफ भागता है ।' नकी दा ने हुबेनिया मतकर जवाब दिया 'घाय की हिम्मत को पाबाज है मजहब जो आने इस खुबी से बर्बाद किया ।'

'हम अबाज के दोर नहीं नकी दा ।' स्लीमन बोला 'ईंग्लन को

इसका माहून जबाब दिया जायेगा। मेकिल धनी नहीं। मीका घाने पर।'

"मेरे लामक कोई हुशम हा तो फरमाये जनाब। नकी घा ने बुगामर मेरे धप्यों में पुछा—कहे नी कौतबाम से कह कर बिनी घुमामसे में नदवा दू।

"हम ऐसे हेच ठरीकों के पाबाम नहीं।" स्लीमन मोच बिचार करता कहने लगा। "हम ईमानदार कुत्ते को हिब पैकेस्ती की बछादापी का हम सब है। मका उक्त दिन होपा बिम दिन बही एहसाह इसे पूब की मक्की की तरह निराम कैंकेंगे। तब यह समझ सकेगा हिन्दोस्तान के सोय ईमानदार और गरीब बही बेबकूफ हैं बिनको हुसमत करने की समीह नहीं।"

"जी हाँ जी हाँ।" नकी घा ने जहरी से जैये बिना समझे समझें कर दिया।

"मुनी।" स्लीमन अब उमकी धोर घुमा और बम्बीरता से कहने लगा—तुम बजीर बन चुके हो नकी घा। हमने धपना कहा पूछ दिया।"

"बुमान भूमान मानता है। हमें उज्जाब का फरमावरदार रहेगा।"

"हमें मुन्हारी घर चाहिए।"

"हम कीजिए।"

"बनरंर बनरन ने हमें धपप का बोता करने की हिशमत मेजी है। हम देगना चाहते हैं यहाँ कैंनी हुसमत है। बाह के बाग जम्ह हमरी इतिहा जायेगी। हम चाहते हैं तुम बोरे को दवाजन दिखाने में हमारी मदद करो।"

"बन शुब।" नकी घा ने जबाब दिया—"परन्तु मेरी बेटी का घाहे धपप के माप निहाह है। रम्य के बाह धारके यहाँ मे धबर घाते ही में घाही मन्हुपी बीमून कर न्या।"

‘निकाह ?’ स्लीमन मुनते ही चीन्हा घीर बजीर की घोर घूरते हुए बोला— ‘क्या तुम अपनी बेटी को हिन्दू मंत्रिणी के छिपुर्द कर रहे हो ?’

‘यह मेरी सुघडिस्मती है ।’—बजीर ने अपना गिर झुका लिया— ‘जब मैं इस काबिल नहूँ ।’

‘तुमने हमारी इजाजत नहीं ली ?’ स्लीमन ने धमलासवाल किया ।

‘इसका मौका नहीं मिला—’ नकी खां बबरा कर बत्ती से बोला— ‘अजानक शाह का पैतान आया और मैंने उसे बन्दूर कर लिया ।’

है । स्लीमन कुछ देर सोचता रहा । अन्त में हँसता हुआ बोला— ‘आमद इस मने रिस्ते के बाद तुम हमें मुक्त जाओगे ।’

‘सुदा न करे । कंठी बाँटें करते हैं बनाब । तुलाम हमेशा आपका मुकाम रहेगा ।’

‘ठीक है ।’ स्लीमन ने कहा— ‘लेकिन बाद रहे । तुम बजारत के लिए जितनी कमलिमत रखते हो हम जानते हैं । तुम्हारी बजारत उसी दिन तक महजूर रहेगी जिस दिन तक हम चार्हने । हम बाद नहीं दिलाता चाहते मगर तुम मुझ न आपो इसलिए कह बैठे हैं । अजब मैं अकफरीश एक बबरखस्त लम्बीली होने वाली है । तुम अपने बादशाह को अपना शमाह मान कर अपनी और अपनी लाइली बेटी की जिन्दगी का पुधा खेत बैठे हो जिम्मेवारी तुम्हारी होगी । हम अपने दोस्त के दोस्त और दुश्मन के दुश्मन हैं । पिछले बजीर का अजान तुम्हारे सामने है । कहीं ऐसा न हो कि हमें पबर्नर बजरत को छाहें अजब के साथ-साथ तुम्हारे लिए भी कुछ भिखना पड़े ।’

नकी खां सहम गया । उसने बार बार कोनिश बना कर अपने कमरने का भाव दिखाया और बिना रुक वहाँ से भाग आया । उसके बाते हैं स्लीमन ओर से हँसने लगा और जोतेक की तरफ देखने लगा वो बाँटीकी से परितिकति का अध्ययन कर रहा था ।

धाल में स्त्रीमन का बहकड़ा समाप्त हुआ तो जोसेफ ने धामे बर कर कहा—“घाग बड़ीर से बड़ी लखी बातें करतै हैं सर, यहा यह बनरनाह नही ?”

“तुम पायस हो जोसेफ का कोई गीतभी उस तौर से बोल कर सुनना है जिसका इतने दूरची तरफ हो धीर जिसका पपीना घरने हाथ में हो । मेरा ध्याम है नही ।

“मगर तोर बनरनाह है सर जिसका ग्य बन्ना आ सुनना है ।”

“यहउ एक ठंडा लोग बनरनाह बने हो सुनना है । तोरची उममे मराना न जाने तो तोर केसर है । बड़ीर म बडावन की काश्मियन का मनासा डालने वाला तोरची में खुद हैं । जोसेफ इसकी काश्मियन का काश्मियन गात्र की बरबारी धीर कम्पनी की सरनछी के लिए है । इसकी ऐमे मममो जैसे बाते की मोर का मुन्ना हैरा । ऊपर मे गगा हुआ लूकमूरत धीर अम्बर में गगा । उठा दिया तो बिजो के निर जा लवा करना नहक पर पड़ा है । यह घरनी और मनाये यही बहन है । बुद्धम लखर की तरफ यह केसर है ।”

जोसेफ इन उगमाओं से हँस पड़ा । स्त्रीमन उन देखने मदा । दोनों सब कुछ देर के लिए लामान हो सर ।

“मुनी जोसेफ ।” धाल में स्त्रीमन ने कहा—“मुम्हें मरियन से बिजना होमा ।”

“ओ हवन सर । बाते बात है ?”

“हां । मेरे दोरे के बावन उन लिखत करनी होगी ।”

बर ईसा मरियन सर ।”

“रादे की लिख न करो मेरे बावन । घटव बीम को तुम ईमे हददों पर पण्ड है । घटव की मोड़ना हटमन गाय होतै तो मुम्हें कम्पा मोला दिया जायदा ।”

“घागकी इनामड है सर । लिख मुम्हें इसकी लखरों नही ।

मरियम कमजोर बिल साबित हो रही है। उसे बीफ है, कही बाबसाह की मोहब्बत मेरी मोहब्बत पर हावी न हो जाये।”

‘उसे ’ स्लीमन ने सोच में कहा—“हमें अभी उससे बहुत काम मेने हैं। उसे तो चाहिए इतना पुरखसर होना कि साहू धक्क उसके जरा से हमारे पर हुकुमत खीपन वाले इकरारनाम पर हमारे हक में दस्तखत कर डाले।

‘जोसेफ कहेगा।’ जोसेफ ने कहा।

स्लीमन ने खेद से अपने गिराव कर उसे दिये और पूछा— तो कब मिल रहे हो?

‘सोचना होगा। सर, मुन्ता है पिछले दिनों से उसकी ठबिबत कुछ खराब है। वह कब नही आ सकेगी।’

‘तुम महम में जा सकते हो। मैं इसका इन्तजाम कर दूंगा। मोती बाई से कहो वह मरियम को रेजीबेंसी का डाक्टर बुलवाने के बाबत खबर दे। डाक्टर के साथ तुम न सिर्फ जा सकते हो बल्कि इतिनाम से बातें भी कर सकती हो।’

जोसेफ इस प्रबंध से सन्तुष्ट हो गया। उस स्लीमन उसे साथ ले बाहर आ गया। निमन्त्रित सज्जन सब बैठे उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। उसके पहुँचने पर एक एक कर सब ने बिदा माँगी। जोसेफ भी चला गया। घन्ट में भीर मुन्ती धीरे बंधे रह गये। इधरत बराबर सड़ा था। स्लीमन ने बंध को नजदीक बुलाया और कहा—

“बहुत बरब तुम हिन् मैकेस्टी के पास दधर्नर बनरल का नवा हुनम भेकर जाओगे बह। हमारी गिलापकी के बाब उन्होंने हमें मुल्क का बीरा करने के बाब रिपोर्ट देने का हक दिया है। मेरा स्थान है तुम इसकी दायिबत कमयले हो।”

बह ने उत्तर न बकर अपना गिर मुन्ता लिया। स्लीमन इतना कहने के बाद अपने बंधों की तरफ चलने लगा। सभी इधरत धाये

घाबर हो दिन की छुट्टी माँझने लगा—“मेरा बाप बीमार है दूरर ।
उसकी देख भाल के लिए जाना चाहता हूँ ।”

स्लीमन घाज़ा देता वहाँ से जसा गया ।

हजारत रात बैर तक स्लीमन के बाबिर की राख दाब करता रहा ।
मुक्क का बीरा घीर जमकी रिपोर्न । घीर लूट उनके मह से उनकी
घहमिपत । एक बजे का सेटा-मटा बर बार बजे तक सो न सका ।

सुबह घाठ बजे बिपौ न मकभार दिन तो उसकी छाप खुली ।
बानो बराबर लड़ी मुस्तुरा रही थी ।

“उन ज्यादा घराब की बीठे से घाय” उसने पूछा— “तभी घोड़े
देखकर सो रहे हो ।”

“घराब नहीं गाना गाने के बाद वाली बहुत थी दया बा ।” हय
रत ने जबाब में प्रसन्न किया “लजिन मामुम हाता है तुमने उन मछ
नियों जम्पर ज्यादा गाई थी जो मुहर जगता फिर रही हो ।”

“जनावेमन इस बम्ब मुबह नहीं है । दिन बह देर हो गई है । बरीब
तीन बटे दिन बीत चुका है । क्या आज साहब के महा हाजरी नहीं “नी है ?”

“नहीं मैंने तो तिन की छुट्टी ले ली है ।

“क्यों ?” बानो ने पूछा ।

“बाबिर मारुब की तबियत कुछ घर्मीन है । उसकी देखभाल के
लिए कोई दूसरा है नहीं । इसलिए

“घोह !” बानो न कहा घीर दम्भीरगा ने कुछ मोहन लयी । फिर
तन्नाम बोली “तब तो तुम घाने होम्न के दही को न जा सकोगे ?”

“होम्न ? कौन होम्न ? इरन ने पूछा ।

“घर्मी कुछ देर बरान छापा मामुमन मिजमे । मैंने कहा अभी तापद
तुम काम पर नए ह । तो बेबादा लीन दया । बनने बरत बर दया बा

घाय होपहर लपटे लेकर मिलता । कुछ जरूरी काम है । मैंने घबरा
हुनूर से पूछा तो पता चला तुम बपतर नहीं गए । यहाँ देखने पर चमत्कार
को घीसा पाया ।

‘भयर बीबीबान, उस होस्त शरीफ का नाम क्या है, आपने पूछा ?’

‘वही है । बिहाब है ।’

‘बिहाब ! इसरत चीककर बोला “बह कम्बलत क्यों आया बा ?”

‘उम्माह आपके बालीत शालिह के बारे में कोई इच्छा जाना हो
बहरहाल आपको उसने बुलवाया है । क्या आपके मकान पुछने पुरे
में है ?’

‘पुछने पुरे में क्या उसने हकीम बरबानी के यहाँ बुलवाया
है ?’

‘तब मही बताया था ।’

इसरत लठ कड़ा हुआ और हाथ-मुह भीने जया । बालीत मन्वीर
का गई और बीबी ‘हकीम बरबानी के यहाँ आपके शालिह का हलाक
हो रहा है याबर ?’

‘बुरा जाने ।’ इसरत अस्वी से कहने लगा “मैं तो बहुत रिशों से
बहरी क्या नहीं । आज पता चलेगा ।

‘मैंने अम्मा हुनूर से इलाकत से ली है । मैं तुम्हारे साथ तुम्हारे
दीसतबाने बाऊनी ।’

‘मेरे साथ ।’ इसरत चीक कर बोला ‘तुम वहाँ क्या करोगी ?’

‘कुछ नहीं । मुझमें भी दुधारे सेना कुछ नहीं है ।’

‘तहीं मैंहरबान । बुरा के बाते मुझे धकिला जाने दो । मैं तुम्हें
साथ नहीं ले जाऊँगा ।’

‘क्यों ? कोई मुकताग होगा ?’

‘नहीं । मगर मुझे पहले हकीम शाहेब के मकान पर जाना है ।’

‘मैं वहाँ भी जाती चली । मुझे भी अपने दिल बड़कने की दवा

मेरी है।”

“धोक धो बानो मैं तुम्हें कैसे समझाऊँ। तुम्हारा बहाना जाना नामुमकिन है।”

“बाबिर कोई बजह बताओ? क्यों नामुमकिन है?”

इसरात ने मुँह खोल लिया और बपड़े में बैहरा माफ़ करने लगा। बानो के मकान पर उसने कुछ देर शांति बाराग की। फिर बपड़ा एक तरफ़ खेंबते हुए उसने कहा—“देसी बानो तुम धधी लहकी हो और लहकी घर के काम-काज की बाबत ज्यादा समझ नवनी है। मैं सुपाना नहीं चाहता। मैं तुम्हें बहाँ से जाना भी नामुमकिन समझता हूँ। कुछ घरम काम है उन इकीम साहेब से। तुम्हारा जाना गीक नहीं।

“यह तुम्हारा क्याम है। मेरी समझ में हम दोनों सब इनसा कटीब धा चुके हैं कि कोई वहाँ नहीं रख नवने। क्या तुम हमसे इनकार कर सकते हो?”

“नहीं। मैं सब समझता हूँ और जानता भी हूँ। लेकिन बानो कुछ काम ऐसे होते हैं जो मजबूरन बाबिर माने जा नवने हैं।

“मैं बावों से नहीं हार नवती। मुझे माफ़-माफ़ बताओ। मिसाम दो ऐसा बरा काम है जो तुम मुझ से छिपा कर करना चाहते हो? इसरात क्या तुम्हें मुझ पर बरोसा नहीं?”

“बरोसा है पवनी।” इसरात उसे धरनी बावों में नमेद कर बोला

“लेकिन तुम किस की बेटी हो यह भी जाननी हो। हा नवना है मैं जिस काम के लिए जा रहा हूँ उसमें तुम्हारे बाबिर की दिमबस्ती न हो।”

“जी क्या हुआ। नकरी नहीं कि बाप-बेटी के क्यामान विनडे हों। बसमर तेसा होता है कि बाप का लपीका बेटी को बिस्वम पमन्द नहीं पाता और वह मरुब इसलिये उसकी लाईट करती रहनी है बूँकि इसके पनासा कोई और रास्ता नहीं हाता। ऐसा भा होता है कि रास्ता बिन बाने पर वह अपने धधीय बाप के निमाफ़ दरारी तक करने पर

घामाया हो जाती है और घसी पर कायम रहती है।

इस तरह इस आख्या से सोच में पड़ गया। बागो ने आज पहली बार ऐसी बातें नहीं की थीं। पहले कई मरतबा उसने इस तरह के कानों में यह बातें दिया था कि वह जबर किसी विशेष कारण से रोजी-रोटी में नाकरी कर रहा है। अक्सर मीर साहेब के सम्मुख समझाने के लिये बैठ कर खड़ा करता था और बीच-बीच में ऐसे कुछ-कुछ छोड़ती जिनसे इस तरह की महसूस होता जैसे उसका मेरा सब कुछ सब कुछ। लेकिन मीर साहेब की बुद्धि में कुछ न था। अगर वह समझ रहे होते तो जवाब दार करते जाते—“बेटा स्मीमन साहेब ने तुम्हें भरोसे लायक माना है वह तुम्हारी बुद्धिमत्ता है। अब तो तुम ऐसे काम करो कि वह जल्द तुम्हें ठरफकी दे।

मीर बागो हँसकर बात काटती। कह देती ‘अम्मा हुजूर, इन दिनों मैं क्या है खुश बाने। कम मुझे स्मीमन साहेब की बुद्धि कर रहे थे और वह रहे थे इस मरतबा को तो थोड़ी मार दी जाए। मीर साहेब सुनकर बबराही मुद्रा में इस तरह को देखने लगते। इस तरह उत्तर में प्रतिवाद करता। बागो जिस-जिस तरह हँस देती। तब मीर साहेब धावस्त होते। दोनों की बात-कहनुओं उनको पसन्द आ रही थी और वे मन ही मन एक नया मनसूबा बना चुके थे। उन्हें अस्मत्क न था कि बागो के कथन में अन्धता की मात्रा भी किसी सीमा तक हो सकती है। लेकिन इस तरह बहुत धन्योत्तर इन धन्योत्तरों का कारण समझता था। बागो को समझ ही जाता था प्रकट था। कई बार ऐसा होता कि वह पिछवाड़ा याद से मिलने बात को सबक तो जाने पर रोजी-रोटी से निकलता। उस वक्त बागो जान रही होती। न जाने कैसे घाहट या लीटी और कुछ धीरे इस तरह के लौटने पर रास्ते में जड़ी-लड़ी मुस्कराकर पूछती—“कहाँ गए थे? इस तरह अन्धता में इधर उधर के बहाने बताता वही से जिसका जाता। बागो और से जिसका देती।

और मही भी कि भीर साहब के सामने कभी उसके इन प्रयागों का प्रदर्शन करने नहीं देना ।

कठिनाई ॥ समझ-बुझकर इशारत बाहर निकलना । रेबीडेसी से कुछ ही कदमों पर मियाँ गाम उसकी तरफ जाते मिले । इशारत जम्बी से अपने निकट धारा धीरे अपनी छुनी का आधार बनाकर उन्हें औरत बाबिब कीन्ने की हिदायत देने लगा । सब मियाँ आन बोले "मह तो बज्र हो गया । मैं तो जिहाज धीरे सिम्बी के नाव घात मुझ भी रेबीडेसी गया था । वहाँ मैंने अपना रिफा भी बहा दिया था । अब तुम कहते हो कि मरी बीमारी का बहाना सब छुनी साए हो ।"

"आपने किससे कहा था ?

"एक लड़की बाहर चुम रही थी । थी मुसलमान लेकिन पढ़ी नहीं था । उसी से मैंने तुम्हारे बारे में पूछा । उसने कहा तुम काम पर चले गए होवे तो मैं जिहाज का पैगाम छोड़कर लौट आया ।

"जकर बायो थी । इशारत मन ही मन सोचना-विचारता कहने लगा "लेकिन उसने कुछ नहीं बताया ।"

क्या उसकी तरफ से कोई गतरा है ?

"गतरा नहीं है घन्ना हुजूर । बसिक उलटा मैं उनकी तरफ से बेदान हूँ ।"

"क्यों ?"

"बहु धीरे मु ली मादर की बेटी है । और मुली को तो घाय जानने है । जिनमें भी घबरा है सब उनके बात लभने है । बेटी का यह हात है कि मन ही मन फिरियों में मचलत करती है । मरी बाल-आन पर हमें गुरुत गुवा है । जब बार इलाक कर चुकी है कि मैं उसे घाने मरोम में फिर आना भिद बना हू । मगर मैं सोचता हूँ एक बजादार बाव की बेटी को मरार बनाकर हथ बना जाला । रेबीडेसी मैं रहना मजबूर हो बावया । मुनाखीन के मगदर इमीनिए तो मरार के निदवादे रखने

नए हैं। यहाँ कोई लठ्ठ हो नहीं तोपों से उनके बाल-बर्छों को घुन दिया जाए। बाग के साथ मीर मुंशी भी बरबाद हो जायेंगे।”

“ससकी बरबादी की तुम्हें क्या छिन्न। तुम नहीं जानते इस्लाम यह कसा कम्बलत धारणी है। सिर्फ पंजेरों का बफावार होता तो भी कोई बात नहीं की। यह अपने ही मुक्त बालों से यहूरी-बहुरी रक्तों की लिखत मठा है। उसे किता से हमदर्दी नहीं। जालम में अपने धाई-बहनों का लला भी काट सकता है।

इस्लाम ने कोई उत्तर न दिया। बाप से पूछा तो उसने पुराने पुराने चलने की हिदायत दी। जोड़े के पुन से उस तरफ घाने बहते हुए इस्लाम ने सवाल किया “कल हावत की बजह से बेरा आता नामुसकिन हो गया। लेकिन बात क्या है?”

“इकीम साहेब के यहाँ पठा चलना। बिहाब कई बार तुम्हें बुलवाने के लिए मेरे पास आना। अभी तक मुझे भी पानुम नहीं कि बात क्या है। मगर है कोई जरूरी काम। बिहाब कह रहा था कल दिन में ईश्वर साहेब अमीनूद्दीन और बसीह अमी सब इकीम से मिलने आए थे।

“अब तक कितने बवान अखाड़े मे शामिल हो चुके हैं?” इस्लाम ने नया प्रश्न पूछा। पिता ने बारह सी की गिनती बताई, सब इस्लाम काबोपी से चलने लगा।

इकीम साहेब के मकान पर सब बस्त अमीनूद्दीन और बिहाब के साथ सिस्ती भी मौजूद थी। ईश्वर साहेब का इन्तजार था किन्तु अभी तक प्राप्ति न थे। बिहाब के पास-पास करीब बीस-पच्चीस नीजवान और बैठे थे। इस्लाम के पहुँचने पर उसी ने उठ कर वहाँ अपस्थित व्यक्तियों को इस्लाम और उनके पिता का परिचय दिया। इकीम साहेब ने प्राप्ति बढ़कर इस्लाम की पीठ पर हाथ फैरते हुए लंबे अपने पाठ बैठा लिया। कुछ देर तक तीनों का ध्यान जारी रहा। इस्लाम ध्यान से

उन्हें देखता घोर मोक्षता रहा । घाने वालों में म कुछ ऐसे थे जिन्हें वह
बनूबी पहचानता था । बसिक डगके मित्रों में मिले जा सकते थे । कुछ
ऐसे थे जिन्हें एकदम से जानता था और कुछ ऐसे जिन्हें जाने में मुना
था । मैट्रिन वह सब इस्लाम बर्हानी के मकान पर आए थे हमरा इस
रत को धारणमें था । वह देर तक एक ही विचार में लीया रहा । मर
मर की रसीन जिम्मेदारी में दिनना परिवर्तन था गया है । सिद्दाह की
बुझानी इस्लाम साहब की योजना पर इमारत को समझने का पीका सभी
प्रकार मिल चुका था । अन्तर्गत ईश्वर ने युक्तों में जो नया उत्साह पैदा
विद्या था उनकी प्रशंसा में इस्लाम की जवान न बननी थी । मैट्रिन
उत्तरे मोक्षों का विपक्ष थे वे जीवधान जिन्हें जीवन में लक्ष्य की धारों
ने घोर तबायतों के नाशों ने अपना विजिह्म स्थान बना रक्खा था ।
जो दिन-दिन घोर रात रात भर नाचने वाले मोक्ष बनाने बचने न थे ।
घान उन्हें क्या हो गया है । नाटक बखशी घोर रहस्य साम्रा घोड़ कर
वह इस्लाम बर्हानी के घटा उपस्थित हुए हैं ताकि अपने जीवन की बाड़ी
लगा कर अपने ईश के प्रति अपना प्रेम भिड़ कर सक । उसकी धारों
में धाँसू था नए । यह सोच है मुक्त के लक्ष्य बख्तार । क्या इतना सब
कुछ हा जाने के बाद भी फिरगी राजनीति का बेसाबाज बोझ साहबों
बीदित करेगा । घान अमर लेभा है तो साहब बुर्खान्दस्त है । बख्त के
माध्य का पतन है । बावन है बुर्खान्द के जो टाने नहीं टन सकेंगे ।

बारो समय बाद जब सब लोगों के आ जाने का अनुमान हुआ तो
इस्लाम बर्हानी अपने स्थान में उठने हुए लोगों के माध्य घान । उनके
जारी अरकम गरीर पर लम्बी कूरी बाड़ी मध्य-मध्य पर जिन्दगी मुक्तो
उनके तनुरत का बगान कर रही थी । वह दम्भीर थे घोर दम्भीरता
से बहन सारे "हाजरीने मजलिल घान हम सब देखता हूँ है कछ
नाचने घोर कछ सबजने के भिन्न । बखीर घाना यही मोझूर है । ईश्वर
साहब की बुझने में ही घारवी निम्नम में कछ धई करेगी । यह

कंसला घाप को करना है, कि हम मुसीबत का मुकाबला किस तरह और किस तौर करें।”

वह बैठे तो बहीर अमीनुद्दीन। अपने स्वाम से जाड़े हुए और बोले ‘बन्धो, हमारी मजलिस उन परवानों की मजलिस है जो अपनी शमा पर कुआन हो जाना अपना फर्ज समझते हैं। बहुत दिन नहीं बीते जब मिर्जा बलीर घनी बुके वहाँ आए वे और उस दिन बुके ऐसा महसूस हुआ या जैसे सैयद साहेब का उबुरका भाकामयाक साबित होना और हम मुद्दी घर बीबाने कल्ल बी करने के काबिल न होये। लेकिन घाव हमारी ताकत पहले से कई गुना ज्यादा हो गई तो मेरा यकीन अपनी बगल से हिस गया है और मैं समझ रहा हूँ। हम बहुत कुछ हैं और बहुत कुछ कर सकते हैं। इसीमे साम्रेज जैसे मुस्कपरस्त बहादुर ने एक-एक मिला कर आपकी इतनी बड़ी जमायत बना ली है और अब मैं आप से जम्मीद करता हूँ कि आप इस जमायत की क्यासे से क्यासे सबकुछ और क्यासे से क्यासे ताकतवर बनायेंगे। हमें बकरत है पूरे पचास हजार मौजवानों की जो धरम की जमीन के लिये अपना घर कुबली पर निबे घाव बढ़ने को तैयार रहें। हमें बकरत है ऐसे कुहारों की जो मुलाभी की जिम्दारी से घावाही की पीत करना क्यासे बेहतर समझते हैं। मेरे घनीज दोस्तों अब बकत घा गया है अब हमें कुछ करना है और अपने मुस्क को तबाही से बचाने के लिए कल्ल सोचना है। वह दिन दूर नहीं जब हमारी घावाही को ललकारा जावेगा और उस वक़्त हमारा बाब साह हमारी फौज हमारी तोपें और हमारी तलवारें किसी मजदूरी में बेबस और बेधकतवार छोटी और कमपत्ती रहेंगी। तब मुस्क की तुम्हारी बकरत होगी। तुम उसे मुलाभी के अतरलाफ पकों से बचाओगे। अपनी जान की बाजी लगा कर तुम किरकियों को समझाओगे कि तुम्हारा बाबसाह तुम्हारा मरपरस्त है और तुम उसी की मुलाभी फुलन कर सवते हो। मेरे बन्धो अपने-अपने हाथों में धमतीरें लेकर बीबावे जय में

मे बीरे की गई हिदायत मौसम हुई। बाबिर यह नीजवान इस बारे में तफसील से बता सके।" ब्रैडन ने इस बात की धीरे धीरे किया चूंकि उसे रेजीडेंसी से बेक लेने के बाद वह भी बात हो चुका था कि वह अपना धारमी है।

इस बात में बाबिर बोला "मोहतरिन हजरत का सोचना बिल्कुल बुरा है। कम रात जमान के सचरीफ से जाने के बाद स्वीसन ने बर्ब साहब को यमनर के किसी जगह को पहुंचाई तक पहुँचाने की हिदायत दी थी। उसने अपनी किसी कठोरतायत का सिनसिना बाहिर किया था और बताया था वह कोई महम बीर करने जा रहा है।

"बीर नहीं मेरे अजीब" यमीमुद्दीन ने कहा "यह एक सचराफ नसर है जो अमर की पीठ में बीका जाएगा। बीर नहीं यह साहब अमर के मुँह पर चपक होना।"

ब्रैडन ने कहा "बाब का करमाना बिल्कुल बुरा है। वह स्वीसन की अजरस्त बाब है। वो जान हुए बाह अमर की मोडिस दिया था चुका है कि वह अपनी हुकूमत में बीरे अजरस्तमायिया उन्नीसी करे। अब उसने रिपोर्ट की होगी कि कम्पनी का हुकम नहीं माना गया है। इस बीरे के बाद वह गजनर को छाड़ी हुकूमत की अजरस्तों निर मेनेबा और अब हुकूमत पर कम्पनी अरकार का ठप्पा लय जायेगा। बुनिया की अजर में काहुनन और अरघन हमारी हुकूमत छीव भी जायेगी। और बहुत इस में पैठ किया जाएगा १८०१ का मुनहनामा।"

"इजायत हो तो मैं कब अर्ब करूँ" सद्दा सिन्धी बोली।

"कहो बटी?" यमीमुद्दीन ने प्रोत्साहित किया।

अब हमारी अजायत की ताकत बहुत बढ़ चुकी है। अमर हम बुनिया के सामने स्वीसन की बालाकी बाहिर कर सके तो बाबिर

"सिन्धी ठीक कहती है" ब्रैडन बोले "मैं सचराफ रास्ता निकाल चुका हूँ। इस नीजवान के बाबिर बीर है जो रेजीडेंसी में मोफरी कर

सिक्किन "

"नहीं" ईम्बन ने टोका 'तुम धकेले नहीं होवे । सिद्दाब धीर सिक्की तुम्हारे साथ रहेंगे । क्यों सिद्दाब ?

'जनाब का हुक्म सर धौबों पर ।' सिद्दाब ने बट बल्लर दिया 'जल भर कभी बोरी नहीं की । कुवा ने चाहा तो यह इसरत भी बिस में न खोती । बिना काम पूरा किये पापको घबस न दिखाऊंगा ।"

'वह बातें क्याबा बताते हैं डैबी' सिक्की ने हँस कर कहा 'क्या बोरी के पलावा कोई धीर रास्ता नहीं है ?"

"सिक्की बियर' ईम्बन ने बताया 'मेरी सिद्दाब से बात हो चुकी है । उसका रास्ता सब से सच्चा है । किसी रात इचल्ल रेबीडेंसी के बपतर में छिपा खड़ा । थोका उलाह कर तुम धीर सिद्दाब भी घबहर चुकीने । फिर तीनों बट पट घनमारी खोल कर कासबों की नकल कर बालना । घनमारी के बारे में सिद्दाब पता लगा रखेया । थूँकि इचल्ल को सभी रेबीडेंसी में बकना बकरी है इसलिये कामबात बुचने से अच्छा सगरी नकल कर लेना होगा ।'

सिक्की ने घाये कल्ल न कहा । अग्त में यही निश्चित हो गया । मुत मम्बला यै एक धीर हिवाघत इचल्ल की भिषी । अदर बहनसीबी से बीरा हो ली बहु सप्रमल साथ जाने की कोधिष करे । इचल्ल की बहु धासान मानुम हुआ । स्मीनन सबसे कुछ बा । काइबात की नकल लेने में कोई गड़गड़ न हुई तो बहु धासानी से साथ जाने के लिये उसकी स्वीकृति के लेगा ।

पुराने पुराने से निकल कर अपने घर की ओर जाते तनब सिर्फ सिद्दाब धीर सिक्की इचल्ल के साथ थे ।

इचल्ल अपने भिज से बानो के बारे में परामर्श करना चाहता था ।

उसने कहा "मैं भीर मुन्गी की बेटा बानो के बारे में बहुत परेशान हूँ
पिहाब ।" लेकिन पिहाब उसकी परेशानी पर उदास होने के स्थान पर
हँसा और कहने लगा "मुझ से क्या बाना नहीं मरे दोस्त । आज मुझ से
मैं उसके बारे में बहुत कुछ सोच चुका हूँ ।

"क्या सोचा है तुमने ? इधरत उसका तात्पर्य न समझ पूछने लगा
"क्या उसके साथ तुम्हारी कोई बातचीत हुई थी ?"

"नहीं पिहाब ने उत्तर दिया 'बातचीत नहीं' ही उसकी मयर माँओं
से इकीकृत खोब निकालना मेरा पुराना काम है । बहरहास तुम्हारा
इन्तज़ाम अच्छा है ।"

"क्या मतलब ? इधरत उसका मतलब ताइते ही चित्ती की घोर
देराने लगा जो बीये-बीये मुस्तुरा रही थी फिर बोला "मयर प्यारे
तुम्हारे इन्तज़ाम से अच्छा नहीं ।"

"घाप लोग अपने बचकर में निमी तीसरे को क्यों बसीट रहे हैं ?"
चित्ती ने जल्दी से कहा ।

"बाह" पिहाब बोला "मिच साहेबा को गलतफहमी होने लगी ।
बनावा घापरु बारे में किम ने कहा ?"

सिहरी ने धर्म से अपनी बर्तन मुका ली । इधरत और से हँस दिया
"अस्मियत बाबर के फूज नहीं जो खिरी रहे । बेटा मिच साहेबा मुझ
से क्या बाना समझदार है ।" उसने तिमनिसा कर कहा । पिहाब को
कोई उत्तर न मूक रहा । तब गुरम्त बह प्रसन्न बानो पर से घापा ।
"लेकिन तुम बहुत धिरे पसग निकसे इधरत । इन्तज़ाम भी भीर मुन्गी
की छोफ़ी थी । बल बटो तुम्हारी बुद्धि पर पहल लगा है तो मामला
बोपट हो जाय । कुछ सोचा ता होगा ।"

"मैं दिना मोर्च-जमने काम नहीं करता बनाब । घाप अपनी तरफ
तो देव लेने । मैंने तो चिरगियों के मुन्गी की लड़की चुनी है और
घापने .. "

‘इशरत माई’ सिस्वी ने सत्कार समझीरता चारण कर नी घौर टोटा “कहने से पहले क्या जकर कर लेना कहीं मुझे पानी न मरे।

‘घोह—मुखाफ करना बहिन’ इशरत बोला “वेरा मतलब तुम्हें नाखब करने से नहीं था। हमें तो पता है तुम पर घौर तुम्हारे डंडी पर। अगर तुम लोग न होतें तो न जाने हिम्बोस्तान वाले तुम्हारे मुक्त घौर मुक्त क लोगों के बारे में क्या सोचते।”

सिस्वी मुस्कुरायी। बात समझ बई। इशरत इसके बाद फिर बानी के बारे में कहने लगा। सिहाब समझीरता से सुनता रहा। इस बार उसने ध्यान नहीं किया। बल्कि इशरत की बातचीत के धन में बोला ‘नहीं माई। मेरी धन नहीं है। तुम इन रेडीहेंसी वालों के बककर नहीं समझते। कहीं तुम्हें टटोलने के लिये वह कोई नाम न हो। उसके साथ बाहू प्यार मोहम्मत का नाटक बसे रख लो अगर भूल कर भी अपना जेद मत खोलना। क्या पता वह भी जानबूझ कर रही हो। बाबिर एक बकबाद बाप की बकबाद बेटी बाबिर होने से हैर किन्ती समती है?’

इशरत ने उत्तर न दिया। बात समाप्त हो गई। इसके बाद सिस्वी घौर सिहाब उसके घर आये। तीनों ने मिल कर खाना खाया। तभी इशरत की सिस्वी घौर सिहाब के मध्य बड़ जाने वाले सम्बन्धों का मान हुआ। वास्तव में सिस्वी क प्रभाव से सिहाब के जीवन में मोड़ आने से उसे प्रसन्नता हुई। जैसे पहले दिन उसके व्यक्तित्व से जोड़ा जान सिहाब घौर इशरत दोनों एक साथ बहने थे। खुशी की बात थी कि नाच-गाने का सम्पन्न सिहाब इशरत से नहीं बाबिर मुक्त के लिये दूरबानी का जजबा पैदा कर चुका था। इसका अर्थ सिस्वी को था जो धन शास्त्र उसे बाहने लगी थी। इशरत ने मन ही मन कई बार अपने बुरा से बुद्धि की कि वह दोनों की जोड़ी हमेशा-हमेशा सलामत रहे।

रेडीहेंसी में प्रवेश के लिये खुशी के बाबिर मोटने वाला दिन था

पर चढ़ गया। ग्रहरियों का सम्बन्ध पुष्ट हो गया। चारों तरफ घोर मच गया। स्त्रीमन का बंधन बंधा बुर नहीं था। इधर के बाह सिस्वी घोर सब सिद्धान्त भी बीमार पर चढ़ कर नुबने लगे तो हल्का मच गया। चोर चोर की धावाओं धाने लगी। स्त्रीमन घोर बर्ष अपने-अपने निवास से बाहर धाने घोर ग्रहरियों के स्वर की विधा में भागने लगे। ग्रहरियों में से एक ने फायर भी किया। बड़ी कठिनाई उपस्थित हुई। इधर बाहर चढ़ गया। पीछे सिस्वी घोर सिद्धान्त धाने। घोर फिर हस्ते-मुक्ते में अपनी पूरी धनित से यह लौक धाने। रेबीडेंटी का मुख द्वार बर्ष से बुर था। बर्ष तक ग्रही पीछा करते उस तरफ से धाने यह बने बंधन में था बर्ष। यहां किसी की नजर पड़ना एकदम घबराव था। तीनों घबरावता घोर परेशानी से दुखी थे। साथ बना-बनाया काम बीपट हो गया। जान तो बर्षी मगर बेकार नबराहट उठई। सिद्धान्त ने तो इस बर्ष भी मजाक किया। नीतिधिये चोरों का यही होता है। ग्रही उस तरफ बैस धान कर लौट गये। इधर की सिद्धान्त का चुटकुता पसन्द नहीं धाना। यह एक घोर नात से परेशान था। सुबह उसको रेबीडेंटी से नामक पाया गया तो परिणाम बर्षकर हो सकता है। उसके पिता का मकान मीर साहब को मालूम था। चोरी में उसके ऊपर सम्बन्ध गया तो रेबीडेंट घर को मटिमामेट किये बिना नहीं भागेगा। बार-बार अपनी मूर्खता पर रोना धा रहा था। क्यों न यह सुब क्वार्टर की तरफ धाना। सिस्वी घोर सिद्धान्त को इधर से निकाल बैठा। मगर धाम्य का बर्ष किस से टका है। जो कुछ हो गया था बहुत बुरा हो गया था घोर अब उसे टालना असम्भव था।

इन तीनों में सिस्वी के होश-हवास अभी काबज थे। इधर की घाफ्त का धमकावा उसे ज्यादा धन्यी तरह था। फिर भी उसने इधर को सुबह रेबीडेंटी धाने की राय दी।

उसने कहा "जब तुम जानते हो कि चोरी का मुका होने पर घाफ्त

पाये बिना नहीं रहेगी तो बीड़ी हिम्मत से काम लेकर बचाव की बाजिबों
सूख क्यों नहीं करते । मुबह जाना और बाजये से इन्कार करते हुए कह
देना कि बाजिब साहेब की रात में बचावक तबियत खराब हो जाने से
मुझे धामा पड़ा । जान साहेब को हम तैयार रखेंगे । बात जम गई
तो मुठौबत से पुनरागत मिल आयेगा । धायम्बा फिर कभी कोसिध
करेगे । और देखो कि स्मीमन का एक रकम नहीं होता तो बीका लपते
ही भाव जाना । एक मरान नहीं तो दुमरा मरान सही । कम्पनी की
सारी चीज ठप्पा करे तब भी तुम्हारा पता न चले ।”

इधरत प्रती धायमयस्क बा कि पिहाब ने इसका विरोध किया ।
सिन्धी और पिहाब तब बहस में उमझ गये । रात्रि के जम नीरव तारों
में शान्त तब इधरत के टोके बिना वह गामोश न हुए । मगर इस बीच
इधरत को सिन्धी का विचार आ गया । दिन निकलने में कुछ समय
चप रहा तो वह उन लोगों को बाजिब जाने की हिशमत देता रेबीडेन्सी
सीटा ।

द्वार पर पहुँच खल कर दिया गया था । दो हथियार बन्द सिपाही
बखरबाद रहे थे । देखा तो मुठत नबरीक आये । मगर इधरत पर नजर
पड़ी तो बड़ी परचमगी मुन्कुराहट से उसका स्वागत किया और घन्दर
जाने से न राहा । वह इस मुन्कुराहट का कारण न समझ सता किन्तु
जन ही मन जाँच गया । क्या इन लोगों ने अपने क़ुश्रान में जाने जाने
की आजा देते हुए उनकी दुईता पर मुन्कुराहट बगेरी है । वह मोबता
रहा बीडर दो घोर प्रदरी भिने । उनके चेहरे पर भी बीदी ही मुन्कुरा
हट मिली । इधरत परेमान हो गया । कहीं से जना तो कशार्टों तक
सम्लाग था । जारों कशार्टों के मोन लौ रहे थे । स्मीमन इन बदन तक
उठ कर बंभने के बाहर इधरत की प्रनीया किया करना था ताकि कुछ
दूर तक टहन आये । किन्तु रात की घटना से उनकी धान भी पादर
गुन न गरी थी । वह धान भी तक उठने जाता था । और मुन्की हमपा

दर से छोटे घीर-दर से चामते थे। उनकी तरफ निश्चयता सभी हुई-
 थी। मुत्ता बगार्टर के बाहर बैठ पा। एक बार गुरी कर वह दरवा
 के नक्कीक या गया घीर दर चालने लगा। उससे न रुका गया। उसने
 दर की टोकर धारते हुए कुत्ते को मन्गी माली थी। फिर घाने बढ़
 गया। दरवाजा खुला था। जबते समय उसने किबाड़ केर दिये थे। इस
 वस्त भी बैठे निजे। वह बचका देकर भीतर जाना चाहता था कि बर
 बर मीर साहेब वाले बगार्टर से बानो तेजी से निकली घीर उसके बरा
 बर घाकर भीमे से बोली- 'भीतर चलो। मुझे कुछ जरूरी बातें करनी
 हैं।'

इसपर बबराया बानो की मनोरंजा जानता नहीं था इसलिये परे
 घाली महसूस की। वह अपनी ही समस्या में घलमल हुआ था। घोर
 यह मक्की न जाने क्या सोचे बैठी है। उसने टोकना बाह्य "इस वस्त
 मेरे साथ घकेले बगार्टर में गया काम है बानो। बरकर तुम्हारा बैजा
 फिर गया है। बाकर बर धाराम करो। मुबह बातें करेंगे।

"वस्त बरबाद मत करो। जस्ती करो। बानो ने बोबाय कहा
 घीर उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना जम्बर चली गई।

इसपर ने वहां पहुँचकर दिया बताया। बानो को देखते ही चीक
 गया। बाल पर समार्ची क ताजे निघान थे। घीरों रोने के कारण रुक
 रही थी। बुदा जाने क्या है? रात तक ठीक थी। जब न जाने क्या
 हो गया है। इसपर ने अपनी तहानुमति घीर धारण्य व्यक्त किया।
 बानो ने टोक दिया।

"इन बातों का वस्त नहीं है। जो कहती हूँ ध्यान से सुनो। रात
 घोर होन पर मेरी घीर भी अपना के साथ-साथ ही मुन गई। वह
 बाहर बीड़े घीर में किसी बुदाई ताकत के वस्त बीच की बिड़की पार
 कर तुम्हारे बगार्टर में आई। बाहर जोर-जोर की घाबाब या रही थी
 घीर किसी का पीछा हो रहा था। मुझे न जाने क्या मुन्ध घीर में

घरने क्वाटर की छत से बहारबीबारी कलांककर बाहर आ गई। घग्गा मुझे मेरे कमरे में छोड़ चले थे। धाँसे वस्त्र मुझे देखा नहीं था। धीरे-धराबा रमाशा बढ़ा। मैंने तुमको भागते देखा। मैं बहारबीबारी से दिमदी बढ़ी थी। सिपाही न मुझे देख लिया धीरे धीरे भगामा। अन्दर मुझे काबू कर लिया गया धीरे साहब के सामने पेची हुई। मैं रोती रही। उधर हय सबके क्वार्टरों की तलाशी भी आ चुकी थी। तुम गायब थे। मैंने रोते रोते एक बहाना बनाया। लुब्बा का मुँह है स्त्रीजन की समझ में बात आ गई। मैंने उसके सामने कैपटी से कजुल लिया। तुम्हारे साथ मेरी भावनाई है धीरे मैं तुम्हें लेकर बहार बीबारी पार पम्मे इधरे से गई थी। धीरे होने पर तुम डर कर भाग गये। घग्गा की आँखों में लून उतर आया। अन्हीने बड़े साहब के नामने ही मुँह फुटी तरङ्ग से पारा। लैस्मि उनकी कोई चिन्ता नहीं। अब तुम बेचिह्न हो गये हो साहब का तुम्हारी तरफ जरा शक नहीं गया। उठे चुना है शाहे अकप ने कोई आदमी उसकी आल सेने भेजे थे। बहुधात तुम मरी सब बातों की साईब करना।

बाना दगना बहकर बीते बह आई थी बीते ही चली गई। इधरत क्रिचनग्यबिबुड नई लीबता रहा। क्या एक बायीक लड़की इतनी तोड़ बात उठा सकती है? क्या जानबूझ कर काहला की उगाधि स्वीकार कर सकती है? अगर हाँ तो क्यों? क्या बानो ने घननी मोहम्मद के आचार पर दगना बडा त्याग किया है? या कोई धीरे भावना है? कोई धीरे बढ़ी भावना जो मोहम्मद से भी ऊँचे बर्ग की धीरे बबिच हो। कोई ऐसा घनहोना बिचार क्रिचके लिये आल-आल मान-मर्पाश घन-तन मनी कुछ बुरबाग किया जा सके? इधरत की आँखों में जो बुर भाँजु आ बिरे। घने घपने आप से गर्म आई अब उनसे मोचा रि एसी बानो क बारे में आल तक बह न जाने क्या-क्या सोचता रहा है, क्या-क्या मुनता रहा है धीरे न आल क्या-क्या कहता रहा है।

सुबह मीर मुन्गी उसके क्वार्टर में पाये। इधरत सो रहा था। उसे बगाकर बड़ी देर तक बह बड़बड़ाते रहे। बहुत-सी ऊम-जसून बार्ते थी। बस्कि कहा था। घरीफाना धर्मों में गालियाँ सुनाई तो भी प्रतिघपोषित नहीं। इधरत सुनता रहा। उसे धर्म प्यारी। इस भिन्नकार पर नहीं बस्कि उस प्रताड़ना पर जो बानो को सहन करनी पड़ी होगी। क्रोध से काँपते मीर मुन्गी बार-बार उसे घीर बानो को कोस रहे थे। यह लड़की के जीवन का प्रश्न था। ठीक भी है। पार-पीट से बानो पर क्रोध उठा रना धर्म का। स्लीमन की एक बात उन्हें पसन्द प्यारी थी। बड़ी अपना रोना-पीटना समाप्त करने के बाद उन्होंने इधरत के सामने रख दी— 'बरबुरबार, क्या तुम बानो से घरीफ कर सकते हो ?'

इधरत की बबान को ताला जग गया। वह कुछ कह न सका। हाँ या ना। बानो के जीवन की तबाही का प्रश्न था। तुम बामोस कहा रहा। बड़े मुन्गी ने बून के भाँसू रोते हुए धार्ये कहा— 'मैं कुछ इस रिशते की बातें सोच रहा था। मेरिन तुमने मेरे यकीन को ठोकर मार दी। लड़की भावान घीर भोली होती है। तुमने उसकी जिरपी तबाह कर दी। अब लुबा के लिये घाबी से इन्कार मत कर देना। मैं बरबाद हो जाऊँगा। मेरी इज्जत मिट्टी में मिल चुकी है। बड़े साहेब ने रहम किया जो सबको इस बारे में बामोस कर दिया है। अब भलाई इसी में है कि तुम उसके साथ भिकाह कर लो।

"कर लूँगा मीर साहेब।" मुनते-मुनते इधरत की बबान धन्त में अपने आप किम्व पड़ी 'उस नेक लड़की को अपनी बीबी पाकर मैं सुखनसीब कहाऊँगा। आप भिकाह का बम्बोवस्त करें।"

इस तरह ऐसी बटना जिसका कोई परोस या अपरोस सम्बन्ध बानो या इधरत के जीवन से नहीं था ठोस सच्चाई बन गई। दो-चार ही दिन बीतने पर धरमम इधरत में भीलधियों के सामने बानो को बीबी वस्तीम किया। उस वक़्त स्लीमन भीरूब का घीर बार-बार उस रात

की घन्ना का प्रसंग छिड़ इशारेन को समझा कर रहा था। उसपर यही बटना चाहे जबकि के लिए ठोस प्रपञ्च की धारण स बँठी। स्मीमन के प्रहरियों ने चोरों की संख्या बार बताई। स्मीमन ने अपने अनुमान के बल उसकी संख्या छः कर डाली। न केवल यह बल्कि उसमें यह प्रसिद्ध किया हमसावरों का ध्येय उसकी जान लेने से था। पहुँचेवालों का बयान धारा चोरों को देखने पर ऐसा लगा जैसे वह दाही पीज के कपड़ों में हों। धर्मात् स्मीमन की तरफ से जोर-जोर का चर्चा उठा कि हमसावर स्मीमन की जान लेने धाये थे घोर बादशाह की तरफ से भेजे गये थे। हास महम तक पहुँचा। धधकाह भी पहुँची। स्मीमन से मिलकर उन्होंने इसका निराकरण चाहा। रेडीहैंट भला निराकरण कैसे करता। वह तो चाहता था सावित्र धनी को जहाँ धक्कर मिला वहाँ बलीक करना। मिलकर धधकाहों की पुष्टि न केवल कर ही दी बल्कि पुनः ठिठकार अपना सन्देश भी व्यक्त कर डाला। भोले साहू रेडीहैंट के ऐसे सन्देश पर मन ही मन दुःखी हो उठे। उन्होंने जब विभी का बुझा चाहा था? फिर हत्या करवाना तो एक नीच काम है। मिलकर स्मीमन को अपने हुकूम में बुलवाया। स्मीमन दरबार के बन्द गया। साहू ने कहा 'बगुदा घाप मेरे दोस्त है। घापको लेनी बलनफ़्सी क्यों हुई? स्मीमन बोला 'जम्हकसूब भी हिज मंत्रेस्ती जय घोर मोहब्बत में लब बुझ जायज है।

‘मगर वहाँ जय वहाँ? साहू ने बुझा सवाल किया।

‘मैंने घापके मिनाट यधनरसादेब को चम् मिनायने मिली है।’

‘ता क्या हुआ?’ साहू बोले ‘मगर हमारे मुकद्दर से धक्क की हुकूमत काम हो चुकी है तो हमें बुझने या विभी घोर में क्या दिया। फिर हम एक बहानी बिन लख हो गयते हैं कि घाने बदन में छन जाने हमद’ के बरत की सावित्र करें?’

सवित्र स्मीमन नहीं माना। दरबार में एक बगुदा घाप को...

वह चारों ओर की चिन्ताओं से स्वतन्त्र सिर्फ मनोविनोद में समय बिताने के घापी बन चुके थे ।

बर्फ अपनी गम्भीर आकृति लिए पहुँचा और घाता पाकर बाह के सामने बैठ गया । लकी का के चेहरे पर घासी के लक्षण कम थे और जो थे उन्हें वह अपने प्रसन्न मर प्रकट न करने की प्रयत्नशील था । बाह नहीं जानते थे वह कौन-सा नया प्रमाण से उनके सम्मुख आये है । वह प्रसन्नमुख थे और हमेशा की तरह हँसकर वह का स्वागत कर रहे थे । बास्टर में पूरी रेबीडेंसी में एकैसा वह एक ऐसा व्यक्ति था जिसे उनका हृदय निष्कपट और मिलिपु पाता आया था । उसके साथ उनकी मित्रता थी । उन्होंने स्लीमन साहेब की छद्मनामी के सम्बन्ध में हुई बात का उल्लेख करते हुए बैंगन की ओर देख बर्फ से चिकायत की "बैंगन साहेब को चिकायत है मिस्टर बर्फ कि स्लीमन बाबत के रोब उनके साथ बहुत दुरी तरह पेश आए । क्या यह सच है ?

बर्फ ने कहा "हिन नैवेस्टी का सामर पूरे बाकपात नहीं बताये गए । मेरी नजर में बैंगन साहेब जब मिस्टर स्लीमन का प्रमाण करने पर तैयार थे ।"

बैंगन ने बीच में कहा "सच बात है किसी का प्रमाण होता हो तो वह उसका नसीब है । आप तो बहुत तेज और समझदार हैं मिस्टर बर्फ क्या आपकी नजर में किसी एक प्रमाण के मफाद के लिए पूरी प्रयत्नी कौम आलाफी और मनकारी की तरफदार हो सकती है । जिस पर उन्होंने फरमाया कि मैं मुसलमान होने वाला हूँ !"

बर्फ बोला "अपनी राय के मुताबिक कुछ धर्म न कर मैं हिन्दू रहना चाहूँगा मिस्टर बैंगन कि आदमी को ज़री जगह लासीम देना मुनासिब है वहाँ उसका कोई धरर होना मुमकिन ही । स्लीमन साहेब को आप सच्चाई और ईमानदारी का सबक देने लगे मेरा क्याल है वह उनकी सीढ़ीन थी । फिर अपनी ताकत और अपने हक के बरोसे बैठा

को बक्का लगने से बच सके। ऐजीडेंट के पास बहुत कम है और वह हिज मैजेस्टी के ऐठराज की गवर्नर जनरल तक बेचने का मौका नहीं पा सकेगा और सबबुरान बीरे पर बिना हिज मैजेस्टी की इजाजत चल होगा। ऐसी शूरत में अपने ऐठराजात बाद में गवर्नर जनरल को लिखकर रवाना कर सकते हैं। फरक।”

वकी का एक सौच में पूरा मजबूत पड़ गये और उसी से बात नीचे कर लिया। ईंग्लन के चेहरे पर मुस्कराहट खेलने लगी। और बाहे अबब की अवस्था न तो कहीं का सफ़्ती है न बयान की का सफ़्ती है। बदनर जनरल ने अपने बात में बिसे हस्तबा कहा का वह बास्तब में क्या बी इस पर ठनिक समझे करने की अवस्था न थी। बाहे अबब को घासबन का और बुब का कि घाब उनके पास सबमुख व गहन के कबतानुसार हुकमाने घाने लगे। घसी कुछ बेर की तो बात है अब चम्हूनि ईंग्लन को टोका या। मबर बाग पड़ा बीसे ईंग्लन में बबिब की लकीरें पड़ने की घसीम समता हो। गवर्नर जनरल ने बाबिब धली के चेहरे पर तमाका मारा का। इतना अपमान ? बाबिब धली क चेहरे पर पल-पल में कई रंग घाने और कई गये। घारग्न में लोब से घनका चेहरा लुब हो गया फिर अपमान से कासा पड़ने लगा घन्त ये निराघा से पीसा पड़ गया। क्या कहूँ, किससे कहूँ ? गवर्नर जनरल उनके होस्त है ? होस्तों की और से घार्बना के रूप में उनकी घाजा घाप्त हुई है। अबब के बादघाह की घाजा मिलने लगी ? बाह यह बुर्नि उनके बीचन में छेप का। बहुत बेर तक वह बाभोग और नित्यम्ब बीठे रहे। उनके मुल से न थोई घम्ब निकला और न घरीर में कोई बति हुई। लनवा जैसे घाब के बाद उनकी जबाब हुमेबा के लिये बाब हो जावेपी इसलिये घसका घूर्वाभ्यास कर रहे हैं। ईंग्लन लुब परेघान गजर घापा। वह सप्रयत्न अपनी हट्टि बाह की हट्टि से बचाकर दबर-उधर ताक-भ्यंक कर रहा का।

बहुत देर बाद एक आहू की मखिम आवाज़ के साथ आहू ब्रिग्जन की ओर देखते कप्तान बर्ड से बोले—“तुम ने सब कहा था ब्रिग्जन बर्ड हमारे लिये नवनेर जमरल की तरफ में कुषमनामे की धमन में छोड़कर लाये हैं। ऐसा तोहफा जो न हमें कहनी परेशानी देता और न दिमाही तकनीक। यह हमारी बोस्ती का चिन्ता है भाई जो पवनेर जमरल साहेब ने बहुत देर के बाद हम भठा किया।

बर्ड की आवाज़ बरबरा गई। उसने सहानुभूति पूछ घट्टों में कहा “ऐसा न कहिये और हाइनेस। कुछ न करे घाप के दुश्मनों को किमी तकनीक का सामना करना पड़े। इस बात का मजबूत कुछ पीका बकर है अगर इसका यह मतलब नहीं—”

ब्रिग्जन ने टोका “मिस्टर बर्ड रखने बीजिये। हालांकि मैं जानता हूँ घाप एलिस्टेड रेजीडेंट के छोड़ने पर है, लेकिन इसफ और सन्वाई को डुबान कर सेते हैं। मैं घाप ही से पूछता हूँ, पवनेर जमरल को क्या हक है यहपाई धमन को हम तरह कुषम मेजने का? इजाजत न की गई तो स्लीमन साहेब बिना पूछे बीरे पर जायेंगे। साक्षि इसका मतलब क्या होता है?”

“क्यों पूछने हो मजबूर ब्रिग्जन?” आहू बीच में बोले “किसी की बर्निकरमती घनकाजों में नहीं बधी होती। तीहीन का सामना करना पड़ रहा है। क्यों? क्योंकि हम हमेशा नववाई और बफाकारी से कामनी के दोस्त बने रहे। हमने किसी ऐसी साक्षि में हिस्सा लेने की ज़रूरत नहीं मन्धी जो बिरोधियों के तिलाक मुरक के चारों कोनों में की जा रही है? हमने और हमारे बुजुर्गों ने हमेशा बही किया जो रघ्यनी मरवार की मन्ना में था। हमारे जिन्ने हमसे छीन कर हमों को देके गए। बर्ड तुमने तबारीत तो देनी होती न? हमें मजबूर किया गया हम घमनों को न बी साधारण में बनी कर हैं और कामनी के रितानों को बरबादी साजाने से गल देकर धमन में कायम रखेंगे। क्यों? ठीक है

लिये कि हम सनके बोस्त थे । हमसे कर्म लिये गये । हमसे यदि वैपान होने पर फीबी मबर भी गई । चाह । बड़ी सम्मी कहानी है । मैं नन जिसका मतलब तुम बह से पूछ रहे हो ।”

“गोर मैनेस्टी की परेछानी में समझ रहा हूँ । बर्ब ने बड़ी छहानु भुति से कापटी आवाज में कहा “मगर बुर भी मबरुर हूँ । बतीर घसि स्टेट रेजीडेंट गबर्नर साहेब की हिदायतों के मुताबिक घर्ब कस्बा स्वीमन साहेब को बीरे की इबाजत का परवाना प्रता किया जाये ।”

‘चाह बर्ब हम तुम्हारे मुँह से ऐसे झलझल चुनने की समझा नहीं रखते । क्या तुम इंचाफ की तराजू पर ठीककर हमसे ऐसी ठगडो करते हो । बुरा के सिने एसिस्टेंट रेजीडेंट के नाते हमसे घर्ब मत करो बल्कि एक बोस्त के नाते हमें मसिहरा दो ? क्या हम इस बुस्म को बर्बाद करें ? क्या यह खिल्लत नहीं हमारी लीहीन नहीं ?”

बर्ब को उत्तर न सूझ सका । उसने अपना धिर झुका लिया । चाह धैर तक उसकी गोर देखते रहे बीर घन्त में धिर बोले ‘हम तुम्हारी भावुक हालत का सम्बाका बसूरी कर रहे हैं बर्ब । लेकिन तुमने हमेसा सचवाई गोर ईमानदारी की तरफबारी की है । बोसो क्या तुम्हारी रम में हमें इस बीरे की इबाजत से बेनी चाहिये ? क्या जानबूझ कर इस बबरबस्त लीहीन को मबरुर करना होया ? हम क्या करें बर्ब । हमें रास्ता बताओ । तुम गबर्नर के मुमाबन्हे बकर हो लेकिन हमारे बोस्त भी । क्या तुम्हारी मबर में हम पर बुस्म नहीं हो रहा ? हमारी लीहीन नहीं की जा रही ? बाबिर यह क्या माजरा है ? क्या होने वाला है ? हमें बताओ बर्ब बताओ ? हम तुम्हारे भाहमानमन्ब होंगे ।”

‘फांटों में मत थकेलिये गोर मैनेस्टी ।” घन्त में बर्ब की जामोपी डूटी “मैं बचना नहीं हूँ । सब बेक रहा हूँ । सब समझ रहा हूँ । गबर्नर बनटस के मन में क्या है । घन्टी तरह जानता हूँ । मैनिम मबरुर हूँ । पट समझिम के पावों से बंधा हूँ । मत कहनाइये क्या होने वाला है ।

Handwritten marks and characters at the top left corner.

हजार फीस कम्पनी सरकार के कहने पर बटकर पचास हजार न बन
 होती। काश उन पचास हजार पचासों को हमारे बाबिर हुजूर ने ती
 घीर बीस हजार न बना दिया होता। काश हमारे पन्द्रह हजार बांग्ला
 के मुकाबले में कम्पनी के अनविनित रिसाले न होते।”

“मुस्ताबी मुखात धावा हुजूर।” नकी खां ने धमका प्रवाल सु
 किया “यद्यपि इन बातों के सोचने का बख्त नहीं है। मुकाबला करना
 न तो धासान है घीर न मुर्बाकन। ठिठकी हुकूमत के हाथों हमारे
 किस्मत का फैसला नहीं है। घीर इस बीरे का कोई ठास्नुक किसी ने
 धानी से नहीं हो सकता। पचास से ब्यास स्लीमल साहेब हमें इन्तजा
 के मुतासिक अपने घरबारे बेंबे। बेंबे हैं धाला हुजरत। हम उन्हें पंहु
 करने पर मजबूर नहीं।”

“बामोस रीहए नबीर साहेब।” सहसा ब्रैगन तीस स्वर में क
 उठा “आप धालमपनाह को बच्चों की तरह बहसाने की कोसिस क
 रहे हैं। मामूली होता है, आपकी सिपाही जानकारी नहीं है या धा
 स्लीमल के ब्यास अपने बाबबाह को हकीर समझते हैं।

“यह मेरी तीहीन है ब्रैगन साहेब। नकी खां ने समक कर क
 “आप धाही हुजूर में मेरी बेइम्कती कर रहे हैं।”

“आप नबीर हैं इसलिए नकी खां साहेब करना पही बात को
 घीर कहता तो उसकी बेइम्कती करने की जबह में बाहे प्रबल को उं
 धवा बेंबे पर घीर बैठा। आप जानते हैं आप क्या कह रहे हैं। न
 प्रबल की बरबादी का मतला है। वह बीर नहीं सिपाही बतरंज क
 वह मोहरा है जिसकी मार कच्ची बाबिर होती। घीर आपने मामूल
 धमक्यों से इसकी इजाजत देना कुबूल कर लिया।”

“हो नकी खां।” साह ने दांवा हाक उठाकर दोनों पलों को धाम
 रूने का धारोय देते हुए कहा “ब्रैगन साहेब ठीक करपाते हैं। हम पर
 बीरे की इजाजत नहीं दे सकते।”

‘ओ हुकम माममपनाह ।’ नकी याँ को कहना पड़ा । लेकिन इस के बाद वह ईश्वर को बुढ़ी नजरों से पूरा मुह फेरकर बैठ गया । कुछ देर बाद घाह धारामगाह की तरफ तयारीक ल गए । किन्तु जाने से पहले उन्होंने यही फैसला बोहराया कि वह कभी इस बीरे की माता नहीं बने ।

उसी रात बाजिर धनी घाह की बेट मरियम महल से हुई । वह पहली दृष्टि में घाह की उवासी लाइ गई ।

घाह ने दरवाजा का घूट भंरा और मरियम को धात्र के गवनरी रात का पूरा हाल सुनाया । मरियम नून कर बुकबुकाई, बिगड़ी और लीरिया बहन कर स्मीजन को कोसने लगी ।

पिछले दिनों उसकी तबीयत बराबर खूब रही थी इसलिए वह पल्ल पर लेटी थी । घाह निकट जाकर उसे रोक्ने लगे ।

‘‘घापको मुस्ता करना बाजिर नहीं मुम्मान मरियम । घापकी तबियत मर्याद है ।’’

मरियम ने कहा ‘‘हम जिनगी से बीज हमार रबें बेहतर है हुन्ने मनवर । कम से कम यह जिनगी तो बरतत नहीं करनी होनी ।’’

‘‘हम घापके धाताओं की वजह करते हैं । लेकिन घापकी मुज हो जाना बाजिर मुम्मान मरियम कि हमने दरबारी इलाकत न देने का फैसला किया है । घाह ने उत्तर दिया ।

मरियम बिसरे बर उठकर बैठ गई । उसने धपनी बड़ी-बड़ी धातों घाह पर कहा लीं और पूछा ‘‘नक ?’’

‘‘हां हाँ सब ।’’ घाह ने दूसरा बाज उगाया और मरियम ने पूछने लगे ‘‘कब घापको हिरानी बजों हुई ? क्या हमारा फैसला मजबूत है ?’’

मरियम कुछ न बोली । घाह धम्मकियत हुए । माने निर्णय पर

कम से कम अपनी प्यारी बेगम का सम्मान प्राप्त करना उनकी चाह थी। यूँ मजिद मिस्तर, बंशम और राजा बालकृष्ण जैसे कुछ बूढ़े दरबारियों ने इसे स्वीकार कर लिया था। बेगम अकबर (नफी की की पुत्री जिसे बादशाह ने यही सिपाय दिया था) सुनते ही धुरधुर गई थी और अपनी घस्तीकृति प्रकट करने लगी थी। लेकिन बादशाह ने उसका कोई विचार न किया। वह नयी सज की नयी बेगम थी जो सिवासत के बारे में बसिफ-बे की जायज ही जानती हो। मरियम की बात धीरे धीरे। वह सिवासती सिपाय रहती थी और अकबर इसका प्रवास के चुकी थी। बंशम दरबार के बाहर उसकी बगल पर खड़े-हुँ किता बाना घसम्बर था। उसका सम्मान मुख्यतः होता। घस्तीकृति ठोठ होती और कैसला मान्य होता।

तीन बार पूछे जाने पर भी मरियम कुछ न बोली। हस्ती कुमारी में साहेब अकबर को उसका वह धावरण विचित्र लगा। वह जैसे बिच पर उतर आए और उसकी राज बाजने पर खीर देने लगे।

तब मरियम बड़ी नाटकीयता से कहने लगी “कनीज को आनाम पनाह के मुकाबले अपनी अकल को बहमियत देना मुनासिब नजर नहीं आता। लेकिन जब इसरार है तो हुजूर के रोखक बर्तन किने देती हूँ कि मैं आनामपनाह के कैसले से मुक्तफिक नहीं।”

“क्यों?” शाह ने बट से सवाल किया। ऐसी बात नहीं जब अकबर ने भी बर्तनबाज पर कही थी मगर उस वक़्त जोरज समाप्त होने वाला था अतः बिना कोई अनाज किए शाह छठ आए। मरियम ने उसी विचार का सम्मान किया तो उनकी उत्सुकता नये क साब-साब बढ़ने लगी।

मरियम ने कहा “मुस्ताबी मुसाफ हो ती अर्ज कर” यह एक तरह की नादानी साबित होती। बीघा किसी सुरत करने वाला नहीं। वह बीर साहेब बाहिर कर चुके हैं। हुजूर ने इमानत में आनामपनाह की

योग्यता की बाह की घोर मन ही मन सोचकर मैं किया फैसला उमड़ देने का बिचार से वहाँ से चले आए । बसते समय मरियम बेर तक मनको बेसती रही । बेहरे पर वो बरसाह उसकी मम्मी तकरीर से घा घवा घा वह उसकी आँखों में बस गया । उसने फिर एक बार भोले बाह-साह को ठमने में सफलता प्राप्त की थी । मम्मी साँस लेने के बाद पलंग पर सेटने को आतुर उसके मुँह से निकल गया—वेरे पुनाह भुमाफ कर परबर्बिमार ।

इसके बाद फैसला बरस गया घोर बल्ब बीरे की इजाजत का पर बाना तैयार किये जाने का पहरमान निकला कहना एक प्रकार बिस्फुल व्यर्थ है । मरियम के बाव बक्तर पहल से चोट होने पर अब बाह ने हँसते हुए उसे अपना गया फसला बठावा घोर कहा कि जन्हीं अपनी बक्तर की बात रख भी तो नवी बेबम सल रह गई । उसने एक बार ठिके मही कहा कि बावह उसकी मम्मा ऐसी नहीं थी । किरबर बेबम ब म्बन ममीनुहीला घोर लुर बर्ब एक बार दब घम्यों में बाह को समझने घाये । पर उन सब के लिए अब एक निश्चित सत्तर बा । अब कर नहीं तो बर बयी । हमारी रियासत में न कोई बरइल्लबायी है घोर न कोई हुकूमतपी । चोर बाकू हर वगह होते हैं । रियाया अपने बादशाह की बफाबार है । स्मीमन साहब बाहे नाफ रखें लेकिन खिलाफ इजाजत नहीं मिलेयी । अब पानबूम कर कहने का मौका क्यों दिया जाए कि बादशाह ने डरकर इजाजत देने से इन्कार कर दिया ।

नबी का बहुत गुन बा । स्मीमन से एक बार मर्दसा प्राप्त कर घाया बा । उसने बेर लयागा धनुषमुक्त समझा । करमान मिलने के चौबे ही दिन परवाना तैयार हो गया । बसिक बाहे अबन की घोर छे इजाजत मिला तो मदनैर के पत के अनुसार पूरे बीरे का सारा इल्लबान भी

करवा दिया । शास्त्रों का सब लक्ष्य तुलसीदास पर कामने की लक्ष्मी की
 शाह देखते रहे और कुछ न कहा । मरवाही और बाबाजी ने बेचारे
 कोसों दूर से । क्या जानते अपनी मौत का कुछ प्रबंध कर रहे हैं
 मरिचक विरवार हों या बंगाल घसीनुहोसा बड़ीर हों या बड़ उनको
 बुद्धि में मरिचक की धावाटव हनीत के धावे सबकी हनीतें फीकी रही
 बेचारे अपने लोकाग्रिप बाबशाह होने की आति पर मरिचक के लक्ष्य
 में लक्ष्य गए । लक्ष्य को लक्ष्य से बहुत पहल बाबापन मिल गया
 और मिल गई उस प्रबंध की करनेवा जो मकी ला ने लक्ष्य की पी
 अन्त में दिन था क्या जब उसका लक्ष्यकी दीरा आरम्भ हुआ । उसने
 लक्ष्य हथारत का हथारत की नयी पत्नी बाबाजी की बीम मीकर बाबा
 के पचास सिपाही थे और था मेम साहब सहित परिवार । मनो लक्ष्य
 बाबा जो हाथियों में से एक पर लुह सबार और दुमरे पर लुह की
 शीतलें लक्ष्य हनीत लक्ष्य दूधर पर गये । और लक्ष्य ला के मुद्रा
 में इन सब पर किया जाने वाला करीब तीन लाख का व्यय मरवाही
 लक्ष्य से गया हुआ । बाह दे बिदेगी लक्ष्य और हिन्दोम्बानी मीकर
 धाही । एक अपने मासिक के लिए फूट-फूट बर्हिमानी बाबाजी
 मरवाही लक्ष्यकी लक्ष्य की परबाह किया बिना अपने लक्ष्य की
 लक्ष्य का और दुमरा अपने मेक और लक्ष्य लक्ष्य का लक्ष्य बाबा
 की लक्ष्यों में योग दे रहा था । क्यों क्यों वह लक्ष्य बाबा
 लक्ष्य था ।

नौ

मुस्ताफा (बेगम घक्कर) नकी बी के साथ कुछ दिनों के लिए हरम से अपने मकान था गई। निकाह हुए बीबी कुछ दिन बीते थे। मन में सर्वस्व उत्पीड़न लिए वह इस विवाह पर तैयार हुई थी। पदभ्युक्त बजीर का कहना था मरियम का प्रभाव कम करने के लिए घक्कर का हरम में पहुँचना जरूरी है। घक्कर की धरती पर उसका जगमग हुआ था और रक्त में इस मिट्टी के लिए निरन्तर उत्साह दौड़ता रहा था। शाह से प्रेम नहीं था— ऐसे व्यक्ति की कल्पना ही उसे दुःख लगती थी जो वन के उस पलियों को बरबे के भीतर बकेलने का इच्छुक रहा हो। जर शाही करने पर चलने सब के सामने स्वीकृति थी। इसके बाद शाह को मजबूत से देखने जर उसे तरस घायला। बाकी दरबारी घक्कर के बादशाह खुश के काबिल थे। सब भीले साहित्यकार को चारों तरफ से मिल कर बरबादी के गढ़ में डकेला जा रहा था। मरियम के घतकी नोट हुई थी। उसे देखने पर मन ही मन उसका पुनर्जन्म नभ गई। दरबार का सजाचार घक्करमिला ही करता था। छोटे-छावटी मौखीकी, गुल्य और गीत की छाड़ में बापसूख दरवाजी शाह को अपनी घोर से बिरास में डाले जैसे किसी गहरी साजिश में उसके नजर आने। वह सब नहीं था के साथ रहने वाले थे। बातावरण चारों घोर बाजिर घली छाड़ के बिछड़ नजर आया। दूसरे घबों में घक्कर और घक्कर के स्वतन्त्र नागरिकों के बिछड़ नजर आया। हरम में शाह मिले तो घपमान के घबहू कुछ थे पीकित और बुली। घक्कर उसी रोम स्तीमन में भरे दरबार में कसम लठवाई थी। घक्कर की घाँवों में पहले घाँव और फिर लोब उभर निकला। वह अपने पिता से

पूछने का फैसला किए अपने मकान लौटी कि बाजिर यह सब क्यों हो रहा है। नकी ली से जानना चाहती थी कि बचारे बाजिर धली बाह के बोले पन का फायदा फिरंगी मरियम स्लीमन नकी ली हर बापे और बुरे मकानर बनरत क्यों उठा रहा है। उस वक्त तक बीरे की समस्या हम हो चुकी थी। स्लीमन के पास परवाना आ चुका था।

बीका निमते ही उसने बजीर से सवाल किया—“क्या यह बात बिल्कुल सच हो चुकी है यम्मा हुनूर कि अबय पर फिरंगी यों का राज होगा? नकी ली बीका उसने बटी का मुह देखते हुए उसका मतलब ठाढ़ने की कोशिश की।

“तुम्हें कैसे मासूम हुआ बटी? उसने बीबी आबाम से सवाल किया।

बीरे के लिये बाइसाहे सलामत को हमाजत देने पर जिम्होंने मजबूर किया उनमें न सिर्फ मरियम बी बल्कि बुरे बाइसाह का बजीर भी था। क्या मैं सवाल कर सकती हूँ यम्मा हुनूर कि आप बरबारी की इस माजिम में क्यों लनाहूरीर हुए?”

नकी ली ने उत्तर दिया—“एक कमजोर बाइसाह के लिए इसके धलावा हुनूर रास्ता नहीं था मुस्तामा। मैंने जो कुछ किया अपने और ठेरे पायरे के लिए दिया।

“मुस्क के बकाह के नामने आपका या मेरा फायदा कोई मायने नहीं रखता यम्मा हुनूर। फिर मैं आपने एक और नबाल पूछना चाहती हूँ। अगर बाइसाह की बाइसाहन न रही तो उनकी मलिका या उसका बजीर वहाँ रहेगा? क्या आप यह समझ रहे हैं कि हुनूरन दिन आने के बाद आप धरेंजों की तरफ से यहाँ के मुन्ताजिम करार किए जायेंगे और भीज उठावेंगे?”

“यह सब मुझे निम्ने भड़काया है? यमनी क्या धरेंज होने के बुरा है कि वह मुझे यहाँ का मुन्ताजिम बना दये?”

“तो क्या आप अपनी भवन से काम नहीं लेते ? आप बकीर हैं । बकीर बाग़दाद का दाया हुआ होता है । क्यों आप धंधेजों से इस तरह खोफ़ खाते हैं ? क्या मजाल थी शाहे भवन की कि आपकी मामूली पर इतनी घाबराही से बीरे की इजाजत दे देते । यन्मा हुदुर, धन शाहे भवन मेरे खीहर जी हैं । मैं उसी खीहर की इजाजत का वास्ता देकर आप से इस्तफ़ा करती हूँ कि आप बिना रास्ते बढ़ रहे हैं उसे छोड़ दें । धंधेज आपके हुमयूतन नहीं धंधेज आपके दोस्त नहीं धंधेज आपको देने नहीं कुछ लेने पाये हैं । फिर भी मैं देख रही हूँ आपके कसबे धंधेजों के हक में होते हैं । बाबिब क्यों ? यन्मा हुदुर ऐसा क्यों है ?”

नकी का का बिर मुक़ नया । वह उत्तर न दे सका । भक्टर की बात उसके दिमाग़ में धाक पहली बार नहीं उमड़ी थी । कई बार धीरे उसने सोचा था । बिशेषकर अपनी बेटी शाही हरम में पहुँचा देने के बाद । बिश बज़ारत के लिए वह बेस राब रहा है, बाग़दाद न रही तो वह कहाँ रहेगी । धंधेज उसके दोस्त बने उसकी राय-महिरे के मोहवाब इसीलिए तो है कि भवन की इजाजत लें । नकी का सोचता ऐसी मूर्ख में बज़ारत का क्या होमा । मगर उसे बुरा रास्ता न चुनता । बज़ारत का मोह स्वाबना एकदम असम्भव था । धंधेजों की नीति के विरुद्ध होने का धर्म था बज़ारत की समाप्ति । बज़ारत की समाप्ति के बाद यहाँ फिरमियों की हुकूमत में उसका मान उसकी गरिमा किस प्रकार रोप रहती । मुराब हूब रहा था । बाग़दाद की बाग़दाद की सम्झा था पहुँची थी । रात में प्रकाश की एक किरण थी । फिरवी दोस्त अपनी बफ़ादारी के सिने में उसे झेंका मोहवा घना कर बने । लेकिन भक्टर के सामने सबसे इसे स्वीकार करे । सर्वन मुका लेने के प्रतिरिषत धीरे रास्ता क्या था ।

भक्टर नकी का की सामीची देख पाये न कुछ सकी । तबाल का बबाब देने से नकी का के इन्कार कर दिया था । दूसरे धंधेजों में बतफ़ा

दिन मुझे ऐसा यकीन हो गया मैं खुदकुशी कर लूँगी। इसलिए मैंने फैसला किया है, धामन्दा उस दिन तक इस घर में करमण्डिनी रणबूँची जिस दिन तक आपकी बजारत काममें है। इन्धामन्दाइ इसके बाद फिर बाप-बेटी में मुलाकात होगी। अब यह आपके सोचने की बात है कि उस दिन बेटी किस स्थान में हो। एक बारसाह की बेयम की सफल में बा पिछारी की पिछारिन की कसम में। बाहिरा आप भी अपनी बेटी के इतने जोरनाक धन्याम की तबस्का मही कर सकेंगे। फिर भी बस्त और बस्त की मजदूरियां बहुत ताकतवर साबित हुईं।

मकी बां बेटी की मर्ममरी वाली से चाहत हुए। उत्तर तो उत्तर इतना साहस भी न हुआ कि वह अस्तर को रोक सकते या बुबाए मकान पर धाने के लिए मजदूर करी। जब उन्होंने बूढ़ एक सौदे की नींव डाली तो बेटी का प्रतिवाद प्रतिवाद कैसे करते। सब सब है और छूठ छूठ। और सब क्या है जहाँ वह खुद जानते थे वहाँ समझ चुके थे कि उनकी बेटी भी बामती है। यह धवान बूराप बा कि बसीह धली के यहाँ जाने की इजाजत लेकर अस्तर को इतना जानकार बनते कर मीका देने के बाद अब वह बार-बार पसता रहे थे।

अगले दिन सुस्ताना महल वापिस आ गई। लेकिन अब वह साहे अरब के मजदूरों पहुँचने की स्थाबा से स्थाबा कोसिछ करने लगी। मरियम का प्रभाव उस पर प्रकट था। नयी बेयम के साथ साह ने जन्म पाठे बिताई थीं। मरियम बीमार थी। पर अब भी वह उभर आते। हार कर अस्तर ने एक रास्ता निकाला। बड़ीबड़ीता बसाबासरा को उसने भी पड़ली बार रिबत थी। साह तक पैगाम पहुँचाया गया। सावर घोहर को घायरा बीबी अपना कसाम भुगाना चाहती है। बारसाह लुपी से पूत गए। नयी बेयम सेरो-धायी में दितबस्पी रखती है। तत्काल बनाने मुजापरे का धायीमन हुआ। घर की धायरा जानून इसमें हिस्सा लेते धारें। अस्तर ने कसाम भुगाना। चारों तरफ से बाह मिली। मासूम

उधरों को घसरसार बना कर घस्तर का जुवान ने धाग बरसाई थी ।
उम ही पड़न का दीवक था 'मगरिब' । घाह कृत्र ममके कुछ नहीं ।
मगर मुशामरे के बाद घस्तर में उनकी रुबि जाग पड़ी । बीमार मरि
यम के साथ-साथ अब वह घस्तर को भी समय देत । दोरो-शायरी के बर्ब
होते । घाह अपनी शायरी कहते । घस्तर तरभुन से जवाब देत करती ।
नइनीक पहुँचने को यगी शाय्यम पडा हुआ । कुछ दिन बीतते न बीतते
बस्तर घाह को घाने लगी । घन्त म उहोंने शायरी में घरना उपनाम
ही घस्तर रग मिया ।

लेकिन इतने वर भी घस्तर की उवान से एक रात अर्ब न निकला ।
घसी वह घाहें घबघ को लोन ली थी । स्लीमन का दीव बन रहा
था । उमरी बायसी में देर थी । घीर बहुत देर थी उम दिन में अब
घस्तर घाहें घबघ का हाथ पकड़कर कुछ करने या कुछ कहने से रोक
सकती ।

सोचने के बाद न सोचने पर मजबूर हो जाते । भविष्य की बिम्बा जब भी होती तो वह यही सोचते कि यसे में घटकी बोस्ती घासब घाड़े बरत काम घामे । कभी यह न सोचा कि इस बोस्ती को निकाल बाहर कर यह नए धिरे से नयी बोस्ती यसे आने । यह बोस्ती होती घासब घीर घासब की स्वतन्त्रता से—उसके बादसाह घीर उसकी प्रभा से । काय यह ऐसा सोचते तो बरबादी कुछ दिनों के लिए टल जाती । घानी तो बहुर भी । पर कम से कम नकी खा पर उसका बाव तो न बपता । बरमा घास के इतिहासज घाँछें पोंछते नकी खा की बोप बैठे हैं । कहते हैं काय यह बबीर न होता । काय बघने बरत रहते अपनी घाँछें लोच ली होती तो घासब तस्वीर के रंग इतने सुख न होते—इतने सुख कि बेसते-बेसते बैठनेवासे की घाँछें न ही लाल ओरे पड़ जाएं ।

मरियम की देन मास मरियम के अनुरोध पर रैबीहेंसी के डॉक्टर के सिफ़ुर्द कर दी गई थी। वह मित्त धाया करता था। उसके साथ हुआ करता उसका अविस्मृत। पर वह रीज नहीं धाता था। किसी किसी दिन उसकी पकड़ होती तब डॉक्टर उसे साथ में धाता। उस दिन दास-दासियों को कमरे से बाहर निकाल कर मरियम की बिनामती बिरित्ता पढ़ति के अनुसार बिछेप दवा-दाक होती। और दास-दासियां भी अपनी होती। किसी को समझ न होता और बोसक बड़ी चलता से धानी त्रियनमा मरियम से बिन जाता।

एक दिन डॉक्टर के स्थान पर वह घबेसा धा गया। धर रोबने की लम्बावना साथ ही चुपी थी। लेकिन मरियम ने छिड़ भी धारचर्च ध्यस्त किया।

“घबेन कैंते धा बने बोसक? किसी को एक हुआ तो?” उसने पूछा।

बोसक पलंग के नज़दीक धाया। दासी बचरे के बाहर जा चुकी थी। बनने स्वतन्त्रता के मरियम का हाथ पकड़ लिया और बोला—
“तुम्हारे निष्कान भी जाये तो बला से। मैं वहीं डरता। पहले बताओ धाव तुम्हारी लविपुत्र कैंती है?”

“कूठ धन बोसो”—मरियम ने कहा—“तुम मेरी लमुरम्मी का सैरमबधम बुझने नहीं पादे। दापध इस बार कोई बया हुआ लादे ही।”

बोसक उत्तर न के लामोयी में बैठ रहा। मरियम की बात से बचार्द का बल का त्रिं एचबारपी वाट कैंतना उसकी लामर्ध में बाहर था। दूसरे हाथ उसने मरियम को बहमाने का प्रयत्न किया—
“लोहा एते। यह देसो डॉक्टर के यह बपी दवा जाने के लिए ही है।

बहुत कीमती और पुरघसर है। उसका कहना है। इस दवा के बाव
तुम्हारे बदनमें से खून आना बिल्कुल बन्द हो जायेगा।

“यह भरोसे बेकार है जोसफ मरियम निराशा से कहने लगी
‘यह दवा की नहीं मुझे तुम्हारी जरूरत है। मुझे क्या बेजाना चाहते
हो तो यहाँ से ले लो। मैं बक यही हूँ इस ज़िंदगी से। यहाँ की ऐसी
इसरत मुझे घीरे घेरे जमीर को हर वक्त कबोठती रखती है जोसेफ,
क्योंकि मैं धककी तरह जानती हूँ मुझे इस ज़िन्दगी और इस आराधन का
कितना हक है।’”

“तुम फिर बहकने लगी मरियम।” जोसफ ने मरियम के बालों में
हाथ फेरते हुए प्यार बिखेरा और संतुलित स्वर में कहा “धन्य वहाँ
बहुत काम है तुम्हें। स्वीसन साहेब बीरे से बापिस लौटते तो तुम्हारे
बिना जनका मकसद पूरा न हो सकेगा। बीरे की इजाजत जैसे तुम्हारी
मजह है। मुमकिन हो सकी है उसी तरह हुकूमत खींचने वाले मजदनामे
पर भी।”

“ओठ खुला” मरियम कांप गई क्या नीबत यहाँ तक आएगी ?
जोसफ क्या इस ज़ुलम से तुम्हारा दिल नहीं कांपता ?”

‘पादस हुई हो मेरी !’ उसने चट कहा ‘मजहब के लिए लोग
अपनी जान मर्बा देते हैं। हम तो मजहब एक ताकतवर हुकूमत के
बिनाफ हूसरी प्यारा ताकतवर हुकूमत की मबर कर रहे हैं। जो
हमारे मजहब को भगने वाली है धीरे-”

“प्यारे जोसफ” सहसा मरियम ने घात स्वर में कहा “तुम्हारे हुकूम
पर सर बटाना पड़ा तो भी इनकार नहीं करूंगी मैं। लेकिन एक मुल्क
और उसके कुछ बाधियों का मजहब छोड़ धर तुम सारी दुनिया के
मजहब का क्याम करो तो जरूर तुम्हारी धार्मिक जुन जायें। इंसानियत
के खिलाफ पहली करना सबसे बड़ा गुनाह है। बावसाह को मोके से
मारना इसी तरह है जिस तरह

“छोठ छो” ओमठ में बहुत कम बाज दम की दवा देगी मुझे
पिछनी बार मुझ कुछ देने को कहा था। प्यारी मैं बहुत ठगता हूँ।
काम-काम कुछ नहीं। एब-एब वैसे की निवृत्त पद रही है। क्या मुझ
मरी कुछ मदद नहीं करोगी ?

परिचय के उत्तर दिया “मेरे काम हर माह सादसर्च व निचे पात्र
हजार पाते हैं। उनमें से बीड़ी को बहुत कुछ बना परता है। मैं मात्र से
बाज नहीं मचती। लम्बी सुरत में कहा कि माई। मुझ कुछ दिनों और
इन्तजार नहीं कर सकते ओमठ ? इस बार हथ धरें निम्न पर मैं
सबका सब मुझी को दे दूँगी।

“स्त्रीमन साहेब के का काम पर तो उत्तम मैं तुम्हें दे सकता हूँ
दाहिना। उम्मत तो इस बला है। पिछनी बार मुझ कह रही थी
तुम्हारे पास मोतिबो का एक हाथ है।” कामक बुझिना में मुझूपावर
बहुते तब “पाहे सबब बर्नरिमत एह नो ऐसे-तमे न जान दिन हर
मुझारी निदमन में पैर कर निचे बाँधे। बाहो ना इस बला मेरी
मुपीबत में मदद कर मचती हो।

परिचय का हाथ दप कर गया। मोतिबो की बमबमाती मामा
बमके मन में बड़ी थी। ओमठ को बार बहने इसकी बाध कर चुका
था। उसे बड़े-बड़े मोती समस्त का दए से और मेरा बाजता था। परि
चय हाँ कर चुकी थी। इस बला बोबाध हमका प्रमद बाने के काम
मरिच बना न कर मची। उधरे दम के हाथ निबान निदा और ओमठ
के हाथों में बमाने हुए बोनी “बाज इस बीमारी हाथ के काम भी मुझ
घानी मरिच को बरत कर दहा में निबान नो ओमठ। मैं मनमूनी
मैंने बुझ नहीं गोवा।”

बाज बुरी न हो सकी कि साहिब दोरनी दवाइय का दान और
समझी-मगारनी उदरीय का दवाइय का दवाइय करते मदी। परि
चय के कुछ बना है मरिच की ?” समस्त हथकंठर कहा “मरिचमा”

मलमल स्पष्ट हो गया । जोसफ द्वार सम्भाल कर रहा भी न सका कि दूसरे हाथ बाबिब घाली घाह की मुस्तुरासी धाकड़ि कमरे के द्वार पर नजर आई । वह सहम गया घीर मरियम की धाँसी में नन सजित हो उठा । उबर घाहे प्रथम जोसफ की उपस्थिति से एकदम मौन बापीकी से मरियम घीर जोसफ को बुरी सने । उनके बिहरी की मुस्तुराहट बाबब हो गई घीर वह किसी छेच में पड़ गये । इसके बाद जोसफ के हाथ का द्वार देखते हुए वह घन्धीरता से धाये बड़े ।

“भालम पनाह” मैं मैं रेबीहँसी से धाया हूँ ।”

जोसफ बबराहट बरबस घुमाकर घपनी स्थिति धाक करी सगा “मुस्तान मरियम महल के लिये बाकटर की बबा लेकर धाया बा ।”

“घाप के हाथ में क्या है ?” घाह ने निकट पहुँचने पर जोसफ को देखकर कैवल इतना पूछा “यह द्वार कैसा है ? क्या मरियम महल ने आपको दिया है ?”

“हाँ” जोसफ ने छिर हिला दिया । उसकी बबाल को तासा लन बपा बा घीर सब उसकी बबराहट छुपते न बन रही थी । कठिनाई से वह बोला “यह” “यह” धाला मलिका हुजूर ने दिया है बुद दिया है भालम पनाह ”

“क्यों दिया है ?” घाह ने सवाल किया ।

‘मुझे मुझे नहीं दिया भालमपनाह’ “मैंने नहीं लिया है घपने लिये । इनके इनके बाबिब साहूब ने मरब बांगी थी । वह किसी के कर्जदार हो गये हैं । मलिका हुजूर से “को” ”

“घोह” घाह ने बक हट्टि से जोसफ पर बाबिस्तास प्रकट किया घीर मरियम की घीर घुमे जो सहुभी लकिये पर छिर टिकाये घपालक बाबिप्य की चिन्ताघों से ब्याकुल नजर बा रही थी ।

“घाप कहिये मरियम महल क्या इनका कहना सच है ?” उन्होंने सवाल किया घीर बापीकी से मरियम की देखने लगे ।

मरियम के माथे पर पसीने की हल्की बूंदें उभर आई। वह सोचती रही। किन्तु अधिक देर छाह को सन्नेहणीस बनाये रखना बड़ा अशुभ था। उसका सर स्वीकारात्मक हिल गया। ओमक ने धाराम की साम मी। छाह के चेहरे पर दोबारा मुस्कराहट था गई और उन्होंने हाथ की ठानी बजाकर आदिमा साहिबा को उपस्थित होने की आज्ञा दी।

घासी घाई तो उसे हुक्म दिया 'तुम्हारी छाहों को हुक्म को वह बाहर बासवेड को बीच इबार अपना मित्रवा हँ। छाह ही घासी—'

घासी घासी गई। ओमक ने तुरन्त हार मरियम को बाधित कर दिया। कुछ देर छाह वह छाह और मरियम की साकृति देवता रहा। घात में दबा सम्बन्धी कुछ व्यय हिदायतों देने के बाद उसने अपने का विचार प्रकट किया। छाह ने रोका और कहा 'आपका आप ऐसी बुरा होने पर हमारी बीमार मनिका को परेशान करने की हिम्मत न किया करें। जिसे भी जो चाहिये वह हम से रहे। हम घासी मुन्नाम मरियम पर अपनी साथी हूँ, मरियम को छाहों पर न बन। जानते हैं यह तुम हमसे कुछ कह नहीं सकती लेकिन हम इसकी बफा और मोहब्बत के सिने में जो भी दें छोड़ा होगा। हमें अपनी बेगम पर फज है—

ओमक बना गया। छाह भी इसके बाद वहाँ से चले गये। मरियम की घाँघी में घाँघू घनक आये। बड़ा बुराई की एबज बाधना गला मरियम घासी नेहियों में मरियम को पछाड़ना जानते हैं। घासी है उनकी मोहब्बत? और कौन है ओमक की मोहब्बत? उन घासी जेब भरने के घनाका मरियम के घहनाओं का भी ग्यास नहीं। उसने बिजनी बाड़ी बुराई की यह भी नहीं सोचता। कम घाँघे मूँदे अपने पापों के निचे पन बिदेतिपों की मदद करने पर आमादा है जो बाजिर घासी जेब मोहब्बत परत और नैक बाधनाह की बरबादी का पदपन्न कर रहे हैं। और इन नाजिर में उनसे मरियम का जलभा दिया। तुम के सामने उसे सच्चा मुनाहवार बना दिया। उसकी मोहब्बत और उमर परमाओं

का नाबायब काबहा जठाया । क्या मागे भी ऐसा होता रहेगा ? क्या हमें या बादशाह सत्तामय उसके बोके-करेव से काफिल रहेंगे । नहीं ? क्या मरियम में इतनी पुरत नहीं कि वह अपने गुनाहों का इकबाल कर से धीर खुर को शाही ईसाफ पर छोड़ दे ? उस दिन बाबिल घसी छाह का दिन टूट जायेगा ? मोहब्बत जैसे पाक बच्चे में भी किसी ने प्रगई भीखा दिया खोज कर क्या वह कभी मरियम को समा कर सके ? नहीं । कभी नहीं ।। तब मरियम क्या करे । क्या खुरबुरी कर ले । या घायब खुरा मेहरबान हो जाये । उसके भीतर पनपने वाली बीमारी बुन की तरह उसके बिपट जाये । धीर वह छाह की ऐसी ही मोहब्बत धीर इस्बत मिये इस फानी दुनिया से बली जाये ।

मरियम इस जटना के बाद परेधान रहने लगी । भीतर का बिखोन उसकी बीमारी से क्यादा कटु सिद्ध हो रहा था । जोसफ ने बहुत घाना छोड़ दिया था । कादिमा से लखर मिल चुकी थी डाक्टर बालबैज बड़ी भावानी से हराम में मिलने वाली बीस हजार की रकम का घावा जोसफ की देने पर घामावा हो गये थे । जोसफ का न घाना इसके बाद स्वाभाविक था । मरियम को ठेस लगी । जिस सन्देह को बरबस वह अपने भस्तिष्क से बाहर बकेनन को प्रबलशील रहा करती जब उसका निराकरण असम्भव हो गया । वह समझ गई जोसफ ने किसी वक्त उससे प्यार किया ही या न किया हो मगर उसे अपने फायदे का बांध बकर बना रहा है । उसका मकसद है सिर्फ अपनी बेई मरमा । धीर लगी पड़नी बार उसे प्रतीत हुआ कि कोई स्वाभिमानी व्यक्ति मजहब या किसी धीर भावना के प्रान्तगत अपनी होने वाली पत्नी को किसी धीर के प्रान्तपुट में प्रविष्ट कराने का साहस नहीं कर सकता । जोसफ ने ऐसा किया भूँकि वह मरियम से लज्जा प्यार नहीं करता था । मरि

यम अब तक उलझे ठमी गई ।

बीरे-बीरे उसकी बीमारी घसाघ्म होने लगी । अबस्था हिमों दिन गिरने लगी । कहावत है मन बगान न हो तो बचा-बाक भय है । उसे केन्द्रे की बीमारी थी । बससुम में लून घाता । बेहोशी के सम्ब सीरे पड़ते । उबर उसने खाना-पीना छोड़ दिया था । दाह पूरी मत्तकता से उसकी ऐक्यता पर कटिबद्ध थे । रेडीहेंसी का डाक्टर धीरे धाही हरीम बीमों प्रवता विचार विमर्श कर रहे थे । कभी-कभी मरियम के बहरे पर रीतिक था जाती । फिर किसी दिन डेर छात्र लून घाता धीरे यह निष्पेष्ट कई दिनों तक कभी बेहोश कभी सोती रह जाती । दास-दासियों ने दिक् के ऐमात के बाद उससे बचना आरम्भ कर दिया था । बिस्मा अब्दुल अपनी जान की चिन्ता छोड़े मरियम की सेवा पर कटिबद्ध नजर आई । मरियम उसे देखती तो मन पर पार प्रनीत करती । मरियम बिरबर या दूमरी महाना के जाने का तो प्रान्त क्या था । मरियम धरने चारों धीरे उसे घुणा के बाठाकरण से मय माने लगी । कुनाहों की एका ऐक्यपूर्ण जीवन में मयमान का ऐसा नठोर विमान उसे एतत्पुर्ण नजर आया ।

एक बार फिर मयानक सीरा बड़ा धीरे मरियम तीन दिन तक घूरे एवाम से बाहर रही । इस बीच उसने अपनी सेवा में एक नयी घाति देनी । नदी की किन्तु घातिविज नहीं । दाह की नयी बेमन घन्नार से मुलाकात ही बुरी थी । वह मरियम के दिगरे से सट कर दिन रात नवा में उलपित रही । बिम्बो के साथ अपनी बही मरियम की सखी हमदर्द नजर आई । हमरा प्रभाव न केवल दाह पर बड़ा गूढ़ मरियम की तीन दिन बाद घातिर प्रवट करने लगी । उसकी घातिर म मर्या दरे धीरे मर्या महानुभूति बलम्ब हुई । घन्नार के प्रति वह बार-बार घमुरीत होने लगी । सैरिन घन्नार के हुँवते हुए उग मावपान दिया । बीमार मरियम का घमुरीतन करने की बाते की धीरे घन्ना म बोनी

“इस सिद्धमत्त की ऐबब में तुमसे कुछ भाँवे बिना न पहुँची मरियम प्रापा । तैयार रहना ।”

मरियम ने स्वीकार किया । ऐसी मेक स्त्रियों के लिये प्रास भी बाप तो कोई बिन्दा नहीं । अकसर ने बहस न की । मरियम से कहा वह बाका बदा खाने-पीने की घोर ध्यान दे । अपनी बीमारी से भड़े । इस तरह जान-बूझ कर मौत को घने न बचाये । मरियम इन्कार न कर सकी । इस निस्वार्थ प्रेम में छोटी बहम सी भगता ने उसका रोम रोम सिक्त कर दिया । कहा अनुभव कर सकी ऐसे प्यार का धाव तक ? अगर वह कहानी न होकर सच है तो उसे घर भुका कर अकसर की सभी बाँवें स्वीकार कर लेनी होंगी । अबसे दिन से वह निरन्तर प्यव लेने लगी । दबा ने असर करना प्रारम्भ किया । कर्मों का रस खरीर में धवित्र भरने लगा । अकसर के अनुरोधों घोर घाह के प्रोत्साहन में जीवन की कामना बापुत हुई । कुछ दिन बीतने पर मरियम की अवस्था सुधर गई । बेहस नर गया घोर वह चलने फिरने के योग्य हुई । अब बीसफ का ध्यान उसके मस्तिष्क से निकल चुका था । एक नये बिचार ने उसकी बगह स्वाग में लिया था । उसने मौत को पछाड़ा है ? धायव प्रामरिषत करने के लिये ? अब वह घाह को घोर धबिक बोका नहीं देखी । बटा देखी कि वह कितनी बड़ी गुनाहवार है । कितना बड़ा पाप कर चुकी है । कौता कुत्रिल प्यार करती है ।

किन्तु क्या उसमें ऐसा घाहस अल्पन ही सका । नहीं घाह की तेज बाम हट्टि से हट्टि बिनाकर अपना पपराज स्वीकार कर लेना छाबारण नाम नहीं था । मरियम अरुह इसे भाँप गई । उसका इरादा कमजोर होने लगा । ईश्वर धायव उसके कैसके का इन्तजार कर रहा था । बीमारी ने उमरकर बोबारा करबट ली । धाबिर दिक् की बीमारी थी । अकसर उनके पास घाई । सेवा मुयूया चलने लगी । किन्तिन इस बार बीमारी असाध्य या भयंकर न हो सकी । कुछ मरियम में जीने की ताकत थी ।

हुए उसके भोजन की व्यवस्था में सहारा दिया । बार-बार मरियम में एक छाह उत्पन्न होती । वह मरना नहीं चाहती । कम से कम उस समय तक नहीं मरना चाहती जब तक जोमफ से डमकर प्राप्तियी बचाव न मुग से । उस समय तक नहीं मरना चाहती जब तक छाह के सम्मुख अपना अपराध स्वीकार कर वह क्षमा की इच्छा न कर दे । तब तक उसे जीना या घोर बहु जीने का प्रयत्न कर रही थी ।

ग्यारह

हकीम बर्बानी ने उपस्थित जन सामुदाय में बीसमरी बकगुता दी। 'बर्बानी की हब हो चुकी। इशरत रोबाना पहरें भेज रहा है। बीरे में स्त्रीमन बाटीकी से उन बाक्यात के बारे में सोचता और समझता है जो हुजूमत के लिए मुक्ति साबित हों। जान-बूझ वह सीनों से घाह के खिलाफ बरक्यास्तों से रहा है। कहीं लानच और कहीं बीज से अपनी रिपोर्ट के सिने झूठा मसाला तैयार कर रहा है। यह बर्बानी के कामिन नहीं। बादशाह सलामत अपनी रैयत पर बरोसा किये घाबों मूँदे बैठे रह सकते हैं लेकिन हम नहीं। हमें कुछ करना होना और हम कुछ करेंगे। अब हमारी ताकत हजारों पर पहुँच चुकी है और लखनऊ का बकबा-बकबा हमारा हमबर्ब है।"

ईंग्लिश घनीगुहीला शिवाब और सिस्ली के अतिरिक्त मिना जान भी मौजूद थे। सब उदास और परेशान नजर आए। हकीम बर्बानी का कहना कहीं तक सच था वह जानते थे। लेकिन इसके उपाय में क्या किया जा सकता है उनमें से किसी की समझ में न था रहा था। एक मौजबान जो शिवाब के बराबर बैठ या अपनी बगल से उठ और कहने लगा 'हुम हो ठी रेजीडेंसी की ईंट से इट बजा दी जाये। कुरमनों की लामों से लखनऊ की सड़कों भर दी जायें। तिकें एक इपारे की डेर है। अब तो पाड़ी मौज के हजारों घाबनी हमारे हमराब बन चुके हैं।"

ईंग्लिश ने टोका 'कोई ऐसा काम मत करो घनीमो जिससे हुजूमत और हाकिम बदनाम हों। हमारा मुकामबाना बर्बानी और बालानी से है और उसके खिलाफ और जुल्म कमबोर साबित होया। हमें कोई ऐसा

ग्यारह

हकीम बर्बानी ने अपनी सारी संपत्ति का नाम साराया में बीघमरी बसुन्दा दी।
 "बेईमानी की हद हो चुकी। इसका रोनाना खरों भेज रहा है। बीरे
 में स्त्रीमत बायीं से उन बाक्यात के बारे में सोचता और समझता है
 जो हुक्मत के लिए मुक्ति साबित हों। जान-बूझ वह लोगों से साह के
 खिलाफ दरखास्तों ले रहा है। कहीं नामच और कहीं चौक से अपनी
 रिपोर्ट के लिये कूटा मसाला तैयार कर रहा है। यह बर्बर के कानिब
 नहीं। बाबसाह सत्तामत अपनी रैयत पर बरोसा किने घाँसें मूँचे बैठे
 रह सकते हैं लेकिन हम नहीं। हमें कुछ करना होना और हम कुछ
 करके। अब हमारी ताकत हमारा पर पहुँच चुकी है और लखनऊ का
 बच्चा-बच्चा हमारा हमदर्द है।"

बैंगन घनीगुहला शिवाब और सिन्धी के प्रतिरिक्त मिया बाग
 नी मौजूद थे। सब उदास और परेशान नजर आए। हकीम बर्बानी
 का कहना कहीं तक सच था वह जानते थे। लेकिन इसके कपाम में
 क्या किया जा सकता है उनमें से किसी की समझ में न था रहा था।

एक मौजबाम जो शिवाब के बराबर बैठ था अपनी बगल से उठा
 और कहने लगा 'हुम हो तो रेजीडेंसी की ईंट से ईंट बना दी जाये।
 हुमनों की लापों से लखनऊ की सड़कें भर दी जायें। बिल्कुल एक इसारे
 की डेर है। अब तो राखी पीज क हमारों बावनी हमारे हुमराज बन
 चुके हैं।"

बैंगन ने टोका 'कोई ऐसा काम मत करो घनीगो बिस्से हुक्मत
 और हाकिम बदनाम हों। हमारा मुनाबना बर्बानी और बागकी से
 है और उसके खिलाफ जोर पुस्त कमजोर साबित होना। हमें कोई ऐसा

रास्ता निकालना होगा जो मजदूरी की काट कर सके । बीरे का धर्म मजदूर धर्म की बरबादी से है । हमें जून जराबे से अपना ईमान बचाने की बगल इस बरबादी को रोकना होगा ।

एक दूसरे नीजवान ने अपना धसगोप प्रकट किया 'जहाँ बुरमन नामक और बईमान हो वहाँ ईमानदार रहने से काम नहीं चल सकता । आज उनके जून से सज्जन की जमीन पर आबपाखी की जाये तो उन्हें माफ़ होना कि यहाँ अपने जूनार इरादों की कामवाही के लिये उन्हें बेचकीमती लोहले पता करने होंगे ।

चारों ओर आवाजें उठी 'यह सच है । यह सच है । बेईमानों के जून से होनी बेनी जाने की इजाजत हो । हम उनके नामक इरादों को पूरा होने से पहले ही कुचल डालेंगे ।

"छहरो" सहा बमीनुद्दीन अपने स्थान से उठे और जर्जरी आवाज में कहने लगे 'बेनीका अपनी हिम्मत और हिस्से की नुमाइश बिसा कर तुम तीन अपने वीरों पर आप कुरहाड़ी मारने की बेचकूती हमारे छूटे नहीं कर सकते । दास्तो बिस कुस्मन को तुम कमबोर और बेच कूफ समय देने की बलती कर रहे हो जो ठाकवर और बमझार है । इससे बिबारत के जराबे निकालते-निकालते हुकूमत के जराबे निकाल लिये हैं । इसके पास अच्छे से अच्छे हमियार और अच्छे से अच्छे सिपाही हैं । मैं तुम्हें जराब सठाने की इजाजत नहीं दे सकता ।

चारों तरफ सघाटा छा गया । बजीर की गर्ज-उर्जन से मरी आवाज के बाद किसी में जाने कहने का आह्वान न रहा । आह्वान में एक दूसरे का मुँह देखते हुए जैसे प्रश्न पूछने लगे । क्या बजीर का रहना पलत है ? अगर नहीं तो इसका क्या रास्ता है जिससे हमें और हमारे बदन को किरगिरी की कामवाही से राहत मिले ?

बैठन उठकर बजीर के बराबर आ गये और इलीय बदेवानी से कहने लगे 'इलीय साहेब इजाजत है तो मैं एक ऐसा रास्ता बता सकता

हैं जो इस वस्तु मौजूद हैं।”

हकीम साहेब ने बाकी हिस्से हुए नम्रवा से निवेदन किया “अरे अरे क्या फरमाते हैं साहेबों भासा। हम सोच आपके बच चुते पर वो सम्मीरें लमाये बैठे हैं।”

बैंगन ने धाये कहा “जो मेरी राय है हमें शिपासती अंतरंग के काबिल बिनाकियों की तरह कम्पनी हुकूमत का पासा उलट देना चाहिये।

अमीनुर्रौला न समझ सके इसलिये पृष्ठ बैठे “किसे तरह बैंगन साहेब। बकुवा बुलासा बयान कीजिये।”

बैंगन ने कहा “इराक के बासिद मिर्वा खान यहाँ मौजूद हैं। इनका कहना है बजीर साहेब को बजारत से हटाने के लिये स्लीमन ने शाबिब की भी। मसहूर जानू गंगा बक्स सिंह हमसे में घरीफ या घीर बजीर साहेब ने बुद देखा था। इराक खान साहेब को बता गया है, एक दिन टुकड़ों गंगा बक्स सिंह स्लीमन के खून का प्यासा उस पर चढ़ बैठे था। इसी हादसे में स्लीमन की टांग टूटी जो मसहूर पर बाहिर नहीं किया गया। बही गंगा सिंह स्लीमन का दोस्त बन गया घीर बाब में कई बार स्लीमन से मिलने आया। बाहिर है, इराक बाहे खुन न उका हो लेकिन उन दोनों के बीच बकर बजीर साहेब को हटाने की शाबिब हुई होगी। इसी तरह उन कतूत का सिलसिला उसकी बेईमानी शाबिब कर सकता है जो उसने बख्तनबखस्तन मकनूर जमरत को निके है। उबर नकी खाँ घीर उसके साथी स्लीमन की भासबाबियाँ बजुबी शाबिब कर सकते हैं। ब्रिटिश कम्पनी ईसाक घीर हुक का नाटक रचा कर बादशाह सनामत को हुकूमत से महकूम करने की शाबिब कर रही है। मुलहाना घीर बीरे की रिपोर्टों की छाड़ में बुनिया की मजूर में ईमान धार बनी वह जबरहस्त जुस्म करने की तैयारियाँ कर रही है। हम स्लीमन के कतूत गंगा सिंह घीर नकी खाँ की गवाहियाँ मौमून कर सके तो जाता बगट सकता है। कम्पनी को दिया गया कायेबा वह कितनी

ईमानदारी से काम कर रही है। दुनियाँ पर भी बाहिर हो जायेगा कि इस कृष्ण की दुनियाँ किन्तु मिट्टी पर रखी जा रही है। तब कम्पनी सरकार को अपना नाटक जोड़ कर या तो साठ तीर बेईमानी पर उतर आता पड़ेगा धीरे या दुनियाँ की नकली से तब उठा अपना हारा बरस लेता होगा। हमारा मकसद हम हो जायेगा। धीरे के पीछे छिपा राज बेकार साबित होगा धीरे हमारी आजादी बरकरार रहे सकेगी।”

“बूढ़” बात पूरे होते न होने भूतभूत बगीच का बेहूत बिल उठा धीरे बह बोले “मैं आपके मकसद से मुतकिह हूँ मिस्टर ब्रैन्डन। बालाक धीरे बेईमान कम्पनी के हुकामों के मुकामले धरम की ईमानदारी की काज बचाले हुए आपने एक सही रास्ता अपना लिया है। मैं इसके ली फीसवी इच्छाक करता हूँ।

अपर हकीम बदवानी ने मुर्दा बेहूत बना कर इन दोनों की ओर देख धीरे सवाल किया “अगर कम्पनी सरकार अपना राज प्यस होता देख बाकई दुमी बेईमानी पर उतर आई तब क्या होगा?”

“तब हमारे नीतवानों का गर्म बून उन्हें बाहून जबाब देना हकीम साहेब” ब्रैन्डन ने जबाब दिया “जो होसने बाज दिखाने का रहे हैं उस दिन काम धार्यनिमित्त दिन हमारी पछकल का नीत्यान किया जाएगा।”

“आन ठीक कहते हैं।” पिहाब न एक सवा धीरे बोला “इबाकत हो ली नकी का साहेब की उनके बीमनवाने से बाधक कर दिया जाए धीरे उत बस तक हिपसब में रक्का जाने जब तक इकत का मित्राव बुरस न हो।

“नही समीगुहोना ने निर्लभ मुलाया “बादगाह की हिमाकत में बादगाह का बाहून नदरपन्थक करना हियाकत है। नही समीग पिहाब हम ऐसा कोई रास्ता धनियार करने पर आमान नहीं। नकी का हमर रास्ते से बाहू किया जा रहा है। मुझे उठकी टिक छोड़ देनी बाहिदे। उठकी बेटी मुप्तागा हमारी लम्बी हनरव है।”

बैंगन ने समर्पण किया "तुम्हारे लिये इससे भी ज्यादा बकरी काम है। गंगा बक्श सिंह बाबू का जमीर जगाना हर किसी के बस नहीं। तुम बंगलों में उसे तमास करने के बाद उससे मिलोगे और बादशाह के मुत्तस्मिक उसकी इच्छानियत का वास्ता दोगे। उसे इस का तैयार करोगे कि वह स्लीमन की पूरी सान्निध्य पारे की तरह साफ़ कर दे।"

'माह' सिम्बी प्रसन्नता से झूमकर कहने लगी "यह बड़ा खुश गवार काम है। ईश्वरी आपकी इजाजत से मैं भी सिद्दाब साहब के साथ जाता चाहती हूँ।"

'बकर।' बैंगन मुस्करा कर बोले "मैं पहले से जानता था बिर। लेकिन सिद्दाब, तुम्हें होशियार रहना होगा। गंगा बक्श सिंह खतरनाक हैवान है।

'अब के हैवानों में भी बाबिर अली के लिये यहसात हुमा करते हैं बुर्जुमवार।' अमर गंगा सिंह ने उन्हें बिल की गहराइयों में बिना रक्का होमा ली मैं उन्हें उमारेने के लिये बैठा ही माहीन पैदा करूँगा।"

"धीरे मियाँ जान आपके जिम्मे बुराफ काम है।"

"हुम इरसाह।" मियाँ जाने बोले।

बैंगन ने कहा "स्लीमन साहेब इस बकत क़ौली जितने के मानपुर बाँव के घास-गास बीच कर रहे हैं। आप फीरन इसरत से मिर्से और कई वह उन सब लोगों के नाम-पते हमारे पास रबाना करता रहे जिनस स्लीमन की कोई ऐसी बातचीत हुई हो जिसमें हुकूमत की बुराई हो। मैंने यह भी गुना है स्लीमन सोयीं से जान-बूझ कर सिकाबती दरक्यास्तों से रहा है। इसरत को बाहिये जहाँ तक मुमकिन हो उन सिकायतों का पूरा स्वीरा मानुम करे और सिकायत करने वालों की जानात पर नज़र रखे। हो तफ़ता है किसी बकत हम ज़ग़ही को दुनियाँ के ताने पेठ कर सकें।"

मियाँ जान ने स्वीकार किया।

इसके कुछ देर बाद तक इतर-उतर की बातें होती रहीं। ईश्वर अपने स्थान पर बैठ गए थे। पिछ्वा गंगा बरस सिधू की ओर के संबंध में अपना प्रोवास बना रहा था। धर्मीपुत्रीला बैठे-बैठ सोच रहे थे।

उसी सहसा न जाने क्या सुझा धीर वह लड़े होकर ब्रह्म से बोले "इतना सब कुछ हो जाने के बाद भी एक बरस का काम बाकी रह जाएगा मिस्टर ईश्वर। आपने उसका उल्लेख नहीं किया।

"आपका इसारा किस तरह है बड़ी साहब? ईश्वर ने पूछा।

"मैं धीर आप मियां जान धीर इकीम साहब गरज यहां बाजिर यह सब लौबलाज बिह बैक इस्ती के लिए अपनी जानों का दांव लगाने की तैयारियां कर रहे हैं बसुबा उसके कार्यों में भी तो आबाज पहुंचा हों कि वह अपनी धाँसें खोस लें। बरस को पहचानने धीर आपसुस ब मतलब परस लोनों की तरह से होठियां हो जाएँ। ईश्वर साहब देर इपारा यहसाहे प्रसन्न की तरह है जो सारी बुनियां पर एतबार करते हुए बोला जाने के आशी हो गए हैं। इस बरस बिनकी मजद में किसी दूसरे की रोयनी धीर आबाज में किसी दूसरे का दम कम है, क्या उनमें भी इतनी हिम्मत है कि वह नैकी का जामा उतार कर अपने उन दोस्तों के खिलाफ जमे आबाजी का ऐलान कर सकें जो पदों की भाव से उन पर सुटी भीजने की तैयारियां कर रहे हैं?"

"सब बड़ी साहब नर।" ईश्वर ने कहा "बरस इम्तान का सबने बड़ा जस्ताद साँवत हुआ। धाब पाहे प्रसन्न को लाख समझाओ वह सीमित धीर उनके इरादों पर जान-भुल कर नाराजमिनानी नहीं कर सकते। कदाह इसमें उनकी कमजोरी हो या दोस्ती का यहसास। मगर कत जब यही दोस्त जान के सेवा बन जायेंगे तो अपने आप उनकी धाँसें धन जाएँगी। दोस्तों की इकीमत सामने धा बायेगी। मेरे दोस्त उस बरस न कुछ कहने की बकरत रहेगी धीर न कुछ सुनने की। धाँवर प्रसन्न की उकीत पर उन्हें भी नाज है। वह इमांसे जाने

कंठा मिलाकर आँखों का मुद्राबला करेये और इस मिट्टी को दुलामी के बाप से महफूज रखेंगे ।”

भारों धीरे इस वक्तव्य से उत्साह प्रवर्धन में जोरवार फुसफुसाहट प्रारम्भ हुई । अमीपुहोला सामोस बैठे रहे । पर कुछ देर बाद वह सम्मीरता से शीगहन की ओर देखते हुए कहेंगे कि “बूढ़ा बापकी नेक कृपान का एक-एक फलफल सभी साबित करे । लेकिन शीगहन साहब मुझे कुछ और खतरा है । हम उनके दोस्त स्मीमन और उनकी कम्पनी के मध्य के विवाद यहाँ बच्छा होते हैं । मिसते और पीसीरा बावें कपटे हैं । कहीं ऐसा न हो कि वक्त से पहले हमारा राज फल हो जाए और हमारे वह कंधे जिन्हें बाबसाह के कर्मों के सहारे की बुरत होनी और कर फेंक दिये जाएं । बाह्य व्यवस्था किस मित्राज के हैं बाप नहीं जानते । उनकी नजर में हमारी हमदर्दी जो हम स्मीमन के विवाद साबितों की छाड़ में कर रहे होंगे मुल्क का सबसे पहला पुत्र बन जायेगी और हमसे से एक-एक को उसका हर्जाना देना होगा । इसलिये मेरी मुबारिक है बाप कुछ साह्य व्यवस्था को समझने की कोशिश करें । बेइम्तहा नापूची और नाठम्मीवी की बजह से उनमें जो कमजोरी छा गई है उसे दूर करने की रफता रफता कोशिश करें । अगर वह इसी तरह मोने और नेक बने रहे दोस्तों के हमदर्द और बफादार रहने का शम मछे रहे तो हमारी आवाज और हमारे हीसने बेकार साबित होंगे । हम एक ऐसी सम्पीर बन कर रहे जाएंगे जिसका सम्झाने वाला घराब के गले में महफूज हो । एक ऐसी तकवीर, जिसे बलाकर बनाने वाला कुछ मिटाने की तैयारी में हो ।

अगले दिन पिहाब मिस्री से पूछने लगा “बपा तुम मेरे साथ सिर्फ इसलिये आना चाहते हो धिल्ली कि यह काम बुरागवार है ?”

सिस्वी ने जवाब दिया 'हाँ ।'

सिहाब धाये बोला "धीर मैं साथ लेने से इन्कार क्यों ?

'तब मैं बिना कहे भी तुम्हारे पीछे जबर जाऊँगी ।' सिस्वी ने कहा 'तुम्हें साहजिक है तुम इन तरह की बातें क्यों कर रहे हो । इतने भारी जतरे में घड़े घने जाने की इजाजत मैं नहीं दे सकती ।

'वही बात मेरी तरह से तुम तो सिस्वी इतने भारी जतरे में तुम्हें से जाने की हिम्मत मुझ में नहीं ।

सिस्वी इस उत्तर में उदास हो गई । उसने अपना मुँह बियाड़ लिया और मुँह फुलाए एक तरह बँठी रही । सिहाब बिचारमन था । वह पास आया और पिछपी ओर से सिस्वी के कंधे बपवपाता पीठी आवाज में बोला 'बुरा मान नई ?

सिस्वी कुछ न बोली ।

सिहाब धाये कहने लगा 'यह तुम्हारी प्यारती है । कुछ महीने पहले तुमने एक नासमझ इन्सान को उसकी बिम्बी का मकमल सिखा कर उस पर भारी बहसान किया है । आज किसी साथक हो सका है वह । मैं अच्छी तरह जानता हूँ तुम मेरे साथ क्यों जाना चाहती हो । लेकिन सिस्वी मैं जान बूझकर इतना बड़ा ज़ुलम कैसे कर सकता हूँ । तुम ठहरी पून सी नाजुक और धोख की तरह कमजोर । बियाबान बंभलों में दर-दर ठोकरें खाना और गंमा सिंह से मुकाबला करना तुम्हारा काम नहीं । अपने सिहाब पर यह बहसान और कर दो । जाने दो घड़ेला और 'धीर' सिस्वी क्या उन्हें कैसे कहूँ ?'

'मत कहो ।' सिस्वी ने तेज आवाज में उत्तर दिया मैं नहीं मूना चाहती वह फिजूल बातें जो मेरा दिन दुधायें । तुम जाना चाहते हो तो बाधो । लेकिन उससे पहले उससे पहले मेरी साथ "

सिहाब से न रुका गया । हमारे अणु सिस्वी का बोलत शरीर उस की पुत्र भुजाओं में बकड़ा हुआ था । सिस्वी ने अपना सिर उसकी

बाड़ी धाती से टिका बिना या धीरे सुबक-सुबक कर रो रही थी। भाव प्रगाढ एक भावरस का प्रगार हो गया। प्रेरणा प्राप्त करने वाला एक क्षण प्रेरित करने वाले दूसरे हृदय के कितना निकट पहुँच चुका है। दोनों जान कर भी प्रमत्तान करने का प्रयत्न कर रहे थे। प्रत्येक की विषय दूसरे की पीड़ा बन गई तो भारतीयता की भावना मौक-भाव की सीमाएँ पार कर गई और परिणामतः सुप्त भावनाएँ सजीव हो उठीं। युवक यथिष्ठ और वर्तमान तीन युगों का चरित्र तीन पलों में स्पष्ट हो गया। वीर मजहब की सिस्ती से जो बात छिपे प्रान तक कह न सका धातु बिना कहे स्पष्ट हो गई।

और इस तरह निश्चय पुष्ट हो गया कि किसी सिद्धान्त को बदलने में नहीं जाने देगी। उसका उत्पत्ति था, धातु उनकी आत्माएँ एक दूसरे में मिल गई। एक दूसरे की पूरक हैं। एक कष्ट में रही तो दूसरी मुट्ट मुट्ट कर कलपा करेगी। सिद्धान्त के बिना सिस्ती का जीवन रहना संदिग्ध है। इसलिए दोनों साध-साध देव के बलिदान के लिए तैयारियाँ करें उचित हैं। यथा सिद्धान्त है। उसे सीधे रास्ते जाना आसान काम नहीं। यह भी सम्भव है उत्पत्ति पूरा होने से पहले बिना सिद्धान्त की बात मुझे यह जानकर कोई अंतरनाक करन उठा बैठे। प्रामाण्य सभी होया जब उस वन सिस्ती और सिद्धान्त दोनों साध रहे। धामर इसी भावना के वर हीनन साहब ने अपनी बेटी को साध जाने की इजाजत दे दी थी। पारवात्य धम्मता में बुद्ध पुत्र-पुत्रियों को अपने जीवन साथी के चुनाव करने का पूरा पूरा अधिकार प्राप्त होता है।

सिद्धान्त इसके बाद अपनी तैयारियों में लग गया। जना वरस सिद्ध की उमाय के बाद उससे भेंट करवा पहला और सबसे कठिन काम था। धैर्य से फटार होने के बाद उसका कोई पता ठिकाना न था। बारसाह के आरमियों ने कांतिधम्म की प्रमत्तवादी में देवा नाम वाला उसका प्रमाण कई बार देखा और ध्याना था। वहाँ गया वरस का देव एण्डीय

सिंह मिना और उसने अपने पिता के बारे में कोई जानकारी देने से इन्कार कर दिया। घामिलदार दर्शन सिंह ने देवा के चारों ओर घाही बासूत और खबर गवीसों को तैनात कर दिया। किन्तु साम फिर भी न हुआ। बटना को काफी समय व्यतीत हो चुका था। अब दर्शन सिंह ने भी बाबघाह की खबरत में गया सिंह के लापता होने सम्बन्धी अपनी रिपोर्ट भेज कर कर्तव्य से छुट्टी पा ली थी। ऐसी स्थिति में यह बात करना गया सिंह कहाँ है कहाँ नहीं एक कठिन काम था उसके बाव उस से भेंट करना और अपना मतमब हल करना अपना भयानक कर्तव्य माना जा सकता है।

यहाँ यंत्रावस्था का कुछ परिचय दिए बिना घाये बड़ना एक प्रकार अनुचित होगा। देवा का यह समीन्दार सम्बन्ध और साक्षी था। दर्शन सिंह घामिलदार के लिनाक धारम्भ से विरोधी हो गया था। दर्शनसिंह सुर उसके प्रति द्विध और हठ से काम लेता था। समान का वस्तु घाता तो अपने आप देवा पहुँचना और गया वस्था सिंह को लच्छ लच्छ से अपमानित करता। समान की रकम गया सिंह के पास कभी होती कभी न होती। न होने पर दर्शन सिंह उसके साम सक्ती से पेस घाता। गया सिंह को सहन न होता। बीरे-बीरे उसने दर्शन सिंह को घाड़े हानों सेना शुरू किया। समान लेने घाता तो उसे और उसके कारिन्दों को परेशान किया जाता। देवा घर में उसकी बात चलती थी। जमाना वह था वह घाही प्रकीर्ण का भय कोसों दूर रहा करता। बाबिर घली घाह के सम्मुख घाते-घाते अपनीय भुजा में खना की भिजा माँग ली और बात समाप्त हो गई। वह अपनी प्रजा से कल्ले से प्यार। समान एक बार न भी भिना तो यह अपराध नहीं था। किताब कभी न कभी घरा कर दे बस। दर्शन सिंह और उसके कारिन्दे समान लेने जाते तो साधारण बातों पर भी यंत्रा वस्था सिंह की ओर से धमका बड़ा बड़ा दिया जाता और घामिलदार

को जाम के मय से माग धागा पड़ता । वह भीके की तलाश में था । एक बार भयंकर ने उस रूप के सिपा और दर्शन सिंह के दो सिपाहियों को जाम से हाथ बीना पड़ा । इस अपराध से गुप्तकारा पागा असम्भव था । उधर दर्शन सिंह ने छाही विद्ययत में अपनी रिपोर्ट भेजी कि यमा सिंह डाकू है और लपाम मोहन पर हत्याओं पर कहर धरते हैं, और उधर बंदा बकश सिंह बंदा छोड़ कासिमवंश में था सिधे । दरबार से फरमान जारी हुआ । तब वस्तु समीपुद्दीमा बजीर बं । बाबसाह की इच्छा देखते हुए उन्होंने दर्शन सिंह की सिफारिश पर यमा सिंह के बेटे रणबीर सिंह पर कोई फरमान नहीं निकाला । इलाक की कसीटी पर पिता के अपराध की सजा बटे को ही जारी असम्भव थी । उधर रेजी बेंट की ओर से भी यमा सिंह के विप्लव धनीक की गई । कासिमवंश में किसी धाते-धाते बंजरे व्यापारी को यमा सिंह ने मृत लिया था । साहू के परामर्श पर तब उसके बिकर सम्मिलित मोर्चा बनाया गया । मुजबिरी होने पर कासिमवंश में यमा सिंह का बंदा बन गया । दर्शन सिंह यंगेजी कीर के एक कप्तान के साथ उसे बेरने बंधे और बीड़ी-बहुत प्रकृषों के बाद पकड़ साने । मुकदमा जमा । इन दिना कोतवाली में प्रवाजत होती थी । रेजीबेंट और समीपुद्दीमा मुकदमे के समय मौजूद थे । सजा दी गई तो यमा सिंह ने इन दोनों के बिस्व नवानक लीवन्म उठाई । फिर कुछ दिनों बाद नवानक जेम से नवानक जसफी करारी हो गई । धाने क्या हुमा पाठक कामते हैं । बेटा रणबीर सिंह देवा में उपस्थित था और नियमित रूप से नवानक दे रहा था । दर्शन सिंह सपान देने का ठा ठो मून का भूट पीता अपने अपमान पर क्षान्त रह पाता । पर इत बीच उसने असाधारण काम किया । चुपके-चुपके मूट-बसोट और शकों से बहुत-सा रक्का कमा लिया । कासिम वंश के बाहर एक दूदा-दूदा पुराना किला खरीद कर अपने किसी भाई बन्ध के नाम जसफी परम्पत करवाई और खुने बोम्ब बनवावा । धायर पिता की बापड़ी की तीमारियां

थी यह। बेम से निकल कर लखनऊ रहने के कुछ दिनों बाद गया सिंह अपने बेटे से मिमा और गुप्त रूप से इसी कुर्र में रहने लगा।

किन्तु सिंहाब को यह कहानी सात न हो सकी। बहुत खोज के बाद वह सिर्फ इस गलीबे पर पहुँच सका कि गया सिंह डाकू वहाँ ही ही अपने बेटे से अचक्षु मिमता-बुलता होवा। घट देवा एक ऐसा स्थान था वहाँ से उसका पता मिल पाना सम्भव था।

धीरे एक दिन मिमा खान ब गहन धमीनुहीला बसीह भली हकीम साहेब जैसे ह्यबर्द बुजुर्गों का धायीबाब से वह देवा के लिए प्रस्थान कर गया। कहना व्यर्थ होवा उस समय सिन्धी बड़े अधिमान से उसके साथ भी और कुछ थी कि वह अपने कर्तव्य के लिए अपनी बात की बाबी लवाने अपने सिंहाब के साथ अठारों से टक्कर लेने जा रही है।

जो काम मिमा खान के बिम्बे जा वह उसकी तैयारियाँ करने लगे। इस सव्यग्न में भाव्य सभवा पुर्भाव्यवश वह एक दिन मीर मुम्मी भली नकी जा के वहाँ जा पहुँचे। इसरत और उसके साहेब का ठीक-ठीक पता ठिकाना ऐबीबेंसी से मामुम होना ख्यास प्रदान था।

मीर साहेब ने उनका स्वागत सम्भीरता और उदासी से किया। यह नयी बात नहीं थी। इसरत के विवाह के बाद पहली बार मिमा खान से सबबी के तीर भेंट होने पर भी वह इसी प्रकार उदास और विम्न हो गये थे बातचीत में लुत्क न आ सका था। मिमा खान ने इसे लक्ष्य कर लिया था। किन्तु जब असाधारण घटनाओं की दृष्टि में एक दिनमें इसरत और बानो के विवाह का विधान हुआ था मिमा खान समझ पये कोई बाप ऐसे रिस्ते या रिश्तेदारों से लुप्त नहीं रह सकते। उनका मन उसी दिन हुआ कि वह अपने बेटे पर लगा कुरबखिता का हाथ भी डालें। पर किसी प्रभाव प्रेरणाबल रुक नए। बानो के लिए

को जान के भय से भाग जाना पड़ता । वह सीके की सलाह में था । एक बार भयङ्गे ने उस रूप में सिमा और दर्शन सिंह के दो शिपाहियों को जान से हाथ धोना पड़ा । इस अपराध से छुटकारा पाना असम्भव था । उधर दर्शन सिंह ने साही खिबमत में अपनी रिपोर्ट भेजी कि बंवा सिंह डाकू है और नवान मोवने पर हत्याओं पर उत्तर धाते हैं, और उधर बंवा बख्त सिंह देवा जोड़ कासिमखान में था सिले । दरबार के फरमान जारी हुए । उस वक्त अमीनुरीला खजीर थे । बाघझा की इच्छा देखते हुए उन्होंने दर्शन सिंह की शिफारिश पर बंवा सिंह के बेटे रसुखीठ सिंह पर कोई फरमान नहीं निकाला । ईसाक की कसीटी पर पिता के अपराध को सजा बटे को दी गयी असम्भव थी । उधर रेजी-डेंट की ओर से भी बंवा सिंह के विरुद्ध अपनी की गई । कासिमखान में किसी आठे-आठे बड़े-बड़े व्यापारी को बंवा सिंह ने लूट लिया था । साह के परामर्श पर तब उसके विरुद्ध सम्मिलित मोर्चा बनाया गया । मुसबिरी होने पर कासिमखान में बंवा सिंह का पता चल गया । दर्शन सिंह अंग्रेजी कीर के एक अफतान के साथ उस घेरे में गये और बोड़ी-बहुत भड़कनों के बाद पकड़ लाये । मुकदमा चला । उन दिनों कोतवाली में अबाधत होती थी । रेजीडेंट और अमीनुरीला मुकदमे के समय बीमार थे । सजा दी गई तो बंवा सिंह ने इन दोनों के विरुद्ध अमानक शीकम्ब उठाई । फिर कुछ दिनों बाद लखनऊ जेल से अमानक ससकी करायी हो गई । माने क्या हुआ पाठक जानते हैं । बेटा रसुखीठ सिंह देवा में उपस्थित था और नियमित रूप से नगान दे रहा था । दर्शन सिंह नवान लेने आता तो खून का भूँट पीता अपने अपमान पर धाम्य रह जाता । पर इस बीच उसने असाधारण काम किया । बुपके-बुपके लूट-कसोट और डाकें से बहुत-सा रूपया कमा लिया । कासिमखान के बाहर एक टूटा-टूटा पुराना किला खरीद कर अपने किसी भाई बख्त के नाम उसकी बरम्मत करवाई और रहने योग्य बनवाया । बाद में पिता की वापसी की रीयासों

भी यह। बेम से निकल कर सखगठ रहने के कुछ दिनों बाद गया सिंह अपने बेटे से मिला और गुप्त रूप से इसी पुर्ण में रहने लगा।

किन्तु सिंहाब को यह कहानी ज्ञात न हो सकी। बहुत खोज के बाद वह सिर्फ इस नवीजे पर पहुँच सका कि गया सिंह बाबू बाही भी हो अपने बेटे से परस्पर मित्रता-जुलठा होना। यह देना एक ऐसा स्वान बा बाही से उसका पता मिल पाना सम्भव था।

और एक दिन मियाँ खान बग्न घसीनुहीना बसीह घली हुकीम साहेब जैसे हमदर्द बुजुर्गों का बाधीबाद से यह देना के लिए प्रस्नान कर गया। कहुना ध्ये होया उस समय सिन्धी बड़े धमियान से उसके साथ बी और बुध बी कि वह अपने कर्तव्य के लिए अपनी जान की बाजी लगाने अपने सिंहाब के साथ खतरो से टक्कर लेने जा रही है।

जो काम मियाँ खान के जिम्मे था वह उसकी ठीकारियाँ करने लगे। इस सम्बन्ध में माध्य व्यवसा युर्मास्यवश वह एक दिन मीर मुन्गी घली नकी जी के यहाँ जा पहुँचे। इसरत और बसने साहेब का ठीक-ठीक पता ठिकाना देखीबेसी से मामुम होना बताया घसान था।

मीर साहेब ने उनका स्वानत यम्बीरता और जवाबी से किया। यह नवी बात नहीं थी। इसरत के बिबाह के बाद पहली बार मियाँ खान से समझी के लीर भेंट होने पर भी वह इसी प्रकार जशस और खिन्न हो मये से बातचीत में मुत्क न था सका था। मियाँ खान ने इसे लक्ष्य कर लिया था। किन्तु उन घसाबारण बटनाघो की दृष्टि में रख, जिनमें इसरत और बानो के बिबाह का बिमान हुआ था मियाँ खान समझ मये कोई बाप ऐसे रिस्ते या रिस्तेवारों से कूथ नहीं रह सकते। उनका मन उसी दिन हुआ कि वह अपने बेटे पर लगा बुदबिबता का हाथ जो डालें। पर किसी अज्ञात प्रेरणावश रुक गए। बानो के लिए—

उनके मन में आकर जाग्रत हो चुका था। मीर साहेब को भी उही रंग में रंगकर वह देव देवा का नया सवाहरण देना चाहते थे। किन्तु घर से प्रेरणा नहीं मिली। युगों से गतों में बीजने वाला फिरंगी-ग्रामी रक्त प्रकाशक अपना रंग नहीं बदल सकता था। अतः मीर साहेब की सिकायत का तात्पर्य जानते-बुझते वह आमोघ रह गए। बड़े काम के लिए लोटी-मोटी हानियां सहन करना स्वाभाविक होता है। मीर साहेब को आज मही सिकायत थी कि अपनी बेटी एक नामांक व्यक्ति के हाथों कठ-पुतली बन कर इराक़ का माघ नचावे पर तैयार हो गई। चित्त चित पड़ा क्या वह माघ वास्तव में किस धनस्या में देखा गया था वही दिन उनका विखीम घाघ से घाघ समाप्त हो जाएगा।

किन्तु आज मियां जान मीर साहेब की जवाही से बलिष्ठा की प्रतीक्षा में धररत प्रतीत करने लगे। इधरत का कटा-ठिकाना बताने में मीर साहेब ने विरोध न किया था। परन्तु उनकी बातचीत मीर साहेब से पता चल रहा था जैसे वह बहुत ज्यादा धनमुह मीर शुम्भ हों। बड़ी नहीं मियां जान की अनुसंधी हृष्टि उस कुप्यता की सीमा का भी ठीक-ठीक अनुमान कर बीड़ी। मीर साहेब पिछले दिनों कुछ कपड़ों हो गए थे। बातचीत में न स्मृति रह गई थी मीर न जोश। बतीह धनी ने मझा तक बताया था कि मीर साहेब देवीदेवी में भी सिर्फ मधीन के सवाल काम करने के धारी हो गए हैं। इससे मियां जान की समझते हेर न लगी कि बानी मीर इधरत का आचरण उनमें मर्म से बिपक गया है। बैरतदार घाघमी के लिए सधमुध मोत है जब उन्हें अपनी बेटी के चरित्र सम्बन्धी कुला शोध दिखाई दे। मीर साहेब के लिए यह बटना बातक छिड़ हो सकती थी मियां जान प्रतीत करने लगे।

अतः लोटने से पूर्व उन्होंने साहस किया। मीर साहेब के मझने लगे 'घाघ मेरे बेटे मीर अपनी बेटी के रिस्ते से बहुत ज्यादा नापसंद पासूम बैठे हैं मीर साहेब। चूंकि घाघकी नजर में अपनी जवानी

पुनाहों की घाह में बापाक होने लगी थी और उन्होंने मेरे व घापके मर्तबे को बिल्कुल भुला दिया । मगर अर्थ है जिस तरह हर चीज को छोने की तरह समझती है सोना नहीं होती उसी तरह हर चीज जिस की घाह जीवन की तरह हो जीवन नहीं होती । कभी-कभी पत्थर का टुकड़ा हीरा निकल आता है और हम समझ नहीं पाते । इसलिए मेरी इतना है घाप इस मसले पर अपने आप को परेशान न करें । घापकी बागो और मेरा इस तरह दोनों बहुत ही समझदार और बहीन हैं और उन्होंने कभी कोई ऐसा काम करने की हिम्मत न की होगी जो मेरे या घापके धर्म का बाध हो ।”

“सुक्रिया” और साहेब ने गम्भीरता से केवल एक घण्टा कहने के उपरान्त अपनी सर्वत नीचे झुका ली । दूसरे शब्दों में मियाँ ज्ञान की चीज उनके पत्ने नहीं पड़ी या उन्होंने इस पर विश्वास किया । मियाँ ज्ञान ताड़ मय वह करने वाले नहीं थे । घाह जब आरम्भ हो गया था तो अन्त क्रिये बिना जन्मे जाना भूलता थी । उन्होंने प्रसन्न होकर उठवा और इस बारक्यादा अचानक शब्दों में कहने लगे “इस छोटे सुक्रिया से मेरी तत्कीन नहीं हो सकती बिनाहरे बाबीज । वह मसला मामूली नहीं जो इस तरह फैलता हो सके । क्या घाप बाकई जानना चाहते हैं कि मैंने किस लिये अपने आवाज बच्चों की आवाजों पर संतुष्टमरनी बाहिर की है ? और साहेब मैं आपको परेशान और चिन्मन् नहीं रह सकता ।” लकी ली का सिर यह सुनते ही उठ गया । उनकी स्पाह चीखे विचित्रता से मियाँ ज्ञान को बुरे लगीं । और वह सीधे बैठ गये जैसे मियाँ ज्ञान की उत्तर देने की तैयारी कर रहे हों ।

बहुत देर बाद उन्होंने आँसु-आँसु अपना गला साफ किया और मुसल गम्भीर आवाज में कहा “घाप गलत समझे हैं मियाँ ज्ञान । मेरी परेशानी का बाधत कुछ बुरा है जिसका तात्पर्य इस तरह या बागो से नहीं । उन्होंने तो जो किया तिकाह के बाँध पर उसे लिया लिया । मेरी

एकसीफ मुझ ऐसी है ऐसी है जिसका वास्तुक सायब बुद घाप से हो।”

‘मुझ से ?’ मियां खान ने आश्चर्य व्यक्त किया ‘धीर घापने मुझ से कभी कहा नहीं। क्या रिस्ते नाते इसीविध के लिए होते हैं घाई ? घापने मुझ पर वृत्त किया।’

‘जुदा जाने जुद्ध भिन्ने कहते हैं। मेरा क्याल है वस्तु की नवाकत सबसे बड़ी वृत्त परस्त है। घाप जो कुछ वाक्य है कम नहीं इन सब को मोत के घाट उतार सकती है।’ मीर साहब कहते-कहते रुक गए। मियां खान की समझ में पड़ती विलकुल न घाई, वह उनकी धमक देखने लगे। उन्होंने मीर साहब को साफ-साफ कहने के लिए उत्साहित किया। तब मीर साहब कहने लगे ‘बगर खोर रेतें हैं तो एक बात पूछता हूँ। घाप नहीं मियां खान तो हैं जो कुछ वस्तु पहले घाड़ी हुनन पर बाबरजी जाने के मुस्तजिम होकर रेजीडेंसी में लौकर हुए वे धीर बाव में इस लिये यहां से निकाले गए न वृत्ति घापने साह के खिलाफ रेजीडेंट के मुंह से कुछ मुनठे ही पूरी ताकत से न सिर्फ सचरी मुजामफत की भी वक्ति रेजीडेंट साहब की बहुरवती भी कर वाली की ?’

‘दकीनन। मियां खान से सरतथा से स्वीकार कर लिया।

‘धीर घाप ही का बेटा इधरत बोबाद रेजीडेंसी में लौकरी करने आया। घाप बता सटते हैं क्यों ? घापकी गैरत कैसे पचाद कर गई कि घापका इधरत एक ऐसी बमह नोकरी करे जहां साह घमक की बुदाया होती है ?’

‘समझा’ इस बार मियां खान तनिक मुस्कराए धीर बोले ‘तो यह है घापकी तकलीफ का असल बायत। घाप को लौक है घाप की बामो किसी ऐसे मीजबान के वस्ते पड़ गई है जो घापकी लहजीब धीर मर्तब के खिलाफ दूगरी रिस्म धीर दूगरे ब्यामात का नाबन्ध है ?’

‘मैंने घापसे सवाल पूछा या साहब सवाल करने के लिए नहीं कहा था।’ मीर साहब पन्थीरता से बोले ‘येरी तकलीफ की बमह जो भी

है मेरे मरतब या तहजीब से शास्त्रुक नहीं रखती । उसका शास्त्रुक है मेरी धीर धायकी धोलादों की बेहतररी से । बसाइये क्यों इजाजत की धायने जब कि धाय फिरंगियों से मन हीमन नफरत करना पसन्द करते हैं ?”

मियाँ खान कुछ बेर के लिए सामोय हो गए । जब स्थिति जो भी की पन्नीर की । वह एक ऐसे धायकी के सामने बैठे थे जिसकी चिन्तनी का एक बड़ा माम बिबेधियों की सेवा करते हुए बीता था । जिसने दूसरे बेर के स्वाधीन आनवरी की सेवा धीर धायने बगली धायकी की धनुता करने का ध्येय बनाया हुआ था । रेजीडेंसी का एक ऐसा सेवक था वह जिसे भीरी का धोहवा देन से पूर्ण मनी प्रकार आन-पडताप कर बिरबासी धीर धायबिरबासी पाया जा चुका था । मियाँ खान के सामन जसी का सवास था । वही सवास जिसके एक बचाव पर धायी हितचिन्तकों में से दो बार काम के घास में पड़ सकते थे । बागो धीर साहब की बेंटी धीर इधरत बामाव था । किन्तु मियाँ खान को समझने में बेर लगी कि धीर साहब की बरादारी उन्हें धम्म मान सकेगी धायबा नहीं । बेंटी का मोह धमीय के वंशों में ऊँचा बहुत ऊँचा उठ जाना स्वाभाविक होता किन्तु बफादारी की मन्की समय या किसी के सक्त धनुष का धातकित कर देने वाला मय इन ऊँचाई को पार कर जाता है । धीर साहब का निरचम किस के पग में होया मियाँ खान बेर तक सोचते रहे ।

धन्त में बहुत जल्द उन्होंने कंसता कर लिया । बेहरा किसी धामा से धमझने लगा । वह धायने पुन का बनिधान करने जा रहे थे । परधुमरी धीर साहसी बेंटी का बनिधान था । रेजीडेंसी के बपल धीरमबदारी धरे बाठावरण में धीर साहब धायनी बफादारी का बाहे बितना दम भरते रहे किन्तु बेंटी के बनिधान देने जैसा साहम उतरान कर लेना धमम्मब था । वहां तो सीझाया सिझाया जाता था मना लेना कुछ लेना । देखे की यह धायना धीर मुगली में उपजती पर वही से ?

पेट भरठा धाया है बस्कि देठा धाया है उसे अपनी मोहम्मद और इस्लाम का इनाम । यह है धापका घतली मासिक । इसरत इसी मासिक के लिए नवमी मासिक को तबरीह देने से मजबूर है । मकेमा इशरत ही नहीं हिन्दोस्तान के कुल कुहार नीजवान इसी धकीरे पर अपना ईमान सा जुके है । बिराबरे मीर धाप भी धाँवें खोलिए । इसलिए घबब में शाम हो रही है । दिन दूर नहीं अब चारों तरफ गहरा धन्धेरा फैल जाएगा । उस धन्धेरे से बचने के लिए धुक को धापकी बकरत है बागो और इशरत की बकरत है । कुरा के लिए पर्दा हटा दीबिए मीर साहेब करना बेर हो जाएगी । इतनी बेर कि हथ बरबाद हो जाएँगे । हमारा सब कुछ हमारी भाँवों देवे छीन लिया जाएगा । हमारी बाबशाह्य और हमारा भरतबा मुसीबत की बीछारों में बल कर सड़कों का पाकन्य हो जायेगा ।”

“नहीं ।” मीर साहेब पर जैसे लोब का पागलपन बढ़ा और वह नीब कर बोले “मह बिस्तुब नामुमकिन है । मैं अपने और अपने बाल बच्चों की मौत अपने जानते बने लगाने को तबार नहीं । मैंने सामों जिस मासिक का नमक खाया हो उसी के साथ महारी कई नामुमकिन है । इशरत को अपनी नमती का खमिनावा चुगतना होगा । मैं कुछ साहेब के सामने अस्मियत खोस दूँगा । धाप मुझे समझाने धाये हैं बहलाने धाये हैं मियाँ छान । धापने मुझे बरबाद करने के बनमूवे बना कर अब दूतरा कूँपा खोबा है और चाहते हैं मैं जसमें खसाँव लया दूँ । नहीं मैं इतना बेबदूक नहीं । घबब की शाम धा रही है । हाँ घबब मैं धन्धेरा फैमेगा । उस धन्धेरे में धाप सब खो धायेगे इशरत और इशरत जैसे दूधरे नीजवानों की बच्चों का भी पता न मिलेगा । सब रोपन होपा फिरंगियों का नया मूरज । नया मूरज जिसकी रोपनी मैं हूँ राहत मिलेगी । भरतबा और बाबशाह्य मिलेगी । पर्दा घेरे सामने नहीं धापके सामने गिरा है मियाँ गान धापके सामने । दूधते मूरज को

बेवकूफ पुरत है । जाहये घीर बाकर नुदा की इबादत में परबर्तनगार की रहमतें माँगिये ताकि अपने बेटे की मौत का सयमा धाप बर्दास्त कर सकें । पैरा नाम घसी नहीं है । जिसने मुझे बरबाद किया है मैं उसे बरबाद हूँ, इतना बुझदिन नहीं ।”

अब कोई फायदा नहीं था । वह उठ कर वहाँ से जले घाये घीर उठी तिन इराद से मुपाकाउ करने के लिये चल दिये । उन्हें माँजये घीर दुःख की गहन अनुभूतियों ने इतना पीड़ित किया कि वह अपने स्वभाव के अनुकूल इतनी बातें सुन सेने पर भी घीर साहेब को बुरा मसा न कह सके । उन्हें एक मयानक बिन्ना हो गई थी । इराद की मौत का मय नहीं था किन्तु जालें भविष्य से गहरी निराशा थी । वह सोच रहे थे जिस बेस में ऐसे नापरिक हों उस बेस का धन्त क्या हो सकता है ? भुलायी ? जिल्लत ? उबाही ? या कोई घीर ऐसी बर बिस्मती तिमके बारे में न कभी सुना हो घीर न कभी देखा ? बाहिर घीर साहेब की छाँकों में इतनी कमुरबस्ती क्यों ? क्या वह इमान नहीं ? उनके सीने में दिल की जगह पत्थर है ? या कोई धातक है भय है ? मौत की स्मृति ने उन्हें घारे संसार के प्रति अपने कठम्यों की इतिमी समझने पर मजबूर किया है ?

इराद का पता हो घीर घीर साहेब ने बता दिया था । अब मियाँ जान की जल्दी थी कि कम से कम मौत से पहले घनन बेटे को एक बार हो गले लगा ली सँ । एक बफादार कम्पनी-सेवा-रत घीर मुम्मी घरका इरादा बाहिर कर चुका था । सम्येह करना हमारे घावों इराद की मौत थी । तनिन देखिये दुर्माय्य मौत के लीझना की घीर था पहुँची । किन्तु इराद के लिये नहीं मियाँ जान के लिये । वह जाचोपी होते हुए घाये बड़े कि मकीनी मौत में दिल का मयानक दोरा पड़ा । मसे घाम बातियों ने बार धा दिन टिका कर सेवा मुयथा की किन्तु मियाँ जान का यह दोरा जीवन का गहमा घीर धाकरी दीया था । एक निज सोने

धारह

स्लीमन का ऐतिहासिक वीर्य ज्ञान-ज्ञान से धारम्भ हुआ। सन्तान के नाके तक धुमेधुम्य प्रकट करने ऐसी-ऐसी के अनेक कर्मचारी नकी सौ नकीर, दरबारी और साह के पाई मिर्जा हुसमत साथ पाये। ऐसी-ऐसी का जार्ज बर्ड को मिला था। स्लीमन उसे बहुत से पुष्ट आदेश दे गया था। उनमें अधिकतर साह के निजी सचों और सम्बन्धों का व्योरा था। उदाहरणार्थ दरबार में नियुक्त साही बेंबेयों और हिमकों की समाप्ति का स्लीमन ने बर्ड से एक प्रकार से बचन ले लिया और कहा वह भरसक साह को इनके जलज करने पर बाध्य करे। इसी प्रकार दूसरी किन्नल जर्जियों के सम्बन्ध में समझाते हुए उसने बर्ड से कह दिया उसकी ऐसी-ऐसी-काम के मध्य अधिक्य में कम्पनी सरकार पर पड़ने वाला हानि स्वल्प यह भार जितना कम हो सका उतनी ही बर्ड की प्रतिष्ठा अच्छी सहेगी। चूंकि अब वह दिन दूर नहीं जब बीरे के बाद स्लीमन अवध की हुसमत की पोल सोस बेना और मजदूरन नवर्नर को अवध की बम्बी का आदेश देते हुए साह अवध और दूसरे उनके सम्बन्धियों आभिष्ठ व्यक्तियों के मुयावज की धोखा करनी होगी। तब तक साही दरबार से जितने स्पर्श क नीकरों को कम किया जा सका उतना ही कम्पनी सरकार के हक में अच्छा और लाभकारी सिद्ध होगा।

पहले कहा जा चुका है सवारी हाथी पर चली। पैर की हड्डी टूट जाने के बाद स्लीमन थोड़े पर चलने में कठिनाई प्रतीत किया करता था। अतः हाथी या ताम्रधाम दो ही सवारियों का प्रयोग सुविधानक था। इसका एक महत्त्व यह हुआ कि हाथी के कारण सवारी प्रमुखता प्राप्त कर गई। उसकी आहिस्ता गति से पाये तक उनके जाने की

सुचना पहले पाँच वाली जिससे उसका स्वागत मध्यतम होता जाता था। मोड़ा मोड़ा होता है और हाथी हाथी। धनवान लोको में वह भफ्फाह फैलने लगी कि रेडीजेंट हुक्मत अपने हाथों लेने का इन्तजाम करने पूरे मुक्त का बीरा कर रहा है।

इसरत बीरे के मध्य स्लीमन का मुन्ही नियत किया गया था। स्लीमन ने कृतज्ञता से उसके सिने एक छोटे और बागों के सिने पानकी का प्रबन्ध करवा दिया था। स्लीमन की प्रवेश बीबी व बच्चे दोनों पर थे। वेद नीकर बाकर वेदन का रहे थे। इस तरह वह बन्ध काष्ठता वहीं दफ्ता वहीं धूम मच जाती। छाही आदेश भावे-भावे जा बुके थे। भाजिबबाद, नाजिम और ठाण्णुकेदार काफिले की सेवा में जोर-शोर से उपस्थित हो जाते।

बीरे का वास्तविक बन्ध स्लीमन के मन में था। वन सोच जानते थे इसका असल कारण क्या है। छाही ऐलान में कहा गया था हुक्मत में बेहवदी और तरक्की पैदा करने के सिने छाहब बयों से मिलने और उनकी हानाठ देखने आ रहे हैं। इसरत इस पर बिस्वास नहीं करता था। जसनठ के जल्लाही समुदाय में इस बीरे का राजनैतिक महत्व भली प्रकार मुस्पष्ट था। यद्यपि उसका प्रत्यक्ष स्लीमन पर अधिक से अधिक दृष्टि रख वह जानने का रहता कि बाजिब धन की सम्पन्नता मिटाने के सिने वह किछ आगार वर बुनियादें रख रहा है। दुधर में स्लीमन के साथ रहने का एक गही लाभ था जो कासागतर में बाजिब धनी के वन को ठहर करने में सहायक सिद्ध होता।

इस सम्बन्ध में स्लीमन का मन टहोलने का इसरत जब-जब प्रयत्न करता। बीरे का आरम्भ बहुराश्च सिने के नवावर्णन गाँव से हुआ। बचावर्मन परलमा सिबोर, मिठवस राम बगर, नुकरपुर धारि जमीन्दा रिवा बूमते हुए वहाँ की हरी गरी उपजाऊ बरती देखते समय इसरत आगे छाहब का ध्यान इस ओर दिशाता गया। कौसी धन्नी मिट्टी है।

प्रभाव के रूप में सोना उभरने वाली। लेकिन स्लीमन मुस्फुरा जाता और बतमा करता—तुम प्रभाव के सोने पर अपनी गजरे मत फेंको। पूरा हिन्दोस्तान मुगह्य मानुम देता है। हमें तो बेखानी है इन हमकों के धर्मधारों की काली करतूतों। नाथ-मान पूछो धीर वहाँ कोई दित चस्प किस्ता गुनने को मिल हमें बताओ। इससे प्रत्यक्ष स्लीमन के मन की आन्तरिक स्थिति का कुछ पान होता। इसरत ने धमीन्दारों के किस्ते इकट्ठा करने का कार्य शुरू नहीं किया। किन्तु स्लीमन वहाँ भी जाता, वहाँ के धामिज से तत्कालीन धमीन्दार का उसके पूर्वजों तथा उनके भी पूर्वजों का इतिहास बड़े चाव से सुनता।

एक दिन काफ़िला गौडा-बह्मण्यव की सीमा में पहुँचा तो स्लीमन इसरत पर अनायास ऊँह हो बैठा। कारण बड़ा ठोस था। वहाँ के समान बसुली का ठेका धामिजदार बर्धन सिंह के बेटे के पास था। बेटा बाप की तरह कुस्मधीर और से काम लेने का धारी था। बर्धन सिंह ने बंया बख्त सिंह को बानबूझ कर किसान से डाकु बना दिया था। वही कहानी रजुबर सिंह ने बम्हनीली गांव के हरबत सिंह की रियासत में दोहराई। हरबत सिंह की लड़की के लिये बर्धन सिंह की धोर से रजुबर सिंह का समाचार गया था जो किन्हीं कारणोंवश उसने अस्वीकार कर दिया। वस दोनों परिवारों में घबुसा हो गई। धामिजदार होने के बाद रजुबर सिंह ने हरबत से अपने अपमान का बदला लेना शुरू किया। समान बख्त पर मिलता था। अन्य उपाय न था अपने धामिजियों ॥ गांव के लोगों को धड़काना धीर डराना शुरू किया। इसमें सफलता मिल गई धीर तोय हरबत सिंह की रियासत छोड़ भागने लगे। चारों धोर सूटा समाचार फैल गया कि रजुबर सिंह ने बम्हनीली के समान हल-बैल गट्ट कर दिये। स्लीमन के कानों में इसकी जगजग पड़ गई। रजुबर सिंह ती पतकी सेवा में उपस्थित था। कुछ इसकहानी को कौन बयान करता। स्लीमन ने इसरत को बोटा कि उसने इतने बड़े हावसे क बारे में यहाँ रहकर

जानकारी नहीं की तो धीर क्या कर सकता है ? इशरत की वह किस्मती इम्कार करने के स्थान वह स्लीमन के सम्मुख स्वीकार कर बैठा कि उसने इस घटना के बारे में कुछ-कुछ सुना बहर था किन्तु उसे महत्वहीन समझ साहेब को बताया नहीं ।

स्लीमन का श्लेष शान्त हो गया किन्तु इशरत को समझाने लगा "यह मामूली इशरत नहीं है । किसी पाँच से पच्चीस हजार हुस-बैनों का सतम हो जाना कुछ मायने रखता है । घबरा के खजाने में उसके घाला हाकिमों की बगल से हजारों रुपये की कमी हो गई है ।"

एक पाँच में पच्चीस हजार हुस बैल होना सम्भव नहीं । लेकिन उस समय इशरत शान्त रहा । रात के समय स्लीमन सराब दिया करता था । उसके बाद अपने कमरे में बैठ कर पढ़ें कुछ लिखा करता था । घायब वह दोरे की कच्ची रिपोर्ट या डायरी होती । उस समय इशरत वहीं उपस्थित रहता और साहेब उसके कुछ बातें मासूम करता । दिन भर की घटनाओं में नहीं कुछ छूटे नहीं कुछ भूल न हो जाये, इसलिये धारम्भ से वह नियम बन चुका था । सराब पीते समय इशरत उसकी सेवा में रहे और जो सवाल पूछे उसके उत्तर दे ।

इशरत उसी रात बम्बूनीली के प्रसंग पर खूब भा गया । उसकी सम्झ में अपने साहेब की चारणा न था सकी थी । वो परिवारों के झगड़े में हुकूमत की आपरवाही क्योंकर साधित हो सकती है वह जानना चाहता था ।

उसने जाम हाथ में लेते बल्ल कुछ लिया "धामिलदार कसूरवार है सरकार, उसकी बाबत जरूर तिला-पड़ी होगी चाहिये । मगर बाद पाह क्या करे ? हुकूमत में धण्डे-नुरे सभी किस्म के हाजिर होते हैं ।"

"नहीं ।" स्लीमन ने जबाब दिया "२२००० हुस-बैनों का सफावा किसी बादशाह के धामिलदारों का कसूर नहीं माना जा सकता । इसके लिये छुद्र बादशाह जिम्मेवार है जो योंसे बगल किये रिदाया की तरफ

से बेचबदर है।”

“बुस्ताली मुभाफ ही तो घर्ब करू।” इधरत ने साहस निभा
‘एक गांव में २२००० हल बस होगा’

“ओह मुम्बई ! हमे अपनी प्रसन्न दीवाने की बरकत गही । सारी
दुनियां बिसे तस्लीम करती है नही सच है । हम अपने शीरे में ऐसे
भास्वात का तजकिला किये बिना नहीं रह सकते । इससे बाहिर होता
है यहाँ का बास्वाह किस कबर बेहोश और ऐसास है । यहाँ के सभी
बार और आसिमबार किस कबर आसिम हैं । पन्नीस हवार लोगों को
बेचबदर कर देना” “कराब हो” यह मामूली बात मत
समझो मुम्बई ।”

इधरत आमोश हो गया । बात स्पष्ट थी । स्लीमन के मन में क्या
है या क्या हो सकता है बिस्कुल बाहिर या । क्यास मजदा बढ़ाने का
बुद्धिरे शब्दों में आत्मर्ष अपनी धोर से संश्लिष्ट करना था ।

दो-चार दिन बाद एक नबी बटना हुई । स्लीमन अब अपने मनो
भाव क्षिप्ताने का प्रयत्न कम कर रहा था । उस बास्वाह के बिस्कुल
मसाला बाहिर या और जैने भी हो सकना करना था । रसुलाबाद में
एक हिन्दू राजा थे । उनके यहाँ परम्परा थी बने माने माने कुस्वकार
पूर्ण ऐति-रिवाज अब भी चल रहे थे । भक्तिव्यों को रक्षा होते ही मार
दिया जाता था । मारने के इच्छित ठीकै थे । पुष्पने पर कुछ और
रिवाजों में भी इसका प्रचलन पाया गया । स्लीमन आरम्भ में आरम्भ
धीरे बिचार करता रहा । रसुलाबाद में बिचार को कार्यरूप में परिवर्त
होना पड़ा । एक राजपूत स्त्री रोते बिलकले उसके बेमे में प्रविष्ट हो
गई । उसकी नवजात कन्या को आसिम परिवार वालों ने मथक चटा
चटा कर मार डाला था । पागलों जसी अवस्था में स्त्री रैजीरेंट साहब
से अपनी बेटी माँगने आई थी । स्लीमन इन बातें में क्या कर सकता था
बह जानता था । फिर भी उसने बिलचस्पी से स्त्री की पुकार सुनी ।

उसने पूछा “क्या तुम चाहती हो तुम्हारे बाबिब सास-ससुर को इसकी सजा दी जाय ?” घोरत ने बिमबकर इसका प्रतिबाह किया “उन मोर्गों को सजा देने से क्या होमा ?” वह बोली “आयन्दा वह ऐसा बुस्म न करे कम से कम यही कर दीजिये ।”

स्लीमन ने कहा “कानून बनबा वे ? कोई जइसी को न मारे ?” घोरत ने हामी मरी । इसक बाद किसी नये बिचार में स्लीमन बहुत देर सोया रहा । घन्त में किसी निर्णय पर पहुँच उसने घोरत से कहा “तुम मिची पड़ी नहीं हो इसमिये मोर मुग्धी तुम्हारे भिये दरदरत लिख देंगे । तुम उस पर निघानी कर देना । बहुत जरूरी कानून बना दिया जायेगा जिससे आयन्दा ऐसा बुस्म न हो सक ।”

घोरत मान गई । उस बीछ स्लीमन इधरत को साथ ल खेने के पीछर पहुँचा । वहाँ शावनापन उनन इधरत को बुद बोला । इधरत के हाथ बाँप-काँप मये । चिन्तु मजबूरी थी । जैसे-तैसे लिखता गया । स्लीमन ने हिन्दु रीति-रिवाजों की घाह में फिर एक बार छाड़ी मरतबे को ललकारा बा । घोरत की तरफ से लिखने ही ऐसे बयान लिखमा मारे थे जिनका तात्मुक स्त्री की विजायत स बिस्मून नहीं बा । घोर घन्त में लिखबाया—मिने कई बार हाकिमों तक इसकी घरिमा करवाई । वह सब मुसलमान हैं । कहते हैं बाबघाह मुसलमान हैं मोर मुसलमानों के बारे में मोच और समझ मकत है । उनको हम हिन्दुओं की अरु भी पिक नहीं । समय में दो दिन की देरी हो तो मास बुर्क करने बा आठे हैं । मुसलमान राजाओं को प-ह-य-ग-ह बिनों की छूट पड़ी है । हम हिन्दुओं में इन पुछनी रीतिपों के मन्द कराने के लिये बादशाह जान बुझ कर कुछ नहीं करते । ऐसी हड़मत् न होना घबड़ा है । हम कम्पनी सरकार की दुपा बना रहे हैं ।—घोरत न हम पर दस्तखत कर दिये । स्लीमन ने उसे घपने बक्से में महतुब रख मिया । तब इधरत को गाव हूमा बनुर रेडीबेट साम्प्रदायिकता के जहर में बाबघाह का नाम मोर

काम सभी बुझाया जाहुता है। हालांकि एक बहुत बड़ का सब मजदूरों में उसने कुछ होनी के भयसर पर बुला से मुंह थिक्कोड़ कर बाइछाह के बाबिर घासीख को फटकार बताई थी जो कुछ हिन्दुओं की तरह होनी पर धबीर और मुभास से बिमोर होता था। स्लीमन ने सब कहा था—बाइछाह नाम के मुसलमान हैं। उनके काम हिन्दुओं जैसे हैं। फिर भी सारबुब है, मौजबी और हमाम जैसे बर्बरत कर भेते हैं। हिंदू मोहर्दय नहीं मगाते तो बाइछाह होनी क्यों मगाता है ?

स्लीमन के मार्ग में एक गांव पड़ा बहमनी पीर। काजिला रात होने से कुछ पहले गांव से बरा घासे निकल आया। एक तामाब मिला जिसके किनारे पड़ाब हुआ। जगह सुन्दर थी। सामने घासों का एक बड़ा बाग था। उस इलाके का मुसलमान बाबिरघार फँकुस्ता था था। उसने झटपट सब प्रबन्ध करवाया। जैसे सबेरे पीर गांव में घोर भय गया। कुछ ही ठोठे-ठोठे घास-मास के छोटे-बोटे जमीनदार रेबीरेंट के बर्तन पाने छुटने लगे।

यहां साहब के पैर में अचानक बर्त वठ आया और उन्हें घमसे दिन पीर फिर घमसे दिन बाहीं बकना पड़ा।

रात में मुभास की हल्की घाग का घामन्द उठते फँकुस्ता पीर इपरत में बहुत-सी बातें हुईं। प्रसंग बहमनी पीर बाबिर घासी के लोगों का था गया। फँकुस्ता ने गांव के ऊपर एक मनोरंजक बहानी सुनाई। बहमनी पीर का बाबिरघार भय होता है बाइछाहों की पीर—उन का दुःख। फँकुस्ता समझाने लगा “हस गांव में पिछले कई सालों से बाइछाहों की जमीनदारी है। मगर वह बेचारे कभी सर सम्भ नहीं होते।” इपरत को क्या में घामन्द आया। उसने मुलाधा आतने की इच्छा व्यक्त की तो फँकुस्ता ने एक पुरानी कहानी बयान की “एक बार एक

साहू वहीं से घूमते-फिरते यहाँ आए। उन्होंने बड़ के नीचे अपना घासन जमाया और चालीस छोले खीने की मोम उध बरत के बमीन्दार के यहाँ येनी। कहलवाया अपर मोम पूरी न हुई तो थाप वे रेंगे। बमीन्दार साहेब ने इसका असर उल्टा लिया। हुजम दिया साहू की महारत बरतना डेर डहा जहा कर मोम से बल जोय। साहू नहीं माना। वह घासन सधाए दवा रूखा और खोर-खोर से बुरा बला कइता रूखा। बमीन्दार कुछ दिन टालते रहे। फिर एक दिन मुस्ते में साहू को अपनी हवेली के बाहर पकड़वा मझाया और इतना मारा कि साहू वहीं डेर हो गया। साथ उन्होंने इसी सामान में फिर्का दी। कहते हैं कुछ दिनों के बाद वही साहू बमीन्दार की हवेली में जीता-जागता फिर आ पहुँचा और कह गया इस बमीन्दारी के बमीन्दार हमें क्या किसी न किसी के हाथों कल होते रहेंगे। भाये बलकर फेंकुस्ता ने साहू के दाप का प्रमाण दिया, 'उक्त बमीन्दार एक डकैती पकड़े बल्ल डालुओं के हाथों पिकार हुए। उनके बाद उनका बेटा अपने छोटे भाई की साक्षि से मारा गया। पड़वान् वह हजरत भी पहर देकर मार दिये पड़े।

इसल ने वर्तमान बमीन्दार का किस्सा पूछा। तब फेंकुस्ता ने बताया इन जनाब का किस्सा भी कुछ ऐसा है। इस से पहले इनके भाई रामचत की बमीन्दारी थी। जनाब ने उनकी हलाक करवा कर कुछ बमीन्दारी समेट ली। थक यहाँ के नाबिम की महारतियों का पिकार बने हुए हैं। लम्बी-लम्बी पिकारें रैते हैं ताकि बाप जार न जाए पीछे जहाँ नाबिम की बुराई करते हैं। मुझ बीछ है जिस दिन नाबिम को इनकी हरकतों का पता चला उमी दिन वह बचड़ा बड़ा कर देगा और हजरत साही महमान जाने की रोटियां तोड़ते होंगे। ताम्बू नही फाँसी हो जाए।'

रफ्तार बड़ी जोर से हुआ। फेंकुस्ता ने बिजोग्यूस स्वर में अन्तिम

बाप कुछ इस तरह कही थी कि वह हैंसे बिना न रह सका। लेकिन उसी रात की घोर से स्लीमन साहेब की भावावस्था आई थी और इसरत को जाना पड़ा।

वहाँ पता चला स्लीमन टहलता हुआ भीम से बाहर आकर फेंकुस्ता की सब बातें सुन रहा था। उसने कुछ सवास किये और इसरत ने ठक की पुष्टि की। स्लीमन ने सब इसरत के द्वारा धनसे दिन फेंकुस्ता की अपने सम्मुख उपस्थित होने का आदेश दिया।

फेंकुस्ता उत्तमन में पड़ा। उसने इसरत को जो कुछ बताया वही था जो सब प्रसिद्ध था। रेडीरेंट के कार्यों में बाप पड़ जाने का मतलब है वर्तमान नाज़िम की मुसीबत। नाज़िम उसका हाकिम था। वह करता हुआ स्लीमन की पेसी में हाज़िर हुआ।

रात का प्रसंग साठे हुए स्लीमन ने दोबारा फेंकुस्ता के मुख से सारी कहानी सुनने की आकांक्षा की। कुछ शर्तों में फेंकुस्ता उसका आदेश पालन कर बड़ी सचचाणी से स्थिति सम्हालने का प्रयत्न करने लगा। उसने कहा "हुज़ूर से धर्म कर दो कि यह किसका बतीर भफ्फाई महां के आबाम में मशहूर है। अस्मियत जो बादशाहे भासी के हुज़ूर तक पहुँची इससे कुछ और मुस्तमिक्त है।

स्लीमन मुस्फुरा कर उसके बारे में जानने को उत्सुक हो गया। उस फेंकुस्ता ने कहानी का दूसरा पल प्रस्तुत किया। बोला "मौजूदा जमींदार किसनचन्द के भाई रामरत अक्खड़ और बरमिशाज आदमी थे। बस-बारह हजार की मानबुजारी बजाया हो गई पर मांगने पर नाज़िम साहेब से बरतमीजी से पैसा आया करते थे। एक बार बसुमी के लिए नाज़िम साहेब कुछ यहाँ आए। धमी वह हमारे मीने में थे कि रामरत को इतिहास मिल गई और वह तीर्थ का बहाना बना यहाँ से जायने लगे ताकि नाज़िम से मुनाफा न हो। नाज़िम साहेब ताड़ मये और इतिहास मैत्री बरतक जयाया गया न हो रामरत कही न जाये। धयर धराधर्या में

पुत्रवारी है तो उन्होंने रामरत्न को अपने लीमे में घिसने के लिये कुश
 बाया । रामरत्न बस-बाहू घाघमियों के साथ घिसन गये । घामे पठा
 नहीं बना हुआ । रामरत्न की लाघ लीमे के नज़रीक पाई गई । बड़े
 नाज़िम साहेब ने बयान दिया मालमुजारी की बमूसयावी का ठगकिया
 होते बहन रामरत्न और छोटे नाज़िम जाकर घली में कहा सुनी हो गई
 थी । जाकर घली न अपना रिवास्वर निकाल लिया था मगर सामने
 मारा नहीं । सिपाही बाघर साहब का पकड़ ले गये मगर बाद में छोड़
 दिया और इस इलाके से दूधरी बपह बहन दिया । तब से लोम जाकर
 घली वाली बाघ पर यकीन नहीं करते । उनका कहना है किसनचन्द
 साहब ने जमींदारी हड़पने के लिये कुछ रामरत्न को मरवा दिया और
 नाज़िम साहब से मिलकर बचने की साजिश की । लेकिन जाकर घली
 ने ऐसा होना बिल्कुल तस्सीम नहीं किया । उसने कहा गोली मारने नहीं
 चलाई थी किन्तु चलाई हमक बारे में कह नहीं सकता । लोम समझत
 है इलाका से छूटने के बाद किसनचन्द ने उसे भी मोटी रकम देकर
 खरीद लिया है ।”

घग्ने की घाँवें मिलीं । इतने बड़े मोलमान की सूचना कम महत्व
 पूर्ण नहीं थी । बाघसाहू के लिए हमसे बड़ी घम की बाघ और बना हो
 सकती थी कि उनके नाज़िम के लीमे में जमींशर की लाघ मिली और
 तब नाज़िम का बाल बोका नहीं हुआ । स्तीमन प्रसन्न हुआ । रातभर
 लम्बा बिट्टा लिजता रहा । इरात के हाथ घग्ने दिन किसनचन्द को
 भी अपने मही हाज़िर होने का सदेश भेजा । फँजुस्ला को बलते समय
 पुरस्कार स्वरूप कुछ प्रसना घर पाए गये । वह समझ गया नाज़िम
 की मौत नज़रीक लाने के लिये में उसे इनाम दिया गया है ।

किसनचन्द ने रास्ते में बाघ हुई । वह डर गया । अस्तिपत क्या
 की इरात के पुछन के बाद भी अपने स्वीकार नहीं किया । इरात
 कहता बाघवा था स्तीमन के डाँगने-कटकारने से विचलित हो नहीं वह

धीरे किसी ने जमीन्दारों के पुत्र्य वर्णन किये । लेकिन सब का धन्य बारखाह के विशेष धीरे घाले वाली किसी नयी हकूमत के पक्ष में होया था । धीरे बाही भी हर जनह किशनचन्द जैसे बद्वार नहीं थे । बहुत कोपित करने पर भी कुल मिला कर दस बारह सौ दरखास्तें मिल सहीं । लेकिन स्वीमन के लिए यही बहुत थी । कौन पूछ रहा था सारों की आवाही में इतनी धिकावलों का क्या मुख्य है । मुख्यमे के लिए बारपन तैयार करने में इन्हीं कुछ दरखास्तों से बहुत कुछ किया जा सकता था ।

बिनहूट धीरे का प्रथिय स्थान था । घसी वह स्थान पचास-पचपन मील दूर था । इस बीच इधरत को अपने साहब के नये विचारों का अनुभव हुआ । पुरे रास्ते जमह बगह तराय धीरे बस्के लुट मिलते रहे थे । लोगों के घाले-जाले को सामर्थ्यवर सबकें थीं । मगर स्वीमन बार बार बुराईयां करता रहा । रास्ते भर न कू में हैं न सकें । राहगीरों के लिए कोई प्रयत्न नहीं । भीलों तक छाया न मिल सके । हकूमत ने कभी इस तरफ ख्याल नहीं किया । मानपुचारी की रकब बसूल करने के बाव जो बारखाह नाच-बालों धीरे रहत नाटक में मस्त रहे वह इस बारे में क्या सोच सकता है । इधरत समझ स्वीमन न केवल बेईमान धीरे मक्कार है बरन धीरे नास्तिक भी जिसे अपने मुदा का डर नहीं जो एक लख बात को मूठ धीरे मूठ बात को सब इसमिल कर रहा है कि जतना माम उसके देश के लोगों को प्राप्त होया धीरे ज्ञान एक ऐसे व्यक्ति को जिसे वह मन ही मन नफरत करता है ।

उसने बागो से कहा— 'हम लोगों का धीरे में साब रहना निश्चुन बेकार साबित हो रहा है । वह मनमानी कर रहा है धीरे हम कुछ नहीं कर सकते ।'

बागो ने उत्तर दिया— 'हम इसकी बेईमानी के सब से बड़े बचाव परी क्या कम है । हमारी बगह से लोगों की सामुय हो सकेया धीरे

का राज क्या था स्लीमन ने क्या-क्या बेईमानियाँ की हैं। कायदा उस बहुत मज़ूर धारेगा जिस बहुत स्लीमन के मुनासिफ़ चाहे हम सोमों को प्रस्तियत बाहिर करेंगे और यह हमारी तरफ़ ज़ुबान बाँझों से बूरता रहेगा ।”

“मैं उस दिन की तबयको नहीं करता बानो। इसरत ने सम्मी हाँस में उत्तर में कहा—“मुसीबत यह है कि बाबिब घसी चाह के सामने इनका बिक्रि किया गया तो पहले वह स्लीमन पर इतमिनाम करेंगे और फिर अपनी रिवाया से इतने बड़े झूठ और फरेब की उम्मीद नहीं करेंगे। हमारी बास्ताग धलिक सैना की दास्तान बनी मज़ाक का बामत होनी ।”

मरानी मड़ में स्लीमन को डाकू महीपत के क्रिस्ते मुने को मिसे। डाकूओं की धाम सिकायत उनके पास पहले से मौजूद थी। किन्तु महीपत धातिर डाकू का धीर उसकी बटनाधों का सप्रमाण बिबरण प्रामितदार व हलाकेदारों से मिल सकता था। अतः उनमें हर धाही मुनाजिम से महीपत के क्रिस्ते निश्चित मंथवा कर अपने पास रख लिए। इन क्रिस्तों की रवादा से क्याया मिलती करना उसका खास लक्ष्य था। दिन कमचारियों ने उनका मतलब लाड़कर सच्ची बटनाधों के साथ-साथ दो बार और मिला ही स्लीमन ने उनकी प्रशंसा की। किन्तु जो सोच ऐसा न कर सके या जिन्होंने सच्चाई से मुक्त मोड़ना प्रतीकार कर दिया वह नाकाबिल कहाये। यही माय बख़्त स्लीमन ने पूरे बीरे में अपनाये रक्ता था। पर सरकारी नीकरी में से भी कम स्लीमन के सहामक निकसे। अतः इसरत से वह नमय-कुमयय कहता रहता था—

जिस हूमुत के हाजिम इतने बेबख़ूफ़ और बजार हों उस हूमुत का कुछ हाफिज़। बाबघाह को रास रंग से फुरसत मिल तो वह इन तरफ़ तबयबोह करे। गतीबामह है कि घाब सारे धबब के सरकारी मुनाजिम मतलबी और नाफरमाबरदार हैं। अपनी बुनी पर बैठ कर अपने प्राप

को घबरा का बहूसाह समझते हैं ।" बाहिर है, अपनी हीरे की रिपोर्ट में स्लीमन ने ऐसे ही घबरे का प्रयोग वास्तव के विरोध में किया होगा ।

यही बगामी बड़ के बीमे में एक दिन घबानक थीर मुन्धी के बर्षन हुए । बड़ी घबरा-घबरात घबराता में एक दिन बड़ काफ़िमे से जा मिले । पूछने पर बानो को उन्होंने सिर्फ बड़ बताया कि बड़ साहब को सलाह देने आये हैं । अगर इधरत उनकी बाँधों में रहस्य की बाब पा बिचलित हो उठा । बातचीत के बाब्य थी कुछ ऐसा मया बैठे बड़ इधरत के बिकल भरवस मन की सलाह थी बाब रोकने में घबराते हो रहे हैं ।

स्लीमन दोपहर तक घामिलशार के बाब बगामीबड़ के बर्षनों में धिंकार बेलता रहा । इसलिए थीर साहब की मुसाफ़ात घाम से पहले न हो सकी । इस बीच इधरत ने बानो को सलित करने का प्रयास किया 'भीर साहब का कहां आना बाबने रकता है । बड़ कुटी नदरों से मुझे बूर रहे थे । बाबुम करने की कोशिश करो उनके मन में है क्या —" उसने कहा तो पहले बानो बिचलित न कर सकी । फिर इधरत ने थीर दिया तो नोका देखने लगी । किन्तु इसकी बाबस्यकता नहीं बड़ी बूँकि दोपहर के बाबन के बाब घाराय करते हुए थीर साहब ने एकलत वा कुछ बानो को बाब बुना लिया थीर कहने लगे—“कत तुम मेरे बाब बाबिब सलनक बलोपी । तीबारिया कर रकता ।” कारस पूछा तो बड़ एकलत नमी बदे थीर बिज्जा पड़े—“बो हस्य दिया है बही करो । मैं नहीं चाहता जानते-बूझते तुम्हें बाब से बेलने का नोका हूँ । इधरत के बाब हमारी बुर मुलिकत है ।”

बानो बुपचाय लौट आई । इधरत समझ मया बाब कुछ है उकर । लेकिन बानो में इतना बाबुल न था कि बड़ बाबने बिना से बाने बाब सवाल करे । तब इधरत ने बड़ काम बाबने बिज्जे दिया । बड़ थीर साहब के बाब बाबा थीर बानो को से बाब का कारस बूझने लगा ।

मीर साहेब ने पहले कोई जवाब न दिया मगर अन्त में पम्पीर खर में कहने लगे— 'बरबुरखार बागो पर मेरा हक भाव भी बरकदार है। मैं उसे लेने आया हूँ और लेकर जाऊँगा। बजह जानना चाहते हो तो तैयार रहो। कुछबकुद मामूम हो जायगी।'

इस उत्तर के बाद बागो बहुत डर गई। ऐशप्रेम के बिस धिये उत्साह के बस उसने इशरत को अपना मक्य बनाया था उसी उत्साह ने पिता की आहूति में सब और ताड़ना की भावना प्रतीत की। उसमें साहस कम नहीं था। एक बार इशरत के लिए अपनी हरबत का बूझ खेलकर उसने एक बड़ी समस्या मुनझई थी। ऐबीहेंछी में निवास करने वाली एकमात्र यही ऐसी लड़की थी जिसे अंधकों से छुणा और अपने अज्ञात बादशाह से प्यार था। इशरत में यही भाव पहिली मेट में ताड़म पर उसका मन पुलक गया। कालान्तर मे उसकी पुष्टि हुई तो वह इशरत के पल में बहुत कुछ सोच बैठी। समय धाने पर अपनी बुद्धि और योग्यता से वह परिस्थिति भांप कर इशरत को बचाने का साधन भी कर सकी। आज फिर उसी प्रकार की बुरी परीक्षा के लिए उसने अपना हृदय परिपक्व किया।

इशरत ने उसने कहा— 'इनका इशरतानेक मामूम नहीं होता। मुन-किन है मखनऊ में इन्हें कुछ पता बन गया हो और यह स्लीमन को बचाने आये हों। मेरी राय है तुम मुझे यहीं छोड़ दो और बुर बने जाओ। अभी तक रास्ता साफ है। स्लीमन बापिस आया और अम्मा हज़र से मुलाकात होने के बाद रास्ता न हुआ तो मैं इतिला करना दूँगी। कोई बहाना कर देना और वीरहाबिरी की माहूल बजह बता कर भा जाना।'

इशरत इस पर तैयार न हुआ। उसने कहा— 'मैं बुजदिल नहीं। हम तुम दोनों बराबर के गुनाहवार हैं। मीर साहब समझने हैं स्लीमन उनकी बेटी होने की बजह से तुम्हें बचप देना यह उनकी सामस्यामी

है। तुम्हें सोह में नहीं आ सकता।”

बागो निरुत्तर हो गई। उसने दोनों के प्राग जमाने का प्रस्ताव रक्खा किन्तु इसरत इतना सीधे एक मामूली सम्येह की पुष्टि हुए बिना इस पर तैयार न हो सका। दोनों ने मीर साहेब की नति विधि पर दृष्टि रखना अन्त में तय किया।

साहेब की बापसी पर कुछ इसरत ने मीर साहेब का समाचार दे दिया। किन्तु वह सीधा अपनी मेम साहेब के बीमे में चुस गया और रात तक न निकला। पश्चात् मीर साहेब की तकली हुई। उस वक्त इसरत मीर साहेब की धाँव बना स्लीमन के बीमे के पिछवाड़े खड़ा नान लगाने दोनों की बातें सुन रहा था। बागो उसके साथ थी।

समाप्त पेश करने के बाद मीर साहेब यकायक साहेब के पीरों पर गिर पड़े और बिड़बिड़ा कर भीक माँगने लगे “मैं अपनी बानी की चिन्मयी की मिन्नत करता हूँ नरकार। बुदा के लिये उसे मुपासी बख्त बीजिये।

स्लीमन इन भूमिका का कोई तात्पर्य न समझा। उसने मीर साहेब की बुझामह को विधेय लक्ष्य कर पूरी बात कहने का आदेश दिया। तब मीर साहेब उठ कर सामने आ खड़े हुए और कहने लगे “दूर जिस इसरत को अपना बख्तवार और राजदार समझ रहे हैं वह दरअसल हमारा दुस्मन है। घाप के साथ-साथ उसने मुझे भी बोला दिया। उस दिन रेडीहेंसी में घापना करत करने की निमत लिये यही ओरों की तरह घालिन हुआ था। उस रात सोहे के पुन पर जिस अवेज को हमारत किया गया उसके पीछे भी इसरत का हाथ है। दरअसल यह धास्तीन का साथ है जो बारसाह के लिये घापके साथ रह कर जामूसी कर रहा है।”

स्लीमन की क्या क्या हुई होगी कहना व्यर्थ है। पर बीमे के पीछे खड़ इसरत और बागो की व्यवस्था इतने भी क्यासा खराब हो गई। स्लीमन भीक-भीक कर सिपाहियों को बुलाकर इसरत की घालियाँ

सुमाने की तैयारियाँ कर रहा था। बानो आगे क्या होने वाला था जानती थी। एक प्रकार बबरल इशरत का हाथ पकड़े वह भागती हुई सामने वाले घास के बाग में बस गई। यहाँ सबन खमेरा का भीर बिना रोकती कुछ सुझना बसम्भव था।

उसने इशरत के हाथ छोड़े भीर प्रार्थना की 'जैसे भी हो तुम आम बाधो। धम्मा जान की सुझावद भिन्नत पर सायब स्वीमन पसीज जाये भीर मुझ से कुछ न कहे। लेकिन तुम यहाँ रहे तो पजब हो जानेवा। मोरे के कल की एबज वह तुम्हें भुन बालगा।'

इशरत ने प्रतिवाद किया। वह बानो को धकेला छोड़ जाने पर बिस्कुल तैयार न हुआ।

बानो की धाँकों से घाँस निकल आये भीर तरह-तरह कस्में दिता कर उसने फिर कहा "सुबा के बास्ते मुझ पर रहम करो। सुबा ने तुम्हें टगवस्ती थी तो हम फिर मिल जायेंगे। लेकिन यहाँ रहे तो हम कुछ होना। मेरी ठिठ छोड़ दो। मुझ पर कोई धुर्म सायब नहीं होता। मौका हुआ तो मैं अपनी बेपुनाही बखान कर सकती हूँ। वह बदा बकरी है कि तुम्हारे साथ-साथ मैं भी गहारी में खरकत कर रही होऊँ।" इशरत इस बलील से परास्त हो गया। लेकिन उसकी हठ स्थिर रही। वह बानो ने अपनी कमर का खंजर निकाल लिया। बहा अगर वह नहीं जाएगा तो खंजर बानो के सीने के पार होगा। वह इशरत न बक सका। धम्बकार में दो प्रेमियों ने बिबा भी। बाहर सौर मच रहा था भीर लोगों का बीड़ना-फिरना आरम्भ हो गया था।

एक प्रवाड़ आतिथन के बाह धाँकों में घाँस लिये इशरत वहाँ से दूधरी भीर निकल गया। बानो खमेरे में देखने का मिच्छल प्रयत्न करते कुछ समय वहाँ रुकी तबुपरांत बाघ के बाहर आ गई।

स्लीमन के सामने उसकी पेची हुई तो स्लीमन बिफर गया "तुमने उसे क्या दिया" । भीर साहेब गिड़गिड़ाते लगे । पर बुस्ता का जो कम होने में नहीं था रहा था । बालो बेर तक धागि से स्लीमन और भीर साहेब की बातचीत सुनती रही ।

भीर साहेब कह रहे थे 'इस लड़की का कोई मुताह नहीं । बुता के लिये इस पर रहम कीजिये । लकड़ी बेरी की जो बिना समझे इच्छा के साथ मैंने इसका निकाह पढ़वा दिया । अपनी सारी बछ्छधारियों के लिये मैं मैं इसकी बिरानी की धमाल चाहता हूँ थाका । इच्छा के लिये चाहे जो सब मुतासिब समझें प्रताः छरमा हें । लेकिन बेरी बच्ची को बख्त हें । इस बेचारी को तो बसा भी नहीं इच्छा कीया था । मैं इसे अपने सब धागि से जाने धामा हूँ और बख्त किसी नैक धागि से बुसरा दिकाह बाव तलाक पढ़वा पूँया । हूँ, किसी बेमुताह को सब लिये आपके दरबार में ऐसा बुसम गही हो सकता । बदना बुताब की बही बुताबि है कि इस नादान छोकरी का मुताह करें ।"

स्लीमन काटने को बीड रहा था । मुस्ने ॥ बख्त बेहरा सुलं हाता और फिर अपनी स्वाभाविक बख्खा में धावा । भीर मुन्गी जब इच्छा का प्रसव जठाते लपटा स्लीमन गुरल किस्ती की बदन बखोष कर कपार मुजरिम के बुर्न का बरना में सेवा मगर जब बालो की बात होती तो वह कुछ धान्य हो उसकी और देखन लगता । प्रत्यक्ष उसकी दृष्टि में भीर साहेब का कमल सही था । धागद सोच रहा था बालो को इच्छा के बुर्न की सबा भी जानी लबिठ नहीं । लेकिन उसका मस्तिष्क कुछ और निश्चय कर रहा था । भीर साहेब की गिड़गिड़ाहट मजिद होने पर उसने बही बख्त कर दिया ।

बोला प्रमेला बही नहीं यह लड़की भी मायिन है । उठ पठ इच्छा को बचाने की बरख से धायब इसने अपनी सूझ बरनामी बरसि की थी । मगर यह तुम्हारी बेटी है भीर मुन्गी । तुमने हमारी बछ्छ-

घापी से कभी मुंह नहीं मोड़ा। हम इसे मुझाफ कर देंगे।”

बानो तड़प उठी “मुझे आपकी रहमती की जरूरत नहीं रहीमत साहेब। मैं सजा के लिये बिस्कुल तैयार हूँ। और ऐलानियां सुनान करती हूँ कि मैं अपने छोड़ के साथ ऐसी-वैसी में जासूसी करने की गठवर हिस्तेदार थी। हम आपकी मजकारियों का समझा बेसमा चाहते थे जो इन दोषों के दिनों हमने जी भर देखा लिया। अब सारी दुनियां जान जायेगी आप और आपकी कम्पनी का मन्दा क्या है, उस मन्दा के पीछे आपकी ईमानदारी का होंग कैसा है। उस होंग में आप कम्पनी के एक प्रान्त हाकिम बाबसाह के खिलाफ किस जुसूम मोहब्बत और सच्चाई से हिस्सा ले रहे हैं।

धीरे साहेब दीढ़ कर बानो के निकट आये और बार-बार उसे रोकने का प्रयत्न करने लगे। पिता की ममता स्वीकृत के बदल जाने वाले कंधे का हंस बेस चुकी थी उसके बाद उनकी साइमी बेटी मीत की बाहों में नजदीक पहुँच जाती। वह बानो को समझाने का प्रयत्न करने लगे “बुप कर मेक जात बुपकर। एक जोरी ऊपर सीना जोरी। नाँव से मुझापी प्रान्त सरकार से। वह सबब का दरबार नहीं है इसाफ की मजालत है। साहेब बहादुर तुझे बख्त देंगे। मैं कहता हूँ सड़की अपनी कठरनी वैसी जुमान की काहू रल।”

बानो सुनते ही भाव हो गई। धीरे साहेब अपना काम बनाने के लिये बाबसाह सबब की माजी बेकर रहीमत के दरबार पीठबा चाहते थे। उसने धीरे साहेब को रोका और कहा “क्या हूँ मैं आपको उस दरबार के खिलाफ जहर फैलाने का जिसका आप को छुड़ना नहीं। आप की मजद में वहाँ इसाफ नहीं होता? आप समझते हैं आपके यह फिरंगी हाकिम इसाफ करना जानते हैं जो बेईमानी और मजकारी से एक नेक धीरे हमदर्द दोस्त के हकूक समेटन की कोशिश कर रहे हैं। बुप करिये मन्दा हूँकर बुप करिये। मैं जस जिन्दगी से मीत हजार दूँ

बेहतर समझती हूँ जिसमें धरम का कोई बाधित्वा अपने बारबाह को मानिमा देकर मेरे जहन को नापाक करने की नाकामयाब कोशिश करे।”

स्लीमन पुस्त में कहने लगा ‘सुना और मुन्गी तुम इसी की दिखायिश कर रहे थे। मैं इसे नहीं बख्त सकता। यह अपने बरा धम की सजा पायेगी और देखेगी संसेव नीता इलाक करते हैं।”

“देख चुकी हूँ साहेब बहादुर, देख चुकी हूँ” बानो मुस्कणटी प्राकृति से कहती रही “बम्हूनीली का जमींदार इसकी सहायत देना। बहमनी पीर का किसन नाम धापके इलाक की लाईव करेना। महीपत के चुस्म का धिबार वह सब नोव बना प्यङ्क-प्यङ्क कर धापकी बात का दम करने और कहने महीपत की बखह से उन्हें बतना ही मुकसान हुआ है जिसना धाप कहते हैं। बीच-बीच और चक्क-चक्क बनी पक्की सराबें और कुंए, मुल्क की हुरी-जरी जमीन, यहां की जुझासी और धावाबी, सब चीख चीख कर धापके इलाक की रोहाई देती और सारे धालन को बतना देती कि धाप जिसने बड़े इलाक पतन है। यह इलाक नहीं चुस्म है। मैं जीव से नहीं डरती। मैं ऐसे इलाक और इलाक करने वालों पर चुकती हूँ।

स्लीमन का धारा धरीर कांप गया। बहुत रोकने पर भी वह न रुक सका और धावे बड़ एक ठमाथा बानो के सीने वाल पर लगा दिया। इसके बाद उसने बाहर लौटात नहरेबाने को बुलाया और कहा “इस सड़की की हिरासत मैं जो। कम सखनक भेजा जायेगा। मिस्टर बाद घन के कस में इसकी धरकत बी। देखी-देखी मैं इसी से मेरी भीत की साजिश की बी। इस पर नाकामया मुकबमा जयेगा।”

पहरेबाना बानो को से जाने लगा तो और साहेब स्लीमन के पांव पड़ गए। घनकी धाकों से धांनु बहने जये और पण्डोंने स्लीमन के धपनी बेटी की डिम्पली की लैर बाही। मुकबियां लेते हुए पण्डोंने अपने नातिक के बिनती की “मैं मुराने बाक की कसन साफर बकीन दिनाता हूँ कि

पागे इस मड़की की खान से ऐसा बहर कभी नहीं निकलेगा । कुदा के लिये इस बार उसे बका बीजिये । भाका वह पागल हो गई है । उस पर रहम कीजिये मेरे भण्डे मालिक । मैंने बरसों आपकी निरमल कौ है । हमेघा आप लोगों को अपना माई-बाप मानता रहा । आज उसी निरमल का बास्ता देकर आप से अपनी बटी की भीन मांगता हूँ ।

स्लीमन ने पहरेबाले को इपारा किया और समझल अपना वीर मीर साहेब की पकड़ से छुड़ाता हुआ बोला 'तुमने इपारत के बारे में इतना देकर बड़ी मारी बफावारी का सबूत दिया है मीर मुन्गी । हम सबकी कद्र करते हैं लेकिन तुम्हारी बेटी को रिहा करने का हुक्म नहीं दे सकते । वह हमारी नहीं बल्कि ईस्ट इंडिया कम्पनी की मुताहवार है । उसका मुकदमा मुहकमे मुयय्या के सामने पेज होगा । लेकिन हम माफ करते हैं । जिस मैजेस्ट्री से सिफारिस करा कर उसे कम से कम सजा का हुक्म दिलवायेंगे । तुम्हारी बफावारी की ऐजब आज है तुम्हारी जनस्वाह में हम पांच सपना माहाना का इजाफा करते हैं ।

मीर साहेब के उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना इसके बाद स्लीमन दूसरे छीमे में चुस गया । जाने से पहले उसने पहरेबाले को कुछ आदेश दिया और मीर साहेब की तरफ इपारा किया । मीर साहेब समझ गए । पहरेबाला मुस्तेब होकर बाट बैठा था कि जब मीर साहेब हमारे छीमे में जाने का अवसर देखें और जब वह अपनी बफावारी का प्रमाण देने के लिये उन्हें रोकने का अवसर पाए ।

वह उदास और परेशान छीमे के बाहर आए । कुछ फामसे पर पहरेबाले के साथ बानो पाड़ी दिखाई दी । वह कुछ देर उभे बैठते रहे और तब दीड़ कर उधसे निपट गए । उनकी धीलों से निरन्तर धामू बहने लगे और वह बानो को अपने गरीर से चिमटाए धर तब रोजे रहे । बानो उनकी दशा से चिन्तित हो रही थी । सभी मीर साहब ने उसे और अधिक आश्चर्यविमूढ़ कर दिया । वह बोले "मुयय्या हो मेरे बच्चो

जो अपने बदन पर कुरबान होने का जज्बा पैदा कर सके । बुधमसीब है इशरत, और बुधमसीब है मियाँ काग जिसके नाम पर बहाली का बाज नहीं । धाज तक मैंने गुनाह किया । बोझा दिया अपने बदन को, अपने बाइछाह को और तुम अपने धाज को । मुझे मुभाज कर देड़ी मुझे मरवा ।’

धीरे वह कह कर वह शोकाच स्लीमन के दूसरे बीमे की घोर गद्दे जहाँ पहुँचाना सतर्क बड़ा हुआ । बीमे के सामने पहुँच वह दो सल रके धीरे फिर और से हँस दिये । उनके मट्टहास से बलाबलस तिरार छल । पहुँचाना बन्दूक सम्हालने आया । स्लीमन बीमे से बाहर निकल आया । मीर साहेब की हँसी भी जो बन्द होने में नहीं आ रही थी ।

स्लीमन ने बाहर निकल मीर साहेब की देखते हुए मुट्टियाँ घान कर सवास किया “क्या है ?” लेकिन तभी मीर साहेब अचानक सीट कर स्लीमन की घोर पीठ किए ५३ हो गए मीर और-और से बिस्ताते बहरी से आये ।

“कम्पनी सरकार बेईमान है । स्लीमन बदमाश है । बाइछाह भन्ना है । बाइछाह की हुकूमत भन्नी है ।

आपने बलकर वह फिर और से हँस दिये । आवाज धाज के बाह में तिमट गई । स्लीमन ने बापिस सीटते हुए कहा “पावस हो गया ।” बागो ने सुना सवास और उसकी धासों से दो बूँद धासु आ गये । मीर साहेब के ऐसे अर्बकर परिवर्तन का विचार तो उसे कभी न आया था । वह सोच रही थी काय हममें बदनपरस्ती का कुछ बज्बा बल रहते पहले पैदा हो जाता तो अपने बाइछाह की चित्ती कीमती चिर मठ अजाम है समते । लेकिन सब कुछ बल भीत जाने पर नुबर रहा है । भयबाज जाने क्या होने जाता था । बहानी धीमता से उपसंहार की घोर बढ़ रही है । मीर साहेब बेमाने हो गए । इशरत फरार बोधित हो आयेगा । तुम उस पर बुरकिया बलने की बात सम है । फिर कैसे

काम बसेया । कीन बुनिया को बेईमानी की दास्तान घोर किछ त
 बयान करेया ? क्या बाइछाह उन लोगो की बगान पर बरोसा कर स
 को मुबारिमों क कटघरे में छाड़े उनही कफादारी का दम भरेंगे ।
 स्तीमन के सामने ऐसा सम्भव हो सकता है ? साम नहीं घोर क
 नहीं । हमी का दूसरा नाम दुर्माय है । इसरत घोर बानो का दुर्माय
 बानो घोर इसरत के साथ घबब के दीमर साबों मोनों का दुर्माय
 छुह संछाह बाजिर धली छाह का दुर्माय । किसी ने सब कहा
 घबब की सन्धिया प्रसिद्ध है । लेकिन उनसे भी प्रसिद्ध है सग्न्याक
 बीठ जाने पर घबरे ये दमकनेवाले को जुगनु को अपना घरीर फूँक
 प्रकाश की व्याख्या करते हैं । छटछोस बच्चे खेल खेल में उन पर
 छुपनुधों को भी कपट में बन्द कर लेते हैं । सब दुर्माय है ।
 घोर बीजा दुर्माय ।

तेरह

ससनऊ की सीमा से निकल बाहू भंगारसिंह सिंहा देवा में अपने मुख रखीत सिंह के पास आ गया। एक बार जून मूँह लव जाने के बाद रखीत सिंह अब नियमित रूप से डकैती डाल रहा था। बिसाये के लिए बूमीन्धारी भी जिसका लबाग वह समय-समय पर भेठा रहता था, किन्तु प्राब का ठोस उपग्रह डकैती ही था जिसके हाथ घाटे-घाटे राह-मीरों काफिलों और बापठों इत्यादि से उसे मोटी रकमें प्राप्त होतीं।

गंगा सिंह वहाँ मुप्त रूप से रह रहा था। घामिलदार बलन सिंह अभी तक इस हलाके में था और ससनऊ से सूचना पाकर कई बार रखीत सिंह के मकान की तलाशी से चुका था। गंगा सिंह उस बल्लू बंसलों में छिपा रहा करता। मकान के भीतरी हिस्से में एक तहखाना भी था वहाँ सूट का माल जुटा करता और गंगा सिंह जंगल के जीवन से ऊब कर रहने आ आया करता।

रात के समय देवा के बंसलों से निकलना बहुत ज्यादा खतरनाक था। कोई मामूलासी ऐसा होगा जो गंगा सिंह के कोप का भावन न बने। कभी-कभी दिन में भी घाक्रमस हो आया करता था। वहाँ वह बात स्वीकार कर लेता ग्यावसंयत रहेगा कि प्रबब की बारम्बार इस बिधा में सम्मुख परास्त हो चुकी थी। हालांकि इसका कारण साही प्रबब की छील न होने के स्थान धम्पेरी ऊबड़-खाबड़ सड़कें बने बंसल और बीकियों की अपर्याप्त संख्या जो रेजीडेंट के बराब से चाहते हुए भी बढ़ न सकी थीं। किन्तु दोष प्रबब के सातन पर आता स्वाभाविक था। कुछ लोगों की सापरवाही भी थी। जानते-बुझते वह रातों में अपना पैसा लेकर सफर कर बैठते और नुट जाते। पुलिस तक भीवत

मनी ठर ठर बाहुओं का पता न मिलता । इस तरह दिनों-दिन बाहुओं का हीमना बढ़ता गया था ।

एक बार रानी देवा के जयन्त मे रणबीर सिंह और उसके पिता को दो एम राहदोर मिले जो देखने में घबोर जान पड़े । यह सिल्ली और पिहाव थे । रात होने में कुछ समय बाकी था और यह अफ़ी-जली देवा दाँव पड़ेने का विचार करते नज़र बढ़ाए जा रहे थे । किन्तु अब बाब्रिह कोश पड़ा तो ऐसा जयन्त मिला जहाँ दिन में घबेरा रहे । तब उन्हें मनी पुन हाथ हुई । उसी समय रणबीर सिंह ने इन पर बाबा बोल दिया ।

पिहाव चारों ओर से घिर जाने के बाद साजस करता घागे रण बीरसिंह के बिरुद्ध मजहरीक भाग्या और बहने लया "अपर आप लोप पंथा अरु सिह के भावगी हैं तो हमें अपने बिर जाने की लुगी है । लेकिन अगर आप दूसरे बाहु हैं तो हमारी रंगा मोली लेकर अरु हमें बलता कर बीजिए । हमारे पास बस-बाख़ रुपये के भलावा और कुछ नहीं है जो आपको मिल सके । भलबता इस बेचारे बाड़ीवान के दो बेल बकर हैं जो आपरा आप सेना पसन्द न करें ।

इस पर रणबीर सिंह ने अपने पिता की ओर देखा जो बही सका था । मंगारक्य सिंह ने कोई विशेष इशारा किया जिस पर रणबीर सिंह ने मुना किया कर पिहाव ने हर्ष का कारण पूछा जो मंदा बरत सिंह से मिलने पर उसे प्राप्त होने जाता था । पिहाव ने उत्तर दिया "हमें उससे कुछ बकरी नाम है हमलिये मिसना चाहते थे ।

उत्तर सुन कर रंगा सिंह स्वयं हंसता हुआ घागे पाया और बोला 'उस बाहु से मुझे नाम हो सकता है बड़े ताकतूब की बात है । बहर हाल तुम्हारे साथ जो मङ्गी है अंग्रज मामून बेटी है । हम इसे अपने पास रखेंगे और मोटी रकम सेवर छोड़ेंगे । मुना है फिरगी मनी नाम बचाने की एवज बहुत कुछ देने पर तैयार हो जाते हैं । और जब

यना सिंह हारकर सीट धामा धीरे अपने बेटे से परामर्श करने गया।

यस स्थिति यह हुई कि गंगा सिंह छिद्दाब धीरे सिन्धी से होने वाली भेंट सम्बन्धी बातचीत का मर्म जानने के लिए बहुत उत्सुक हो गया। यह स्वामाधिक था। उधर वह दोनों कोई ठोस कारण बताने से इन्कार कर रहे थे। रणवीर सिंह की राय भी यह अवश्य वासुस है गंगा सिंह को पकड़ने का हौस कर रहे हैं। बृधकिस्मती से उसे पहचानते नहीं मगर जानना चाहते हैं वास्तव में वह बेबा में मिल सकता है या नहीं। इसके बाद यहां से छूटने पर छाही सब से उसे पकड़ने का कोई उपान करेंगे। इस सम्बन्ध में उसने अपनी बारछा व्यक्त की इनके नाटक का चिह्न इतना मतलब है कि आप के यहां होने का प्रमाण पा लें। इसके बाद मुझे पकड़ कर धन्धी तरह मारा-पीटा जायेगा ताकि मैं आपका पता बता दू। बरना इन लोगों को आप से काम क्या हो सकता है। बरकर यह धावमी छाही बरबार का धीरे लड़की रेडीडेसी की तरफ से मुकर्रर हुई है। आप ने मुना होमा छिरंगी धीरे बड़ी बिमेरहोती है।

यना सिंह इस को एकदम धस्वीकार न कर सका। पर उसका कहना था जैसा रणवीर सिंह चाहता है वासुसों को उनके जुर्म की सजा देने से पहले किसी तरह वह निश्चय कर लिया जावे कि कहीं वास्तव में उनका कहना ठीक तो नहीं। सम्भव है वह सोय सचमुच गंगा सिंह से मिलने जाये हों। लेकिन रणवीर सिंह इसके लिए बिल्कुल तयार न हुआ। बार बबरहस्ती के अतिरिक्त सलमनसाहत है या यह बता कर कि बड़ी गया सिंह धीरे उसका लड़का है सिपाय मुसीबत खरीदने के धीरे कोई नाय नहीं था। बड़े गया सिंह को अपने बेटे की बात मानने के अतिरिक्त कोई चारा न रहा।

अठ रात के समय बाजिराव प्रयत्न किया गया। गंगा सिंह ने सिन्धी पर कठोरता न बताने की हिदायत दी। लेकिन रणवीर सिंह पुण्या थाप था। उसने अपने दोनों कैदियों के मध्य प्रेम की अज्ञात भावना का

पारपा लिया था। उनका विचार था, जब सिम्बी के सामने उनके साथ पर सन्ती की बायमी तो वह फौरन पत्र लिखने पर तत्पर हो बायमी

रात के बचन गंगा सिंह धीर रणजीत उन सोपों के सामने धादे रणजीत सिंह शराब पिये हुए था। उसकी घाँघि सुर्ज धीर भयानक रही थी। गंगा सिंह अनिश्चित मनोबल में उनके साथ था। दो घंटे व्यक्ति उनके पीछे था रहे थे जो विभिन्न प्रकार लोगों को पीड़ित कर की कमा में पारंगत थे। घनाभियों से रनमा एंटने या मास का प ठिहाना जोयते समय इन सभी चौड़े डील डोल के व्यक्तियों का हुन देखते बनता था धीर दियर से दिनेर धादमी पानी मांग जाता। प सिंह का मन इन तैयारियों से घायर वषावा कुछ नहीं था। हाता यह बातें उनके लिए नहीं थी। लेकिन बार-बार यही बहम उठ कि कहीं इन लड़कों धीर इनके साथी को बास्तब में उनसे मिलना तु तो उसके पत्र में इनसे बड़ी धीर कुम्भ की मिशान नहीं मिल सकेगी फिर भी वह धनने बेटे क भाव सहजानी गया बकर।

सिम्बी इन लोगों को देखकर परेयान हुई। उसे एक धीर बां मया था धीर सिद्दाब को रणजीत सिंह के सम्मुख से जाया गया था इपदा बिस्मृत स्पट था। घाँघि ही घाँघि सिद्दाब को बिबसता प्रर कर वह धान्त धीर गम्भीर साथ की बन्ना पर विचार करने लगी।

पीड़ा देने में विधेयत्र दोनों व्यक्तियों ने रणजीत का इवारा सिद्दाब के पीछे था उनके दोनों हाथ एक ही भन्के में मोड़ दिने सिद्दाब बट से कराह उठा। लेकिन उसने अपनी मिशकारी बराबर में दबाये रखी। सिम्बी ने अपनी घाँघि बन्द कर ली। रणजीत ति ने सवाल किया—“बोयो क्या तुम सोय शाही बामूम हो ?” सिद्दाब बल्दी से सर हिला दिया। यह धारोप सब में पहले उनके सम्मुख न था उभा था। सिम्बी बाररु सोचती सब ही मन सिद्दाब की पीड़ा विषय में बुझी होने लगी।

रणबीर सिंह ने प्रस्ताव सवाल किया—“तब तुम ज़रूर निब कर अपने घर वालों से रपवा क्यों नहीं मंगवाते ? हम बाबिरी बार पुक्ता चाहते हैं ।” उसने सिम्बी की बरफ देखा जो धब नकरात्मक सर हिलाने लगी थी ।

सिद्दाब कठिमाई से उत्तर दे सका—“हमें अपने मरने का डर नहीं । लेकिन हम आपको यकीन दिलाते हैं, हमारे वास्तव इतने घमौर नहीं जितना आप समझ रहे हैं । छाही जामूस होने का सवाल तो बिल्कुल भुवा है । हम दोनों किसी खास काम से गया सिंह से मिलने यहाँ आये थे । अगर आप छाही जामूस होने का खताबार समझ कर हमें खजा दे रहे हैं तो यह आपकी मूल है ।”

रणबीर सिंह उसकी बात से प्रभावित नहीं हुआ । उसने दूसरा हसात किया और पीछे हाथ पकड़े बड़े साबियों ने उबलियों में उमलियों समझ मरोड़ना शुरू किया । इससे सिम्बी का हींसला पस्त हो गया । सिद्दाब के चेहरे पर कुछ की अभिप्रेत सजीव हो उठी । वह न बक सकी और बिस्मा कर बोली—“ठहरो जानियो ! इस तरह तकलीफ देने से अच्छा है कि तुम हमें मार डालो । तुम्हें रपवा चाहिए न । मैं खत निब दूँगी । मेरे बाबिब तुम्हारी मान पूरी कर देंगे । लेकिन इससे पहले तुम हमें बाबा बोले कि हमारी मुलाकात गया सिंह से करना बोले ।”

रणबीर सिंह विजय का उत्साह लिए सिम्बी के बरबर घाया और कहने लगा—“हम वह बाबा कैसे दे सकते हैं ? गया सिंह को हम नहीं जानते । तुमसे उसकी मुलाकात कैसे करना देंगे ?”

सिद्दाब ने कहा—“तुम हमें बोले में नहीं रख सकते माई । धब हमें यकीन हो गया है कि तुम बकर गया सिंह के गिरोह के धारमी हो । देवा में दूसरे इसाके का हाक हिम्मत नहीं कर सकता । इसीलिए तुम्हें हम पर छाही जामूस होने का शक हुआ ? लेकिन हम तुम्हें यकीन दिलाते हैं । हमारा छाही मुलाक़ात से कोई टास्तुक नहीं । घसबता

हम अपने बारसाह के हमरें जकर हैं। सही हथवरी के नाते नया सिंह से मिल कर कुछ पूछना चाहते थे।

इस बार नया सिंह बीच में बोस पड़ा। उसने कारख बागमा कहा कि वह लोग क्या पूछना चाहते थे।

“जब तक कथाबोये नहीं तुम्हारा पुत्रकाय नामुमकिन है।” उसने पम्पीरता से अपने बेटे की ओर देखते हुए कहा। और कहने मानुम होने पर, हो सक्ता है, हम तुम पर खूब कर दें। पर तुम्हें बकील दिमाग होना कि तुम हमें बोसा नहीं दे रहे। और अपने बागिच को खत निज कर हमारे जिने रकम का बन्दोबस्त करवा होना।

सिंहान ने कहा। आप फिर उसी बात पर चतर आए। हम यह कुके हैं। नया सिंह के अन्धावा हम और किसी को नहीं बता सकते हम सबसे क्यों मिलने आए हैं।’

रखबीत सिंह कुछ स्वर में बोला “हसकर दूसरा मतबब तुम्हारी मीत है। तुम लोग बातों से मानने वाले नहीं। हमें न तुम्हारे काम से मतबब है और न तुम्हारे बागुच न होने के। हमें अपना चाहिए, तुम खत निज की रकम या जाए, हम तुम्हें छोड़ देंगे। उसके बाद जिससे भी चाहे मिलते रहना।”

सित्बी कहने लगी “मैं खत निज हूँ। लेकिन तुम लोग सिंहान पर भुम्भ न करो।

सिंहान ने टीका “खत नहीं बिना जायेगा। हम बुझरिल नहीं हैं सित्बी। हमारे खाबी हमारी जात पर धामू बहायेये जब उन्हें पता चलेगा हम किस काम के लिए रवाना हुए थे और किस तरह एक मामूली पतरे से हार गये। हम लोगों का जो मिजाज चाहे करने दो।”

रखबीत सिंह कैलेंज पर बीसता गया। उसने अपने सादियों को इतारा किया और वह गई बीड़ा की तैयारियां करने लगे। घर पर पम्पीरता बहरी गई। उसे सब बातें पता चली। सिंहान की बातों

फैसली धारम्भ हुई। सिस्वी उसका कष्ट देख अपने होंठ काटने लगी। रणजीत सिंह सम्मत् हो मददास करने लगा। गंगा सिंह कुछ देर बेचता रहा। इसके बाद उसके साहस ने न जाने क्यों जबाब दे दिया और वह उस कमरे से अपने छोले के स्थान पर आ गया।

बहुत देर बाद रणजीत सिंह सोटा ली गंगा सिंह ने उदास स्वर में सवाल किया 'कत मिला?' अकारणक सिर हिला रणजीत सिंह ने अपनी असफलता बयान की। रणजीत इसके बाद वहाँ से जाने लगा। तब गंगा सिंह ने शोका और कहा 'वह लोग कितने बहादुर और शिखर हैं। अब मुझे शक नहीं यह बकर मुझसे मिलने आये होंगे।'।

"काबिल जासूस हमेशा शिखरी और बहादुरी दिखाते हैं। प्रसी वह सिर्फ प्रथमता हुआ है। कल तक होश ठिठाने का चापरे। कुछ मान लेगा कि वह कौन है और क्यों यहाँ आया था। तभी खुदाय कत निकाल देगा।" रणजीत का जबाब आया।

गंगा सिंह उदास हो गया। उसने अपना सिर हिलाया और प्रति-
 कार किया तुम भ्रमसे हो रणजीत। वह लोग इतने समझोर नहीं। तुमने तुला होया वह अपने आप को बाबसाह का हथकड़ी बठा रहे थे। सच्ची हथकड़ी रखने वाले मौत से नहीं डरते।'

सिस्वी चूँकि धर्मज्ञ लड़की थी इसलिए रणजीत को हँसी आ गई। उसने अपने पिता को सम्झाने का प्रयत्न किया "यही दलील बनकी मजदारी साबित करने के लिये बहुत काफी है बापू। धर्मज्ञ लड़की चाहे प्रथम की हथकड़ी नहीं हो सकती।"

गंगा सिंह न माना। उसने जबाब दिया 'इतनी तकलीफ का बाद भी वह अपनी जमान मोनने को तैयार नहीं। पाँचों देवता बराबर नहीं होती।'

रणबीर में कैमसा मुना गिया 'बुद्ध भी हो । मैं बठई राय नहीं
 बुझा कि घाप घपने घससी नाम घीर ठिगाने से उन सीगों पर यकीन
 करते बा मिलें । घाप की इच्छा हो तो उन्हें बिना कुछ बभूम किये छोड़ा
 जा सकता है । लेकिन हम गिरफ्तारी का कोई सतरा उठाने को तैयार
 नहीं । लखनऊ जेल का जेलर बरल मुजा है और धन किसी को छुड़ा
 बिना एवमय घसम्भव है ।"

सोते समय गंगा सिंह बैठेन रहा । दिल्ली के उष्य बार-बार याद
 आये । घाह की इमदारी में कोई संदेश नकरी अपनी जान गंवाने पर
 आमादा रह सकती है तो क्या गंगा सिंह अपनी गिरफ्तारी का जरा सा
 सतरा नहीं उठा सकता ? उठा सकता है । बादशाह के प्रति उनके दिल
 में कभी-कभी ममता आय पड़ती थी । उमे घिकायत रहा करती आमित
 बार और दूसरे सरकारी कर्मचारियों से । बाब्रिद घसी के बारे में उसने
 भी भी मुता घच्छा मुता । बड़ा मज और सीबा है । लोगों पर यकीन
 कर लेता है । मुजरिम उक्त सम्मुख पहुँच पाचना करे तो छोड़ भी देता
 है । घान उनक चारों तरफ मुसीबत छाई हुई है । मुनते हैं रेजीडेंट के
 मुक्त का बीरा दिया है । हुकुमत लेने की तैयारियाँ हो रही हैं । हुनरे
 मुक्त के लोग यही राज्य करेंगे । बादशाह को बूब की मक्ती की ठर
 निवास जेका आदेश । उमी बादशाह कनिये रहस्यकी मिलना चाहती
 है । घादर कोई मेह की बात है जो बशान पर तैयार नहीं । मौत बुझल
 करने पर तैयार है मगर कजनी बात पर धड़ी हुई है ।

गंगा सिंह को बार-बार याद घाप पर जोष आया । ऐसा भी क्या
 पुर्म और क्या दर ? इन दोनों के आगुम रहने पर भी क्या बुझाई
 हो सकती है ? आमितशर कई बार मजान की समाजी से पया है ।
 क्या मिला ? मन की गान्धि कर लेने के लिये जरा सा सतरा और
 उठा लगे में क्या बुझाई है । बाग्याह के लिए रीर मुक्त और रीर मज
 हब की राहरी अब इतना कुछ कर सकती है तो क्या यही का बाब्रिद

मुझ नहीं करने ?

मुझ एणनीत से बिना कोई बात किये वह सिस्वी और बिहाब के सामने जा पहुँचा ।

बिना घुमिका उसने कह दिया "अगर मैं कहूँ मैं बंसा सिंह हूँ, तो क्या तुम मुझ पर मर्जीन कर लोगी और बता दोगी तुम मुझ से क्यों मिलना चाहती हो ?"

बिहाब की पीठ पर हँटरों के निशान थे । वह सीधा पड़ा था । सिस्वी बराबर बेंठी उन्हें देख रही थी । बंसा सिंह के उत्तर में बिहाब सीधा हो गया और सिस्वी कहने लगी "हम पहले से जानते थे । बुरा का दुश्मन है आपने भीत से पहले हम पर बाहिर कर दिया । हम आपसे कुछ माँगने आये थे ।"

बंसा सिंह सिस्वी की नीली बाग़ी से प्रभावित हुआ । अन्तःकरण से किसी नकी भावनाएँ उनीब हो उठी । जीवन में पहली बार धार किसी ने उसके कुछ माँगा था । और जो माँगा गया था प्रत्यक्ष उसके पीछे बावपाह का हित रहा होगा । वह अचानक और सन्तुष्ट हो गया ।

उसके मुँह से निकल गया "बेटी, अगर मैं तुम्हें कुछ दे सका तो बकर दूँगा ।" बोली गया माँगना चाहती हो । यहाँ से फिर होना चाहती हो ?"

"नहीं !" सिस्वी ने उत्तर दिया मैं आपके हाथों इनाक हो जाऊँ यही चाहती हूँ अगर करने से पहले आप से एक बात ।

"बाबा ।" बंसा सिंह की उत्सुकता उनीब हुई । वह घाने बढ़कर बिहाब के पाँव बैठने और उसके सर पर किसी धक्का प्रेरणावश सहा मुद्रति पूर्ण हाथ करने लगा ।

सिस्वी ने कहा "हाँ बात चाहती हूँ मुर्ख । आप की करने बर्ष की कसम जानी होगी । हम आपसे बड़ी-बड़ी ज़म्मीरों लेकर आये हैं ।"

बंसा सिंह का उत्तर था "मैंने तुम्हें बेटी कह दिया है । हमारे यहाँ

की चीज है, जिसे एक बार बेटी कहा हुयेगा उसे बेटी की तरह मानते हैं। और बेटी को हुयेगा कुछ देते रहना हमारा धर्म है। तुम समय तो मैंने कहा था नहीं।”

सिस्वी पिहान की ओर देखने लगी। जब वह उठ खड़ा हुआ था और अपनी पीड़ा की अभिव्यक्ति करती थीं यंग सिह की ओर सपाटे कुछ सोच रहा था। तभी उसे कुछ बिजोर भासा और सिस्वी के सोचने से पहले वह कहने लगा “बुर्जुआ, आप तस्लीम करते हैं। अभी नुहोमा बगीर पर हमला करने के लिये आप से रेजीडेंट स्लीमन ने कहा था ?

“हाँ।” यंग सिह ने वास्तविकता बता दी “उसने मुझे निरपत्ता करवाया था इसलिये मैंने अपना बर्सा लिया।”

सिहान तुरंत बोला—“लेकिन उस घायली का बयान कुछ और है जो उस दिन आप और रेजीडेंट स्लीमन के बर्मान उसछिया करने में कामयाब हुआ था। उसका कहना है वह न होता तो घायल आप स्लीमन को हलाक कर डालते।”

यंग सिह ने इसे स्वीकार किया। बोला—“उसका कहना बिलकुल सच है। और अगर उसने तुमसे कहा है कि बगीर से बर्सा मेन के लिए मुझे स्लीमन ने मड़वाया है तो वह विस्तुष यत्न होना। कारण वह अपनी तरह जानता था कि बगीर को मरिपामेंट करने की कसम खा चुका था।

“घायले बर्सा करमाया” इस बार सिस्वी बोली—“उसने यह बात तस्लीम की है। लेकिन उसने हमें कुछ और बताया है। वह स्लीमन का मुताबिक है। उसका कहना है, स्लीमन ने घायली पीठ पर बंदूक रखकर बाइपाह पर गोली चलाई है। हम जानना चाहते हैं क्या बगीर के साथ-साथ आपकी बाइपाह सनामत से भी बर्सा मेन था ?”

यंग सिस्वी का उत्तर न समझ सका। यह बात राजनीति से सम्बन्ध रखती थी। यंग सिह थपड़ मँवार था। उस आत्मा का मारना

या मरना । 'मैं तुम्हारा मतलब नहीं समझा बैटी ।' उसने कहा ।

सिस्वी मजबूत था गई थीर प्रभावशाली सम्झों में बताने लगी—
 "यह सबकी बरकस्मती है बजीर घमीनुहीला से घापकी कुरमनी हुई
 थीर घापने उससे बचना सेने में खानदार कामयाबी हासिल की । लेकिन
 बुजुर्गवार घाप नहीं जानते घाप की बजह से स्त्रीमन कितनी बड़ी
 साबित करने में कामयाब हो गया थीर बजीर को बरछरफ कर कर
 भवक को कितना कमजोर बना गया ।"

'हां हां ।' गंगासिंह ने स्वीकार किया— "मैंने सुना था बाबघाह इस
 घटना के बाद बजीर से नापसंद हो गये थे थीर उन्हें निकाल दिया था ।"

'नापसंद किया गया था बुजुर्गवार ।' शिवाब ने कहा 'एक साबित
 थी जिसकी कामयाबी से भवक की हुकूमत के हाथ काट डाले गये ।'

"मैं यह सब नहीं समझता । गंगा सिंह ने कहा— 'मुझे बजीर से
 बचना सेना था । रेजीडेंट ने मुझे रास्ता बताया थीर मैंने उस पर बाम
 किया । हां, घायब उमने अपना कौन नहीं निभाया । ठीक वक्त पर
 वह मौके पर पहुँच गया था थीर मेरे चार साबितों की बकड़ से गया ।
 हालांकि मुझे इसकी ख्याल फिक्र न हुई । वह सब घायमी साहेब बहा-
 दुर की मारफात मेरी मदद करने आये थे ।"

'आह ।' शिवाब मम्मा सांभ सिते हुए कहने लगा— अब मुनिप
 उसने घापकी मदद से जिस तरह भवक की पूरी रिखाया को तबाह
 बरबाद करने की बात सेमी है । जनाब घाप नहीं जानते घंघेय हमारे
 खमीन पर बज्जा करना चाहते हैं । बजीर चाहे कितने बुरे थे मगर
 अपने घोड़े के काबिल थीर समझदार थे । फिरदियों की बीन पर
 उनका सर सांप के बच्चे की तरह हिजने पर मजबूर न हुआ । उसे
 हटाने बिना रेजीडेंट घयमा माहेरा फँकने के काबिल न था । घाप से
 उसने कहकर हमसे की तबबीय की । थीर ऊपर बाबघाह को समझाया
 गया, हमला मसबूरी था । नतीजे में बजीर साहेब को हटाया गया ।

धीर उनकी बगल हुआ एक ऐसा बहीर की बहारत की बमक में बंधा होकर किरंदी बुकामों की बुधामय में धपनी बेहतरी समझ रहा है। आप समझ सज्ज हैं धापे क्या होमा ? एक दिन न बहीर रहेगा धीर न बहारत बाधगाह रहेगा धीर न बादसाहत। यहाँ स्लीमन की हुकूमत होगी। तब वह सबसे पहले आप की समाध करादेगा। आप उसकी शास्त्रिक शास्त्रिक करन बाने पहले मचाह हैं।

“यकीनन” इस बार गंगा सिंह के काने बेहरे पर लाती के कुछ मजल प्रकट हुए। वह बोला “उस मकदार न मुझे बोला दिया। मैं बदने की धाम में बुरी तरह बम रहा बा। मैं नहीं जानता बा वह बड़ा फायदा उठादेगा। तुम कहाँ ही क्याबली उठा कर बरतन का मूँ बेटी। उस बाहेब के बन्ने दो जिन्दा नहीं छोडूंगा। उसने हमारे मोले पन से फायदा उठाया।”

सिंहान ने टोका—“मुस्मा धीर बन्ना हमारा मकमद कामयाब नहीं कर सकेंगे बुजमवार। धपनी धाम का बतरा उठाकर हम आप से मिलने इन लिए नहीं धापे बै कि आप से स्लीमन के बदल की बसत उठायें। हम आपकी धीर आपके बालबच्चों की धावारी मापने धापे हैं। धावारी मांगन धापे हैं धपने मुस्क की जिसके छीने धामे का बरतन कटीब धादया है। क्या आप गबारा करेंगे कि स्लीमन जैसे बालाफ धीर मकदार रेजीडेंट हमारे मेक धीर शरीक बाधगाह पर हावी हो जाएँ धीर उन्हें दर-दर का मिधारी बना दें ? क्या आप की पैरत पधार करोगी बुजुब कि यहाँ हमारे मुस्क के बाधिमों की हुकूमत हो धीर हम पुनाम बहपायें। उसी के लिए हम आप से कुछ मापने धाम हैं। कुछ कुर बानी। धनर धापनी शास्त्रिक धर्मो धाह से मयाब है। कुछ अनसिमत है धपने बरतन धीर धपनी जम्बधूमि से, तो बाद कीबिए कि धाप हवें मायूस नहीं मोटावेंगे।”

गंगा सिंह की एसा प्रतीत हुआ जैसे कोई जयरी धमरधामा

कचोट रहा हो । बैसबेय के बारे में सोचने का अवसर उसे कभी नहीं मिला था । धीरे न बसने ऐसा प्रतीत किया जैसे युलामी कोई चीज होती है । स्त्रीजन की मक्कारी धीरे बोबे की माद धाते ही उसके तन में भाव प्रलय लगा रही थी । धीरे शवर एक ऐसी लड़की लड़ी थी जो उसकी बेटी संशोधित हो चुकी थी । एक धर्षण लड़की ? उसी मकह्न की मानने वाली जिसका रेजीरेंट था । किन्तु बाबिद घाली साहू के बिने नहीं हजरत बन कर आई थी । किटना बर्र धीरे किटना प्यार उसकी धावाज ॥ धपके बावसाहू के लिए बीसते समय काहिर होता था । बाबिद घाली साहू की हस्ती तब कैसे दुरी हो सकती थी ? धीरे की दुरा न हो उसके लिए संवा सिहू क्यों दुराई करे ? वह डकैती नहीं थी । इस पैसे में तो कूट-नाट धीरे कलम-मिल के प्रसादा कुछ नहीं मिला । उसकी मयी बेटी ने एक बसा रास्ता खोल दिया । महु बदनपरस्ती थी धावाजी की बंब की सज्जाई की धावाज थी । बीसव ने एक बार संवा सिहू ने उस धावाज का महत्व समझा था । इसीलिए वह देर तक कोई उत्तर न दे सका । सिद्दाब को पामलों के समान दूया कुछ सीकता रहा ।

सिल्ली ने उसे संवेत किया “आपने मुझे अपनी बेटी तस्वीर करते हुए तब कुछ देने का वादा किया है बुधुर्नवार । बात नहीं बालते । फिरभी धाई बेईमानी धीरे बालाफी से बावसाहू को महकम करना चाहते हैं । हम विलीजान से उसे रीकना चाहते हैं । हम सज्जाई के लिए अपनी आंखों की बाजी लगा देने का फैसला कर चुके हैं । हमें बकी धा बीसा मातली बजीर नहीं चाहिए । धाप हमाय लाग हैं तो दुनिया की धाओं के सामने से स्त्रीजन की मक्कारी का राज फाट ही जायेगा । बेईमानी अपनी बबान के मक्कारी की बहाली बयान कर देगी । धीरे हमाय बावसाहू बकस्मिती के ललछादे से निकल जायेगा । बुधुर्नवार, आपकी एक दुरवानी धावक के हजारों-साथों लोगों की विरमत बन

सामने बोलत सुली थी। कपड़े घस-घसत थे। नखे से घसके पाँव डग मगा रहे थे। सिल्वी को देख जहने सठने का प्रयत्न किया किन्तु उससे पहले बिर पड़ा। साची जैसे आये थे जैसे कमरे से चले गए।

सिल्वी की कुशाघ बुद्धि परिस्थिति बहुत बुरी थी। पिता के प्रति बिसौम काम की धमि में सिल्वी का निष्कलक शरीर मुगसा कर शान्त होया। अब वह क्या करे? रात्रि का एक प्रहर बीत चुका था। घाबाओं की घायब बाहर आयें। किन्तु आत्मरक्षा के लिए वह बिकरी हुई घोरनी के समान लंवार हो गई।

घाबिरी काम समाप्त कर रणजीत सड़ककाता उसकी तरफ बढ़ने लगा। सिल्वी सचेत हिरनी के समान पोछे हटी घीर बोली "घायब तुम्हें क्या सिंह का खौफ नहीं रहा। वह मुझ अपनी बेटी बना चुके हैं।"

"आमता हूँ।" रणजीत ने उत्तर में कहा "मुझ से कहा था। इसीलिए तुम्हें बुलवा लाया है प्यारी।"

"सर्म करो। सिल्वी बिम्बाई अपने मजहब की तरफ देखो बहन की पूजा करते हो तुम लोग?"

"तुम्हारी पूजा बकर कर्बिया मेरी जान। रणजीत बहनते धर्मों में कहता हुआ आगे बढ़ने लगा "बापू पर जाहू का डंडा फटा तो वह बोली भूल गए। गुरगानी की बातें कर रहे हैं। तुम्हारी पूजा किये बिना कैसे काम चलगा। आज मेरे सोने से लय कर घायब की नींद लो प्यारी। कल घामिलदार के सामने बाहर अपने आप को उनके हवामे कर देंगे।" वह कर रणजीत खोर से हँसा।

अब घामिला कुछ ही कबर्भों का रोप था। रणजीत के मदम रहने वाले नहीं थे। सिल्वी को कोई रास्ता न मूझा। वह खोर से बिम्बा कर सहायता की पुकार करने लगी। रणजीत के मस्त कदम पल भर रुके और इसके बाद पूर्ण से सिल्वी की घीर बढ़ने लगे।

महरी निस्पृश्यता में सिल्वी का ठंडा स्वर चारों घोर गूँजे

मगा । रणजीत के कहकहे उसे बचाने का निष्पन्न प्रयास कर रहे थे ।
 चिस्वी उसकी पकड़ में घाली धीर निकल जाती । एक का सटीक बूझने
 की कामुकता पर यह रहकर बिजयी हो जाता । किन्तु चिस्वी जानती
 थी यह बिजय असमायी है । यही से निकल भागना असम्भव होता, धीर
 मल्ल में उसे "घाये बहू न सीख सकी ।

तभी कमरे के द्वार को किसी का भारी बक्का मचा जिससे बाह
 खुल पड़ा । सामने बंवा सिंह की कुछ पाकृति दिखाई दी । चिस्वी चीह
 कर उसके बराबर जा खड़ी हुई । रणजीत पल भर सहमा बैसता रहा ।

बंवा सिंह ने धाये बहू रणजीत से कहा "तुने समझा होता रणजीत
 कि मैं तेरी कैद से निकल न सकूँगा । मगर जामद तू चुन गया, मैंने
 तुझे पैदा किया है । मैं तेरा बाप हूँ ।"

"बापू ।" रणजीत पूरे बने से चिस्वाया धीर हाथों में बमकदार
 खंजर निकाल कहने लगा "तुम बीच में मत पड़ो । बने जाओ यहाँ से ।
 बरना "

"बरना तू मुझे मार देगा । यही न" बंवा सिंह चिस्वी को
 हाथ की बपकपाहट से घातबाजन देता धाये बहू "धीवार हूँ इसलिये
 बाप पर हाथ उठा सकता हूँ । लेकिन मैं नहीं । मैं तुझे जिन्दा छोड़ कर
 जाऊँगा रणजीत । मैंने तुम्हें से कुछ बमकर बरबार में हाजिर होने की
 चीज माँगी थी । उकँटी बहुत दिनों कर चुके बैठे । तू नहीं आता ।
 कैद में डाल कर सोचता था तू जीत जाएगा । मगर अब देख सरकारी
 आदमी तुम्हें पकड़ने आयेगे । मैं तुम्हें उगँहे तेरे साथ अहूँ बठा दूँगा ।
 क्यों ? क्योंकि मैं तेरा बाप हूँ । मैंने तुम्हें बलत रास्ता बताया धीर धब
 मैं ही सही रास्ता बताऊँगा । तुम बेरोबर वा जानबानी उकँठ नहीं है ।
 हमने बरबादी का रास्ता अपना लिया था । बरत धाया है तो उसे
 छोड़ना होगा । इस लड़की ने सब कहा है । जिस देश के अपराधी तुम
 अपना अपराध स्वीकार करके इसाक के सामने जायें वह देश महान

है। दुनियाँ की कोई ताकत उसके बिनाफ आबाज नहीं उठा सकती।
तूने इस मौके का फायदा उठाने से इन्कार कर दिया। यह ठीकी बर
विस्मयी है।'

इतना कहते हुए गंगा सिंह का शानक सरीर एक फुर्तीसी घसांग में
रणबीर के निकट आ पहुँचा। रणबीर सोच भी न पाया कि उसे क्या
करना होगा उससे पहले उसके हाथ का खंजर गंगा सिंह के हाथों में
घौर उसका सरीर परती पर धौका पड़ा बिछाई दिया। हमने ११ बजने
के लिये रणबीर उठने का उपक्रम करने लगा किन्तु अभी गंगा सिंह के
बलिष्ठ वीर की एक ठोकर उसकी नाभि कुसरी उसके पैर धौर तीसरी
पीठ पर पड़ी। रणबीर अचेत हो वहीं सेठ गया।

इसके बाद गंगा सिंह सिल्ली को साथ लिए घासाली से लहजाने के
बाहर आ गया। बसते समय पिहाब को उसने अपनी पीठ पर सार
दिया। बाहर की ठंडी हवा के थोके लपटे ही पिहाब की भाँखें बुनीं।
उसने गंगा सिंह को कह न दे कुछ आहिस्ता-आहिस्ता बसने की मिसा
माँपी। गंगा सिंह ने माँव के किसी बिरबस्त सारमी से पाड़ी का प्रबंध
कराया। इसके बाद रात्रोरात्र वह लज्जनरू आ पए। इरात का मकान
बन्द था। पिहाब गंगा सिंह को ले लीया हकीम बरबागी ॥ यहाँ
आया। वहाँ बधीह घसी से सेंट हुई। कुछ सोचते-विचारते गंगा सिंह
को वह अपने साथ ले आए। पिहाब को गियाँ खान की मृत्यु का समा
चार मिला। वह खुशी हो गया। इरात के बारे में ज्ञात हुआ वह
स्तीमन से बच कर आम निकला है। मिश्रु घसी तक यहाँ न आ पाया
था। पिहाब को लगा जैसे उसका कुल प्रयत्न व्यर्थ सिद्ध होया। तमाछा
कुछ बिपड़ता बजूर आ रहा था। इरात के ऊपर आयास मुसीबत
घाई जान उसका साहस टूट गया। कटिनाई से घामू रोके वह सिल्ली
से बिदा हुआ। सिल्ली अपने मकान आ गई। यहाँ इरात मौजूद था।
धौर साथ से रेजीडेंसी के भीर मुन्दी। वापस धौर सम्पत्ति। एक

दिन पहले वही पहुँचे थे। ब्रिग्स ने अपने भीतरी कमरों में से एक में उनके ठहरने की व्यवस्था कर बी बी घोर आदेश दिया था जब तक घाने मुद्रिणा न हो हसरत घर से बाहर न निरुत्ते। हुकीम बर्बवामी के यहाँ जाना सम्भव न हो सका था। अतः यह सूचना बाहर न जा सकी।

सबर स्टीमन के लौटने का समाचार था चुका था। ब्रिग्स की दृष्टि में हसरत को एकदम छिपाए रहना उचित मामुम हुआ।

चौदह

हरम और महलसरा में स्वाजासरा का विशेष महत्व हुआ करता था। बाबिर उसी छाह के काल में पचासी नपुंसक नीकर थे। स्लीमन इन से बचता था। यह बहुत बफ़ादार और समझदार होते। कई स्वाजासरा बेयमात के हिसाब कियाब तक रहते। लाकों का सेन-सेन रखा करता। समय पर मुसीबतों के बहुत मुन्हे बताते। स्लीमन सोचता यह नबाबी बनाने में सब से बड़े धनदाह है और इन पर खर्च होने वाला बाकों अपना बेकार बाता है।

बधीरूनीना बाबिर उसी की सेवा में विशेष स्वाजासरा था। हकूमत के कामों में बधीर और दूसरे मन्त्रीपणों की सहायता पड़ती तो महल में स्वाजासरा बधीरूनीना के बिना छाह के हाथ-पाँव ठूठ बाते पालीस-पालीस पचास-पचास बरमात और बाइसाह के मध्य अन्धे सम्बन्ध बनाए रखने की पूरी जिम्मेदारी बधीरूनीना के कन्धों पर थी। हालाँकि बधीरूनीना लासली था। महलात (बेयमात) से सम्मी-सम्मी बन्धीसँ मारता। पर बाबिर उसी के लिए उसके हृदय में प्रेम था। उनके प्रति हुंमसा सच्ची मित्रता रखता था। और बरबसर पड़ने पर इत त्वानिबन्धित को बड़े से बड़े लालच से अधिक मानता था।

अस्तर महल हरम में ग्रहित हुईं तो मरियम अपने पुरे प्रभाव से बाइसाह पर आई हुई थी। बधीरूनीना इसमें बुरा योग दे रहा था। इसका कारण मरियम के इत्नाम इकराम या छाह की इच्छा दोनों में से एक बरूर थी। छाहसाह मरियम को पसन्द करते थे और मरियम अपने लक्ष्य तक पहुँचने के लिए बहुत कुछ कर्न करने पर तैयार थी। अतः कहा जाए, बधीरूनीना दोनों में प्रयादता बलान्न करने में सहायक

परिवानियों से कैसेरे जमा को बचाने में या तो मैं कामयाब होते वाली हूँ और या एक और हस्ती छाह के साथ स्वाभाविक रूप से समाप्त की बैठक जमाव करीबनीना।”

बचीरहीना पर इस बातचीत का प्रभाव पड़ा। जब वह मरियम की ओर संश्लिष्ट दृष्टि रखने लगा। मरियम बीमारी से ठीकी और दोबारा बीमार नहीं तो मरियम की समाप्त बाद-मरियम की जेसा कर उसने छाहें प्रभाव की बीमारी की ठीक-ठीक सबर देना बस्ती कर कर दिया। इसके स्थान पर वह प्रकृति की प्रसंगा के पुनर्बोधने लगा। छाह के सामने हर समय उसी के बीच जाता। छाह पर प्रभाव बढ़ता स्वाभाविक था। वह दिनों-दिन प्रकृति के निकट जाते गए। मरियम को भूमना तो प्रकृति या किन्तु बीमारी के दूसरे प्रकृति के बाद उनके जीवन से निराश वह कुछ प्रकृतिगत बकर हो गए। हाँ, वह उनके वस्तुस्थिति में कभी नहीं आया कि मरियम ने उनके प्यार को बोझा दिया है, उनको छाह है या उनकी मेकी का नाकाम्य सब उठाया है।

बातों ही बातों में उस दिन बचीरहीना की उपस्थिति में प्रकृति ने प्रभाव का प्रसंग लेता। उस दिन छाह कुछ बराबर थे। उन्होंने प्रकृति की प्रारम्भिक में जाते ही प्रभाव की मान कर ली। बचीरहीना उस समय तक उपस्थित रहा करता था जब तक विवेकतया उसे ठस्मिन्ने की आज्ञा न हो जाती। वह दौड़ कर प्रभाव से आया। सभी प्रकृति के बाबिर भली को रोका “रमागत हो तो धर्म कर्म” धामके लिए प्रभाव बराबर मुक़ीद नहीं है साहसे आना।”

बाबिर भली ने उत्तर दिया “आगता हूँ प्रकृतिबेमम फिर भी पीठा बकर हूँ।”

“वर्षों!” प्रकृति ने समाप्त किया। वह छाहें प्रभाव की माकाब में दिपी निराशा और दुःख भाव कुटी थी। उन्होंने जैसे उत्तर में अपना

हृदय स्पष्ट कर दिया हो।

उधर बपीरुहीला ने भीका देला। बोला 'इस नामुराद बीर को न तो ईमान बरखा गया है धीर न फर्ज। धाला हजरत मरियम बेगम के धाने से पहले हाथ तक न लगाते थे। धन न जाने क्या हो गया है।

धाह न चाहते हुए भी बपीर की बातों पर मुस्करा कर कहने लगे 'सिरी बबाम को ठाला मयाना होगा बशीर। शायद धस्तर महल से तुने कोई इनाम पा लिया है अभी इनकी हा में हाँ मिला रहा है।

"मुस्ताफी मुषाफ" बपीर ने उत्तरता से उत्तर दिया 'कुछ दिनों पहले इनाम इकराम का काम धन्दा बन रहा था। जब से बेगम साहब आई हैं इन्होंने मामला ठप कर दिया। मैंने तो सरकारे धाला से धपन दिल की बात नहीं। मुई धराब कोई पीने की धय नहीं।

"है बशीर है" धाह ने इस बार यकायक यम्मीर स्वर में बेहरे पर बहासी साठे हुए उत्तर दिया 'तू क्या जाने इसमें क्या है। कह कर उन्होंने धाम धने के नीचे उठार लिया।

'इसीलिए तो कमीज ने सवाम करने की जुरत की धाला हजरत।' धस्तर ने कहा 'बशीर की समझ में न धाये मगर धायद मैं समझ सकूँ।

धाह धामोपी से कुछ सोचने लग। फिर सहसा उन्होंने बशीर को बने जाने की धावा दी। जब वह जाता गया तो धस्तर से बोले 'जब हम परेधान हीठे हैं बेगम तो मैं का सकर हूँ धायम पहुँचावा है।

"मुस्ताफी मुषाफ" धस्तर न पुछा "हमारे कुसमों को क्या परेधानी। सगरी है। धाला हजरत ने कमीज के सामने धाम तक ऐसी बातें नहीं कीं फिर क्यों धाम इस तरह मापूसी बाहिर की जा रही है ?

"मापूसी नहीं बगम। मापूसी नहीं" धाह बोले "बके हुए मुसाफिर का इतमिनाम है यह। वह धामता है मंडिल तक पहुँचना उसकी

क्रिस्मस में नहीं। सब वह पहली नींद में डूब कर बकाबद मिटाने को मचकुर हो जाता है। चौकता है क्यों न प्रापम से छोटा रहे सब " 'बुरा न करे।' " अस्तर ने साह के मुँह पर धाना मुलायम हाथ रख दिया 'घाप के दुपमनों को नींद प्राप। घाला हड्डन, घायराना पुषान में घाप किस माबूसी को क्योउ करना चाहते हैं। कजीब घाब इसघर करेवी कि

"हम इसघर कुडन करेंगे अस्तर।" बाबघाह बोले "घराब का नाम दो घोर मुनो हम एक पुरदर्द कहानी बयान करेंगे। घायब तुम्हारी समझ में हमारे बाब की तकलीफ या बाये।"

अस्तर ने बत्ती से घराब का नाम घरा घीर साह के होठों से तया दिया। वह नसीबी घीबों से अपने चारों घोर देख रहे थे। घ तर को उनकी घाब बीसी बबल्ला कमी न मिली थी। वह ईराग घीर परेघान थी। किन्तु घाब समेह न रहा बाबिब घसी साह घाब किसी कारउ कुछ घीर परेघान है। घीर उठी परेघानी में कुछ कहना चाहते हैं। कुछ ऐसा बो उनके बिल की गहराइयों में फिसा हुआ बा। अस्ता बेबनी से वो बास्तान मुनने की प्रतीक्षा करने लगी।

'हो जामेमम' बाबिब घसी साह ने अपनी हठि अस्तर पर जमा ली घीर कहना शुरू किया— 'हम जिस रीब तक पर बैठे एक घजीब हादसा हुआ। एक मनहुम घपघकुन बाक्या घाया। हम उसे टान बये। लेकिन हम उसे कहानी को नहीं टान सके वो घबब में हमारे मुउनों के साथ बायम हो गई थी। भरहुम नबाब सघाबत घसी साहब के हस्तकाल के बस्त हमारे खजाने में बीबह करीड़ रपया या घीर बीब में एक लाब सिपाही। नबाब घाजीउद्दीन हैबर के खजाने में यह निबती बार करीड़ घीर नब्बे हजार पर घाई। नबाब नामिरउद्दीन भरहुम के बाब मोहुम्मद घसी साहब तक यह मिर्क एक करीड़ घीर घसी हजार हो गई। हमारे बाबिब साहब ने हमारे लिए ६२ साम रपया

धीरे धीरे हवाएँ सियाही छोड़ें। धीरे यह सब धीरे धीरे इस्ट इंडिया कम्पनी की गजर हुआ। कहीं नेपाल की जंग का गहना पैदा हो गया, वहीं कम्पनी की धम्पकनी हल्लाट की कमबोरी सबक बन बैठी। हमने मरद ही धीरे बोली का फर्क निमाते हुए कर्कषा किया। हमारा सभी सखा हमारे हाथों से धीरे-धीरे छीन लिया गया। धाज हमारी पीज दे न सकत है धीरे न हिम्यत। हम सोचते हैं, सबक की गवाही की हानी इतनी बेरोमक क्यों बन गई है। हमारी पीज हमी से क्यों जुदा हो गई? सब हमारे रेजीडेंट साहेब बीरे पर रवाना हुए हैं। हमारे कुछ बुजुर्गों का कहना है यह बीरघात है। बुदा जाने। लेकिन हमारे बुजुर्गों की कहानी हमारे सामने है। न जाने क्या होने वाला है धीरे क्या होया। सब हम बकराते हैं धीरे हमें धराब की याद सघाती है। इसका सखा हममें जोश पैदा करता है। हम अपनी मीठ का पय दूध बाते हैं।”

“भातमपनाह की सचीयत सामय नासाज है।” साहेब अवय का हथ धीरे पांचवें बाम की धीरे बढ़ते देख अक्षर ने टासना बाहा धायम करना ज्यादा मुपीर होया।”

“भायम कहाँ?” दाह ने उत्तर दिया “भाज दिस के धीरे में मुम्हें अस्मियत रिवाजा बाहते हैं बेयम। पुनो। बीरग ने कहा हमें रिमाया पर इस कबर मरोसा नहीं करना बाहिए, जितना हम कर रहे हैं। उन्हें बुदा बा हमारी रिमाया हमारे इन्तजाम के खिलाफ धायब धिकायनों देव करे। हमने मना किया। यह कहते थे बीरे की इजाजत मत दो, लेकिन हमन इनाजत दे दी। सब कबर गबीस गयी बातें कहते बा रहे हैं। स्लीमन साहेब जानबूझ कर लोगों को हमारे खिलाफ सकसा रहे हैं। बेयम जब हम ऐसी बातें सुनते हैं तो हमें धराब याद आती है। हम उसके मजे में अपने आप को डुबो देना बाहते हैं।”

“भाता हमराव” अक्षर दाह की निश्चित मनस्थिति से सब

भीठ उन्हें टोकने का उपाय करने के लिये बोलने पर उत्सुक हुई, किन्तु छाह ने न माना। वह धामे धीरे भी कुछ कहने के लिए उत्सुक ने। अंतः स्वे नहीं धीरे बोलते गये “हमें सराब पीने की इच्छा होती। इस वक्त अस्तर जिस वक्त हम देखते हैं सच्चाई धीरे ईमानदारी की कीमत धाव गया है। स्वीमन ने हमें मकीन दिखाया पवनर जनरल के अंत से बाहिर बा। धीरे से हमें जलीम किये जाने की कोई मन्दा नहीं। अब यह नया रबैया अस्तरार किया गया है। हम बिना सराब पिए इन बातों पर और भी नहीं कर सकते। बालेमन बिना पिये हमार होख हवास जाता रहता है।

अस्तर ने बालोधी बारण कर ली। छाहे अरब धीरे भी बहुत कुछ कहते रहे। अंत में नींद धामे जगी तो पलंग पर आ सेटे। अस्तर उनके पैरों के पास आ बैठी। कुछ देर बाद सो गए। लेकिन अस्तर को नींद न आई। धाव की बातों से छाहे अरब के भीतर की पीड़ा धीरे निराशा किन्तु स्पष्ट थी। उन्होंने जैसे सराब पीने का शोव स्वी कर करते हुए उसका कारण बता दिया था। लोगों की मक्काठी धीरे बालाकी में अब उन्हें अपनी धीरे अपने अस्तित्व की सुरक्षा न जान पड़ी तो वह क्या करते? एक निराशा क्या कर सकता है? ऐसाही। जिस की गर्मी में सही बने वाला अपमान का भाव वह जाए। बाजिब बली छाह को यही रास्ता मसन्द धामा था। कमठ राजा निराशा की जलन से बचने के लिए सराब की प्यालियों धीरे हरम की पलियों में छोने की बाध्य हो गया। धारम्य से जिसे हकूमत की इतिमी नजर आ रही हो वह बटनाधी के मुकाबले क्या करेगा? यही कि पूर्व कस्किट बुर्माप्य की विमीपिका कपी बालामुली है बचन को यहाँ-वहाँ दुबकता फिरे। धरिध धीरे अस्तम्य एसी स्थिति में धारम-हत्या कर छकते हैं। धारमाभिमान के लिए वह भी कठिन है। धीरे जिसक पास धामोद प्रमोद के अर्धरय साधन हों वह तो नृत्य-गीत धेरो-सावरी, धारा

घोर मस्झाहों में अपना सब कुछ स्वीछाकर करने पर बड़ी मरमना से तैयार हो बाएया। बाबिब भाली की स्थिति बही थी। जब उन्होंने देखा मुटेरे मुटने की तैयारियों पर कमर बस चुके हैं और उनके करने को कुछ भी रोप न रह जाएगा तो उनकी प्रवृत्ति से जीवन के मुक्त धाए। हुरप और मरिबम का आगम्य धाया। धराब का मया बहा। उन्होंने सोच लिया जब सभी कुछ जाना है तो क्यर्ब का बाल क्यों करें। क्यो जीवन के महत्वपूर्ण पल उन चिन्ताओं में डूब कर पया हैं जिनका कोई हल बही कोई उपाय नहीं। और मरिबम के जाने ही मस्झिफ में सुप्तावस्था में यह विचार संचेत हो गया। जाग गया।

सुबह साह धक्क को देखने पर राग का कोई प्रभाव नहीं प्रकट हुआ। वह हँस रहे थे और धक्कर में बहुत सी बातें कर रहे थे। ऐसा लगा जैसे रात वह सबकुछ मंथ में न। धक्कर हिरान हुई। धाखिर यह वृक्ष क्रिय मिट्टी का बना हुआ है। और उन बल तो उनकी आत्में भव भीत हो गई जब उन्होंने स्लीमन के सम्मुख न मिनी गई से नई सूचना पर अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत किया।

वह धक्कर से बोले कम्बका खबरनबीत कहना है स्लीमन माइब वीरे में हमारे बिलाक छांट-छांटकर बाकनाम इबटल कर रहे हैं। भवा यह कैसे मुमकिन है। वह हमार दोस्त हैं। धभी कल ही नकी तो साहेब उनसे मिल कर सीते हैं। उनकी मारकन स्लीमन साहब ने कहनबापा है। साथ मुल्क हय-मरा और सरमझ मिया। कही किमी से बिकावत नहीं की। उकर खबरनबीत का विमाय बहक गया है।”

घात के जाने के कुछ देर बाद बड़ीबहीना धक्कर के पास आया। मरिबम ने धक्कर से मिलने की इच्छा व्यक्त की थी। बड़ीबहीना ने कहा “उम्हें धायब घाब आ गया हो कि जिधनी बार घाप उनकी निद मत करती रही थी। इसीलिए बुसबा रही हैं। मेरी राय है धार मना जाना है। घाप का वस्तु जानन नहीं।” धक्कर हँस की। बचीर की

समझ-बुझ वह मरियम से मिलने बाराबरी चल बी ।

मरियम बीमार बी और उदास भी । घस्तर ने पहुँचकर देखा तो प्रतीत हुआ जैसे वह अपने बिस्तरे पर पड़ी घस्तर की प्रतीक्षा कर रही हो । घस्तर ने पूछ लिया आपने याद किया या मरियम थागा । तब पठ कैसी है ?

मरियम उबियत का हास बताने के स्थान पर कहने लगी "मुस्ताने कैसर ने बाराबरी धागा कम कर दिया है बाबीब घस्तर । मैं तुम्हारी मदद से उनकी इजाजत लेना चाहती थी । कहा जाता है धाग कम तुम्हारे यहाँ उनकी धामद घस्तर होती है ।"

"उनकी गवाबिब है यह धागा । लेकिन धाग क्या चाहती है ? क्या कैसरे जमा से मिलने की दिल बेकदार है ? धागने बहुतबाया होता तो वह सी काम भूलकर धागके पास बीड़े धाते । उनका मित्रा बहुत नर्म है ।" घस्तर ने कहा ।

"मैं जानती हूँ । लेकिन कुछ मेरा दिल उनके हुनूर में बड़कता है घस्तर महम । इसीलिए बुलबाना मुनासिब नहीं समझ । अब तुम मेरी मदद करो तो कहूँ । यहाँ तुम्हारे अलावा और कोई ऐसा है भी नहीं जो मुझ से हमदर्दी करे ।"

"हुनम बी धागा हुनूर । मैं हर मुरत जैसे पूरा करने की कोशिश करूँगी ।"

"कल इतबार है । ईसाइयों का पाक दिन । बहुत दिन हो गए मैं बिजो नहीं गई । चाहती हूँ कल अपने ईसाई बाइयों के साथ मिलकर पाबरी के सामने जुदा की इजाजत में बाइबस की गलीहों बोहराऊँ । डिम्बगी का मरोसा नहीं । मजहब बदला या चुना है । मगर दिल नहीं बदल गया । चाहती हूँ अपने जुदा से कुछ माँगना । इसलिये "

एक नवी समस्या में उसका आई थी। क्या मरियम के घस्तर में बिपरी कृटिलता तक साहू की जोती बृष्टि पहुँच चुकी है। घसर नहीं तो उन्होंने ऐसा प्रश्न क्यों पूछा ?

उसी समय साहू ने फिर कहा "हमारी राय है मरियम बेबम के साथ साथ सब चीजें मिलें जायें। दुधा के कीरन बाव यही सवाल मरियम से करें। जो बबाब हैं हमें उससे धामाह करें। हम उसके मुन्हाबिर रखेंगे।

मरियम ने साहू की धावा मरियम को सुनाई तो वह घस्तीकार न कर सकी। बल्कि कहने लगी वह खुद पहले से घस्तर को अपने साथ ले जाने का विचार कर रही थी। घस्तर ने साहू का प्रश्न उस पर प्रकट न किया। किन्तु मन ही मन उसका उत्तर सुनने की वह बहुत बेचनी से प्रतीक्षा करती रही।

अगले दिन पासकी में बैठा मरियम को पिछे ले जाया गया। दूसरी पासकी में घस्तर बैठी। दोनों पासकियाँ पिछे के बाहर रोक दी गईं। मरियम जली गई किन्तु घस्तर नहीं बैठी रही। कुछ देर बाद निम्ने से मोप निकलने लगे। साथ की बांरी से पूछा तो पता चला मरियम बंटा घाबा बंटा पादरी साहू से बातें करने के बाद घाटी है। वह पासकी में बैठी रही।

उस समय मरियम जोसफ के मकान में पहुँच चुकी थी। हालाँकि उसकी तबियत ठीक नहीं थी किन्तु पादरी साहू ने उसके लिए दूसरी पासकी का प्रबंध करवा दिया। जोसफ उसे देख हैरान रह गया। उस ने पूछा "इस हालत में यहाँ तक क्यों जली आई मेरी ? मुझे इतना बरबाद हो रही है। मैं मुरा घा जाता।

मरियम ने इनका उत्तर न दिया। उसने अपनी बात कही फिर, से नाजम्मीय हो जाने से पहले मुम्हारा बबाब सुनना चाहती थी जोसफ। मुम जानते हो मैंने दिसो दिमान से हुमेसा मुम्हें प्यार किया है। मुम्हारे

कहने पर मैंने अपना सबकुछ बेचा। अपना ईमान और अपना पसीरा बेचा। अब मुझमें क्याबा बरकरार नहीं। चाहे अब भी कोमा बैठे मेरी कह कांपती है। तुमने कहा था नाम पूरा हो जाने के बाद तुम मुझे साथ लेकर अब भी हज़ूमत की पगुँप से बहुत दूर से आओगे। बोलो क्या अब भी इस पर तयार हो ?

बोसफ़ कृटिलता से मुस्कराया और बोला "बहुत ज्यादा सोचने की बजह से तुम परेशान मगर भा रही हो। मगर मेरा विमान अभी बेकार नहीं हुआ। काम पूरा हुआ ही कहा है जो अभी इन बातों पर माया पन्नी की जाये।"

"क्या तुम्हारा मन्सा है मैं बाबिब धसी साहू को जहर से बुझी घराब लेकर मार जाऊँ ? क्या उस वक़्त तुम्हारा काम पूरा होगा ? क्या मैंने आज तक तुम लोगों के कहने पर वह सब कुछ नहीं किया जो मुझे नहीं करना चाहिए था। बज़ीर के खिलाफ़ मेक बादसाह को दलतफ़हमी में उलझाना मेरी बजह में मुमकिन हुआ है। स्लीमन साहब के मामुराद बीरे पर साहे आज़ा ने मेरे कहने पर घर झुकाया है। बोसफ़ क्या यह सब काफी नहीं ? क्या तुम लोगों के दिलों में ख़ुम निस्कुल नहीं। तुम बईमानी से किसी बदलमीब को उजाड़न की बाबिब में क्यों हिस्सा से रहे हो ? क्या भिलेया तुम्ह और तुम्हारे स्लीमन बाइब को ?"

बोसफ़ मरियम की मर्मभरी बातों से बिचलित हो गया। उसने एकदम गम्भीरता बाबिब कर सी धीरतब ज़तर दिया 'स्लीमन साहब को क्या भिलेया क्या नहीं इतना मैं नहीं जानता। लेकिन मेरी धपनी और तुम्हारी बाबत कहकर जानता हूँ। अब भी बाबसाहब का धात्मा मजबूत भा चुका है। कोई रोकना चाहे तब भी रोक नहीं सकता। हम इस काम में अपने सबकुछ भाइयों की गिरावट कर रहे हैं यह हमारा पद है। हम न सही अच्छे बुरे पदा हो आये। धीरे धीरे

बैंगन घीर बसीहू घाली भी घालिस हूँ ।”

साहू ने विरोध किया ‘ बईं साहेब को चकर गलत इतना? मिनी है । बैंगन जैसे बाबमी से ऐसी उम्मीद नहीं की जा सकती । वह बाबिर गहारी फिससे करके अपने दोस्त बाबिर घाली साहू से ?

नकी लां बोले रेबीबेंसी से इस्तिजा हुई है इन गहरों के पितापूजीबी कामवाही की जानी चाहिए । जिसने भुमानी के डुहर मे मैं इसीसिये हरिहर हुया है । इन्दाबत हो तो हकीम बईंवाणी के मकान पर सीका बैबकर छापा मारा जाए ।”

‘नही बकीर साहेब मही । साहू ने जरे हुए कष्ट से उत्तर दिया ‘घाप बबरन एक मामुमकिन बात को सब साबित करने की कोशिश क्यों कर रहे हैं ? हम कसे यकीन कर लें कि हमारी बही रिषायो जो हम से घबहूँ मोहम्मद करती है हमारे पितापू गहारी करेगी । और उनकी छरपरस्ती के लिए बैंगन ठीमार होंगे । बही बैंगन जिन्हें हम अपनी घांजों से ब्यादा बबीब नागते हैं ।

“मुस्ताबी मुसाफ बाबमपनाहूँ” नकी लां ने कहा ‘रेबीबेंसी में इस तबत तक पहुँचने का कोई न कोई मादुल जरिया चकर होया । बईं साहेब को घाप लागते हैं । वह कभी बलवक्याली से काम नहीं करते । फिर मैंने जुना है उनके बईं साहबतक भी यह बात पहुँच चुकी है । ऐसी मूरत में हमें औरत इन्तजाम करना चाहिए । हकीम बईंवाणी के मही बहून से सोप जया होते हैं जो जिसनेभुमानी के पितापू गहर कादुनी मरबरे करते हैं । उनके नापाक इरादे पूरे हों इससे पहले उनके विरोध को मेस्तोगाहूँ कर दिया जाना चाहिए ।”

‘यपर उनके इरादे क्या हैं, अब तक यह पता न चले हम कैसे कोई काम उठा सकते हैं ? नकी लां बयाबत भी जाती है उन बारपाहूँ के पितापू जो बुम्पपरस्त हो हरिम्मा घीर घालिस हो । हमसे इस तरह की चिकाचत किसी को नहीं । फिर कैडे मुमकिन है सोप हमारे

बिनाफ्त पहारी पर आभाता हो सकने हैं। नहीं अब तक हम ईंग्लिश में इस मुतासिक बात न करें कुछ भी करना और मुनासिब है।

नकी का ने अपनी बांका प्रकट की 'बाग आहिर हो गई तो मुख रिम कसर हो जाये। हमारे हाथ कुछ न समया।"

मगर बाहू फिरे भी न माने। नकी का कया गया। बाहू ने उसे हिदायत दी कि रेडीहेंसी को बना जवाब दिया जाता है। हमने बाहू वह जवाबी से धम्मर को भुगने हुए करने लगे। आपने मुना बदाक हुकारे बिनाफ्त पहारी का ईनकाव हो चुका है। धम्मर की रियायत में यह गई बात है। सभी तो हमें पाराव की नकलको होनी है। क्या एक बैलदार बाहू हम तीलीन को बनावन कर सकता है ?

उन्होंने कनीज भेज कर ईंग्लिश का नकल करवा लिया था। कनीज गई तो धम्मर ने मीठे स्वर में बाहू की आश्वासन दिया 'हुकूरे धानी की मायुमी पिछून है धाका। हमारी हुकूमत में बमावन नाम मकिन है। बाहू साहब धम्मर हुकूर की बाग जान दीजिए। वह रेडीहेंसी के सामने बजाव नहीं दे सकने। लेकिन हम जानने हैं हमारा बमीर बागता है। हमारी निधामा हमने लपटा नहीं। ऐसी मूरत में नहापी का सवाल नहीं उठता। ईंग्लिश बाहू में मानूस हुआ तो धावद धम्मरत मायुम है।"

करीब भाव बंटे बाहू ईंग्लिश का मय। धम्मर को नहीं छोड़ बाहू धाई सत्तामय अनगमनिल के बड़े कमरे में धाए। उन्होंने ईंग्लिश को बनने बराबर बैठ लिया और नकी का की दी गई मुखना प्रकट की। ईंग्लिश मुनकर एकदम बराव मय, फिर मकायक अपने धाप को संयत कर उठर देने लगे "योर मीनेसी को इतिहासगत नहीं मिनी। हुकीम बरावानी से यहाँ कुछ सीव जमा होते हैं। उनमें मैं और कनीज धफी भी धामिल है। लेकिन हमारा नकल हुकूमत के बिनाफ्त पहारी करने से नहीं है। एक मिल बँटकर धावे वाली मुलीवत से मुनकारा पाने की

बैंगन घीर बसीह घाली भी घामिस हूँ ।
साहू ने बिरोध किया बई साहेब को खरक घमल इतना मिली

है । बैंगन जैसे घायमी से ऐसी उम्मीद नहीं की जा सकती । वह
बाबिब घाली बिरोध करेसे अपने दोस्त बाबिब घाली साहू से ?”
नकी खा बोले रेजीडेंसी से इतिबा हुई है इन गद्दारी के बिनाफ

फौजी कार्यवाही की जानी चाहिए । जिसने मुगानी के दुश्मन में
इसीलिये बाबिब घाली है । इजाजत हा तो हकीम बईबानी के मकान
पर मोर्रा देखकर छापा मारा जाए ।

‘नहीं बकीर साहेब नहीं । साहू ने मेरे हुए कण्ठ से उत्तर दिया
‘घाय बबरन एक मामुमकिन बात को सब साबित करने की कोशिश
क्यों कर रहे हैं ? हम कैसे बकीर कर लें कि हमारी बही रिमाया जो
हम से घबहुर मोहब्बत करती है हमारे बिनाफ गद्दारी करेगी । घीर
उनकी सरपरस्ती के लिए बैंगन तैयार होये । बही बैंगन बिन्दे हम
घपनी घाली से ज्वाबा घाली मानते हैं ।

“मुस्ताखी मुघाफ घालमपनाह” नकी खा ने कहा ‘रेजीडेंसी में
इस सबर तक पहुँचने का कोई न कोई माकूल जरिया खरक होया ।
बई साहेब को घाय जानते हैं । वह कभी घलतफ्याली से काम नहीं
करते । फिर मिन मुना है उनके बड़े साहब तक भी वह बात पहुँच चुकी
है । ऐसी मूरत में हम घीरन इम्तजाम करना चाहिए । हकीम बईबानी
के यहाँ बहुत से लोग जमा होते हैं जो जिसने मुगानी के बिनाफ घीर
कानूनी मरकरे करते हैं । उनके नापाक इरादे पूरे हों इसघ पहले उनके
बिरोध को नेस्तोनाबूर कर दिया जाना चाहिए ।”

“मगर उनके इरादे क्या हैं जब तक यह पता न चले हम कैसे
कोई कदम उठा सकते हैं ? नकी खा बयामत की जाती है उस बारणाह
के बिनाफ जो जुम्हगरस्त हो बरिन्दा घीर घामिस हो । हमसे इन
तरह की घिकायत बिनी को नहीं । फिर कैसे मुमकिन है नाम हमारे

बिनाफ नहारी पर धामारा हो सकते हैं। नहीं जब तक हम बेग्नम से इस मुतासिक बात न करें कुछ भी करना गैर मुनासिब है।”

नकी खां ने अपनी सिका प्रकट की “बात बाहिर हो गई तो मुज रिम फरार हो जायेंगे। हमारे हाथ कुछ न लगना।”

अपर बादशाह फिर भी न माने। नकी खां जसा गया। बादशाह ने बड़े हिदायत की कि रेजीडेंट की क्या जबाब दिया जाना है। इसके बाद वह बरासी से अकटर को घुस्ते हुए कहने लगे “आपने मुना बेघक हमारे बिनाफ नहारी का इंतकाब हो चुका है। अकटर की रिमायत में यह नई बात है। तभी तो हमें अकटर की तबजकी होती है। क्या एक बेखदार बादशाह इस ठीहीन को बदरिस्त कर सकता है ?

उन्होंने कमीज मेज कर बेग्नम को तलब करवा लिया था। कमीज गई तो अकटर ने सीठे स्वर में बादशाह को आदबासन दिया “हुकूमत की मायूसी फिजूल है आका। हवायी हुकूमत में बसाबत नामु मफिज है। बजीर साहब अम्मा हुकूम की बात जाने बीबिए। यह रेजीडेंट के सामने जबाब नहीं दे सकते। लेकिन हम जानते हैं हमारा बजीर जानता है। हमारी रिमाया हमसे लफ्त नहीं। ऐसी सूख में नहारी का सवाल नहीं उठता। ईग्नम साहब से मामूम हुमा तो धामब अस्तिमव मामूम है।”

करीब धाय बटे बाद ईग्नम धा गए। अकटर को वहीं छोड़ बाद शाहे सत्तामत् अठरमजिल के बड़े कमरे में धाए। उन्होंने ईग्नम को अपने बराबर बैठा लिया और नकी खां की बी गई सूचना प्रकट की। ईग्नम मुनकर एकदम अकटर धाए, फिर अकटर अपने धाय को संयत कर उत्तर देने लगे “घोर मैनेस्टी को इतिमा नमत नहीं मिली। हकीम बदशामी है यहां कुछ लोप जमा होते हैं। उनमें मैं घोर बसीह अली भी शामिल है। लेकिन हमारा अकसर हुकूमत क बिनाफ नहारी करने से नहीं है। हम मिल बैठकर धाने वाली मुमीयत से छुटकारा पाने की

पन्द्रह

स्लीमन की बापसी का समाचार मिला तो मखनद के नाके पर दरबार के घाला हाकिम, ऐजीडेसी के नीकर-बाकर और धाहें घबब की घोर से मिर्बा हदमत स्वागत के लिए आए। स्लीमन तपाक से मिला और शीरे का महत्व प्रकट न करने की मुस्क की तरहगी घोर बुघहासी का बिक करने लगा। यह समाचार धाहें घबब तक पहुँचा बिसेसे यह मन ही मन सम्पुष्ट हुए।

जेंट होने पर स्लीमन ने उनके सम्मुख भी ऐसा ही प्रकट किया। घबब की घाबासी और तरहगी का बिक करते हुए बोला "गबनर बनरत की हिदायतों के मुताबिक मैं बीघ कर पकर आया हूँ। मगर मुझे इन्तजाम में कोई खामी नजर नहीं आई बिसे बेरमासूती कहा जा सके। और हाइ किस मुस्क में नहीं होते। बापों की घाबासी में धिकायत करने वाले हो-बार हुआर घाबसी निकल घाना भी बासूती बात है। मैं बापको मुबारकबार पेघ करता हूँ और मैनेस्टी की हुदमत पर कपा हुआ कसक बैबुनियाद साबित हुआ।

धाह की बाँछें बिल गई। स्लीमन ने उनके मन की बात कह दी। घसकी प्रसन्नता के बिसे जम्होनि तुरंत उस लड़की का बिक किया बिसे हिदायत में नें धाही इन्साफ के लिए लाया गया था। बिसे मुकदमे का मुर्द नुद स्लीमन था। जम्होनि बोला "क्या बाप उस लड़की को बजा देना चाहते हैं, घसने बापके साथ रहते बापके बिलाफ कोई बाबिघ की?"

"सिर्फ उस लड़की के बिलाफ नहीं और मैनेस्टी स्लीमन ने कहा "मुझे दूरे एक गिरोह के बिलाफ धिकायत है। इस लड़की के बाप

बख्श में हारों बावली है। उन सब का मकसद बनाव के बिना बपावत करने से है। यह मुझे रेजीडेंट नहीं देखना चाहते, आपकी बावसाह और बजीर की बजीर नहीं देखने की ताब रखते। और बुर बेमन उनकी मबर कर रहे हैं।”

“हमें बताया गया था मिस्टर स्लीमन” बाइ ने उदात्त स्वर में उत्तर दिया “अगर हमने बैंगन से बात की तो ऐसा मामला हुआ जसे यह बपावत नहीं।”

“और मैनेस्टी” स्लीमन ने तपाक से कहा “बपावत की तारीफ किस तरह की जा सकती है। क्या मैं जान सकता हूँ ?”

“बपावत और कानूनी होती है रेजीडेंट साहब। अगर कुछ लोग मिल बैठ कर आपस में बातचीत करें तो उसे बपावत नहीं कहा जा सकता।”

“और मैनेस्टी मैं सुझावी बाहुया। अगर एक सबाब बैदा बकर होता है।” स्लीमन ने सोचते-बिचारते बनाव दिया “कुछ लोग मिल बैठें और फैसला करें कि स्लीमन को बपाव से बचा देना चाहिए तो आप उन्हें रोकेंगे नहीं ?”

“बकर रोकेंगे। यह हमारा फर्ज हो जाता है।”

“और उनमें जाने यह फैसला हो कि अगर आपकी तरफ से कोई ऐसा कदम उठाया जावे कि बपाव की बावसाहत आपसे छीन कर आप के बार्ड मिर्बा हस्त को दे दी जाय तब ?”

“यह नामुमकिन है मिस्टर स्लीमन। यह हकीकत बपावत है। हम”

“मैंने यही बात बुर उत लड़की के मुँह से सुनी है। उनका कहना है हकीकत बर्दानगी के यहाँ यही लोग जमा होते हैं जो आपके बिनाफ हैं और जिन्हें आपकी बावसाहत बंधूर नहीं। उनकी बावों में हमारी आपकी दोस्ती बुरी तरह बटक रही है।”

घाही पनाह मिसी लो बीरे की रिपोर्टें में लम्बीसी होमा मुमकिन है ।”

कंपटी बाबाब को बरखस संयत कर बाह ने मुस्तुराने का निफस प्रयत्न करते हुए उत्तर दिया “हम अपने बोस्त को नाराज करने का विचार कभी नहीं करते बजीर साहेब । उन्हें इतिहा भेज दी जाय कि अगर ईंग्लिश बीरे बलीह घाली का इस बेरफानूनी काम में हाथ हुआ तो उन्हें बकर सजा दी जाएगी । बाह उनसे हमारे जैसे ही तास्नुक क्यों न हो ।”

नकी खां को उन्होंने सबबा बादेश दिया “मीके की तलाश रहे । हुकूम साहेब के मकान पर सिपाही तैनात कर दिए जाएं । बावम्बा उनकी मजलिस हो, बीरे सोच बहो जसा ही लो उन्हें बीरेन निरफ्तार करवा दिया जाने ।”

नकी खां छिर हिजाया बहो से जसा पया ।

समाचार स्लीमन के पास पहुँचा । वह सन्तुष्ट नजर आया । उस समय बई बीरे ओसफ निकट बैठे थे । स्लीमन ने ओसफ से कहा “अगर तुम्हारी इतिहा सही है तो कम्पनी सरकार तुम्हारी पहचाननब होनी । धाने लो होने वाला है बाबाब की इरफतें पड़बड़ी पैदा कर सकती हैं ।”

ओसफ ने उत्तर दिया “मैं बहुत धानबीन के बाद इस तरीके पर पहुँचा हूँ । उस दिन बीरे मुन्गी नकी खां इकीम के मकान से निकल रहा था । मैंने अपने एक मुसलमान बोस्त की बारफ्त पया लगवाया । उसने लो वहाँ तक कहा इनके साथ अपने पुराने बजीर साहेब भी हैं ।”

‘बाह ।’ स्लीमन ने उत्तर दिया “अगर वह सच हुआ बीरे घाली-मुहोला भी बीरे सोपों के साथ पकड़े गये लो हमारा यस्ता बिस्तुत ताफ होगा । मेकिन बीरे मुन्गी की बात का कोई इतमिनान नहीं । वह

पावन हो गया है।”

“अब उसका विमाध ठीक है जमाव।” जोसफ ने कहा “बहु इसरत के मकान पर चढ़ चला है।

“धीरे इसरत ? उसके बारे में क्या पता चला ?” स्लीमन ने सवाल किया।

“उसका कुछ पता नहीं। एक धीरे सतरनाक खबर है। सुनते हैं राष्ट्र पंचा सिंह को बाती नहीं से पकड़ जाये हैं। बानो के मुकदमे में उसे बरीर बचाह देव किये जाने की खजबीर है। वह साबित करेगा बनाव ने साबित करके धमीनुहीना को निकलवाया है।

“बकने बो” स्लीमन हँसता हुआ बोला “बाजिर प्रती छाह किसी बात का मकील नहीं कर सकते। मैंने उन्हें साफ तीर पर धरती धर्त कहलवा येनी है। अगर उन्होंने मेरी मर्जी के बिनाफ काम किया तो मैं उनकी दोस्ती चुका चुका।”

इस बार बर्ब से न चला गया। वह बीच उठा “बहु बोला है। सर, हपारे बिने ऐसी बोनी सरकीबी का इस्तेमाल मुनासिब नहीं। जब धान मक्नर को धक्का की हुमुमत कच्चे में लिये जाने की सिफारिश कर चुके हैं धीरे बस्व वहाँ से बाबछाह के लिये गए हुसम धाने का इतबार कर रहे हैं तो हिम् मीविल्टी को इस तरह क्यों बहलाया जा रहा है ?”

“बहु पाबिधी है बर्ब। तुम नहीं समझोये। बिदिध सोम हुमेया एक जपून की मागते जाये है। हु-मम की मोहम्बत की बातों से बाजिर तक जसभाए रखो। तुम देखना, हम यहाँ से तबादले पर अब बरत भायेब जब बाबछाह की बाबछाह बरत हो जायेगी तब भी बाजिर प्रती गरी धानदार बिबाई करेये। उन्हें बाजिर बस्त तक हमारी दिवानत गरी पर मुवा न होया।”

“धमा भीमियेया सर” बर्ब से न चला गया। स्लीमन की मक्कारी की बातों से पीड़ित हो उसल कहा “आपने बाबछाह सतावत को निजकुस

नाबान समझ रक्ता है। धाप का क्या है वह धापकी सरकीबों से घागाह नहीं धीर धापको अपना हम-ब समझते हैं। मगर यह बिस्कुन पमठ है। वह धापसे धीर धापकी कम्पनी सरकार से खोंक खाते हैं और इसलिए धापकी बीस्ती का हम भरते हुए धापकी मुतास्तिर करवा चाहते हैं। लेकिन वह बेचारे नहीं जानते धाप अंधा पहले है, बीस्त बाद में।”

“तुम हमारी लीहीन कर रहे हो बड़े।” स्लीमन ने तेज स्वर में कहा “तुमने दुसरे बाख्ताब में हमें बेईमान धीर मक्कार कहा है।”

“मैं कुछ ऐसी बजती नहीं कर उछटा घर, बूझि इसमें बाघर धापका धाप है रहा है। लेकिन जिसकी जो अस्तिवत होती है, धापने धाकर रहती है। धाव यह बात हमारे बम्पन है कम तयाम बुनिया के बम्पन होती। लेकिन इसका गठीबा मुझे साफ नजर आ रहा है। अगर हम इसी तरह एक के बाद एक रिवाजत तबाह करते गए और बाख्ताबों को उनके बापबूक से यहूक करके मए तो एक दिन बड़ा बत की खतरनाक धाग हमारे धीर हमारे बाबबज्जों को मुसत बातेबी। वह दिन क्या बुर नहीं। नागपुर, अठारा बिल्सी पंजाब एनबूतान, चारों तरफ के बाख्ताब हम से नाराज हैं। हमने इन्हें बेनुबान बकटों की तरह हमारा दिया है। इसका बदला यह हमारे बज्जों से लेंगे। धीर तब कम्पनी सरकार को यहगुप्त होया हिम्पोस्थाप में हुक्मनत के लिए पाँच बमाने हैं तो इनकी बुरमानी से नहीं बीस्ती है बाव निकातना होया। जो कुछ हमारे कज्जे में है हमें लोपी पर सत्र करना होना। क्या पाँच पैनाये मए तो एक दिन उन्हीं पाँचों को काट फेंका जाएगा।”

“बड़े” स्लीमन न डोचते हुए कहा “तुम्हारे मुँह से बज्जबत की बू धा रही है। हम जानते हैं तुम सार्ड पराने से तात्मुक रहते हो और बहुत बुर तब तुम्हारी पईथ है। लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि तुम अपने सातिबों के जिनाफ पहरे जपलो। हम इसकी रिपोर्ट बज्जरे

जमरत को करने पर मजबूर हूँ।”

“वर की मुजालफत महुँगी पढ़ती है जनाब । वहाँ ने निश्चयता से उत्तर दिया “मैं भीफरी चले जाने से या कँद काटने से नहीं करता । लेकिन इससे पहले आपको कुछ सन एबर्नर जमरतों की कहानी से सबक लेना होगा जो हिन्दोस्तान में ब्रिटिश हुकूमत जमाने में घपभा भून बचीना एक कर एमयर क्यों ही इगर्ज में उनकी जामिमाना बास्तानें घाबा हुई, बारों धोर से उन पर धर्म बरसाई गई थीर उनके खिलाफ कानूनी थीर पर कारंवाही हुई । यह घाप भी जानते हैं धीर में थी । हमारी दबनमेंट होमानवादी धीर इंसफ का नाटक खेलने में माहिर है । इस बककर के नीचे जाने वाला तबाह हो जाता है । चाहे वह घाप हों या मैं । सबक की बास्ताना अस्मियत के साथ बाहिर हुई थी इम्मेड के सरीफ लोग आपके खिलाफ घाबाई मुसल करेने । नतीजा क्या होया घाप समझ सकते हैं । मैंने बादशाह की मजबूरी पर एहम आवे हुए चन्द घलफाज कहे हैं अगर उनमें आपको बगावत की बू नजर आती है तो मैं कहूँगा घाप जो कुछ यहाँ कर रहे हैं वह सरासर बगावत है । कम्पनी सरकार के साथ जुनी बगावत । क्या कम्पनी सरकार घाप से सूझी रिपोर्ट करने के लिए कहती है ? क्या बसका यह हुकम है कि घाप शान्ति वसती गाह को धोखे देते रहें ? क्या बसने यह कहा जा कि मंगल सिंह बाबू के जरिये । तर यह सब घापकी जाती मुस्मनी है जो रंन ला रही है । बादशाह के खिलाफ घाप में मुजालफत भरी हुई है । घाप न जाने क्यों मन ही मन सत बेचारे से जलते हैं । धीर उसी जानबूझ कर बड़े तबाह करने की सबबीरें कर रहे हैं ।”

बड़े बठ कर जला घाबा । रसीमन का बेहरा पतर गया । ओसफ शान्ति से सब कुछ सुन रहा था । उसमें ताहस न था कि वह स्लीमन के अपने मन की बात कहता । स्लीमन शुब इस स्थिति में था कि कुछ न सुन सके धीर न कह सके । बहुत देर इती तरफ़ शान्ति रही । कबरे

का बाठाबरलु घमायास सकंभित हो गया ।

बहुत देर बाद स्लीमन जोसफ से बोला “बर्ब की बातों को बिभास से निकाल दो । कम्पनी सरकार क्या चाहती है क्या नहीं, इसे नहीं मान्युम । हमें घाम के बिसे मुनासिब खबरदारी रखनी होगी । जब बकस नजरदीक है जब मरियम भीरनकी खा की मारफत हमें अपना सब से बहन काम पूरा करना है ।”

जोसफ ने बाठाबरलु की बन्बीरता प्रतीत करते हुए बीबी घाबाब से उत्तर दिया “मह बहुत मुस्किन होया सर । मरियम बकस चुकी है । नकी खा महमूस करले जया है कि बाबघाह की मीठ उसकी बचाए की मीठ होगी ।”

स्लीमन घाबघर्य से जोसफ को बेकले जया । बर्ब के राजों का प्रभाव जब तक मस्तिष्क पर जारीपन पैदा किये हुए था । जोसफ के इस वाक्य ने जैसे ज्वालाबुसा खलीब कर दिया । उसने मरियम के स्थान पर नकी खा को बुरा भला कहते हुए जोसफ को समझाया “उस कुत्ते की इतनी मजाब कि वह हमारी मुलाकफत करे । तुमने उसे बता नहीं दिया, उसकी बचाएत भीर उसकी बिन्गगी बोनो हमारे हाथ है । उसे समझ लेना चाहिये जिस बाबघाह की हमबर्बी में वह हमारा दुखन बनेगा वही उसे पहापी की लका देने पर बहुत बकस तैयार हो जायेगा ।”

“सर घाबब उसकी बेटी की लार्बी ने उसकी माँकी पर से पर्दा हटा दिया है ।” जोसफ बोला भीर बिबघता से स्लीमन को बेकले जया । स्लीमन की स्वीरिबों के मन घमायास बड़ गये भीर उसने हँस हाट्टि से जोसफ की बात का प्रतिबाद किया । जोसफ समझ गया भीर तुरन्त प्रसंग बदल कर दूसरी बात कहने लगा “मगर जब आप को खुद उससे बात करनी होगी । हमारे पास ऐसा मतला मीनूर है जिससे न किर्ब



घौर पुष्प के सलझाने में सलझ कर ऐन बस्त पर बोझा दे रही है। कोई सपाय न समझ था सका जिससे उसे कम्मे में करने का रास्ता निकल पड़ा।

बोसफ बोला "बैठे मैं एक बार महल जाकर उसे समझाने की कोशिश घौर करता मगर मुझे डर है कहीं वह बोध में कोई बझी न कर बैठे। तब बड़ी मुश्किल होगी। हमारा बगावा बिरीध सिद्धी में मिल जायेगा।"

स्लीमन ने नई बात कही "घयर वह हमारी मरब पर ठंवार नहीं तो न सही। मगर तुम्हें उससे मिलकर उसकी ज्बान को ठाठा कर सगवाना होना। उसने कुछ सपस दिया तो हमारी बदनामी होगी।

बोसफ ने उत्तर दिया "इतनी हिम्मत उसमें नहीं है। नहरी तो अब तक कह बेठी। मगर उसे अब तक मेरी मोहम्मद पर यकीन है। बाबघाह का चौक बूझरी बीज है। जिस बात को उसने कहा तो तफ-लीफ कहकर छिपाने की कोशिश की वह दरअस्त घाहे घबघ का डर है जो उसे ज्बान बन्द रखने पर मजबूर किये हुए है। बाबिव घली मोहम्मद में इतना खबरवस्त बोझा लाकर बैन से बैठने वाले नहीं। यह बरियम की हठियत मुचका डालने।

स्लीमन धान्त हो गया।

कुछ देर बाद बोला "उसका ज़िन्दा रहना भी खतरनाक है। खैर" हुकूम बरबानी के बारे में तुम्हारा क्या मुझब है?"

"ती फ्रीसबी घाप से मिलता हुआ। नकी ली बजौर हमारी मरब करे तो हम उन सब लोगों की एक ही बार में धरम कर सकते हैं जो हमारे खिलाफ घाबाज उठायेगे। घौर घाप जानते हैं ऐसा होना कम्पनी बरनेमेंट के पीर जमाने के लिए बहुत जरूरी है।"

"हमने नकी ली को समझ दिया है। हुकूम बरबानी के बर ज़री बस्त घापा मारा जायेगा जब वही बगडन घमीनुहोला घौर बसीह घली बैठे बड़े-बड़े लोग मौजूद हों। बांसपी का मुंह तोड़ दिया तो घाबाज

निकलना थाप से थाप बन्द हो जायेगी ।”

“सुदा हमारी मदद करेगा । हम अपने मजहब और अपने मुल्क के लिये सब कुछ नैक कर रहे हैं । इसमें कलकटें नहीं पड़ सकती ।

“धामीन । स्लीमन अपने गले में पड़े क्रॉस पर हाथ रखते हुए कहने लगा— ‘एक दिन ब्रैंग्डन से मैंने कहा था जोसफ कि उसकी एक-एक बात का बरना लिया जायेगा । मैं येबेनी से उस दिन का इस्तिकार कर रहा हूँ । मुझे उन लोगों से बहुत नफरत है जो हिन्दोस्तानी बाब बाइों के साथ हमदर्दी और मोहब्बत का हाथ बढ़ाते हैं । यह मासूम बाजिर और बेकार हिन्दोस्तान के बाब हैं । उन्हें कम्पनी सरकार की पनाह में जल्द से जल्द घा बाना जरूरी है । ब्रैंग्डन अंग्रेज होते हुए अंग्रेजों का दुश्मन है । वह कहानी और कम्बी बातें करता है । उसे याद नहीं रहा अपने बरों से हजारों मौत बुर घा बाने के बाद एक अंग्रेज को अपने अंग्रेज भाइयों के सफा के बलाना किसी कहानी या बिस्मानी तकसीफ का क्या मत नहीं करना चाहिए । उसका सब से बड़ा फर्ज, सब से बड़ा ईमान सब से बड़ा महजब अपने मुल्क के लोगों की मलाई करने में है । मलाई खोचने और मलाई समझने में है । उस दिन उसने मुझे ज़मीन किया था । अब उसे मासूम होगा वही बाजिर धनी साहू जिसकी हमदर्दी में वह अपने मुल्क के भाइयों को धूम गया है, उसे सजा देना । इस्तीफ की तरफ पर उसकी हमदर्दी को बढ़ाती कदर से उसे ठोकर मारेगा । वह दिन ज़ुलमतीन होगा जोसफ । वह दिन जल्द घाना चाहिए मेरे पसीन । बहुत जल्द ।”

जोसफ रेबीरेंसी से निकला उसी मकत बर्ड ने उसे पुकार लिया । जोसफ इसका कारण सोचता कप्तान बर्ड की प्रतीक्षा करने लगा ।

बर्ड घाना और बोधा—“बाब मैंने छिपकर तुम लोगों की बातें

सुनी है। मुझे पहले से थक था मगर स्लीमन साहेब ने हमें बा मुन्से छिलाने की कोशिश की। बाब यकीन हो गया तुम्हारी बिलकुल मरियम क्योंकर दाही महम में पहुँचाई गई। जोसफ क्या यह सब है कि तुमने बाबिब घाली को इस बानुक इधियार से तबाह किया है ?”

जोसफ ने बात टालने का प्रयत्न किया। लेकिन बड़े लठके बाप हो बिना बीर बार-बार पूछने लगा। तब जोसफ ने अपना मन व्यक्त किया—“बपा आप बाबसाह के मेरे खिलाफ धिकायत करेंगे ? मगर इसका कोई फायदा नहीं होगा। उन्हें मरियम पर बेहूब यकीन है।”

मैं किसी से धिकायत नहीं करना चाहता जोसफ” बड़े ने लबाब स्वर में कहा—“मैं तुम्हीं से एक सवाल पूछना चाहता था। क्या तुम्हारा बमीर इस जुद्ध पर बकुची घामादा हो गया ?”

जोसफ ने उत्तर कमरे छावों में दिया—“ताम्बुब है बड़े साहेब। आपने ऐसा सवाल पूछा है। आप नायब रेजीडेंट हैं। कम्पनी सरकार के मुमानदे। आपका कर्ज ”

“मेरा कर्ज मेरे सब के इम्तहान में टुकड़े-टुकड़े हो गया है दोस्त। घराफत घोर लूट बसीट में पुर्तनी बुखनी है। यहाँ की हो रहा है डकैती है। मैं इसमें बसादा धिरकत नहीं कर सकता।”

“तो क्या आप मोकरी छोड़ देंगे कम्पनी सरकार से महारी करेंगे ?”

“बकी तक यह फँसता धिने नहीं किया है। मगर ताम्बुब नहीं किसी दिन अपनी मोकरी से इस्तीफा देकर बाबसाह की तरफ से बमीर बहकर अपने ही हाथों किये बने जुद्धों का कम्पनी सरकार से बचाव माँगूँ। लेकिन इस बल्ल तुमसे महज एक बात बुझना चाहता हूँ। तुम इंग्लैड की जमीन पर पैदा होने वाले धंधेब नहीं हो। इसी धबध में तुम्हारे जुबुर्प इन्हीं बाबसाहों के लाने में बने और बने हुए हैं। ईनाई मजहब मस्तमार कर लेने का यह मतलब नहीं होता कि तुम्हारा मुन्क भी बल्ल गया। तब कैसे तुम्हारे कजब पर बाबसाह की बेबती बस्न

पैसा न कर सकी ? बताओ जोसफ कम हम न रहे, हमारी हुकूमत न रही तो तुम कहाँ जाओगे ? क्या तुम्हें हमारे मुल्क वाले कुबूल कर लेंगे ? नहीं वह तुमसे नकरा करेगे । तब तुम्हें इसी हिन्दोस्तान में रहना होगा । उस वक्त यह हाकिम यह राजे-महाराजे तुम्हें किस नज़र से देखेंगे । क्या सब तुम्हारे लिए तजवीज़ करने बोली ?”

जोसफ के चेहरे पर बेचर्मी की हँसी बीढ़ गई । उसने बड़ को उत्तर दिया—“मैं इतना धाये तक सोचने का घाली नहीं । जो कुछ आज है उसी को देखना और समझना पराम्भ करता हूँ । और हिन्दोस्तान के इन दुर्बल व ऐसास बाबराहों के बारे में सख्ती तरह जानता और समझता हूँ । अपनी कम्पनी सरकार के मुकाबले यह ईसाई मजहब के सदाय मुसलिक नहीं हो सकते । सीबी सी बात है । हमारा बन्दूक जहाँ हो हम उसी को अपना सब कुछ निछावर कर देंगे ।”

“मगर इस्लामियत और ईशानियत की देखने और समझने की कोशिश तो करोये न मेरे दोस्त । मैं बाजिर घाली की कमजोरी जानता हूँ । मरियम मोहब्बत के सबके में उनकी जान माँग से तो वह खुशी खुशी है जालेंगे । लेकिन मेरे भाई, मैं तुमसे इत्तबा करूँ या तुम ऐसा जुल्म मत कर जालना । मरियम को समझाने की कोशिश मत करना बल्कि तुम स्वीमन से कह रहे थे । ईशानियत से काम लो जोसफ । तुम्हें खुश की जवाब देना है ।

जोसफ ने जवाब दिया—“जवाब आपको भी देना है । आप खुद मरियम को क्यों नहीं समझा बैठे । बाबराह से हमबर्ती है तो ?”

“मेरी मजबूरियाँ मेरे लिए सबसे बड़ी सीधारे हैं । जोसफ, काश मैं कम्पनी का मुलाजिम न होता । काश मैं घरने फर्ब से याकित होकर मरियम की धाँखें खीजने सायक हिम्मत पैदा कर सकता । मगर नहीं जब तक मेरे बदन पर कम्पनी सरकार की यह पीछाक और कर्पों पर यह बिल्ले मने हैं मैं कुछ नहीं कर सकता । मैं बिल्कुल मजबूर हूँ । कर

सकता हूँ तो डिफेंड इतना कि तुम्हारे आगे हाथ पसार कर किसी नेक और सरीफ इन्सान के लिए भीख मागूँ। कहूँ कि जुबान के लिए बात चाबी का रास्ता छोड़ दो। कहूँ कि हिन्दोस्तान के बाधिम्ये मेरे मुस्क के आलाक और ऐमार लोगों के बिने हुए सम्बन्धों की रोशनी में अपने मुस्क और मुस्क की आजादी को न मुना। गुनाह कर मपर इन्स्टा न कर।

जोसेफ बसा गया। बर्ब जड़ा रहा। उसकी बातों का जोसेफ पर कोई असर हुआ हो ऐसा न लगा। वह अपने बंपने बापिस आ गया। उसका मस्तिष्क बहुत बिचिन्न था। बार-बार वह अपने बाप से जुड़ा कर रहा था। बार-बार उसे स्लीमन के व्यवहार के भीतर छिपा पद खोज नजर आ रहा था। कसा है यह व्यक्ति? इतने अपनी आत्मा का हनन कर जाता है? कम्पनी सरकार के लिए अपने ईमान और इम्सा नियत की बाजी लगा भी है। क्या वह सब इसलिए कि उसके मुस्क के लोगों का नाम हो? छफ। वह खुद उसी रेश का निवासी है। नागरिक है और नागरिक के कर्तव्य भी समझता है। किन्तु स्लीमन और उसमें कितना भन्तर है? न जाने वह भन्तर क्यों उत्पन्न हुआ। क्या इसलिए कि स्लीमन का दिल बर्ब के दिल के प्रतिद्वन्द्व हिन्दोस्तानी राजसखों राजों महाराजों और नम्बाओं को अपना और अपने रेश का धनु समझता है और ऐसा है तो क्यों? क्या वह ठीक करता है? क्या कोई पाप नहीं कर रहा वह?

मरियम बर्ब को नहीं पहचानती थी। वो चार दिन बीतते न बीतते बर्ब के न रहा क्या तो एक दिन वह बड़ी-छोटी के हाथ मरियम से भेंट करने सप्तमी तमियत का बहाना लेकर आ पहुँचा। स्वाभाविक ने इसलिए इस पर आपत्ति न की चूँकि वह और बाजिब

धाली घाह की मित्रता का उसे भली प्रकार ज्ञान था। लेकिन मरियम कभी-क से उसका समाचार सुन सकायक मौजक रह गई। उसकी समझ में न आया कि बड़े क्यों उससे मिलने आया है।

आरम्भ में वह मरियम महल से उसके हॉल-बाल पूछता रहा। मरियम उत्तर देती रही। पसग के चारों ओर छत तक जाने वाली ऊँची बड़ी मसहरी लगी हुई थी। इसी को पर्चे का उपनाम दिया जा सकता है। उसकी धाली के भीतर बँठी वह बई से हॉल की मर्यादा के अनुसार बात कर रही थी। लम्बी बई ने उससे पचाँ हटवा देने की अपील की। उससे ओर गम्भीर स्वरों में वह बोला "मैं बाबिब धाली घाह की बेबम मरियम सुकाना से मुलाकात करने नहीं आया था। इस मसीह का एक नाचीब बन्ना अपनी ईसाई बहिन से कुछ कहने और कुछ सुनने आया था। उसके लिये यह पर्चा बिल्कुल बेकार होगा। मुलाक़िब हो तो कभी-क को मसहरी हटाने का हुक्म देते हुए उसे बाई बहिनों की बातें न सुनने का हुक्म देकर कमरे से बाहर कर दें।"

मरियम पर बई के प्रभावशाली शब्दों का प्रभाव हुआ। वह पल भर सोचती रही और तब धाली को मसहरी उठाने की आज्ञा देते हुए वह से बोली "बहिन सुधनसीब है कि एक धाला अफसर उस पर करम करता है। क्या कहें, बीमार हूँ बरना बठ कर अपने माई का हस्तकबाल करती।"

पर्चा उठकर धाली आज्ञानुसार कमरे से बाहर चली गई। बई ने मरियम को देखा। धाली के चारों ओर कासे बड़े फँसे हुए थे। बहुत कमजोर थी। बीमारी ने उसकी सुन्दरता नष्टप्राय कर दी थी। फिर भी मापने वाला धोज प्रकाशित था। चेहरे से प्रतीत हुआ बाबिब धाली का पोला था जामा अव्यक्तिसंबन्ध नहीं था।

मरियम धाली के जाने पर बोली "हुक्म बीजिए मिस्टर बई मैं बन्मसीब आप की क्या सिद्धमत कर सकती हूँ?"

बई ने नम्मीरता से उत्तर दिया “बन्द सबाजों का जवाब चाहता हूँ बहिन मुझे तुमसे कुछ पूछना है।’

मरियम कारखु न सोच सक्ती बाबिर बससे क्या पूछा जाने वाला था। फिर भी वह स्वीकृति में सिर हिलाती बड़े चरम से बई की ओर देखती रही।

बई ने पूछा “मैं आपनी मरियम बहिन के दिन की बहुत बातों से बाकिष्ठ हूँ। वह किससे मोहब्बत करती है किससे ब्याही गई है, क्या मांगती है क्या चाहती है उन सबका ज्ञान नहीं करूंगा। सिर्फ एक बात है जिसका मुझे जवाब चाहिए। मैं जानना चाहता हूँ जिससे मोहब्बत हो क्या उससे बंध की उम्मीद करना बेर मुनाजिब है?”

नहीं। मरियम बई के चेहरे पर लहर बहावे उसके सबाज का महत्व भांपते कहने लगी ‘मोहब्बत का दुसरा नाम बंध है। जो बंध नहीं कर सकता वह मोहब्बत नहीं करता।’

“इसका मतलब हुआ बहिन मोहब्बत के पाक जस्वात के पीछे इंसानियत और शराफत का ठकाना रहता है कि वह कम से कम उस नेक इंसान को जोता न दे जो किसी से बिलोयान की मोहब्बत करता हो?”

“आपका मतलब?” मरियम बई का इशारा समझ गई और कांपती आवाज में पूछने लगी बई साहेब आप किस बदनसीब के मुतास्लिम कह रहे हैं। लुहा के लिए साफ-साफ बताइये। मुझ में पढ़े सिया सुलझान की हिम्मत नहीं।’

बई स्पष्टबादिता से अपने तात्पर्य पर धा गया “मैं बाहराई सत्ता मत के बारे में कह रहा हूँ। वह आप से बेईतहा मोहब्बत करते हैं।”

“लुहा का मुक है।” मरियम की आवाज रमाती हो बई और सब वह बई के मनोभाव भसी प्रकार समझ चुकने के बाद अभीरता से मदिय की आवाज में बुकने-उतराने लगी। बई के पढ़ने बाखु से स्पष्ट

हो चुका था, मरियम के प्रति बेवफा होने का घातक सिद्ध । और अब मरियम को निम्ना हुई यह सोच कर कि बर्ब न जाने क्यों इस अप्रिय प्रसंग को उठा रहा है ।

बर्ब ने कहा "हरम में ऐसी बेवफाई की कमी नहीं है मरियम बहिन को बाबसाह के प्यार मोहब्बत की धाड़ में पड़े पिकार बेका करती हैं । जब सबकी ज़िम्मेदारी में सामान्य और मान्य होती है इसलिये मैं सिद्धांत नहीं कर सकता । अब मुझे पता चलता है कि किसी बेवफा का ठाम्पुक किसी हरीम से है किसी दरबारी या बगीर से है तो मैं यह सोचकर समोस खू जाता हूँ कि अब बाबसाह सत्तामत्त खुद उनसे मुजरिम नहीं तो उन्हें पूरा इक ऐसी गुराघरातों के लिए मौजूद हो सकता है । अगर जब मुझे यह पता चलता है कि बाबसाह सत्तामत्त किसी आस बेवफा से अजहद मोहब्बत करते हैं उसके लिए सब कुछ करने पर आमादा हैं उसे सड़कों की धून से उगा कर महलों की टौनक बना सकते हैं तो मैं सोचने पर मजबूर हो जाता हूँ, वह कौन सी बजह हो सकती है जो उस बेवफा को हिज पैजेस्टी का रिश्ता तोने या उन्हें बख्श करने के मसमूने तैयार करने पर मजबूर करे । आज रैबीडेंसी से चलते बल्ल इसी मुकाम का बचाव पुराने में यहाँ तुम्हारे सामने आने पर आमादा हो गया । बहिन क्या तुम जोसफ के लिए एक मेक और मीने बाबसाह को उसकी बाबसाहत से महकम करने की ताबिस में हिम्मा से खो हो ?"

"बर्ब साहेब" मरियम काँप गई और परमपई आबाद में बोली "मानने अकलक इतना सब कहने की हिम्मत कर ली बड़े ताज्जुब की बात है । मान्य होता है आपकी जानकारी काबिले तारीफ है । खुश का कुछ है, आजकल बिना रिमागी हालात में मैं बस रही हूँ उसमें आपकी बात मैंने यकारा कर ली । लेकिन अब खुश के लिए सारु-सारु बजा दीजिए । क्या आपका यहाँ आने से मन्दा मुझे खलीस और पानात

करना है ? या आप भी मुझे धमकाने आये हैं ? चाहते हैं मैं जोसफ के कहे मुताबिक अपने जमीर को किसी की चराफत से टकड़ाने पर धामाया हो जाऊँ ? आपका असल मंशा है क्या ?”

“मैं तुम्हें धमकाने या डराने नहीं आया मेरी बहिन । मैं यह भी नहीं चाहता कि तुम अपने जमीर के खिलाफ कोई बेहूदा काम करो । मैं ईसाई होने के नाते अपने बुदाबन्दे करीम का पैगाम तुम्हें सुनाने आया हूँ । तुम मुसलमान हो चकर गई हो मगर मेरा यकीन है बाबिरिन की पाक नसीहतें अभी तक तुम्हारे दिली दिमाग से मिटी नहीं होयी । बहिन ईसा नसीह का कहना है, किसी को बोला न दो किसी पर बुझ न करो । जोसफ मेरे मजहब को मानने वाला है मगर उसने तुम्हें एलत रास्ते पर बड़ाया है । मैं तुमसे इस्तीफा करने आया हूँ तुम थुंक मजहब की धाड़ में इतना बुझ मत करो जिससे सम्बा मजहब ईशानियत हमेशा-हमेशा को दानीता हो जाये ।”

मरियम बर्ड की घाँछों में झोंक रही थी । जब सहसा उसकी घाँछों से घाँस निकलने आरम्भ हुए । पहले वह रोकती रही । किन्तु बीये-बीये आवेष्ट बढ़ गया । घाँसुछों की बाबिरस बाग भीतर के जवलेते प्यासा-मुन्नी का विछीन सिद्ध करने लगी । बर्ड देखता रहा । मरियम के बारे में जसा खोज कर आया था वैसा ही पाया था । मन ही मन वह बहुत सम्पुष्ट था ।

किन्तु उसने मरियम के घाँसुछों को दृष्टि में रख दूसरी बात नहीं । वह बोला “घामद मेरा कहना बहुत कुछ सबा मेरी बहिन को ?”
“नहीं । मरियम ने जबाब दिया “बुरा नहीं सगा मिस्टर बर्ड । मैं किसी भीर बजह से परेधान हो गई थी ।”

“घामद इसलिये कि मेरी जानकारी मित्रनी चतरनाक है । बोवा तुम्हारे लिये जब हरम में रहना कितना चतरनाक होया । सिर्फ मैं यकीन दिमावा हूँ मैं तुम्हारा दुश्मन नहीं । बाबिर घसी के ऊपर होने

बागि बुझ पर घासी से घेर घिर झुक रहा है। उछी घर्म बोधी में मैं तुम्हारे पास बसा घाया हूँ। लेकिन तुम्हें किसी कतरे से बागाह करने के लिये नहीं घाया। घाया हूँ तुम्हारे जमरते नेक जगदात्त को सोते से जगाने के लिये। तुम जिस जोतफ को अपना सब कुछ समझ कर घाज घपने रहम दिन बाघघाह पर झुझ कर रही हो नहीं बागती बहु क्या है? उसे सिर्फ ऐसे का नाम है। वह घपने मघाद के लिये तुम्हारी मरर से तुम्हीं को बड़े में डकेल रहा है।”

“बागती हूँ मिस्टर बर्त। घीर यही घेरी परेघामी का बायस घा” मरिमम कल्लिआई से घपनी द्विचक्रियां रोफती कहने घपी ‘मैं सोच रही हूँ मैंने घाज तक क्या किया है घीर क्यों किया है। जोतफ इसाई है घीर घाप भी। उसने मुझे इसान से हिसान बनाया घीर मैंने उसे झुझल किया। घाज घाप फिर इसानियत का पैघाम लेकर घाने हूँ घीर मैं उसे झुझल करने से मजबूर हूँ। मिस्टर बर्त वह मसलत घाज पहनी बार मेरे घाने नहीं घाया। घाप ऐबीडेंसी से तात्नुक रकते हैं। वहीं घापको घेरी हकीकत की बागबापी हुई होपी। तब घापने यह भी मुना होपा कि मैं घब बजल रही हूँ। ठीक है न। घब घाप ही कोई जेंसता मुनाइये। वो कुछ मैं कर चुकी हूँ उसकी बापसी ताभुमकिन है। तब मैं घपने मुनाहों की मुभाफी किस तरह हासिल करूँ। घाज घापकी बाते बड़ी भनी मानुम वे रही हैं। जगता है मैं घाप से नहीं कुछ घपने घाप से बाते कर रही हूँ। तनी बार-बार मेरे दिमाघ में एक सवाल पैदा होता है। जोतफ या जोतफ का कोई दूसरा साथी जब मुझे मजबूर नहीं कर सकता कि मैं मुनाहों की काली बादर बघीक घोड़ नूँ। बाघघाहे घबब मेरे सखाज हूँ घीर मैं उनकी पोहचत की ताजम मघादूर रहूँगी। मरर कते घस हाज की कसीब घपने जिसम से ताक करूँ वो जोतफ की बजह से नाज चुकी है। बघतानी घीर बेघानी। क्या यही वो रास्ते नहीं रह पप है जिनको घाप लिये मैं इस दुनिया से कुछ कर बाऊँ।

इसी मजहूरी से मैं भी पड़ती हूँ।”

बई ने कहा “मेरी बहिन आज सनमुख बदम चुकी है। मैंने सब सुना था। अब मुझे बकील हो गया कि सावित्रि बुर-बुर होगी। मैं अपने धनधन्य बापिछ लेकर अपनी बहिन का सफ़ूत बापिछ देने का ब्याहस-भार हूँ।”

“भाई” मरियम बोली “आप जो संयमने वाले मे अब मेरी बातें सुनने के बाद उसका इरादा बतल चुके। ठीक है। अगर मरु सबाब क्यों का लों है। मुझे अपने चारों तरफ़ कोई ऐसा आदमी नहीं मिला जिससे मैं यह सवाल करती। आप ही बता दीजिये मेरे कुनाहों का बतल किस तरह कम हो सकता है?”

“साझे सबब की हमदर्दी करने से। मरियम बहुत जितने आप को सब कुछ दिया है अब उसे आप की बजह से कोई मुफ़साम न पहुँचे यही आप का सब से बड़ा पछतावा होना।”

मरियम की आँखों से फिर आँसू बहने लगे। उसने कहा “धन्य आप भी हैं, लेकिन आप का दिल फ़िठना ईसाफ़ पसन्द है। जोरफ़ से मुझे पोंछा दिया। उसी की बजह से आपको यहाँ आज मेरे खिलाफ़ प्रिकायत लेकर आना पड़ा। अगर मेरे लिये सब कोई रास्ता नहीं जिससे मैं अपने कुनाह भी छूँ। मौत के आलावा चारा नहीं जिससे अपना बमीर छान कर सकूँ।”

“वही बहिन। तुम बाबज़ाह की तावत और हिम्मत बन कर जम्हें मुतीबतों से लड़ने की नुम्मत दे सकती हो। मौत बुजबिलों के जनीरों की बोया करती है। तुम बहादुर हो। जोरफ़ जैसे बमीने आदमियों की बजह से जो बहल धन्य के चारों तरफ़ बमड़ पड़े हैं बाबज़ाह की बन से हिफ़ाजत करो। यही तुम्हारा सब से बड़ा मजहब है।”

बई को इससे अधिक बहना अनुचित प्रतीत हुआ। जोरफ़ और स्तीबज की बातों से डर कर वह मरियम से कुछ माँगने क्या था किन्तु

यह उसने पासा उमटा हुआ देखा । मरियम सबकुछ कुछ दूसरी मबर भाई । अब वह सब मुसफिर नहीं था जिसकी स्त्रीयन साहेब छाया करते थे । घण्टा समझना ध्येय था । वह लौटते हुए मरियम को हिमासा और हिम्मत देना हुआ बापिस सीटा । समने तो यहाँ देखा जैसे मरियम अपने किए पर बहुत खयाल कुसी है और किसी तरह अपने मन का बोझ बांधे दृष्टिगोचर से अपने हिस पूरे कर रही है ।

अबने दिन मुबह ही रेबीडेंसी न उसे हकीम बरबानी के यहाँ लाया पढ़ने का समाचार आता हुआ । स्त्रीयन कुछ जोर-जोर से कह रहा था । हकीम बरबानी के साथ बाईस छादपी गिरफ्तार हुए थे जिनके सिलाफ राजाशुह का कुम था । ईश्वर पकड़े गये थे । धर्मीनुहीना उस वस्तु हकीम के घर उपस्थित नहीं मिले । इधरत दिशाव दिग्गी बानो हत्यादि, विद्रोहियों के सभी नेता एक साथ गिरफ्तार में आ गये । बड़े को यह भी बताया गया अब उन पर मुकदमा चलेगा । उन्होंने बाबिर बत्ती साहू की हजूमत पलटने की साबित की थी जिसकी उन्हें सब पिलेगी ।

बड़े मुनकर एक साहू लीचता रह गया । वह समझ नहीं सका कि साहेब अब की बरिफ कितनी तेजी से बदल बढ़ाती आ रही है । कहीं तो एक सतरनाक साबित के प्रमाण में याद तक मरियम महल साहेब अब की प्रिय बगम बनी महल में उपस्थित थी । और कहीं शहर के कुछ बाबफ्त लोग बाबसाह की हमदर्दी का दुरावा करते-करते साबित करने के मुनाहवार हो गये । अजीब बात थी । जो वास्तव में बोला हो खरेक हो उसकी खबर बाबसाह को मिस न सकी । और जो उनकी हमदर्दी कर रहे हों उनके बिचल गपानक समाचारों से महल का कोना-कोना सूँघ उठे ।

लेकिन बड़े सब कुछ सुनकर भी लापोष रहा । अब की राजा-बानी वह देख रहा था । कमनी का गौदर बाँ इसलिये उसके सिधे

आवश्यक था । जिस में हजारों भातें हों किन्तु उनको पूछता कीन । घी
 पूछने पर वह करता भी क्या जब कि किसी की बुझी अपने कर्तव्य
 प्रमाण से स्वयं सम्मुख आई हो । इसलिये वह कई बार इस समाचार पर
 कीकी मुस्कान भरता अपने साहब का समर्पण करता रहा ।

सोलह

कुछ कुछ छाने पर भी देखीदेखी से यह समाचार किसी न किसी प्रकार फुट निकला था कि यह घाटे घबराह की हलुमलु समाप्त होने का समय निकट आ गया है। छछ-छछ से घबराहों के मन में यह बात पहर के कोने-कोने में फैल गई थी। बादशाह के पास भी पहुँची किन्तु बड़े पहले कहा था चुका है वह इसपर ध्यान न दे सकें। चारों ओर बर्ग खबर की कि स्वीयन ने हलुमलु के खिलाफ पबनर को कुछ लिखा है, किन्तु छाह ने प्रथम तो इसपर अधिकाराध किया किन्तु प्रथम में एक दिन स्वीयन से कुछ कर बिस्तृत ही निश्चिन्त हो गये और पहर की घबराहों को अपने छिरंगी मित्रों के विश्वास पर एक जान मुन मुनरे से निभालने लगे।

‘‘घोर मैनेस्टी को यकीन रखना चाहिये कि स्वीयन अपने हमदर्दों को बोझ देने का शायी नहीं है। मैं तो कुछ घबराह में देखा उसी को नर्नर बनरल के लिए लिख भेजा है। और यह कहने पर मुझे बरा भी हिचक नहीं कि जो कुछ मैंने यही देखा वह काबिले तारीफ है।’’

स्वीयन के इस उत्तर के बाद काबिल सभी छाह के मस्तिष्क में विचिंत बन्देह न रहा कि स्वीयन बीसा बनना भिन्न उन्हें किसी प्रकार बोझ से छूटा है।

किन्तु पहर का वह पक्ष जो किरैमियों पर अधिकाराध करता था और उन्हें बाधाक व मनकार मानता था सहसा इस पर यकीन न कर सका। व्यापारियों ने अपने-अपने व्यापार की प्रति मन्दी कर डाली। घरकापी मुनकिम अपने वाली किसी नयी सरकार की प्रतीक्षा करने लगे। और घोर पीजों के सम्भाविकापी किसी आसका से मन ही मन

नामिष ज्ञप्ति साह

मायामयक वा । जिस में हजार बार्ते हों किन्तु उनको पूछता कौन । घोर
 पूछने पर वह कछा भी बया जब कि किसी की कुचड़ी अपने कर्षने
 प्रभाव से स्वयं सम्मुख भाई हो । इसलिए वह कई बार इस समाचार पर
 श्रीकी मुस्कान भरता अपने साहब का समर्पण करता रहा ।

सोलह

बहुत पुष्ट रहने पर भी रेबीडेंसी से यह समाचार किसी न किसी प्रकार फूट निकला था कि सब साहू व्यवसायी हड़ताल समाप्त होने का समय निकट था गया है। तरह-तरह से धकबाहों के रूप में यह बात सहर के कोने-कोने में फैल गई थी। बाइसाह के पास भी पहुँची किन्तु जैसे पहले कहा था चुका है वह इसपर ध्यान न दे सके। चारों ओर धर्म सबर की कि स्लीमन ने हड़ताल के खिलाफ बर्नर को कुछ लिखा है, किन्तु साह ने प्रथम तो इसपर अनिश्वास किया किन्तु अन्त में एक दिन स्लीमन से पूछ कर विस्तृत ही निश्चित हो गये और सहर की धकबाहों को अपने फिरंगी मित्रों के विश्वास पर एक कान पुन दूसरे से निकालने लगे।

थोर मैनेस्टी को यकीन रखना चाहिये कि स्लीमन अपने हमबरो को धोखा देने का धापी नहीं है। मैने जो कुछ व्यवसायी देखा उसी को बर्नर बनरल के लिए लिख भेजा है। और यह कहने पर मुझे शक भी हिबक नहीं कि जो कुछ मैने यही देखा वह वास्तविक धापी है।

स्लीमन के इस कथन के बाद वास्तविक धापी साह के मस्तिष्क में किंचित सम्बेह न रहा कि स्लीमन जैसा जनका मित्र उन्हें किसी प्रकार धोखा दे सकता है।

किन्तु सहर का यह पक्ष जो फिरंगियों पर अनिश्वास करता था और उन्हें आसक्त व मनकार मानता था सहसा इस पर यकीन न कर सका। व्यापारियों ने अपने-अपने व्यापार की गति मन्दी कर डाली। सरकारी मुसाबिम धाने वाली किसी नयी सरकार की प्रतीक्षा करने लगे। औरों और औरों के उन्मादिकायी किसी मार्गका से मन ही :

फुटने लगे। बाह के दिन समाप्त होने चाये। अब यहाँ कम्पनी सरकार का राज्य होगा। इतने पर भी बाबबाह बेचकर रहे। उन्हें अपने मित्रों पर भरोसा रहा।

इसीम बदबानी धीर जैंगल तक यह समाचार पहुँचा तो उनकी पतिविधि तेज पड़ गई। धनीगुहासा वहीर ध्यानक बीमार पड़ गये वे धीर कामपुर जाकर इलाज कराने लगे थे। धीर मुन्गी का विमान ठीक हो चुका था। इसरत ने मन ही मन यँबाग में फूट पड़ने का फैसला कर लिया था। किसी विहाव प्रावि धन्य साधियों की राज भी अब इन्ध बार करना बेकार है। हमें अपनी ताकत उस दिन की सँवारी में जमा रखनी चाहिये जिस दिन कम्पनी सरकार की जट्टे जमाने वाला दबर्नर जनरल का कोई नया हुकम छाड़े धन्य को प्राप्त हो।

बसीह धनी बाहू यँबा सिह को अपने यहाँ से गये धीर सीम बार दिन छियाकर रक्ता। फिर एक दिन कुछ सिपाहियों के साथ यँबा विह के बताये स्थान पर रणजीव सिह को बिरपवार करने गये धीर उसे पकड़ लाये। लौट कर कुछ सौध बिचार के बाद रणजीव विह को धकेले हिपसत में दिया। उसने वहाँ ठकन मचाया। कहा यँबा मिह बसीह धनी के कम्बे में है। बाह के घुसने पर बसीह धनी ने धस्वीकार कर दिया। उसने कहा यँबा सिह उसके कम्बे में नहीं है।

बहीर की हिदायतों के अनुसार इसीम के मकान के बारों धीर मुफ्तिवा पहुँच था। एक दिन जैंगल धीर उसकी लड़की इसरत के साथ वहाँ जाते दये गये। धीर भी बहुत से लोग जमा हुए। लड़ी धाँ को घुबना ही गई। लड़ी धाँ ने गुरम्व स्मीमन को समाचार भेजा। स्मीमन का इरादा मिस गया। धापा ठमार हुआ धीर सब पकड़े गए। छठ दिन बदकिस्मती से यँबा सिह धीर बसीह धनी भी वहाँ मौजूद थे। लड़ी धाँ वहाँ भी पकड़ लाए।

स्मीमन ने बाबबाह पर धीर दिया कि इन लोगों का मुकदमा

कुछी बराबर में बताया जाये । बाहू बराबर ने स्लीमन से ऐसा न करने का अनुरोध किया । वहाँ एक तरफ वह स्लीमन की दोस्ती पर अपनी मित्रता को कुरबान करने का फैसला करने पर तैयार हो गये थे वहीं अपने दोस्तों की स्मृति विल से निकाल फेंकना उनके लिए सम्भव न था । ईश्वर धीरे धीरे धनी जैसे स्वयं बाब मुजरिम कपार दिये गये थे । कुछ बाहू बराबर ने किसी मजबूरी में ऐसा किया था । किन्तु उन्हें मामूली हासल में खोज करमा भी वह बचाव न कर सके । वह बाहू बराबर धीरे बराबर की हठमत्त की सख्त बदनामी होती । बड़ी कठिनाई से स्लीमन तैयार हुआ । अन्त में फैसला किया गया । बड़ी धनी धीरे ईश्वर पर मुकदमा न बताया जाये । बाबसाह बिना मुकदमे उनके लिए अप्रयुक्त सजा तयबीज करें । छिप अपराधियों की राजद्रोह के अभियोग में मुकदमे में लाया जाये । इधर धीरे बाबो पर मिस्टर बाटसन नामक प्रोवेंड को कत्त करने व स्लीमन जैसे नैक नायिक के साथ बहादी करने का असल मुकदमा बताया जाये । बंगा सिंह के लिए स्लीमन ने बड़ी तत्परता से बाबसाह को समझ-बुझ कर कासिम रज के हाकिम के यहाँ रवाना कर दिया वहाँ उसके कुर्मों का फैसला होने वाला था । वह बेचारा बीबठा-नुक़रठा रह गया धीरे बाबसाह के कानों तक यह बात न पहुँच सकी कि उसने अपनी गिरफ्तारी का बात खोकर धीरे किस लिये सजा दिया था । ममीनुद्दीन की सफ़ाई उम्र भर के लिये बंगा सिंह के साथ कासिम रज रवाना हो गई वहाँ फौजी नवन के बाद बंगा सिंह के साथ ही पिता की भाग में बस गई ।

सब से पहले राजद्रोहियों का मुकदमा धारम्भ हुआ । इसमें बिर प्जार होने के अलावा कुछ धीरे सोप भी मुजरिम थे जो नकी खा की मोम्पता से तसाध किये गये थे । इनमें हकीम बर्दबानी के लगभग सभी रिस्तेदार सपेट लिये गए थे । मियाँ खान मर चुके थे । स्लीमन ने उस बीजे को भी नहीं बचाया जो जुमेमान कुछ करी उठ करता था ।

जिसका एकमात्र दोष यही था कि वह मियाँ खान का मित्र था। इधरत की नाटक मंडली के बीसियों ऐसे गौनबाग जिसका इस साक्षि से कोई वास्तुक नहीं था बर लिये गए। ईश्वर के धनधार में काम करने वाले अगली मुताबिक भी पकड़ लिये गए। करीब पचास व्यक्ति राजगोह के मुख्यमे के धानी हुए। ईश्वर और बसीह धली जैसे व्यक्तियों को घाही आवेष्ट से उस बरत तक बमानत पर छुटकारा दिया गया था जब तक बारघाह उनके बारे में साकूल धाजा न बैठे। मगर उन्हें मुख्यमे की पैरवी न करने की सक्त द्वायत भी गई।

इन लोगों पर कारवाही कोतवाली में की गई। ईसाक विभाव का सर्वोच्च अधिकारी इनका फँसका करने वाला था। बिहाब और सिल्वी ने पूरी ताकत से जिरंपियों के खिलाफ बहर जगसा। किन्तु बाहर के सीपों को मुख्यमा सुनने की इजाजत न थी। सुनने वाला सिर्फ बर्ड का जो स्वीमन की धाजा था वहाँ की कारवाही देखने वाला था। मुफ्ती ने धाँवों और कानों पर पट्टी बांध रखी थी। बहारी करने वाले बीच बीच कर कुबूल कर रहे थे कि वह बहार होना मंजूर करते हैं किन्तु उनकी गहारी हुकूमत अवध से नहीं हुकूमत कम्पनी से थी। मगर इसको सुनने वाला कोई नहीं था। कम्पनी के विरुद्ध जो कहानी बिहाब और सिल्वी ने बयान की उसे बर्ड के कानों के प्रतिरिक्त किसी ने नहीं सुना। मुफ्ती ने सब को बारह-बारह साल की सख्त सजा का हुक्म सुना दिया। इधरत का मुख्यमा इसके बाद पैर होने वाला था। बार घाह के पास सजा सुनाये जाने का समाचार पहुँचा तो वह न खुश हुए न दुःखी। बस्कि स्वीमन से मुताकात होने पर उन्होंने इसका प्रथम सळठे हुए पूछ लिया 'अब तो आप लुछ हैं न मिस्टर स्वीमन ? हम हमेशा नहीं करना पसन्द करते हैं जिसमें हमारे दोस्त लुछ रहें।

“ओ नो मोर मीजेस्टी। स्वीमन ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया 'इन मरारों को सजा जिसका सिर्फ मेरे लिए लुछी की बात नहीं है। बस्कि

मह सब धापका लकड़ा पकटने की बाब्रिब कर रहे थे ।”

बाब्रिब धली धाह ने सुना तो सम्भा धीस बिधा । स्त्रीमन उगड़े बैसता रह गया कि इस सीस में भविष्यदास की मन्त्र है या विदबास की सुनम् । किन्तु समझ कुछ न सका ।

हुजारे ऐसे मौजवान बं जा हुकीम बर्बबानी धीर बं गन बाब्रि के सम्मिलित प्रपत्तों से बाब्रिधह पर कुरबान होने का दावा स्वीकार कर चुके थे । किन्तु सजा के समाचार से उनके हीसने टूट गए । कई दरवा रियों के द्वारा धाह तक समाचार भेजा जा चुका था । उन्हें बताया गया था कि इन बहारे का असल मकसद बाब्रिब का क्या । किन्तु बाब्रिब धली धाह की धीर से मुरझा का धाबबासन जिसने के स्थान पर धलीध धा उत्तर धाया ‘बब बाब्रिधह अपनी बरबादी का समाधा बैसने की कुम्पत रसता है तो रिभाया को इतनी परेधानी क्यों ? जिन दोमों ने बुर धपने लिए काटे बीए हैं उन्हें सजा कुबतनी होनी ।”

इसके कुछ ही दिनों बाद मुफ्ती उमैद ने सब को सजा का हुक्म सुना दिया । इस तरह हुजारे ऐसे मौजवानों की हिम्मत पस्त और हारने कमजोर पड़ गए जो कमनी सरकार के बिबाध बिहाद का मन्दा बठाने की ठपारिया कर रहे थे । लोगों ने समझ लिया बब हुजारा अपना बाब्रिधह सब कुछ जान लेने के बाब्रिधह हमें राजप्रोही करार है सकता है तो हम इतरों से कुम्पनी मोल क्यों लें ? यकीनी तौर पर बाब्रिधह सरम होनी धीर बाब्रिब धली धाहों के बिबादी बनें । ऐसा कौन है जो उस कुम्पनी के कारण अपनी जमों की बाजी सवाए ।

इसरत के मुकदमे में स्त्रीमन ने बुर बिबबसरी ली । मुफ्ती के सम्मुख कई मबाह पेश कराए । धनियोग इसरत ने स्वीकार कर लिया । किन्तु इसकी बात भी राजप्रोहियों के समान एक खेदी थी । फिरंगी हुक्माम धनन की हुक्मत सत्य कर देने पर कमर कस चुके हैं, उसने रेजीडेन्सी में रह कर कोई पुनाह नहीं किया । स्त्रीमन को मारने का

इसका उत्तरा कभी नहीं रहा । किन्तु उस रात रेजीडेंसी में घुसते हुए घमर कहीं स्लीमन सामने था थाता ही वह बड़े गर्व से उसकी हत्या कर बातता । घमर नामो की उसने बचाने का प्रयत्न किया । कहा वह बेपुनाह है । नहीं नामती कि उसका पीहर घाग से लेम रहा था । उसे छोड़ दिया जाए ।

लेकिन नामो ने कहा को हाजिर माजिरा जान कर अपने बयान में बाहिर कर दिया कि इसरात का कहना विस्फुल मसत है । वह पूरी साजिश से बकूबी बाकिफ थी । उसी के इसारों पर बाटसन का खून किया गया था । हम लोग धोखों के दुस्मन थे । अपने मुस्क के सिने इसकी दुस्मनी पर फल करते थे । रेजीडेंसी में रहना कोई जुम नहीं था ।

मोर मुन्गी कठिनाई से बाबा पाकर मुकरमे का हान बेचने धाया था । उसने मोकरी छोड़ दी थी । धामसपन का बीरु समान्त हो चुका था किन्तु बेहरे से उसके मस्तब्यस्त रहने की धाप स्पष्ट हो जाती । स्लीमन उसे कठरलाक नहीं नामता था । उसकी सावत से सभी प्रकार परिचित था मरु उसे बिरोधियों में पकड़वाना बकरी नहीं समझता था । बस्कि उसकी सेवाओं के बदले में उसे अनुहूत कर दोबारा अपनी सेवा में लेने पर बाबुर भी था मसतें कठरी बेटी अपनी बुजान की कठ रनी बन्ध रखती । इसी हेतु एक दिन जब बीर मुन्गी अपने बाबाद की नामता से बिबय उसकी कोठी पर आ गया तो उसने कहा इसरात को बिबा सजा नहीं छोड़ा जा सकता । हाँ मुम्हारी बेटी पर रहम किया जा सकता है । उससे कहो वह हमारे हक में बयान दे । लेकिन बीर मुन्गी रोते निडबिड़ाते बापिस आ गये । उन्होंने नामो से बीटी घासा न होने का मप स्पष्ट किया था अपने बलोगान प्रकट किये गही जाने । किन्तु उनका भाव ऐसा था जैसे वह नामो से बाकिफ इसरात की समामती के प्रयत्नशील हों ।

ईसमा स्लीमन के हक में हुया । वल्ल का इसनाम साबित हो

गया । सजाए मीत का हुलस हुआ । बागो धीरे इधरत को खतरनाक जानकर कहा गया । बड़ उस वक़्त वहाँ भीड़बंदा । मीर मुन्शी हुलस मुनमे के बाद पीछे पीछे कर गये लगे । फिर रौते रौते उनकी हिच किमों ने प्रजाप का कप से लिया । बहु अपने कपड़े फाड़ने लगे । इधरत ने बनसे धतिय बिदा ली । मीर साहेब बहान कोतवाली से निकल अन्तरमंजिल की तरफ जायने लगे । कुछ दूर चलने पर फिर पड़े धीरे बेहोस हो गए ।

आह तक यह समाचार भी आया । किन्तु उन्होंने बाटसन के कातिल को सजा मिलने का समर्थन किया । उनकी दृष्टि में उस कत्ल के पीछे का रहस्य गगन्य था । कुर्म कुर्म था । कुर्म के पीछे की भावना क्या भी व्यक्त है । धीरे सब से बड़ी बात थी कि यह स्लीमन की हत्या के अनुसार हुआ । हमलिये उन्होंने धानि से यह समाचार पचा लिया ।

जब इधरत धीरे बागो को हुलापात में पहुँचाया गया तो बड़ से न रहा गया । वह सब वहाँ पहुँचा धीरे सीखचो के पीछे इधरत का हुलस पकड़ भाँखों में घाँस भर कहने लगा तुम बहादुर हो इधरत । बहुत बहादुर । यह कुरबानी जाया नहीं जायेगी । साहे अक्ब की धार्मिक बन्द हैं लेकिन दुनियाँ की नहीं । यह अग्नेय तुम्हारे सामने सर झुकाता है । कम से कम इसे अपने माइनों के किये पर खरबा पछतावा है ।”

इधरत ने इसका कोई उत्तर न दिया । वह बागो के सामे मृत्यु की प्रतीक्षा में मुस्कराहट का आह्वान कर रहा था । अक्ब के लिये प्राणों की बाजी लगा देने पर उसे गर्व था । बड़ भाँखों में घाँस लिये वहाँ से चला आया । किन्तु इधरत मुस्कराता रहा । उसने बीरों की भाँति अपने परिस्साम का स्वागत किया । तीसरे ही दिन दिन निकलने से पहले उसे सूनी चढ़ा दी गई । बागो उसके पीछे-पीछे कुरबान हो गई ।

धमीनुहोबा बमीर को कानपुर में यह सब समाचार जनायास मिले । जंगल धीरे बसीह धमी के बारे में बाधगाह धीरे स्लीमन में कोई सम

झोटा होगा बाकी या । कहीं डेर न हो जाए इसलिए अपनी बीमारी की बिम्बा फिरे बिना वह लपनऊ को रवाना हो गए । चाहते थे एक बार धीरे अपने बाबूसाहू को समझाने की कोशिश करें । हासकि ऐसा हो न सका । साहू ने उनसे घेंट करना स्वीकार न किया । हाँ, दरबार में उस दिन उपस्थित होने की आज्ञा प्रदान अवश्य कर दी जिस दिन ब्रम्हन् का मामला पेठ होने वाला था ।

संग्रह

घक्कर के पास शहर के सब समाचार ज्यों के त्यों पहुँच रहे थे । अब बचीबूझी और घक्कर ने मिलकर बाजिर घसी की हुमदर्दी का नया मौला खोल लिया था जिसके अनुसार हरम में कहीं व्यक्तियों से इनका निकलना-बुलना सम्भव था जो बादशाह के सुयचिन्तक बने रहें । बिरोहियों के बचने जाने और फिर उनको सजा दिये जाने का समाचार बचीबूझी के हाथ घक्कर तक पहुँचा तो वह देर तक विचार मग्न रही । बचीबूझी का नाम भी इन बिरोहियों में लिया जा रहा था । किन्तु वह पकड़े न गए थे इसलिये काबूली गिरफ्त न थी । घक्कर सोचने पर घबड़ुर ही गई थी क्या बीता कहा जाता है वैसे ही बिरोहियों के बारे में सब मानना होना था इसके पीछे शहर के इन बीवानों की कोई और कहानी है ?

उपर बचीबूझी को बीगहन और बसीह घसी के पकड़े जाने से आश्चर्य हुआ था । घक्कर को ज्ञात न हो इस विचार से उसने घक्कर के समक्ष अपने विचार प्रकट किये । बीगहन घरीब बकर है मगर उसका दिल पवित्र और अच्छा है । वह बादशाह का धनु नहीं हो सकता । कहीं न कहीं भूख हो रही है । ऐसा ही हाल बसीह घसी का था । उसका विरहाम का बसीह घसी बादशाह के खिलाफ बग़ावत के बारे में सोचना भी मुनाह समझते थे । तब जैसे कहाँ में शामिल रह सकते हैं, उसने बार-बार घक्कर से यही सवाल पूछा ।

घक्कर ने इसका और ज़ानो की कहानी सम्पूर्णतः सुन ली । मीर मुन्ही पावलों के समान बड़हाली में लजबल की जड़ों पर खड़ा चिरता था । इस कारण लीवों में उसकी सम्पुष्टता ज़ानी और मुख बाल

धारम्य हुई। परिणामस्वरूप बानो।
 क्यों मैं विभिन्न कामों की र सुखों से मु
 या गई। किन्तु उसमें प्रतिप्रयोगित ए
 रिक्ता किसी न रही। ठीक सजाये मी।
 बात हुआ वह समय के कीर समय के :
 इसी कारण दुनिया से जा रहे हैं। इस
 ऐसी परिणाम व्यवस्था हो वहाँ बुराई की
 सकती है। नमान में उस दिन वह इस
 हुआ करती रही। पर उस दिन उसमें
 महसूस में आना व्यर्थ सिद्ध हुआ। आप
 देना चाहिये की तो मरियम अपने घर
 वहाँ रही पर कुछ कर न सकी। समय में
 विमानी व्यक्ति बेसीत भारे जाते रहे।

इसी मनोरथा में एक दिन वह अपने
 नकी ली उसे देख प्रसन्न हुए। बहुत
 कर गई थी, उसके बाद कभी आई न
 खिल उठा। किन्तु अन्तर में पहुँचते ही

वह बिना झुमिका कहने लगी “उ
 आज उसे छोड़कर सिर्फ आप से एक स
 क्या आप को सही वस्तु सुझा हासि
 नेकदिल कीहर समय की मिट्टी छोड़ द
 हो जायेंगे ?”

नकी ली अचानक पूछे गये इस प्र
 पत्न स्वस्थ होने के पश्चात् उन्होंने
 समझ सुझाया ? मेरी तरफ से क्या दे
 पहुँचा सके ?”



सब कमाल की जिससे साहेबबन का मास भी नीका होने से बच सके।”

“तुम पायल हो गई हो तुम्हारा।” नकी आं धरमी बेटी के धर्मों से जैसे बचपन कर नीमी घाणाक में कहने सके “घाज तुम इस मुस्क की बेबन हो इसलिये तुम्हीं इतना क्याज भी नहीं रहा कि बाप का अहृतपम क्या होता है। तुम क्या कह रही हो तुम नहीं जानती।”

‘सब जानती हूँ धम्मा हुजूर। सब समझती हूँ। धरम की एक ताबीज बेबन होने का तावा ही बेते हैं बाप तो मुन रखिये। बाप हमारी तबाही और बरबाही के मन्सूबे क्या रहे हैं। धरेंजों की बोस्ती की घस में बापने धरने बने में ऐसा अतरनाक छाप अटका लिया है जो बाप के अपना मतबन निकालनेतक बाप की हिफाजत करता रहेगा और उसके बाद बाप को सब कर दूर बाप बायेगा। वह जो कहर है बजीर साहेब जिसका मछा भाज बापकी चुवान की बे-माबाज कर रहा है और कम हमेधा-हमेधा के बिसे जापोष कर देना। बजारत नहीं बाप खुद धरमी बिन्सी का तीरा इन धरेंजों से कर बीठे हैं।”

“कमी-कमी ऐसा हो जाता है।” इस बार नकी आं कुछ बेर धाम्त रहने के बाद हाथ से माथे का पसीना नीछते मन्बीर घाणाक में बोले “कमी-कमी ऐसा सबमुच हो जाता करता है बेटी।”

“नहीं यह मुनाह है। एक घरीफ धरमी के चिनाफ साजिउ और फरेब है। बाप को क्या हक है धम्मा हुजूर कि बाप एक बेनुवान और मन्नदूर बादजाह के ममक की ऐबज उन बोस्ती की बोस्ती का बन करें जो हम सब के दुरपम हैं। जो हमारी रोटी छीन कर हमें बीहताज कर देना चाहते हैं। जो धरम की ईट से ईट बजा देना चाहते हैं। बाह किसी बदलसीबी है यह। जो साहे धरम बाप के हाथों हुदमत की बायडोर सम्हाल कर मुजमईन बीठे हुए हैं कि बाप उसकी हिफाजत करते रहेंगे, बाप उन्हीं की तबाही बरबाद कर दाखने के बिसे नए-नए मजि पायी कर रहे हैं। कल धरम के हजारों जन सोनों के हीउसी

पर आपने पानी फेर दिया जो भाई बहुत हमारे काम वाले । भाव फीजों
धीरे रिहालों को यह हुनम रवाना कर दीजिए कि वह बजाय बाजिर
धनी बाह के रेबीडेंट के हुनमों की तामील करें । कल ईगन धीरे
बठीह धनी बीसे लोपों को फाँसी का हुनम दिसवा दीजिये ताकि भावका
कोई मूल कर भी बावसाह को निक मस्किरे न दे सके । खुब कीजिये ।
अम्मा हुनूर धपनी बेंटी के बहेव में आपने बाजिर धनी बाह को बदन
बसीबी धीरे छोकरे घटा करमाई हैं न । खुब धपने मन की कर भीजिये ।”

बकी काँ की घाँघों से घाँसु वह निकसे । सुस्ताना की परबराई
आवाज से बाप का दिम पानी हो गया । कुछ पलों के लिए उन्हें ऐसा
मपा बीसे रेबीडेंट बावसाह बजाएव अम्माबी सब बेंटी की मोहम्मद
के सामने बेकार है । यह जो पाक बरबा है जो इंसान की बड़ी से बड़ी
मजबूरी आवाँडोल कर देता है । उन्होंने महसूस किया उनकी बेंटी नहीं
उनके सामने लड़ी है अम्मा की मजबूरी जो उनके आचरण को बुरतकार
रही है । सत्य बलघानी होता है । बजाएव के मोह में उन्होंने सचमुच
अपना कर्तव्य सुना दिया था । कर लिया या उन नापाक हरिम्नों से
रोस्ताना को बहुचीपन से किसी की बफावादी धीरे मोहम्मद को खुब
उनकी पीठ पर सुटी एक कर बेब रहे थे । बहुत देर वह नित्यन्व धपनी
बेंटी का बेहूष देखते रहे । उनकी आँखों में धबिरल घाँसु बहे धीरे वह
बहुत प्रयत्न करने पर भी अपने आप को रोक न सके ।

बेंटी ने उनकी अवस्था देखी तो मुआयम सभ्यों में बोली “मुझे
मातुम है अम्मा हुनूर, आपका दिम बुरा नहीं । आपकी पूछे सोन धीरे
रुमी धानो शीकत ने कामाल कर रखा है । लेकिन ऐसा कब तक होता ?
कब तक उस धान की हिकाजत करते रहेंगे आप जिससे किसी दूसरे की
विमर्गी खसरे में पड़ जाए ? आप ने समीगुहीला साहेब से यही धीम
कर अपने लिये रास्ता बना लिया । सही है । लेकिन अब उस यही की
साज भी एक लीजिये । अम्मा की तवादीय में जो कुछ होता रहा है

उठे बरत बाजिये । घाह की इम्जत धापके हाथ है । उम्हें बचा लीजिये ।
 फिरंगी बहुत ताकतवर है । बाजिब घसी घाह की ताकत धाप घीर
 धापके दूसरे बज्जत है । धाप की नजर बरसी तो वह क्या कर सके ।
 कुछ नहीं । कुषा के लिए उम्हें बचा लीजिये यम्या हुदूर । बचा लीजिये ।
 मैं भीख मांगती हूँ । धाप की बेटी नहीं बाजिब घसी के हरम की बेबम
 धाप से धपनी इम्जत का बास्ता लेकर भीख मांगती है ।

नकी घाँ का साहस टूट गया । घाँसूघों के जिस बेग में वह धपना
 समुत्तन न खोने के लिए प्रयत्नशील थे वह बिखर कर छिन्न-भिन्न हो
 गया । वह धपनी बेटी के नजदीक धाप घीर उसके मुख पर हाथ रखते
 हुए उसे रोक कर कहने लगे "घीर नशतर मत मारो मुस्ताना । वहीं
 ऐसा न हो कि यह बदनसीब बाप कुवकुषी है धपने गुनाहों पर पदेवान
 हो । तेरा एक-एक सलफज्ज सही है । मैंने यकीनन अपने मेक बादसाह
 को बोला दिया है । बजारत की बमक मैं धन बुरे की पहचान ठुमर
 कर बी । लेकिन अब क्या हो । मैं मजबूर हूँ मेरी बच्ची । मेरी इम्जत
 घीर मेरा मर्तबा फिरंगी बनकर मैं फंस चुका है । चाहूँ भी तो मेरा
 पीछा नहीं छोड़ सकता । मैं पत्थर नहीं हूँ मुस्ताना । सब समझता हूँ ।
 सोच भी सकता हूँ । लेकिन तू नहीं जानती मैं कितना मजबूर हूँ । मुझे
 बज्जत की बाह नहीं लेकिन मैं जलातत नहीं बर्बात पर सकता ।
 अब मैं सलम चुका हूँ । मेरा पंजर तेरे सामने है । बर्बात हो तो वह
 मेरे सीने में चीक दे । लेकिन यह कहना कि मैं चुप कर फिरंगियों की
 मुलासफत कई मामुमकिन है । बेटी, अब यह हुदूनत नहीं रहेगी ।
 बाजिब घसी घाह के घरबने नहीं रहेंगे । कुषा के लिए सब से काप ले ।
 घाने वाले पटाब दिनों में नकी घाँ की हथियों को सरे बाजार नीलाम
 करने की बहाहिदाम्य न हो मुस्ताना तो चुप रह । चुप रह घीर शेष
 क्या होने वाला है । देख तेरा बदनसीब बाप धपनी मजबूरियों से कित
 नजर मापूग होता है । देख उसकी मामुनियाँ उसे क्या-क्या करने पर



घाह घाब घीर कत किसी से नहीं मिलेंगे । दूसरी बार कहा गया तो सबर घाई कि घाह की तबियत कुछ नासाब है घीर वह किसी से मिलना नहीं चाहते । मगर बधीबहीधा घस्तर का विशेष सहायक सिद्ध हुआ । तीसरी बार उसने घाहें घबब को इस तरह प्रभावित किया कि वह घाम को कुछ घस्तर के महल में हाजिर हो गए । उस बलघ घस्तर ने महसूस किया कि बैठे सबमुब वह किसी कारण बहुत स्वादा परेछान है ।

घस्तर उनका हस्तकबाध करने के बाद कुछ अपने हाथों घराब का घाम तैयार करने लगी । यह नयी बात थी । मिये घाह के घादेघ पर मयदूरन वह उका करती थी । किन्तु घाब घाह की सचसी देख उसने बिचम्न न किया । बाजिर घसी ने प्याला होठों से लगाया तो घस्तर से पूछने लगे “घापने बार-बार मिलने की स्वादिष्ट क्यों चाहिर की बेमम । क्या कोई बकरी मसना है ?”

घस्तर बोली “मुलमों से मुना था जहांपनाह की तबियत बेचैन घीर परेछान है । कनीज एक न सही घीर पैपाम बिजबा दिया । मन्धा यही वा यहाँ घाकर घायब तबियत को सुकून मिले ।”

घाह ने कहा “सकून न यहाँ मिल सकता है बेमम न कहीं घीर । हमें तो महसूस होता है हजारी बिम्बनी हैं सकून सरम हो गया । तुमने सुना होवा कत हमें बसीह घसी घीर बँगडन की घपना हरम सुवाना है ।”

घस्तर इस प्रसंग पर जन ही मन प्रसन्न हुई । वह अपनी तरह में बातचीत चारम्भ करना चाहती थी । घाह ने कुछ सबसर दिया तो घराब का प्याला घाह के हाब से सेती मीठे सबर में बोली “मुना न करे, घालमपनाह के कुरमनों को कोई परेछानी हो । बँगडन एखेब घीर बजीरे माल का मुकदमा पैघ होने वाला है मिये मुना वा । सेकिन गुस्छानी मुषाक हो तो घबई करू । एक बावसाह के मिये परेछानी की

बुनापन होने की कोई बगह नहीं जब मृकुरियों को मुचाफ करने का उसे पूरा धकतवार है।

“वही धकतर महम थाप सही मममती” साह बम्मीर घोर परेधानी भरे स्वर में कहने लगे “वह लोग मुकुरिम हैं। धर के बहारों के साथ उन्हें बरका दिया है।

“बहारी की कई धकतें होती हैं धाममपनाह।” धकतर बिना बड़े कहती गई “मुनते हैं इन लोगों का मन्दा बम्मीर सरकार की मुचासफत करना वा।”

“हमने भी सुना है धकतर महम” साह बोले “सब क्या है बुरा जाने। स्मीमन साहेब का कहना है यह हुकमत का तफ्ता पनटने की साबित कर रहे थे। बहुराज्य काबुल कुर्म उनके बिनाफ साबित है। हम परेधान हैं बूकि बसीह धली घोर बंगन बोनों हमारे दोस्त थे।”

“हुकुर उन्हें तो परेधानी हुक करने की सामान मूरत निकल सकती है। उन्हें एक बार तम्बीह बैकर छोड़ दिया जाए। धाममदा

“यह मुकुरिम है बबम।” साह का घात स्वर भावा “स्मीमन साहेब ऐसा नहीं चाहते।”

“यह हुकुर के धाका नहीं हैं। क्या यह बकरी है कि वह अपने किसी निजी दुस्मनी की बिना पर धापके जहन पर बोल लगे?”

“यह हमारे दोस्त हैं बेगम। हम उन्हें दोस्त वह चुके हैं।”

“धाममपनाह बंगन और बसीहधली की भी अपना दोस्त ही समझने थे। भाषा हुकरत जब ऐसा मौका था जाये तो दो में से एक की दोस्ती मुका देना बाबिल हो जाता है। मानकी धोनों में से एक के लिए दूसरे को बापल करना होता।”

“हम स्मीमन को बापल नहीं कर सकते धकतर।” साह ने बक-पाई भाषाक में उत्तर दिया “हम बंगन के मुचासले रेबीमेंट को बकल नहीं कर सकते धकतर। साह—“वही तो बहारी परेधानी है बेगम।

घाब हम किसने कमजोर हो गये हैं ।'

अस्तर को उत्तर मिल गया । धीरे कुछ कहना देव न था । बाजिब धली ने अपनी कमजोरी अपने मुख से स्वीकार कर ली थी । अस्तर मम्मीर विचार में पड़ गई । घाब ही एक बया रहस्य उसके सम्मुख प्रकट हुआ । उस रोज़ अपने पिता के सम्मुख ब्रोजबरा यह बहुत कुछ कह आई थी । नकी खां ने साहू की तरह किराँतियों का भय प्रकट किया था । बाबसाहू की अवस्था यही है । सब विदेशियों के डरते हैं । जब बाबसाहू की यह बया हो तो नजीर को शोष क्यों दिया जाए । संभल या इस भय का कारण क्या है, हमारी कमजोरी और सराफ़ या विदेशियों की ताकत और चालाकी ? हम कमजोर नहीं थे । कम्यमी के मुनाबन्दे चालाक और फूटे थे । साहू उनके झिड़के में बड़के महसूस हो रहे थे । नकी खां ने यही कहा था । परिष्ठावस्वरूप अस्तर धवन के हुमाँय पर बून के मोहूरी कर साहू से धीरे प्रसन्न कर लें करती रही ।

मुबह साहू बहुत खेरे उठे और नमाज़ में देर तक कुछ पड़ते रहे । उनकी झालों में अब तक रात की सुपारी बाकी थी । गारते की हलता मिली मगर उन्होंने झुंकार कर दिया । अस्तर उनकी अवस्था देख रही थी । स्लीमन का भय हो या कलकी बोस्ती किन्तु विषय में भी लम्बाई थी । बोस्ती धीरे हम्दर्दी थी । हुरय में उठ गइ ठरसठा से टबने वाला नहीं था । शोषहर तक बाजिब धली साहू की परेछानी पल पल बढ़ती चली गई । अस्तर समझ न लगी इस को सह्यामियों के लिए साहू के दिल में ऐसी बया खड़ा निश्चित हुई है जिससे वह परेछान धीरे उबान हो गए हैं ।

दरबार में नजीर नकी खां की ओर से मुयाबला बैज किया गया । घाटोप बही था, जो कोठवाली में नुकराने के बीरान भिल्ली, पिहाव हत्पादि को गुनाया गया था । घम्यों का कुछ फेर था ।

स्लीमन बारबार में उपस्थित था। वह ध्यान से कार्यवाही देख रहा था। बाबिब धनी दम्भीरता में ईश्वर की बसीह धनी के उत्तर मुमने की प्रतीक्षा करते रहे।

धाराप मुन लेने के बाद बसीह धनी ने सचवाई देने से इन्कार कर दिया। उसकी धाराप में जो निराशा थी वह उपस्थित सभी व्यक्तियों पर प्रकट हो गई। विष्णु ईश्वर ने मुस्कुराते हुए धाराप का स्वागत किया। उसने सबल वाली से धाराप को निराधार और छूट कहा। बलि बरामा वह जो कुछ कर रहा था उससे हृदयमय प्रत्यक्ष को मुस्कान होने की जगह कापडा पहुँचने का जवाब अनुमान है।

धारा ने वही धाराप में सवाल किया "मिस्टर ईश्वर आप मंजूर करते हैं कि हकीम बरामा के वही धाराप उत्तर दिया करते हैं?"

ईश्वर ने स्वीकार किया। धारा ने दूसरा सवाल पूछा "और आप को यह भी जानना होगा कि हकीम साहेब के वही बरामा का मजमुआ होता था वही भीबुदा सिवासत के जहाँ से सखनऊ के नौबतारों को बरामाया जाता था।"

ईश्वर ने इसे भी स्वीकार किया और बोले "सचवाई और इन्कार की लड़ाई के लिए अपनी ताकत बढ़ाना गहरी है तो वही बाकई बहार बमा होते व और मैनेस्टी। मैं इसे सस्वीम करता हूँ।"

नकी धा ने कहा "आप जो सचवाई देना चाहते हैं मिस्टर ईश्वर वह कोतवाली में मुपली साहेब के सामने देव की था चुकी है और उस पर गौर हो चुका है। सवाल यह है कि आप या आपके दीनर साकी होते कौन हैं हृदयमय प्रत्यक्ष और रेडीबैट या हृदयमय कम्पनी के मुआ मतात में बरामायाज होने वाले? यह सोचना हमारा काम है कि हम अपने हृदय की हिकायत कैसे करें। आपने जो रास्ता अपनाया था वह पहरी का रास्ता था जिसमें हजारों कैमुनाह नौबतारों के बून की होती बेनी जाती और कोई नतीजा न निकलता। आप इसका कोई

बयास देना चाहते हैं ?”

“बजीर साहेब’ ब्रिगड नकी खाँ की धीर बूम कर कहने लगे । “घाप उस बयाने की बात कर रहे हैं जो गुजर चुका है । भूल जाइये उस वस्तु को जब हुकुमतेँ घापस में बरस कर अपनी रिमावा की किस्मत के फैसले किया करती थीं । अब घावाय सुब अपनी किस्मत से नाजिक है । नाजिव धाली छाह को कोई हक नहीं कि वह साक्षों लोगों को बान बूम कर किसी बाहरी ताकत की मुसामी करने पर मजबूर करे ।”

“धीर मैजेस्टी” स्लीमन ने लपाक से छाह का ध्यान ब्रिगड के धमकों की तरफ दिताया और कहा “जुर्म का इफ़रार हो गया । मिस्टर ब्रिगड ने मुझे बसफ़ाज में मजबूर कर लिया कि वह धीर मैजेस्टी के फैसलों पर धमक करने को बाबन्ध नही वे । यह बहायी है ।

“यह बहायी नहीं है मिस्टर स्लीमन ।” ब्रिगड ने स्लीमन को उत्तर दिया अपनी बाज़ाबी के लिए लड़ना बहायी नहीं है । बहायी तो वो है जो घाप कर रहे हैं घाप की कम्पनी धीर घाप की हुकुमत कर रही है । स्लीमन साहेब इंसानियत धीर घराकत के दुश्मनी बहायी है । दूसरे को हक से बहुकम करना बहायी है । जुर्म धीर बामाकी बहायी है । हम लोगों की घाप बहार नह रही है । क्यों ? इसलिए कि संवेक होने पर भी घाप की मदद नहीं कर रहे । घापधी बैईमानी में हिस्सा क्यों नहीं बैँटा रहे । मुझे उस दिन का एक-एक बसफ़ाज याद है । घापने मुझे बेठाबनी ही थी । वह सब हो गई । एक तीर से घापने बीहूरा धिक्कार केसा । छाहे बयब की बहुकम कर दिया उन बीस्तों से जो बुरे बस्त में कमका साथ देते । मैं घापकी पीठ पर घापकी मुबारक-बाप देता हूँ । मगर मुहीम सासान नहीं । यह पीठ घाप की धीर बाप देता हूँ । मगर मुहीम सासान नहीं । यह पीठ घाप की धीर बयबकी पर बू बू करेया । घाप”

“मिस्टर ब्रैन्डन।” पाह यकायक मुस्ते से चीख पड़े “ओ बाते करमे से तास्मुक नहीं रखतीं जनका ठगकर बेकार है। हम घाप का नाम सुनने को बेचैन हैं। क्या घाप इकटार करते हैं कि हकीम दर्रानी के मकाम पर गद्दारी के साथ मिलते-जुलते ये?”

“आममपनाह” सहसा उपस्थित व्यक्तिवों में अमीनुद्दीना बर्बर पड़े स्थान से उठ कर स्तीमन के बराबर घा कड़ हुए घीर बोले हुजूर का मुस्साल ब्रैन्डन साहेब पर नाज़िब ही उससे पहले में याद दिला, यह वही ब्रैन्डन है जिन्हें घापकी बोस्ती का कुछ हामिस था।

“हमें याद है हमारा बा। हमें घण्डी तरह घाप है।”

“तब आममपनाह को यह भी याद होया कि उन दिनों ब्रैन्डन साहेब हुजूर के रोबक ऐसी ही बातें किया करते थे बीसी धन कर रहे घीर हुजूर ने उन्हें कभी गद्दारी का नाम नहीं दिया।”

पाह खामोश हो गए। अमीनुद्दीना ने सब कहा था। जहाँ मंजूरों का सवाल पैदा होता ब्रैन्डन हमेशा सच्चाई घीर हक का पक्ष लेकर पाह के साथ हमदर्दी प्रकट करते। अमीनुद्दीना उन्हें याद दिलाने का मतलब कर रहा था। अगर नाज़िब अली को कुछ हुआ कि उन्हें इतना मजबूर क्यों समझ है। क्या ईसाफ की कुर्सी पर बैठने का महमयजब ही कि वह सब कुछ सुना है। ब्रैन्डन के निताफ मुँह साबित है। से सजा देना जरूरी होना। अमीनुद्दीना चाहते हैं सजा न हो जाए। क्या यह मुमकिन है? नहीं। कभी नहीं। यह ईसाफ की सीढ़ी है।

पाह! ईसाफ की घाक में स्तीमन की सीढ़ी में किटना बबरबस्त उठा बाल कर पाह को पकड़ लिया था। वह चाहता था ब्रैन्डन घीर सीढ़ी अली को सजा मिले घीर नाज़िब अली इती को ईसाफ समझ कर उन दोनों का फँसला करके बैठे।

उनके मन में था वह सब कुछ सुन कर ईसाफ करने का रहे है। अगर क्या यह सब हुआ? क्या उन्हें ईसाफ की कुर्सी पर बैठे

कुछ भी था म रहा था । कुछ भी ? ब्रजिन्दर की दोस्ती और स्नीमन की सभी सम्मेलन सब कुछ मुला ही थी ?

स्नीमन ने इसका जवाब तो नहीं था । मृतपुर्ण बन्धीर को सावधान किया कि उनका इस प्रकार मुकदमे की कार्यवाही में टांग पड़ना बहुत पशुपत है । यह बेचारे विवशता से अपने स्थान पर जा बैठे । भाह को विचारमग्न देख ब्रजिन्दर ने शेष कठिनाई यहाँ से हल करने का फैसला कर लिया ।

यह जोते "मैं अपने एक दोस्त पर अपनी जान सुरक्षा कर देना अपना पक्ष समझता हूँ । इस कामे की बकरत नहीं थी । पुनः मुझे इन्जाम है । सजा ही बाए और मैं उस पर समत करूँगा ।"

भाह ने ब्रजिन्दर की ओर मुँह उठाया । बाँधों से बाँधें न मिल सकीं । मकी को कुछ इसका करते हुए यह अपने स्थान से उठे और छतर ब्रजिन्दर के भीतर चले गए । मकी को ने उनके जाने पर मुकदमे का फैसला सुनाया ।

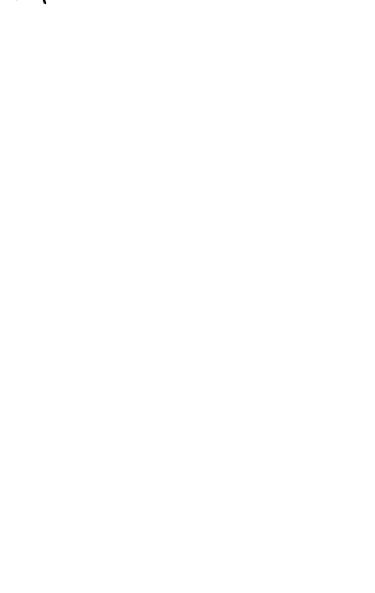
यह बन्धीर भाँधों में जोते "भाह बहुत विस्तर ब्रजिन्दर और बन्धीर प्रती को हुनम देते हैं कि यह तीन दिन के अन्दर सबक की हुनम से दूर चले जायें । उन्हें उस वक्त तक के लिए बाहर बाहर रखा जाता है, जब तक उनकी बापसी के इलाज सुनायिक न हों ।"

ब्रजिन्दर ने सुन कर एक मन्त्रा साँस लिया ।

बन्धीर बाँधे हुए और स्नीमन की ओर देखते लगे जो बाबेल के शक्तिव शब्दों का अर्थ अपनी बुद्धि के अनुसार अपनाता ब्रजिन्दर की ओर देख इति भाव रहा था ।

उसका कहना था बापसी के इलाज अभी समय पैदा हो सकते हैं मेरे मुकदमे दोस्त जब तुम और तुम्हारा सभी बन्धीर प्रती पैरी पनाह में बाँध कर उतनी भीत जायें ।

मैकल ब्रजिन्दर की मुरादी इसकी भाषा देवी, स्नीमन को इसका



अठारह

एक दिन मरियम की घबस्वा घोबनीय हो गई। उठते ही सुबह उसे तीन बार उल्टी हुई जिसमें डेर सारा खून निकला। इसके बाद साँचे बढ़ने लगे। हाथ पैरों में कणायक सूजन आ गई और जीब ऐंठने लगी।

अष्टर ने ऐसीडेंसी से डाक्टर बुलवाया। वह आया और बवा दे कर चला गया। हालाँकि कुछ समय के लिए ठीक हुई मगर दोपहर को फिर बिबड़ने लगी। तब आहें अकब को सूचना दी गई।

वह अफ़जल मंजिल में बरबार कर रहे थे। बहुत ता सरकारी काम बाकी था। ऐसीडेंसी से वह साहेब के पहुँचने की खबर पायी थी। वह जाने जाने थे किन्तु आहें तब कुछ छोड़ मरियम की आरामवाह में जाने। अब मरियम हमामबाड़े में रहे रही थी। तीन दिन हुए तब अनुप्रास कर मरियम हमामबाड़े में आ गई थी।

इससे पहले जब मरियम होज में आई तो बरबार बीठी अष्टर ने उससे बार-बार सवाल किया। उसकी माँ को बुला दे ? डाक्टर बात बीज उसके पिता को ? मगर हर बार वह हल्कार करती रही। जीन जिसका बोस सखी उससे बार-बार बाबिब घसी आहें का नाम उच्चारित होता। मरियम ने जल्दी से भेंट करने बात करने की इच्छा व्यक्त की।

आहें पहुँचे तो मरियम बेहोशी का दौरा बढ़ने के कारण बेमूक बढ़ी हुई थी। कई कनीजें और बसीरहीला हमाकतछ सेवा में मौजूद था। आहें अष्टर की एक ओर से गए और बीने से बीने “इसका बल्ल अब फटीर है अल्लर बेगम। क्या नहीं अब इनके लिये बुधा करो।”

घस्तर ने कहा यह आपने मिलने को बहुत बचैन है घामा हज़रत ।
कई बार आप का नाम ले चुकी हूँ ।”

“हम जानते हैं ।” साहू ने उत्तर दिया “शायद यह अपनी घामबाह
के बारे में कुछ कहना चाहती होंगी ।”

घस्तर ने कहा न दिया । तभी मरियम को होश आया । वह
नज़दीक पहुँची । साहू उनके पीछे थे । मरियम ने घालें खीस लीं ।
बड़ीछ्नीला ने डाक्टर की बी बिदेची दबा देने का प्रयत्न किया ।

मरियम ने उसे रोका धीरे धीमी घाघाज में घस्तर को पुकाया ।
घस्तर बचकर था नहीं । मरियम ने साहू को देखा । बिहरे पर हस्ती
मुल्कुपहट र्बरा हुई मगर दूसरे लण्ड बुन्द पर ।

घस्तर ने उसे बताया “घाला हज़रत आपके सामने हैं मरियम
घापा । घाव हसने मिलने की क्वाडिसमन्ध थीं बहन ।

“हाँ” मरियम ने तिर इलावा धीरे होठों ही होठों कुछ बुझबुझाई ।
साहू सुन न सके घाव नज़दीक आकर पूछने लगे “कहिये मुल्लाम मरियम ।
हम आपके सामने हैं । आप कहें तो हम अपने हाथों आपको दबा
पिमावें । बुझा ने कहा तो घाव बहुत बन्द घण्टी हो जायेंगी ।

मरियम ने देखी से इन्कार किया । घस्तर चिखाने से बच गई ।
साहू मरियम के मुख के पास अपना मुख ले आए । सब वह बीने-बीने
कहने लगी “बस्त करीब था बुझा । बीठ के फरिस्ते मेरी यह देख रहे
हैं । घालमपनाह, आपके धिक् दो घबघबाँ के लिए मेरा बय घटक
रहा है ।”

“बुझा दो ;” साहू ने पम्भीरता से कहा “हम अपनी घनीज मरि
म के लिए सब कुछ करने पर घामारा हैं ।”

“बारा ।” मरियम ने कहा “मुझे घावमपनाह का बारा चाहिए ।”

घस्तर घावे बड़ घाई । बीबी “मरियम घापा घाला हज़रत को
कहते हैं, कर रिखाते हैं । घाव जो रहना चाहिए बजुपी करें ।”

“नहीं नहीं मुझे घाहे घबरा का पाया चाहिए। बाबा”
 मरियम ने तेजी से सिर हिला कर इसके स्वर में कहा “मैं बाबिली बार
 इनसे कुछ माँगना चाहती हूँ।”

“हम भ्रमशाह ताता को मवाह कर रहे हैं मरियम महल।” छाह ने
 बत्ती से कहा “कहिये।”

“आह” मरियम ने लम्बा साँस लिया पीर साँसें गँव ली।

घाहे घबरा उसे देखते रहे। छक्कर निराशा से मरियम पर साँसें
 टिकाये लड़ी रही। तब उस हुधा कहीं कह दीकार बहोम न हो गई
 हो। बचीरहोला ने बाबर का पैगाम बताया हुए कह दिया था कभी
 बेहोशी मरियम की बाबिली बेहोशी साबित हो सकती है।

लेकिन मरियम होश में थी। उसने घाह की देखा तो कबली साँसों
 से वो बूँद निकल आई।

भीषे के बोली “मैं जानती थी घालमपवाह आप मेरी बात कभी
 नहीं टाल सके। आप बहुत मेक हैं। मुमिद, मेरी तीन बाबिली क्या
 हिब हैं—आप उन्हें पुरा कर सकें तो”

“हम कमलाह चुके हैं मरियम। आप अपनी बचाविएँ बाहिर करें।”

“वेबर, नकली बाबरबाद मिला कर मेरे पास लेख लम्बा क्या है
 घालमपवाह। मरियम इसके-इन्के कहने लगी “यह सब मैंने आप के
 सबके में सरकारी लगाने से पाया है। आप का कबा है यह जो आपने
 मुझे दिया था। मैं इसकी हकदार नहीं बनकर”

“आप हुकम हैं। आप क्या चाहती हैं। यह क्या आपके बालिव
 की मिसि का घाफकी माँ को?” छाह ने सवाल किया।

“नहीं।” मरियम बोली “मैं इसे वर्ष में आया करकी मेरे पात्र।
 आप की बोलात हुवा मैं जहा देना चाहती हूँ बालिव। वो इसका मुक्त
 हर नदी उसे दे जाने की बचावियम है।”

“बकर। हमें कोई एतराब न होना।”



“घोर छीतरी बात” मरियम प्रतीक्षा किये बिना धाये बोली “मेरे माझा धाव बसा कर चुके हैं”

“हूय छपनी बाल की बाबी भी धरने बादे पर बसा सकते हैं बेवम । धाव बहिदे ।”

‘घालमपमाह’ बल्ल मोड़ा है मेरे पास । मेरी छीतरी मर्जी है कि धाव “धाव मुझे मुघाफ कर दे” मेरे मुमाह बल्ल हैं” “मरियम बलिनाई से बह पाई घोर छिर घोर-घोर से रो बी ।

घक्कर बसके बालों में हाव फेरने लगी ।

घाह प्रबल भूषक इष्टि से घक्कर को देखने लगे ।

बहुत देर बाद बाबिर का आधेस आन्त हुआ तो बाबिर घाली घाह ने लज्जाल किया “धाव किस की मुघाफी बाव रही हैं बेवम, जब तक बसा न जले इन छपना बह बसा पूरा नहीं कर सकते ।”

“लही” मरियम पूरे बेव से उठने का प्रयास करते हुए घोर से चीक कर बोली “बुदा के लिए ऐसा मउ कहिये घालमपमाह । कहिये धावने मुझे मुघाफ किया । कहिये मेरे मुमाह बल्ल दिए ।”

घाह कुछ न बोले । वह बिभूकों की तरह बैठा रहे वे मरियम को जो इत प्रबल के बाद निडाल पतन पर पड़ रही थी । उन्होंने फिर छपनी बात बोहराई । वह मरियम को मुनाहपार नहीं लज्जाले इहलिये बरघने का लज्जाल बैठा नहीं छोटा ।

मरियम ने कहा “बहुत मज्जीक है बीत । कहानी समी है । लेकिन आत्मशी बसा पर उठे बहे बिना नहीं बक नी । मुझे धावकी मुघाफी चाहिये घालमपमाह । सुनिये । ---मैंने धावसे कभी मोहम्बत नहीं की । मैं किसी घोर को चाहती थी --- मैंने हर्षणा धावकी बोका दिया ।”

घक्कर की बरघ पीछे हूँ घाई । मरियम झूठ-झूठ कर रोने लगी । हाव में आत्मिय कबीली को बधीरानी के हाव का इपारा कर कबरे

से बाहर कर दिया । बाह पहले धम्मवस्मित हुए किन्तु तत्कास मुस्करा कर मरियम को बिताता बने लगे ।

मरियम धावे कहती रही मैं बहुत घाई भी एक ताविल की बिना कर । धाव को गुमराह करने । बाह "बोस के करिछो पास था गए हैं" वह नहीं चाहते धाव से मुसाफी मिल सके सुनिए घेरे मह भूब धावको हमेसा वलत राय की "धाव को करेब मैं डाल कर जाता" वही किया वो धावके मुकतान के हस में हो "मि परंत हमबाई बिर्ज हसबिये कि धाव को मेरी मोहब्बत का दकीम माए" मेरे भाऊ मुझे मुसाफ करना" घेरे चारों तरफ किती के हाथ फैल रहे हैं । "कुवा के लिए मुझे घंटेबों की बासूरी करने के लिए बसा देना" २२

मरियम बेहोश हो गई । बाह की घाई कुरी तरह फैल गई । घंटेबों की बासूरी । मोहब्बत । करेब । वह अस्तर को पावलो की तरह घुरते रहे । बसीरहीना बेहोश मरियम को बार-बार देख रहा था । उसके चेहरे पर कुशा स्पष्ट छत्र घाई थी । किन्तु अस्तर का हाथ धक थी मरियम के बालों में छिद्र रहा था । वह चाहती थी मरियम की वह बेहोशी धाबिपी बेहोशी न हो ताकि घाई भवब उसे वस्मीन दे सकें । उसे मुलाह की मुसाफी बसा हैं । इतने बड़े मुलाह की घबला सी मुसाफी ।

बाह ने परबराती आवाज में पुकार कर बिचार मय अस्तर को अपनी घोर सम्बोधित किया "अस्तर !" अस्तर देखने लगी । वह धावे बोले "मरियम महब ने सब कुछ वलत कहा है । उन्हें बचाना होगा । हम इसकी जुबाई नहीं सह सकते ।"

अस्तर ने उत्तर न दिया । वह बाह की आवाज के भीतर दवा बिचित्र-सा भाव मधी प्रकार समझ चुकी थी ।

उसी वस्तु-बाह । कमीन ने बसीरहीना की बुला-लिखा । बसीरहीना बाबिब मधी है समझ समझ सीधे अपने लगे । किन्तु वो मय

वे इसी वस्तु मिसना चाहते हैं। कोई बकरी काम है।”

“इस वस्तु।” साह ने मरियम की तरफ इशारा किया।

“घरब किया या मैंने” बलीर बाबर से कहते लफा “मगर बलीर साहेब बबरए और परेसान हैं। फीरी कमबोली की इबाबत चाहते हैं।”

तब साह ने उन्हें नहीं बुलवा लिया। मरियम के घमिष कशों में वह किसी भी घबस्ता में हटना नहीं चाहते थे।

नकी खां घाये तो सचमुच बबरए थे। घाये पर पछीने की बड़ी बड़ी बूँदें छतक घाई भी और बुरी तरह हांक रहे थे।

साह ने घाने का कारण पूछा तो उन्होंने जबाब दिया “हुजूर के छपटीक से घाने के बाद रेबीडेसी से बर्ब साहेब बबरनर अनरस का गया कपटीता सेकर आए। छसी को सेकर घाया हूँ घातमपमाह। हय बरबाद हो गए। छुट गए हुजुरे प्रमकर।

साह कुछ न बोले। बिहरे को मचासम्भर मम्मीर बनाये उन्होंने नकी खां के हाथों से कामज से लिया और सचटती नजर बाल कर सबाब किया “बया है यह?”

“छर्ब कुर्म” नकी खां ने बघासी आवाज में जबाब दिया “सात सवाल पूछे गये हैं घातमपमाह। और साथ सम्बीह है, बबाब छपत्ती बस्त न हुए तो कमनी सरकार हयाटी हुहुयत अपने कन्ने में से सेपी।”

साह की आँखें स्वबमेव बन्द हो गयीं। वह कुछ कहते उसी समय मरियम की साँसों का ठंडा स्वर आया। उन्होंने कामज नकी खां के हाथों में दिया और मरियम की ओर सम्बोधित हुए।

“घब घब ‘बस्त’ ‘नहीं है’ मरियम हिचक-हिचक कर कहते सबी मेरे घाका कहिए ‘घापने मुझे मृषाफकिबा। मेरे बुताह-”

साह ने सिर हिला दिया।

सेफिन घायद मरियम न बोल सकी। उसने नम्बी हिचकी ली और कहानी खत्म हुई।

‘इन्निस्मिन्नाहूँ बह्मनाहूँ रजःऊन’ छाह ने धाधिरी कलमा बड़ा धीर मरियम के बेहरे पर कपड़ा डाल दिया ।

घस्तर रो बी ।

छाह के बेहरे से पना चमना बा कि जैसे वह बहुत जल्द पामन हो जाएँगे ।

हरबाजे की घोर बड़े लो नकी खाँ ने कामज की घोर हसारा कर कुछ कहना बाहा ‘घालमपनाहूँ’ ।

लेकिन बाजिब घनी छाह ने बीक कर नकी खाँ को नियेब किया ।

‘मस्त कइो हमे घालमपनाहूँ नकी खाँ हम सब धबध के छह छाह नहीं । हम एक नए बीठे इंसान से भी नए चुनर हैं । सारी दुनियाँ ने हमें धोखा दिया । स्त्रीमन हमारे बोस्त ये । तुम हमारे बडीर के । मरियम हमारी बमम बी । हम किस-किस से धिकामत करें ? किस किस से मिला करें ? मरियम बेमम बाहती बी तुम बाहते हो स्त्रीमन बाहते हैं । सारा घालम बाहता है, हम बाहबाहत से हट बावें । इन्धा घस्माह बही होना । हम आज से अपने आप को बाहबाह समझने की मनवी नहीं करेंगे । नकी खाँ । सिक्क दो कबाब हमारे पास इन धिका मतों का कोई कबाब नहीं । हम नाकमल है, नाकमिल नाकाध धीर देवाध हैं । हमसे इकूमत नहीं हो सकती नहीं हो सकती । हम छाह बाजिब घनी नहीं, सिर्फ बाजिब घनी होना कुदूस करते हैं । बाघो नकी खाँ बाघो ! खुदा के लिए हमें सोचने का बक्त दो हम किन बलखान में खुदा के चुकनुबार हों । सिर्फ बाहबाहत नहीं, सब घपनी बिन्दवी के लिये भी धायब हूँ फिरमियों से रहम की भीख मांगनी होगी । क्या पता खुदा भी हमें धोखा दें । हमसे फटेक करे । हमारे बिनाक साबित करे !”

नकी खाँ की धाँखों में धाँसू धा पसे धीर वह धिर मुझाए बहा से बस गए ।

कहानी तो खत्म हो गई। उपसंहार लेप है।

स्टीमन का कार्य समाप्त हुआ और कुछ दिनों बाद सख्त बीमारी के कारण उसे छुट्टी देनी पड़ी। तब कम्पनी सरकार ने उसे घबरा से वापिस बुला लिया।

बीरे की रिपोर्ट को आधार मान साहू के विरुद्ध अधिवीर्य ठासिका तैयार की गई जिसमें साठ आरोप थे। साहू ने तरह-तरह से घबरा के मनरस को समुद्र कराने का प्रयत्न किया जो विफल पड़े।

तब एक दिन बीपहर जब साहू घबरा दुस्स कर रहे थे तबने रेडी-डेंट मिस्टर आउट्रम ने नबर्नर मनरस का नया आरोप उन तक पहुँचाया जिसमें घबरा से बारसाहू काम करने का मुख्य बा धीर साय बा एक नया मुलहनामा जिसमें बारसाहू की पगल साठ सामाना की पैमाने देकर हर तरह मीकूफ किया गया था।

बारसाहू ने इस मुलहनामे पर बसतमत न करने का फैसला किया।

बहुत दिनों यह झगड़ा चला। साही परिवार के सभी लोगों की प्रताप-प्रसन्नता खत्म थी। कुछ का कहना था इसी की वनीमत मान कर बुझ कर लेना चाहिए, कुछ इसके विरोधी थे और कहते थे घबरा भीड़ का लोहा करना किसी घबरा में उचित नहीं।

नकी बा को डरया और प्रमकाया गया कि वह किसी भी मूछ से इस इकरारनामे पर साहू के बसतमत करवावे। उन्हें साँपों की बीस्ती का फल मजर छाया। आउट्रम ने तिरफे भीत की बमकी से घबरा के होठ ठिकाने कर दिये। एक दिन बाजिब घबरा साहू के सामने कपाल लेकर पड़े हो गए और वह दिया, इकरारनामे पर बसतमत कर बी या मुझे

मार डालो। मैं इस डिग्री से बच चुका हूँ। मेरे मन बाबिद फिर भी न माने। हारकर उन्होंने बिना दाहे घबरा से पूछे कागज पर मोहर कर दी। रेजीडेंट के लिए यही काफी हुआ।

इसके बाद लखनऊ में काम की तमवार बनी। धूल खसोट मची। छतरमंडित हो बंटों में कासी करवा नी गई। हाथी बिगडी घांसो में घाँस के कोठियों के मोल बेच दिए गए। बेवसात का अपमान हुआ। चारों ओर हा हाकार बज गया। दाह छतरमंडित में एक प्रकार से बजराबंद कर दिए गए। मंत्रों का कीमती सामान नुट लिया गया। बेलकी केहरिस्तों बनवाई गईं और जिन्होंने सरकारी काम में दखल दिया उनको सजा दी गई। सरदारियों में से दाह के हमबरो को छोट-छोट कर पकड़ा गया। उनके सामने एक ही रास्ता था। दाह के बिरोधी और कम्पनी के हमबरो बगो या बेबस्त भीत को नत सनायो। बेचारे काजीरा हो बने।

लखनऊ में कम्पनी सरकार की कुदृष्ट हो गई। क्या बाबिद और नवा कातून समय में जाका गया। उन लोगों की विरक्ताएँ के हुस्म खाटी किसे पने की कतरनाक नजर आए। उन्हीं में नकी सां बजोर के। उन्हें कानपुर रवाना कर दिया गया।

घाउदुम की सक्ती से दाही बेवसात का अपमान पचकापुन को पहुँचा। दाह न बेक सके। लखनऊ में रहना उनसे बड़ा न हुआ। और घन्त में बुद कम्पनी सरकार से दाह को कलकत्ते भटिमाबुर्ब किसे में रहने का आदेश था पहुँचा। दूसरे घन्तों में वह किता दाह की कंदयाह नियत हो गया।

घन्त में ११ मार्च सन् १८२६ को रेजीडेंट घाउदुम ने सत्तनत छोड़ देने का हुक्म दिया। रात करीब आठ बजे बाबिद धनी दाह नुप्त रूप से तैयारियाँ कर निकल गए। नगर लोगों को मातूम हो गया। हवाएँ बाबिद उन्हें निदा देने लगीं। लखनऊ के नाके तक वह

रोते बिगड़ते साथ गये। वही बाबूदाह ने उन्हें समझाया बाह। उनकी छाँचों में घाँस नहीं थे। उपस्थित व्यक्तियों के सम्मुख उन्होंने अपना एक प्रविष्ट डेर कहा “कुल रहो यहाँ बदन हूँ तो लकड़ करे हूँ” और साथ दिया छोटा बापण। उसमें सिर्फ एक बात थी। बस बर्ष हुकूमत करने के बाद घास बिना की बेला आई है। मेरी तरफ से कुछ पहुँचा हो उसकी जमा बाहूत है। लोग उनकी कदम कोती करते। सब उनसे न रहा गया और वह रो दिने। लोगों से कहा वह बापिष्ठ बावे।

उस चीज में नजीमुद्दीन बर्बाद भी मौजूद था। घाह ने उसे देखा तो हुमरी गाने की कहा

“बालम मोरा बेका छुटवो जाव”

बर्बाद का बला न जमा न बस सका। स्वर हिचकियों में हूब गए।

मुकह बाजिर घसी घाह का काकला जमाव से घास मंगा के पार कानपुर की सीमा में प्रविष्ट हुआ तो ईश्वर सम्मुख लगे मिले। उन्होंने घाह के बोड़े की लपट पकड़ ली। बाजिर घसी बोड़े से उतर पड़े और ईश्वर को नमै लपामे डेर तक रोठे रहे। ईश्वर भी छाँचों में भी घाँस ले। उन्होंने बार-बार घाह को समझाने का इरादा किया। घण्ट में उन्हें अपनी कोठी पर अपना कैदपान बना कर ले गये।

कानपुर में समीमुद्दीन मिले। बाजिर घसी घाह उनसे घाँसे न मिला सके। उन्होंने कहा—हूब आपके मुजरिम नहीं, सारे लकड़ के मुजरिम हैं बड़ीरे घास। इसी घरापठ और माकापठ मोलपन ने उन सबको मुतामकर दिया। गुरा हूँ कभी मुसाफ नहीं करसकेगा।”

बाजिर घसी घाह कानपुर में रहे तो बड़े भी वहाँ पहुँचा। उठने लकड़ का समाचार देते हुए वह दिया—घास के साथ-साथ लकड़ की लुपहाली गुरा हो गई और नैवेस्ती। लोगों के परो में काफे होवे लदे। धन मोयली के बिनारे घास की वह रोक नहीं रही। वो

लोप घामे-घबघ बर धपनी जानें निछावर करते थे बही घब घाँसू बहा कर घामे-घबघ को कोझते हैं । सचमुच घबघ की साथ ही चुकी घब बही संबेरा छा गया है । इत डकावनी से बही के कोनों के बिल बहत पड़े हैं ।

घाँसू ने इसका कोई उत्तर न देकर बड़े की सहायुद्धति पर अपने हृदय से अभ्यवाप दिया ।



जोय घामे-घबब पर घपनी चाने निछावर करते से वही घब घाँसू बहा
कर घामे-घबब को कोसते हैं । सचमुच घबब की घाम हो चुकी घब
वही घंवेछ धा गया है । इस आकाशनी से वहाँ के लोगो के बिस रहन
पये हैं ।

झाड़ू ने इसका कोई सत्तर न देकर बड़ की सहायुवृत्ति पर सन्ने
हृदय से बस्यबाह दिया ।

